राष्ट्रीय संस्करण
CopyRight - Jagran.com

इसरो और भारत ही नहीं, पूरी दुनिया को इस पल का इंतजार था। हम सफल रहे। हमने शानदार वापसी की। यह ऐतिहासिक यात्रा की शुरुआत है। पूरा प्रक्षेपण उम्मीद से भी बेहतर रहा। अब हम मिशन की अगली चुनौतियों के लिए तैयार हैं।
के. सिवन, इसरो चेयरमैन

दैनिक जागरण

वर्ष 3 अंक 43

मूल्य ₹5.00, नई दिल्ली, मंगलवार, 23 जुलाई 2019

www.jagran.com

पृष्ठ 16

चांद चले हम

धरती की कक्षा में चंद्रयान-2 सफलतापूर्वक हुआ स्थापित

यह है मिशन का महत्व

दुनिया के लिए : पृथ्वी के निर्माणक्रम से लेकर हमारे सौरमंडल को समझने का खुलेगा रास्ता

भारत के लिए : चांद पर यान उतारने का गौरव हासिल कर बनेगा महाशक्ति

इसरो के लिए : अपनी मेधा और क्षमता को साबित करने का मौका

चंद्रयान-2 का प्रक्षेपण हमारे वैज्ञानिकों की ताकत और 130 करोड़ भारतीयों के दृढ़ निश्चय को दिखाता है। भारत के लिए यह एक ऐतिहासिक क्षण है। आज पूरा देश गौरवान्वित है। यह पूरी तरह से स्वदेशी मिशन है। दिल में भारतीय, भावना में भारतीय...
नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपने कार्यालय से ही चंद्रयान-2 के सफल प्रक्षेपण के साक्षी बने ● एएनआइ

प्रक्षेपण की सफलता के बाद इसरो की पूरी टीम उत्साह से भर उठी ● एएनआइ

श्रीहरिकोटा,एजेंसियां : 50 बरस का इसरो अगले 48 दिन में 15 मुश्किल पड़ावों को पार करते हुए चंद्रयान-2 के लैंडर-रोवर को चांद की सतह पर उतार देगा। इस ऐतिहासिक उपलब्धि की ओर पहला कदम बढ़ाते हुए सोमवार को दोपहर 2:43 बजे चंद्रयान-2 को लांच किया गया। अपने कंधे पर सवा सौ करोड़ भारतीयों की उम्मीद लिए इसरो के 'बाहुबली' रॉकेट ने प्रक्षेपण के 16 मिनट बाद यान को सुरक्षित तरीके से पृथ्वी की कक्षा में स्थापित कर दिया। जैसे ही यान ने रॉकेट से अलग होकर अपना सफर शुरू किया, इस अभियान से जुड़े हर शख्स के चेहरे पर खुशी की लहर दौड़ गई। खुशी के इस मौके पर हर भारतीय के मन में मानो बस तीन शब्द गूंज रहे थे 'चांद चले हम'। सात सितंबर को जैसे ही चांद की सतह पर चंद्रयान-2 के लैंडर-रोवर कदम रखेंगे, भारत यह उपलब्धि हासिल करने वाला चौथा देश बन जाएगा। अब तक केवल अमेरिका, रूस और चीन ने ही अपने यान चांद पर उतारे हैं।

अमेरिका ने जब चांद की सतह पर मानव भेजने का अभियान पूरा कर लिया था, उसके करीब महीनेभर बाद 15 अगस्त, 1969 को भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) की स्थापना की गई थी। आज भारतीय वैज्ञानिकों ने अपनी मेधा से उस ऊंचाई को छू लिया है कि चंद्रयान-2 के साथ अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा ने भी अपना पेलोड भेजा है। जितने खर्च में हॉलीवुड की हालिया ब्लॉकबस्टर 'अवेंजर्स : एंडगेम' बनी थी, उससे तिहाई खर्च में इसरो ने चंद्र अभियान को अंजाम दिया है।

देर आए, दुरुस्त आए : चंद्रयान-2 को 15 जुलाई की सुबह 2:51 बजे लांच करने की तैयारी थी। हालांकि उस दिन लांचिंग से 56 मिनट पहले रॉकेट में कुछ गड़बड़ी दिखने के कारण अभियान को टाल दिया गया था। वैज्ञानिकों का कहना था कि ऐसे अभियान में देरी स्वीकार्य है, लेकिन खामी नहीं। ऐसे हर अभियान से देश के करोड़ों लोगों की उम्मीद जुड़ी होती है। जरा सी खामी अभियान को खतरे में डाल सकती है। सोमवार को इसरो ने पूरे अभियान को जितने सटीक तरीके से अंजाम दिया, उसे देखकर कहा जा सकता है कि देर आए, मगर दुरुस्त आए। लांचिंग से लेकर यान के पृथ्वी की कक्षा में पहुंचने तक के 16 मिनट का सफर जितने सटीक तरीके से बीता, वह किसी वैज्ञानिक अभियान के लिए बड़ी उपलब्धि होती है। इसरो ने इस अभियान को उम्मीद से बेहतर बताया है।

बाहुबली ने भी बाहुबली को सराहा : चंद्रयान-2 की लांचिंग की जिम्मेदारी इसरो ने अपने सबसे भारी रॉकेट जियोसिंक्रोनस सेटेलाइट लांच व्हीकल-मार्क 3 (जीएसएलवी-एमके 3) को सौंपी थी। 640 टन वजनी इस रॉकेट की लागत 375 करोड़ रुपये है। इसरो ने इसे 'फैट बॉय' (मोटा लड़का) नाम दिया है। वहीं मीडिया ने सुपरहिट फिल्म के नाम पर इसे 'बाहुबली' नाम दिया है। 'बाहुबली' फिल्म में मुख्य भूमिका निभाने वाले अभिनेता प्रभास ने भी इस मौके पर ट्वीट कर बधाई दी। उन्होंने लिखा, 'यह हम सब भारतीयों के लिए गौरव का क्षण है। यह 'बाहुबली' फिल्म से जुड़े हम सभी लोगों के लिए भी सम्मान की बात है कि इसरो के सबसे शक्तिशाली रॉकेट को 'बाहुबली' नाम दिया गया है।'

एक यान, कई उम्मीदें

11 साल पहले चंद्रयान-1 के रूप में भारत ने चांद की ओर पहला मिशन भेजा था। यह एक ऑर्बिटर मिशन था, जिसने 10 महीने चांद का चक्कर लगाया था। चांद पर पानी की खोज का श्रेय भारत के इसी अभियान को जाता है। अब चंद्रयान-2 इसी उपलब्धि की आगे की कड़ियां जोड़ेगा और चांद पर पानी व विभिन्न खनिजों की उपस्थिति के प्रमाण जुटाएगा। इस यान के तीन हिस्से हैं - ऑर्बिटर, लैंडर और रोवर। भारत में अंतरिक्ष विज्ञान के जनक कहे जाने वाले विक्रम साराभाई के नाम पर लैंडर का नाम विक्रम रखा गया है। वहीं रोवर का नाम प्रज्ञान है, जो संस्कृत शब्द है, जिसका अर्थ होता है ज्ञान। ऑर्बिटर सालभर चांद का चक्कर लगाते हुए प्रयोगों को अंजाम देगा। लैंडर और रोवर चांद की सतह पर कुल 14 दिन तक प्रयोग करेंगे।

विशेष पेज >> 5,6,7

ऐसा होगा सफर

धरती के इर्द-गिर्द	1 से 23वें दिन तक
चांद की ओर रवाना	23वें दिन
चांद के सफर पर	23वें से 30वें दिन
चांद की कक्षा में प्रवेश	30वें दिन
चांद के इर्द-गिर्द	30वें से 42वें दिन
लैंडर-ऑर्बिटर का अलगाव	43वें दिन
रफ्तार धीमी करने की प्रक्रिया	44वें दिन
नियंत्रित लैंडिंग की प्रक्रिया	48वें दिन
लैंडिंग	48वें दिन

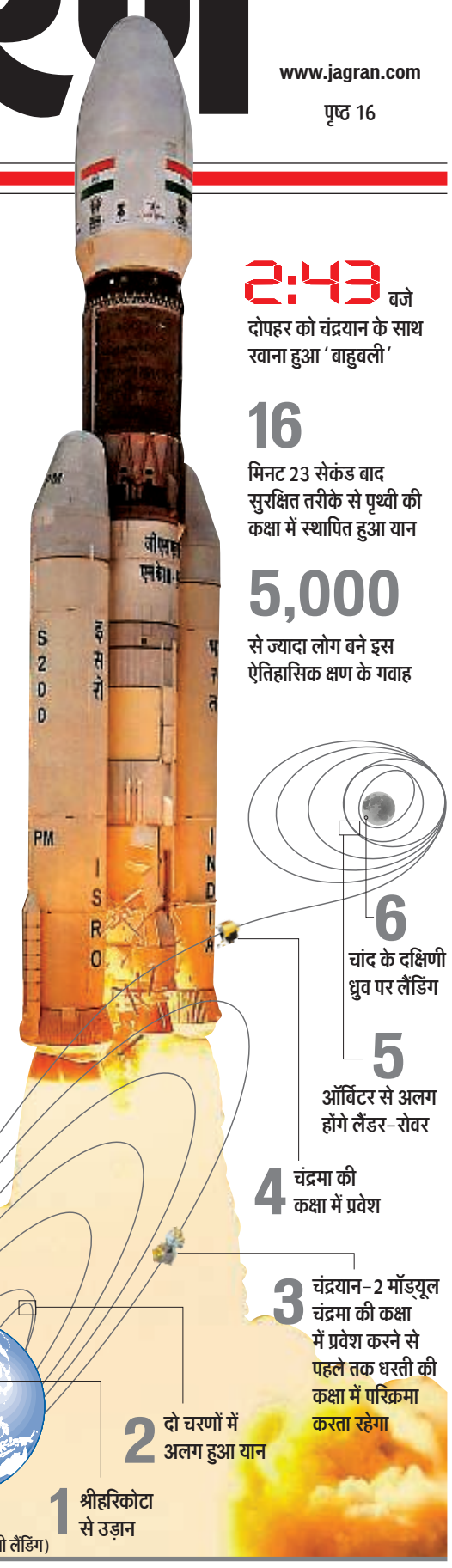

जांबाजों को सलाम

शहीद का बेटा बना लेफ्टिनेंट तो गर्व से भर उठी मां

मुजफ्फरनगर : कारगिल युद्ध के दौरान छह वर्ष की उम्र में जुड़वां बेटों के सिर से पिता का साया उठ गया। शहादत पर सबको गर्व था, लेकिन वेदना विकट। विषम हालात के बावजूद मां ने धैर्य खोने के बजाय बेटों को भी वतन की हिफाजत में लगाने की ठान ली। (पेज-15)

आम्रपाली मामले में सुप्रीम कोर्ट का फैसला आज

नई दिल्ली, प्रेट्र : आम्रपाली की रुकी हुई परियोजनाएं कौन पूरा करेगा इस बारे में सुप्रीम कोर्ट मंगलवार को फैसला सुना सकता है। कोर्ट के फैसले से रियल एस्टेट के परेशान 42000 से ज्यादा घर खरीदने वालों को राहत मिल सकती है। नोएडा और ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण ने कहा था कि आम्रपाली समूह की रुकी हुई परियोजनाएं पूरी करने के लिए उनके पास संसाधन और अनुभव नहीं है। इसके बाद 10 मई को शीर्ष कोर्ट ने फैसला सुरक्षित रख लिया था।

कर्नाटक में आधी रात तक चला सियासी नाटक

- सत्ता पक्ष ने विधानसभा अध्यक्ष से किया गया वादा नहीं पूरा किया
- रमेश ने इस्तीफा देने वाले विधायकों को आज कार्यालय में बुलाया

बेंगलुरु, प्रेट्र : कनार्टक विधानसभा में सोमवार को भी सियासी ड्रामे का पटाक्षेप नहीं हो पाया। आधी रात बाद मतदान कराए बगैर ही विधानसभा अध्यक्ष केआर रमेश ने कार्यवाही स्थगित करने की घोषणा कर दी। अब मंगलवार को फिर से विश्वास मत पर बहस जारी रहेगी। हालांकि केआर रमेश ने सदन में कार्यवाही प्रारंभ होने से पहले सरकार को हर हाल में विश्वास मत की प्रक्रिया पूरी करने की प्रतिबद्धता की याद दिलाई, पर उसका नतीजा नहीं निकला। कांग्रेस ने जोर दिया कि बागी विधायकों के इस्तीफे पर फैसला लिए जाने तक मतदान नहीं कराया जाए। विस अध्यक्ष ने बागी विधायकों को मंगलवार 11 बजे कार्यालय में मिलने के लिए बुलाया है। इस बीच कर्नाटक हाई कोर्ट में याचिका दायर कर विश्वास मत पर शीघ्र मतदान कराने की मांग की गई है।

कांग्रेस और जदएस विधायकों के इस्तीफे और दो निर्दलीय विधायकों के समर्थन वापसी के बाद संकट में घिरे मुख्यमंत्री एचडी कुमारस्वामी ने गुरुवार को विधानसभा में विश्वास मत पेश किया था। सत्ताधारी गठबंधन ने राज्यपाल वजुभाई वाला द्वारा दो बार तय की गई समयसीमा को नजरअंदाज किया। सत्ता पक्ष द्वारा मतदान पर और समय लेने के प्रयास में जुटे होने की रिपोर्ट के बीच रमेश ने कहा, विश्वास मत पर और देरी नहीं होनी चाहिए। उन्होंने कहा, 'हम सार्वजनिक जीवन में हैं। लोग हमें देख रहे हैं। चर्चा के नाम पर यदि यह राय बनती है कि हम समय जाया कर रहे हैं तो वह मेरे या किसी और के लिए अच्छा नहीं होगा।'

कर्नाटक विधानसभा में जदएस-कांग्रेस सरकार के शक्ति परीक्षण पर सियासी ड्रामा सोमवार को भी जारी रहा। प्रेट्र

कांग्रेस नेता और वरिष्ठ मंत्री कृष्ण ब्यारे गौड़ा ने कहा, 'हम असामान्य स्थिति में हैं। मैं आसन से पहले विधायकों के इस्तीफा पर फैसला लेने का आग्रह करता हूं। इसके बिना विश्वास मत का औचित्य नहीं रह जाएगा। क्या इस्तीफा स्वैच्छिक व जायज है? क्या वे लोकतंत्र के खिलाफ नहीं हैं?' भाजपा को संदेह है कि कांग्रेस-जदएस सरकार बागियों को वापस बुलाने का समय लेने के लिए देरी कर रही है। भाजपा महासचिव मुरलीधर राव ने विस अध्यक्ष पर संविधान के उल्लंघन का आरोप लगाया। जगदीश शेट्टार ने कहा, आज ही विश्वास मत प्रक्रिया पूरी हो जानी चाहिए और बहस को अंतहीन नहीं बनाया जाए।

विधायक दल के नेता जारी कर सकते हैं व्हिप : विधानसभा अध्यक्ष ने व्यवस्था दी कि विधायक दल के नेता को व्हिप जारी करने का अधिकार है। यदि कोई शिकायत उनके पास पहुंचती है तो वह नियमों का पालन करते हुए फैसला लेंगे।

शिवसेना ने कहा, राष्ट्रपति शासन लागू करें या सरकार बर्खास्त हो : भाजपा की सहयोगी शिवसेना ने कहा कि कुमारस्वामी को इस्तीफा सौंप देना चाहिए। वह विधानसभा में बहुमत खो चुके हैं। पार्टी ने कहा, केंद्र सरकार या तो राज्य की कांग्रेस-जदएस सरकार को बर्खास्त करे या राष्ट्रपति शासन लागू करे। (पेज-3 देखें)

कश्मीर पर मध्यस्थता चाहते हैं मोदी : ट्रंप

जयप्रकाश रंजन, नई दिल्ली

- पाक पीएम इमरान खान के साथ प्रेस कांफ्रेंस में अमेरिकी राष्ट्रपति का बयान
- भारत का साफ इन्कार, तीसरे पक्ष की मध्यस्थता की कभी मांग नहीं की

अपने बयानों से कई बार कूटनीतिक हलचल मचाने वाले अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने फिर ऐसी बयानबाजी कर दी है जो ना सिर्फ घरेलू राजनीति में पीएम नरेंद्र मोदी को विपक्ष के हमले का शिकार बना सकता है बल्कि भारत व अमेरिका के बीच रिश्तों में तनाव घोल सकता है। ट्रंप ने कहा है कि भारत के पीएम नरेंद्र मोदी ने उनसे कश्मीर मुद्दे पर मध्यस्थता करने का प्रस्ताव रखा था। ट्रंप ने पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान की वाशिंगटन स्थित व्हाइट हाउस में आगवानी करने के बाद औपचारिक प्रेस वार्ता में यह उद्गार व्यक्त किए। ट्रंप का बयान बेहद अहम इसलिए है कि अभी तक भारत ने कश्मीर पर किसी भी तीसरे पक्ष की मध्यस्थता स्वीकार नहीं करने की नीति अख्तियार कर रखी है जबकि पाक दुनिया के हर देश व संस्थान से मध्यस्थता की बात करता रहा है।

ट्रंप के इस बयान के करीब 50 मिनट बाद ही भारतीय विदेश मंत्रालय ने अपनी कश्मीर नीति में बदलाव से इन्कार कर दिया। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रवीश कुमार ने देर रात जारी बयान में कहा, 'हमने राष्ट्रपति ट्रंप का बयान देखा है जिसमें उन्होंने भारत-पाक के बीच कश्मीर मुद्दे पर मध्यस्थता करने की बात कही है। पीएम नरेंद्र मोदी ने इस तरह का कोई भी आग्रह राष्ट्रपति ट्रंप से नहीं किया है। भारत की यह स्थाई नीति रही है कि पाक के साथ हर लंबित मुद्दे का समाधान सिर्फ द्विपक्षीय वार्ता से ही हो सकती है। इस तरह की कोई वार्ता पाकिस्तान समर्थित आतंकवाद की समाप्ति पर ही होगी। शिमला समझौते और लाहौर घोषणापत्र भारत व पाकिस्तान के बीच के मुद्दे को सुलझाने का आधार देते हैं।'

पाक के पीएम इमरान खान व्हाइट हाउस में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के साथ। रायटर

इमरान ने उठाया था मध्यस्थता मुद्दा : तीन दिन की यात्रा पर अमेरिका पहुंचे पाक पीएम इमरान खान ने बेहद चतुराई से अंतरराष्ट्रय मीडिया के सामने ट्रंप से बात करते हुए कश्मीर में मध्यस्थता का मुद्दा उठाया। खान ने कहा कि 'भारतीय उपमहाद्वीप की डेढ़ अरब जनता कश्मीर मुद्दे पर बंधक बनी हुई है। मुझे लगता है कि सिर्फ दुनिया का सबसे शक्तिशाली देश ही इस क्षेत्र के दो देशों को साथ ला सकता है। हमने भारत के साथ रिश्तों को सुधारने, बातचीत को शुरू करने की बहुत कोशिश की है लेकिन अभी तक कोई प्रगति नहीं हुई है। उम्मीद है राष्ट्रपति ट्रंप मदद करेंगे।' इसके जवाब में ट्रंप ने कहा कि, 'दो हफ्ते पहले मैं पीएम नरेंद्र मोदी के साथ था। हमने इस विषय पर बात की है। असलियत में उन्होंने (मोदी) ने मुझसे कहा कि क्या आप मध्यस्थता करेंगे, मैंने पूछा-कहां। तो मोदी ने कहा, कश्मीर में।' भारत इस बयान को लेकर इसलिए भी ज्यादा सतर्क है कि कुछ ही हफ्ते में पीएम मोदी अमेरिका की यात्रा पर जाने वाले हैं।

विपक्ष का मोदी पर निशाना : ट्रंप के इस बयान को लेकर विपक्षी पार्टियों ने प्रतिक्रिया जताने में कोई देरी नहीं की। कांग्रेस प्रवक्ता रणदीप सिंह सुरजेवाला ने कहा है कि भारत ने जम्मू व कश्मीर पर कभी भी तीसरे पक्ष की मध्यस्थता स्वीकार नहीं की है। पीएम मोदी ने विदेशी ताकत को मध्यस्थता का आमंत्रण दे कर राष्ट्रीय हित के साथ धोखा किया है। उन्हें राष्ट्र को जवाब देना चाहिए। माकपा नेता सीताराम येचुरी ने कहा, क्या हमारे पीएम के पास साहस है कि वह अमेरिकी राष्ट्रपति के सार्वजनिक बयान को झूठ करार दें। नेशनल कांफ्रेंस के उमर अबदुल्ला ने सवाल पूछा है कि क्या भारत ने अपना स्टैंड बदल लिया है। जबकि जम्मू व कश्मीर पीडीपी ने ट्रंप के बयान का स्वागत किया है कि दक्षिण एशिया में स्थाई शांति के हरसंभव कोशिश होनी चाहिए।

इमरान के साथ पाक सेना प्रमुख भी थे : पीटीआइ के मुताबिक ट्रंप और इमरान की भेंट के दौरान पाक सेना प्रमुख जनरल कमर जावेद बाजवा, आइएसआइ प्रमुख ले.जनरल फैज हमीद भी मौजूद थे।

शानदार जज्बा

सेना से छुट्टी पर लौटते वक्त आतंकियों ने कर लिया औरंगजेब को अगवा, खुफिया सूचनाएं साझा करने से इन्कार के बाद कर दी थी हत्या

आतंक से जंग जारी रखेंगे शहीद औरंगजेब के भाई

जागरण संवाददाता, राजौरी

आतंकियों की बर्बरता के बावजूद न झुकने वाले शहीद औरंगजेब की लड़ाई को अब उनके भाई पूरी करेंगे। उनके दो और भाइयों ने सेना की वर्दी पहन ली है और आतंक के खिलाफ लड़ाई जारी रखने का एलान किया है। ध्यान रहे 14 जून, 2018 को आतंकियों ने जांबाज फौजी औरंगजेब को उस समय अगवा कर मार डालाा था जब वह ईद मनाने अपने घर पुंछ के सलानी गांव आ रहे थे। मरणोपरांत उन्हें शौर्य चक्र से सम्मानित किया गया था।

शहीद औरंगजेब के पिता और पूर्व सैनिक मुहम्मद हनीफ ने उस समय आतंकवाद से मुकाबले की इच्छा जाहिर की थी। उसके बाद उन्होंने दोनों बेटों को सेना में भर्ती होने के लिए तैयार किया ताकि दोनों भाई मिलकर आतंकवाद का सफाया करने में अहम भूमिका निभा सकें और भाई की शहादत का बदला ले सकें। अब शहीद औरंगजेब के दो भाई मुहम्मद तारिक और मुहम्मद शब्बीर सेना में बतौर सिपाही भर्ती हो चुके हैं और उस पल के इंतजार में हैं जब इन्हें आतंकी विरोधी अभियान में उतारा जाएगा। सोमवार को राजौरी में आयोजित नामांकन परेड में दोनों ने हिस्सा लिया। तारिक और शब्बीर ने मार्च माह में सुरनकोट में प्रादेशिक सेना भर्ती रैली में भाग लिया था। इस भर्ती रैली में 11 हजार के करीब युवाओं ने भाग लिया था और मात्र सौ युवा ही चुने गए थे।

शहीद औरंगजेब के दो भाई सोमवार को सेना में भर्ती हो गए। पिता के साथ दोनों भाई। आतंकियों ने 14 जून 2018 को औरंगजेब की हत्या कर दी थी। जागरण

आतंकवाद का डट कर मुकाबला करेंगे मेरे दोनों पुत्र : मुहम्मद हनीफ ने कहा,बेटे की शहादत के बाद सेना ने उन आतंकियों को लढेर कर दिया था, पर आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई अभी भी जारी है। अब तारीक व शब्बीर आतंकवाद से जंग के लिए तैयार हैं। दोनों भाई मिलकर आतंकवाद की कमर तोड़ने का कार्य करेंगे और आतंकवाद को समाप्त करके की दम लेंगे। उन्होंने कहा, मुझे गर्व है कि मेरे बेटे औरंगजेब ने देश के लिए उसने अपने प्राणों की आहुति दे दी।

एक भाई पहले से है सेना में : शहीद औरंगजेब के बड़े भाई मुहम्मद कासिम करीब 12 साल से सेना में सेवाएं दे रहे हैं। अब दो भाई और सेना में शामिल हो गए हैं। इसके अलावा दो छोटे भाई आसम और सोहेल अभी पढ़ रहे हैं। ये भी आगे चलकर सेना में शामिल होना चाहते हैं।

तेलंगाना के सीएम अपने गांव के प्रत्येक परिवार को देंगे 10 लाख

सिद्दीपेट (तेलंगाना), प्रेट्र : तेलंगाना सरकार मुख्यमंत्री के चंद्रशेखर राव के पैतृक गांव चिंतमडाका में रहने वाले प्रत्येक परिवार को 10 लाख रुपये देगी। इसकी घोषणा स्वयं मुख्यमंत्री ने सोमवार को की। इस योजना से गांव के 2,000 परिवार लाभान्वित होंगे।

गांव में आयोजित एक कार्यक्रम में शामिल होने गए केसीआर ने कहा, 'मेरा जन्म सिद्दिपेट जिले के चिंतमडाका गांव में हुआ है। मैं इस गांव के लोगों का आभारी हूं। मैं आज यह एलान करता हूं कि मेरे गांव चिंतमडाका के प्रत्येक परिवार को सरकार की तरफ से 10 लाख रुपये दिए जाएंगे। 10 लाख रुपये की राशि से वे कुछ भी खरीद सकते हैं।' केसीआर ने आगे कहा, 'इस पैसे से चिंतमडाका गांव के लोग ट्रैक्टर, खेत और खेती की मशीनें खरीद सकते हैं। इसका फायदा गांव के कुल दो हजार परिवारों को मिलेगा।' मुख्यमंत्री की इस घोषणा से सरकारी राजस्व पर दो हजार करोड़ रुपये का बोझ पड़ेगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि वे जल्द ही इस राशि को मंजूरी प्रदान कर देंगे।

आरटीआइ संशोधन बिल पर सरकार और विपक्ष आमने-सामने

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

- सूचना का अधिकार (संशोधन) विधेयक लोकसभा में पारित
- सूचना आयुक्तों की सेवा शर्तों व वेतन का निर्धारण कर सकेगी सरकार

विपक्ष के विरोध के बावजूद सूचना का अधिकार (संशोधन) विधेयक सोमवार को लोकसभा में पारित हो गया। यह विधेयक केंद्र एवं राज्य स्तर पर सूचना आयुक्तों के वेतन एवं सेवा शर्तें तय करने के लिए केंद्र सरकार को शक्ति देता है। विपक्ष का आरोप था कि सरकार संशोधन के जरिए मौजूदा कानून को कमजोर बना रही है। पिछले साल भी कानून में संशोधन की कोशिश की थी, लेकिन विरोध के चलते सरकार आगे नहीं बढ़ सकी थी। संशोधित बिल में कहा गया है कि केंद्र व राज्यों के मुख्य सूचना आयुक्तों, सूचना आयुक्तों के वेतन, भत्ते और सेवा शर्तें केंद्र सरकार तय करेगी। वहीं मूल कानून के अनुसार, अभी मुख्य सूचना आयुक्त और आयुक्तों का वेतन मुख्य निर्वाचन आयुक्त एवं निर्वाचन आयुक्तों के बराबर है।

सरकार ने कहा, वो आरटीआइ अधिनियम को संस्थागत स्वरूप प्रदान करने के साथ ही व्यवस्थित बनाना चाहती है। मंत्री जितेंद्र सिंह ने कहा, यूपीए सरकार के पहले कार्यकाल में आरटीआइ अधिनियम अफरा-तफरी में बनाया। न नियमावली बनाई न ही भविष्य में नियम बनाने का अधिकार रखा गया। मौजूदा कानून में कई सुधारों की जरूरत है। मुख्य सूचना आयुक्त को सुप्रीम कोर्ट के जज के समकक्ष माना जाता है, लेकिन उनके फैसले पर हाई कोर्ट में अपील की जा सकती है।

वहीं कांग्रेस नेता अधीर रंजन चौधरी ने कहा, मसौदा विधेयक केंद्रीय सूचना आयोग की स्वतंत्रता को खतरा पैदा करने वाला है। इस बिल के जरिए सरकार आरटीआइ के हनन की कोशिश कर रही है। अभी मुख्य सूचना आयुक्त का कार्यकाल पांच साल का होता है। इस बिल के जरिए उनका कार्यकाल तय करने का अधिकार सरकार को मिल जाएगा।

1000 से ज्यादा दाखिले हुए दिल्ली विश्वविद्यालय के नॉन कॉलेजिएट वूमेन एजुकेशन बोर्ड (एनसीवेव) में सोमवार को दूसरे कटऑफ के तहत। इस बोर्ड के 26 कॉलेजों में केंद्र हैं। इसमें दिल्ली में रहने वाली छात्राओं के ही दाखिले होते हैं।

www.jagran.com राष्ट्रीय संस्करण
दैनिक जागरण
मंगलवार 23 जुलाई 2019

एम्स में अहम पदों पर लंबे समय से काबिज हैं डॉक्टर

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) में मेडिकल शिक्षा से जुड़े कई अहम अकादमिक पदों पर लंबे समय से एक ही डॉक्टर काबिज हैं। यह मामला डॉक्टरों के बीच चर्चा का विषय है। कई डॉक्टर इस मामले पर एम्स प्रशासन से खफा हैं। बताया जा रहा है कि एम्स फैकल्टी एसोसिएशन की बैठक में भी कुछ समय पहले यह मामला उठ चुका है। फिर भी एम्स प्रशासन ने कोई कदम नहीं उठाया।

नाम न लिखने की शर्त पर डॉक्टर कहते हैं कि लंबे समय से पद पर काबिज होने के कारण कुछ अधिकारी मनमाने आदेश जारी कर रहे हैं। इसका असर कामकाज पर भी पड़ रहा है। इससे कई डॉक्टरों में असंतोष है। डॉक्टर कहते हैं कि रजिस्ट्रार के पद पर सहायक प्रोफेसर को नियुक्त किया जाना चाहिए। वर्तमान समय में इस पद पर करीब पांच सालों से एक ही डॉक्टर मौजूद हैं। इसके अलावा हर दो साल पर बदलाव होना चाहिए। पहले से एम्स में यही व्यवस्था रही है, लेकिन अब इसे नजअंदाज किया जा रहा है।

सब-डीन के पद पर भी एक ही डॉक्टर करीब तीन साल से बने हुए हैं। बदलाव (रोटेशन) का मकसद यह होता कि एम्स के प्रशासनिक कार्यों में अधिक से अधिक डॉक्टरों की सहभागिता सुनिश्चित हो सके। इसलिए डॉक्टर चाहते हैं कि महत्वपूर्ण पदों पर नियुक्ति में रोटेशन प्रणाली लागू हो। इसके अलावा रजिस्ट्रार के पद पर प्रोफेसर की जगह किसी सहायक प्रोफेसर को ही नियुक्त किया जाना चाहिए। फिलहाल इस मामले पर एम्स प्रशासन कुछ भी बोलने को तैयार नहीं है।

एक साल में 25 डॉक्टरों ने छोड़ा एम्स व सफदरजंग अस्पताल

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली : एम्स सहित तमाम बड़े अस्पतालों में पहले से ही डॉक्टरों की कमी बनी हुई है। इस बीच चिंता का विषय यह है कि नए डॉक्टर स्थायी तौर पर नियुक्त नहीं हो रहे और पहले से मौजूद डॉक्टर सरकारी अस्पताल छोड़कर निजी अस्पतालों की ओर रुख कर रहे हैं। एम्स व सफदरजंग अस्पताल से ही एक साल में 25 डॉक्टरों ने व्यक्तिगत कारणों से इस्तीफा दे दिया है। ऐसे में मरीजों की मुश्किलें बढ़ना लाजमी है। एम्स में पिछले करीब तीन साल में डॉक्टरों की स्थायी नियुक्ति भी नहीं हो पाई है। लोकसभा में एक सवाल का जवाब देते हुए केंद्रीय स्वास्थ्य राज्य मंत्री अश्विनी चौबे ने यह बताया कि पिछले एक साल में एम्स से 10 और सफदरजंग अस्पताल से 15 डॉक्टरों ने इस्तीफे दिए हैं। वहीं आरएमएल अस्पताल से एक डॉक्टर ने इस्तीफा दिया है। इस तरह तीन अस्पतालों से 26 डॉक्टरों ने इस्तीफा दिया है। एम्स और अन्य केंद्रीय अस्पतालों के डॉक्टरों को सातवें वेतन आयोग के प्रावधान के अनुसार, वेतन और भत्ते दिए जा रहे हैं। डॉक्टर बताते हैं कि इस्तीफे का सबसे बड़ा कारण विभागीय राजनीति होती है। एम्स में आपसी राजनीति के कारण ज्यादातर डॉक्टरों ने इस्तीफा दिया है। इसका अंदाजा इस तथ्य से लगाया जा सकता है कि पल्मोनरी मेडिसिन व गायनी विभाग के विभागाध्यक्षों ने भी इस्तीफा दे दिया था। हाल ही में इंडोक्रिनोलॉजी विभाग के भी एक डॉक्टर ने एम्स छोड़ दिया। इसके अलावा ऑर्थोपेडिक्टस व कार्डियोलॉजी विभाग के डॉक्टर एम्स से इस्तीफा दे चुके हैं। एम्स में फैकल्टी (शैक्षणिक कैडर के डॉक्टर) के 993 पद स्वीकृत हैं। जिसमें से 300 से ज्यादा पद रिक्त पड़े हैं। पिछले साल मई में करीब 160 डॉक्टरों की नियुक्ति प्रक्रिया शुरू हुई थी, जो अब तक पूरी नहीं हुई है। हालांकि, अनुबंध पर कुछ डॉक्टरों की नियुक्ति हुई। जिन्हें कई तरह के भेदभाव का सामना करना पड़ता है।

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (दाएं) और सफदरजंग अस्पताल। फाइल फोटो

संस्थान के कैफेटेरिया में भोजन कर सकेंगे मरीज और तीमारदार

रणविजय सिंह, नई दिल्ली

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) में देश भर से इलाज के लिए पहुंचने वाले हजारों मरीजों व तीमारदारों के लिए अच्छी खबर है। संस्थान के कैफेटेरिया में उनपर लगी रोक हटा ली गई है। दैनिक जागरण में खबर प्रकाशित होने के बाद एम्स प्रशासन ने एक बार फिर कैफेटेरिया के दरवाजे मरीजों व तीमारदारों के लिए खोल दिए हैं।

दरअसल, एम्स ने तीन मंजिला कैफेटेरिया बनवाया है। हाल ही में बहुत कम किराये पर इसके संचालन का ठेका निजी कंपनी को दिया गया। उस वक्त कर्मचारियों द्वारा कड़ा विरोध करने पर एम्स प्रशासन का कहना था कि इस कैफेटेरिया का ठेका कम किराये पर इसलिए दिया गया है, ताकि ओपीडी में इलाज के लिए पहुंचे मरीज और तीमारदारों को भी सस्ते दाम पर स्वादिष्ट भोजन मिल सके। इसलिए खानपान की चीजों की कीमतें भी तय कर दी गई हैं। यह कैफेटेरिया शुरू होने पर मरीज व तीमारदारों के लिए भी खानपान की सुविधा थी। बाद में डॉक्टरों व कर्मचारियों की शिकायत पर एम्स प्रशासन ने कैफेटेरिया में मरीजों व तीमारदारों के खानपान पर रोक लगा दिया।

इस बाबत दैनिक जागरण के 17 जुलाई के अंक में 'डॉक्टर सगे, मरीज-तीमारदार सौतेले' शीर्षक से खबर प्रकाशित की गई थी। जिसमें यह मामला प्रकाश में आया। इसके बाद एम्स के कैफेटेरिया कमेटी की दोबारा बैठक बुलाई गई। जिसके बाद एम्स प्रशासन ने अपना फैसला वापस ले लिया है। अब कैफेटेरिया की पहली मंजिल पर कर्मचारियों व भूतल पर मरीजों व तीमारदारों के खानेपीने की व्यवस्था की गई है। बताया जा रहा है कि कैफेटेरिया की दूसरी मंजिल के हिस्से को बैठक, सम्मेलन जैसे विशेष अवसरों के लिए आरक्षित रखा गया है।

एम्स में डॉक्टर सगे, मरीज-तीमारदार सौतेले

दैनिक जागरण के 17 जुलाई के अंक में प्रकाशित हुई थी खबर।

खबर में यह बात भी लिखी गई थी कि मरीजों-तीमारदारों पर रोक लगाने के बजाय एम्स प्रशासन चाहता तो कैफेटेरिया का पहली व दूसरी मंजिल का हिस्सा डॉक्टरों व कर्मचारियों के लिए आरक्षित कर भूतल पर मरीजों-तीमारदारों की सुविधा बहाल रख सकता था।

प्रतिदिन पहुंचते हैं करीब 12 हजार मरीज : एम्स की ओपीडी में प्रतिदिन करीब 12 हजार मरीज पहुंचते हैं। हर मरीज के साथ दो-चार तीमारदार होते हैं। ऐसे में संस्थान में प्रतिदिन 35 से 40 हजार लोगों का आवागमन होता है। यह देखा गया है कि करीब 40 फीसद मरीज दूसरे राज्यों से पहुंचते हैं।

18 रुपये का डोसा, 60 रुपये की थाली : कैफेटेरिया में सुबह नाश्ते में डोसा, सांभर वाडा सहित कई चीजें उपलब्ध होती हैं। मसाला डोसा सिर्फ 18 रुपये में उपलबध है। वहीं भोजन की थाली 60 रुपये में मिलती है। छोले चावल व राजमा चावल की कीमत 20 रुपये निर्धारित है। इसके अलावा वेज बिरयानी, चिकन बिरयानी सहित खानपान की 19 तरह की चीजें बेहद कम कीमत पर उपलब्ध होती हैं। इसका लाभ मरीजों को भी मिल सकेगा।

अनधिकृत कॉलोनियों के नियमितीकरण में केंद्र की शर्तों को मानने का निर्देश

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली : अनधिकृत कॉलोनियों को नियमित किए जाने के मुद्दे पर केजरीवाल सरकार अब केंद्र को सहयोग करने के पक्ष में है। मुख्यमंत्री ने अपने मंत्रिपरिषद के सदस्यों को निर्देश दिया है कि वे इन कॉलोनियों के नियमितिकरण के लिए केंद्र द्वारा भेजी गई सभी शर्तों को तुरंत स्वीकार करें ताकि दशकों पुराने मुद्दे को जल्द से जल्द हल किया जा सके।

मुख्यमंत्री ने शनिवार को सभी मंत्रियों की मैराथन बैठक की। मुख्यमंत्री ने मंत्रिपरिषद से कहा कि अब समय एक दूसरे पर आरोप लगाने का नहीं है। दशकों से अनधिकृत कॉलोनियों के निवासी गरिमा के साथ अपने जीवन का निर्वाह करने के लिए इंतजार कर रहे हैं। हमें केंद्र सरकार के साथ इस महत्वपूर्ण मुद्दे पर हरसंभव सहयोग करना है। इस दौरान अधिकारियों ने इस पूरे मामले में प्रजेंटेशन दिया। इसके बाद मुख्यमंत्री ने जटिल तकनीकी पहलुओं पर विशेषज्ञों से राय ली है।

मुख्यमंत्री से मिले निर्देशों के बाद मंत्री सक्रिय हो गए हैं। बता दें कि केंद्र सरकार जल्द ही 1797 अनधिकृत कॉलोनियों को नियमित करने जा रही है। इस बारे में केंद्र ने दिल्ली सरकार से कुछ मुद्दों पर जानकारी मांगी है। जिसे लेकर दिल्ली सरकार द्वारा जवाब तैयार किया जा रहा है। दिल्ली सरकार ने अनधिकृत कॉलोनियों को नियमित करने के लिए 2015 में केंद्र सरकार के पास प्रस्ताव भेजा था।

फैसला ▶ कांस्टीट्यूशन क्लब में व्यापारियों की महापंचायत में किया गया एलान

सीलिंग के खिलाफ फिर खुलेगा मोर्चा

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

औद्योगिक इलाकों व बाजारों में चल रही सीलिंग के खिलाफ व्यापारियों ने फिर मोर्चा खोलने की तैयारी की है। कांस्टीट्यूशन क्लब में हुई महापंचायत में दिल्ली भर से जुटे व्यापारियों ने 9 अगस्त को सीलिंग के खिलाफ रैली निकालने का ऐलान किया है। इसके साथ ही सुप्रीम कोर्ट द्वारा नियुक्त मॉनिटरिंग कमेटी को भंग करने और केंद्र सरकार से आम माफी योजना (एम्नेस्टी स्कीम) लाने की मांग की। इस महापंचायत का आयोजन कंफेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (कैट) द्वारा किया गया, जिसमें पुरानी दिल्ली, उत्तम नगर, रोहिणी, कमला नगर, कृष्णा नगर, साउथ एक्स, राजौरी गार्डन, छतरपुर समेत अन्य बाजारों के 100 से अधिक व्यापारी नेता मौजूद थे।

नहीं हुआ समाधान तो छोड़ देंगे दिल्ली : सीलिंग व अन्य कारणों से लगातार तंग करने की स्थिति में व्यापारियों ने कहा कि उन्हें मजबूरी में दिल्ली की जगह दूसरे राज्यों की ओर पलायन करना पड़ेगा। दिल्ली व्यापार महासंघ के अध्यक्ष देवराज बवेजा ने कहा कि 9 अगस्त, 1942 को भारत छोड़ो आंदोलन की शुरुआत हुई थी। इसलिए रैली का यह दिन चुना गया है। राजौरी गार्डन मार्केट के प्रधान रमेश खन्ना ने बताया कि रैली के लिए तारीख का तो ऐलान हो गया है, लेकिन अभी स्थान तय नहीं है। अगर रामलीला मैदान उस दिन उपलब्ध रहता है तो वहां होगा। अन्यथा विकल्पों पर भी विचार हो रहा है। उन्होंने व्यापारी नेताओं से रैली की तैयारी के लिए अभी से जुट जाने को कहा।

वोटों की लामबंदी की चेतावनी भी दी : दिल्ली सरकार व दिल्ली के सांसदों की चुप्पी पर व्यापारियों ने रोष जताते हुए कहा कि यदि इस समस्या का समाधान नहीं हुआ, तो दिल्ली के चुनाव दूर नहीं है और व्यापारी एकजुट होकर किसे वोट देंगे यह तय करेंगे, अगर कोई भी दल साथ नहीं देगा तो व्यापारी अपने उम्मीदवार भी मैदान में उतारने से गुरेज नहीं करेंगे।

कांस्टीट्यूशन क्लब में व्यापारियो के सम्मेलन में उपस्थित व्यापारी। जागरण

मानिटरिंग कमेटी के सदस्यों की उम्र पर भी जताई आपत्ति : इसके पहले महापंचायत को संबोधित करते हुए कैट के राष्ट्रीय महामंत्री प्रवीण खंडेलवाल ने सुप्रीम कोर्ट द्वारा नियुक्त मॉनिटरिंग कमेटी पर मनमानी का आरोप लगाते हुए कहा कि तीनों सदस्य लगभग 75 वर्ष की आयु पार कर चुके हैं। सरकारी सेवानिवृत्ति की आयु 60 वर्ष है। उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीशों की सेवानिवृति की आयु 65 वर्ष हैं ऐसे में यह नियम मॉनिटरिंग कमेटी के सदस्यों पर भी लागू होना चाहिए।

विधिवत बने बैंक्वेट्स की सीलिंग पर भी जताया रोष : वहीं, दिल्ली बैंक्वेट फेडरेशन के उपाध्यक्ष समीर अरोड़ा ने सीलिंग के नाम पर बैंक्वेट को निशाने पर लिए जाने का आरोप लगाते हुए कहा कि अब नए प्रावधानों से दशकों पहले पूरे नियम-शर्तों से बने बैंक्वेंट्स पर सीलिंग की कार्रवाई हो रही है, जो गलत है।

पुरानी दिल्ली में कन्वर्जन का मुद्दा उठाया : दिल्ली इलेक्ट्रिकल ट्रेडर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष भारत आहूजा ने कहा कि पुरानी दिल्ली में सैकड़ों साल से कारोबार हो रहा है। पर अब यहां भी कन्वर्जन चार्ज का नोटिस थमाया जा रहा है जो गलत है।

क्लास रूम बनाने में भ्रष्टाचार का आरोप, सीबीआइ जांच की मांग

उपराज्यपाल अनिल बैजल को ज्ञापन सौंपते नेता प्रतिपक्ष विजेंद्र गुप्ता, विधायक ओपी शर्मा व अन्य नेता। सौजन्य : भाजपा

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली

भाजपा दिल्ली सरकार के स्कूलों में क्लास रूम बनाने में भ्रष्टाचार का आरोप लगा रही है। इस मामले में सोमवार को दिल्ली विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष विजेंद्र गुप्ता के नेतृत्व में विधायक राजनिवास पहुंचे। उन्होंने उपराज्यपाल अनिल बैजल को ज्ञापन सौंपकर इस मामले की सीबीआइ जांच कराने की मांग की। उनका कहना है कि स्कूलों में अतिरिक्त कमरे बनाने व मरम्मत कार्य के नाम पर करोड़ों रुपये की हेराफेरी हुई है जिसकी जांच जरूरी है। उन्होंने कहा कि कमरों के निर्माण व मरम्मत कार्य में नियमों का उल्लंघन किया गया है। विशेष मरम्मत कार्य के लिए वित्त वर्ष 2016-17 व 2017-18 में एक हजार करोड़ रुपये का खर्च दिखाया गया है, लेकिन इस राशि के खर्च करने का कोई लेखा जोखा नहीं है। इसी तरह से प्राथमिकता-1 के कमरों को बनाने के लिए आवंटित किए गए 1500 करोड़ रुपये का भी कोई लेखा जोखा नहीं है।

उन्होंने आरोप लगाया कि दिल्ली सरकार ने स्कूलों में 8089 कमरों के निर्माण कार्य का भुगतान किया है, लेकिन हकीकत में सिर्फ छह हजार कमरे बने हैं। बिना टेंडर किए पांच सौ करोड़ रुपये का खर्च भी दिखाया गया है। उन्होंने कहा कि इस मामले की सीबीआइ और कैग जांच होनी चाहिए। उपराज्यपाल से मिलने वालों में भाजपा विधायक ओपी शर्मा, मनजिंदर सिंह सिरसा, जगदीश प्रधान, आम आदमी पार्टी के बागी विधायक देवेंद्र सहरावत व अनिल वाजपेयी शामिल थे।

आवास विकास परिषद में बड़ा घपला आधे घंटे पहले शुरू की नीलामी

जागरण संवाददाता, वसुंधरा

कई अधिकारियों की बिल्डरों से सांठगांठ उजागर होने के बाद अब आवास विकास परिषद में एक और बड़े घपले का भंडाफोड़ हुआ है। दरअसल, कुछ अधिकारी-कर्मचारियों ने 20 जुलाई को मेरठ में हुई नीलामी के समय में ही घपला कर दिया। इतना ही नहीं समय से पहले नीलामी शुरू की तीन प्लॉट नीलाम कर डाले। कुछ देर बाद नीलामी में शामिल होने किसान पहुंचे तो उन्होंने पत्र दिखाए। जिसमें आधे घंटे बाद का समय दिया था। अधिकारियों ने नीलामी निरस्त करते हुए मामले की जांच बिठा दी गई है। मामले में कुछ अधिकारी-कर्मचारियों पर बर्खास्तगी की कार्रवाई की जा रही है।

आवास विकास परिषद ने वसुंधरा सर्कल के विस्थापित किसानों के व्यवसायिक भूखंडों की नीलामी बीते शनिवार को मेरठ में रखी थी। नीलामी में 136 भूखंडों को रखा गया था। नीलामी में सिर्फ वही किसान हिस्सा ले सकते थे जिन्होंने वसुंधरा योजना में अपनी जमीन आवास विकास परिषद को दी है। नीलामी में शामिल अधिकारी-कर्मचारियों ने किसानों को सुबह 11:30 बजे का समय दिया था। इसके लिए उन्हें एक पत्र जारी किया गया था।

- किसानों के पहुंचने से पहले ही नीलाम कर दिए तीन प्लॉट
- तीन अधिकारी-कर्मचारियों पर गड़बड़ी का आरोप, बैठी जांच
- संपत्ति विभाग के कर्मचारियों की मिलीभगत से जारी किए गए दो पत्र
- एक पत्र में लिखा गया 11 तो दूसरे में 11:30 का समय

> मेरठ में शनिवार को हुई नीलामी में गड़बड़ी सामने आई है। इसके बाद नीलामी को निरस्त कर दिया गया है। कर्मचारियों को मामले में नोटिस जारी कर जवाब मांगा गया है। जांच के बाद कार्रवाई की जाएगी। आवास आयुक्त को मामले से अवगत कराया गया है।
>
> – अजय श्रीवास्तव, संयुक्त आवास आयुक्त

11 बजे शुरू की नीलामी, तीन प्लॉट कर दिए नीलाम : शनिवार सुबह 11 बजे ही संपत्ति विभाग के कुछ कर्मचारियों ने अधिकारियों की देखरेख में नीलामी शुरू कर दी। इस दौरान तीन प्लॉटों पर किसी प्रकार की बोली न लगाते हुए उन्हें तीन लोगों ने खरीद लिया। तीनों लोग प्लॉट खरीदते ही नीलामी स्थल से निकल गए। कुछ देर बाद अन्य किसान पहुंचे तो अधिकारियों ने तीन प्लॉटों के नीलाम होने की बात कही। इस पर किसान भड़क उठे। उन्होंने आवास विकास द्वारा भेजा पत्र दिखाया जिसमें नीलामी शुरू होने का समय सुबह 11:30 बजे लिखा था।

अधिकारियों को भी दिया 11:00 बजे का समय : अधिकारियों ने जब अपने पत्र की जांच की तो सामने आया कि उन्हें भी नीलामी का समय 11 बजे दिया गया है। ऐसे में दोनों पत्रों में असमानता होने के चलते साफ हो गया कि कर्मचारियों की मिलीभगत से गलत तरीके से तीन प्लॉटों की नीलामी कर दी गई है। इसके बाद अधिकारियों ने तुरंत नीलामी को निरस्त कर दिया। सूत्रों की मानें जब अधिकारियों ने उन लोगों को बुलाया जो सुबह नीलामी में शामिल हुए तो उन्होंने आने से इंकार कर दिया। माना जा रहा है कि कर्मचारियों ने तीन प्लॉट अपने जानकारों को देने के लिए यह साजिश रची। अब अधिकारियों ने सभी अधिकारी-कर्मचारियों से जवाब तलब किया है। मामले में लिप्त कर्मचारियों पर बर्खास्तगी की कार्रवाई की जा सकती है।

डीडीए की आवासीय योजना 2019 का ड्रॉ आज

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली : दिल्ली विकास प्राधिकरण (डीडीए) की आवासीय योजना-2019 के करीब 18 हजार फ्लैटों का ड्रॉ मंगलवार को आइएनए स्थित मुख्यालय में दोपहर 12 बजे निकाला जाएगा। ड्रॉ एक सेवानिवृत्त न्यायाधीश की अध्यक्षता में होगा, जिसका ट्रायल सोमवार को किया गया। ड्रॉ का सीधा प्रसारण डीडीए की वेबसाइट पर ऑनलाइन भी देखा जा सकेगा।

गौरतलब है कि डीडीए की आवासीय योजना-2019 25 मार्च, 2019 का लांच की गई थी। इसमें करीब 47 हजार आवेदन आए। इसमें 7,700 ईडब्ल्यूएस फ्लैटों के लिए 954 आवेदन मिले, 8,300 एलआइजी फ्लैटों के लिए 5977 आवेदन आए, 1550 एमआइजी फ्लैटों के लिए 27,000 लोगों ने आवेदन किया और 450 एचआइजी फ्लैटों के लिए 9112 आवेदन डीडीए को मिले हैं।

अधिकारियों ने कहा कि ड्रॉ के बाद आवंटियों को फ्लैट लौटाने के लिए 30 दिन और फ्लैट की कीमत देने के लिए 90 दिन का समय दिया जाएगा। इसके बाद भुगतान करने पर ब्याज लगेगा। डीडीए ने सफल आवंटियों को फ्लैट की कीमत का भुगतान करने से पहले उसके साइज, जगह और उसकी कीमत की पूरी पड़ताल करने की सलाह दी है। ज्ञात हो कि 2017 की योजना में बड़ी संख्या में आवंटियों ने साइज छोटे होने पर फ्लैट लौटा दिए थे। बहुत से आवंटी फ्लैट लेने के बाद सुविधाएं नहीं होने की शिकायत भी कर रहे थे।

हत्या के आठ मामले में 11 सालों से वांछित शरद पांडेय गिरफ्तार

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

दिल्ली पुलिस की क्राइम ब्रांच ने दिल्ली व हरियाणा के मोस्ट वांटेड बदमाश शरद पांडेय को लखनऊ से गिरफ्तार कर लिया है। शरद दिल्ली समेत कई राज्यों में हत्या की आठ वारदातों में पिछले 11 सालों से वांछित था। दिल्ली, हरियाणा, पंजाब व उत्तर प्रदेश पुलिस इसकी वर्षों से तलाश कर रही थी। दिल्ली व हरियाणा पुलिस की तरफ से इस पर एक-एक लाख रुपये का इनाम था। पिछले कुछ सालों में यह अपने गिरोह के साथ मिलकर दिल्ली-एनसीआर में 100 से अधिक लग्जरी कारें लूट चुका था। अपराध से पैसों से इसने वुडलैंड टाउनशिप में आलीशान बंगला बना रखा है, जिसे वह करोड़ों रुपये में बेचने की जुगत में लगा था। बंगले की डील के लिए शरद जब लखनऊ पहुंचा, तभी क्राइम ब्रांच की टीम ने उसे दबोच लिया।

डीसीपी डॉ. जी राम गोपाल नाइक के मुताबिक 38 वर्षीय कुख्यात शरद पांडेय के कई उप नाम हैं। वह रवि उर्फ रोहित उर्फ शमर पांडेय, बब्बू उर्फ काली के नाम भी जाना जाता है। इसका गिरोह कई राज्यों में सुपारी लेकर हत्या करने का काम करता है। हरियाणा के सोनीपत में एक साथ तीन लोगों की हत्या, भटिंडा पंजाब में एक साथ दो लोगों की हत्या, शामली, उत्तर प्रदेश में एक साथ दो लोगों की हत्या व ग्रेटर नोएडा में हत्या की एक वारदात को अंजाम दे चुका है। आठों मामले में शरद पिछले 11 सालों से वांछित था। शरद मूल रूप से विजय विहार, उत्तम नगर का रहने वाला है और बिंदापुर थाने का घोषित अपराधी रहा है।

क्राइम ब्रांच को सूचना मिली कि शरद दिल्ली-एनसीआर में वारदात कर लखनऊ भाग जाता है। उसने कई सालों से वुडलैंड टाउनशिप में ही ठिकाना बना रखा है। उसके खिलाफ लूटपाट, हत्या के प्रयास के भी कई मामले दर्ज हैं। पिछले कुछ महीने में शरद गिरोह वसंतकुंज मॉल, साकेत मॉल, एनएच-8, आइजीआइ एयरपोर्ट, वसंत विहार आदि बड़े बाजारों के पास से गन प्वाइंट पर कई कारें लूट चुका है। गिरोह चालक को अगवा कर कार लूट लेता है और सुनसान जगह पर हाईवे पर चालक को उतार कार लेकर भाग जाता है। इस पर एसीपी श्वेता चौहान व इंस्पेक्टर गगन भास्कर के नेतृत्व में पुलिस टीम को 21 जुलाई को लखनऊ रवाना किया गया। पुलिस टीम को पता चला कि शरद बंगले को बेचने के लिए डील करने आने वाला है। पुलिस टीम ने जब उसे पकड़ने की कोशिश की तो वह भागने लगा। पीछा करने पर शरद ने पुलिस पर गोली चला दी और आम पब्लिक को जान से मार डालने की धमकी दी। पुलिस टीम ने चालाकी से उसे दबोच लिया। उसके पास से पिस्टल व चार कारतूस बरामद हुए।

अपूर्वा के खिलाफ चार्जशीट पर कोर्ट ने शुरू की सुनवाई

जासं, दक्षिणी दिल्ली : उत्तर प्रदेश व उत्तराखंड के पूर्व मुख्यमंत्री दिवंगत एनडी तिवारी के बेटे रोहित शेखर तिवारी हत्याकांड की चार्जशीट पर साकेत कोर्ट ने सोमवार को सुनवाई शुरू की। कोर्ट ने मामले की अगली सुनवाई 25 जुलाई तय की है। साथ ही आरोपित अपूर्वा शुक्ला को न्यायिक हिरासत में भेज दिया।

दिल्ली पुलिस की अपराध शाखा ने कोर्ट में अपूर्वा के खिलाफ 518 पन्नों की चार्जशीट दाखिल की है। इसमें 56 गवाहों को सूचीबद्ध किया गया है जिनमें रोहित की मां उज्ज्वला तिवारी भी शामिल हैं। पुलिस ने कहा कि पांच डॉक्टरों के बोर्ड ने 17 अप्रैल को पोस्टमार्टम किया था। इसमें पता चला था कि रोहित का गला घोंटा गया था। अपूर्वा ने अपने पति की हत्या करने की बात को स्वीकार भी किया था।

चार्जशीट के अनुसार, रोहित 15 अप्रैल को अपनी मां, भाभी व घरेलू सहायकों साथ हल्द्वानी से वोट डालकर कार से आ रहे थे। अपूर्वा ने मोबाइल पर वीडियो कॉल की तो उसमें रोहित अपनी भाभी के साथ एक ही गिलास से शराब पीते दिखाई दिए। इसके अलावा अपूर्वा को यह भी शक था कि रोहित के अपनी भाभी से नाजायज संबंध हैं। इस कारण उसकी संपत्ति भी शायद भाभी के बेटे को दे दी जाएगी। उस रात इस बात को लेकर अपूर्वा और रोहित में झगड़ा हुआ तो अपूर्वा ने तकिये से मुंह दबाकर रोहित की हत्या कर दी।

पोस्टर का मामला

छात्र संघ छात्रों द्वारा बनाए गए पोस्टर को दीवारों से हटाने को बता रहा है प्रशासन की अनुचित कार्रवाई, वहीं रजिस्ट्रार का कहना है कि ऐसा केंद्र सरकार की नोटिस के आधार पर किया जा रहा है

जेएनयू में छात्र संघ और प्रशासन फिर आमने-सामने

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) में छात्र संघ और प्रशासन फिर आमने-सामने नजर आ रहे हैं। अब विश्वविद्यालय में दीवारों पर पोस्टर को लेकर विवाद सामने आया है। छात्र संघ का आरोप है कि छात्रों द्वारा बनाए गए पोस्टर जेएनयू की दीवारों से हटाए जा रहे हैं, जोकि प्रशासन की अनुचित कार्रवाई है। पोस्टर के जरिये छात्र विभिन्न मुद्दों पर अपनी बातें सबके समक्ष रखते हैं। इन पोस्टरों को हटाना एक तरह से छात्रों की आवाज को दबाना है, जिसे हम कामयाब नहीं होने देंगे। इसके विरोध में सोमवार सुबह 11 बजे से दोपहर 3 बजे तक स्कूल ऑफ सोशल साइंसेज, स्कूल ऑफ लैंग्वेज और स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज जैसे विभागों में पोस्टर बनाए गए।

छात्र संघ अध्यक्ष एन साईं बालाजी ने आरोप लगाते हुए कहा कि छात्रों की आवाज को लगातार दबाया जा रहा है। पुस्तकालय के 80 फीसद तक बजट को कम कर दिया गया है। अब दीवारों पर लगे पोस्टरों को भी हटाया जा रहा है, जोकि ठीक नहीं है। हम मंगलवार को कैंपस में मार्च निकालेंगे और विश्वविद्यालय की दीवारों पर छात्रों द्वारा तैयार किए गए पोस्टर को लगाएंगे। वहीं, जेएनयू प्रशासन ने छात्र संघ के आरोपों का खंडन किया है। रजिस्ट्रार प्रो. प्रमोद कुमार ने बताया कि केंद्र सरकार की तरफ से एक नोटिस जारी हुआ है, जिसमें कहा गया है कि दीवारों को गंदा करना अपराध है। जेएनयू में इस नोटिस को जारी किया गया है। इसलिए जेएनयू प्रशासन की तरफ से दीवारों से पोस्टर हटाए जा रहे हैं। प्रशासन ने जेएनयू के सभी विभागों और हॉस्टल में एक निर्धारित जगह भी छात्रों को दी है, जहां वे पोस्टर चिपका सकते हैं। इसे लोकतांत्रिक दीवार (डेमोक्रेसी वॉल) नाम दिया गया है।

जेएनयू में सोमवार को छात्रों ने प्रशासन के दीवारों से पोस्टर हटाने के विरोध में पोस्टर बनाने के कार्यक्रम का आयोजन किया। जेएनयू के विभागों में पोस्टर बनाते विद्यार्थी। जागरण

शीला के नाम पर रखा जाएगा सभागार का नाम

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली

दिल्ली प्रदेश कांग्रेस के कार्यकारी अध्यक्ष राजेश लिलोठिया ने घोषणा की है कि शीला दीक्षित की यादें और उनका आशीर्वाद पार्टी कार्यकर्ताओं पर बना रहे, इसके लिए उनकी स्मृति मे प्रदेश कांग्रेस कार्यालय के एक सभागार का नाम उन्हीं के नाम पर रखा जाएगा। उन्होंने कहा कि शीला दीक्षित की प्रतिमा भी प्रदेश कार्यालय मे स्थापित की जाएगी।

लिलोठिया ने कहा कि शीला दीक्षित का निधन न सिर्फ कांग्रेस पार्टी के लिए एक भारी नुकसान है बल्कि समाज और दिल्ली के लिए भी भारी क्षति है। शीला का दिल्ली के विकास में बड़ा योगदान है जो भुलाया नही जा सकता। इतिहास मे जब जब दिल्ली के चहुंमुखी विकास का जिक्र होगा तब तब शीला को याद किया जाएगा। उन्होंने यह भी कहा कि उनके पुनः प्रदेश अध्यक्ष बनने के बाद दिल्ली में फिर से पार्टी को मजबूती मिली और लोकसभा चुनाव मे उनके नेतृत्व में पार्टी ने फिर से अपनी खोई पहचान को हासिल किया। उनका निधन होने से एक युग का ही अंत हो गया।

लिलोठिया ने कहा कि शीला जी की स्मृति में सभी विधानसभाओं मे 'शीला दीक्षित नाम नहीं-प्रगति और विकास की गाथा है' नाम से कार्यक्रम का आयोजन कर उन्हें श्रद्धांजलि दी जाएगी और दिल्लीवासियों को फिर से याद दिलाया जाएगा कि दिल्ली का जो भी विकास हुआ है उसमें शीला जी की बड़ी भागीदारी थी।

अस्थियां गंगोत्री, हेमकुंड और इलाहाबाद में होंगी विसर्जित

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली : अंतिम संस्कार के बाद सोमवार सुबह निगम बोध घाट पर बेटे संदीप दीक्षित और बेटी लतिका ने दिवंगत शीला दीक्षित की अस्थियां चुनीं। इसे इलाहाबाद, गंगोत्री और हेमकुंड में प्रवाहित किया जाएगा। परिजनों ने यह भी कहा कि आरडब्ल्यूए के साथ मिलकर शीला की याद में दिल्ली के बड़े-ड़े पार्कों में पेड़ लगाए जाएंगे ताकि उनकी याद बनी रहे। इस बीच सोमवार को प्रदेश प्रभारी पीसी चाको शीला के आवास पर परिवार को सांत्वना देने पहुंचे। वह वहां लगभग 40 मिनट तक रुके। दिल्ली से बाहर होने की वजह से चाको शीला के अंतिम संस्कार में शामिल नहीं हो सके थे। सोमवार को शोक स्वरूप प्रदेश कांग्रेस कार्यालय भी बंद रखा गया। वहीं दूसरी ओर प्रदेश कांग्रेस की ओर से जल्द ही शीला को श्रद्धांजलि के लिए एक शोक सभा का आयोजन भी किया जाएगा। यह सभा कहां और किस दिन होगी, अभी तय नहीं है। सोमवार को चाको ने प्रदेश के कार्यकारी अध्यक्ष हारून यूसुफ और देवेंद्र यादव से इस विषय में विचार विमर्श किया।

सोनिया गांधी के नाम शीला का अंतिम पत्र : शीला के निधन के बाद भी पार्टी में गुटबाजी पर विराम नहीं लगा है। शीला गुट के लोगों का कहना है कि उन्होंने अपनी मौत से तीन दिन पहले संप्रग अध्यक्ष सोनिया गांधी के नाम एक पत्र लिखा था। सूत्रों का कहना है कि शीला ने अपने पत्

16 राज्यों के 100 शहरों को प्रदूषित औद्योगिक समूहों में शामिल किया है केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) ने। इस सूची में दिल्ली और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) भी शामिल हैं।

विश्वास मत पर मतदान की तत्काल मांग पर सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई आज

कर्नाटक का नाटक ▶ अदालत ने सोमवार को सुनवाई से किया इन्कार

दो विधायकों ने याचिका दाखिल कर कुमारस्वामी सरकार पर बहुमत परीक्षण टालने का लगाया आरोप

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

कर्नाटक में तीन दिनों से जारी खींचतान को देखते हुए सवाल है कि आखिर विश्वास प्रस्ताव पर मतदान कब होगा। सुप्रीम कोर्ट ने तत्काल मतदान कराने की मांग करने वाली दो विधायकों की याचिका पर मंगलवार को विचार करने का फैसला किया है। शीर्ष कोर्ट ने सोमवार को तत्काल सुनवाई से इन्कार कर दिया। केपीजेपी के आर शंकर और निर्दलीय एच नागेश ने सुप्रीम कोर्ट में याचिका दाखिल कर कुमारस्वामी सरकार पर बहुमत परीक्षण को टालने का आरोप लगाया है।

▶ याचिकाकर्ताओं का कहना था कि मुख्यमंत्री कुमारस्वामी की सरकार सदन में बहुमत खो चुकी है

▶ विधायकों को आशंका, विश्वास मत पर मतदान टालने के लिए अस्पताल में भर्ती हो सकते हैं कुमारस्वामी

सोमवार को याचिकाकर्ताओं का कहना था कि मुख्यमंत्री कुमारस्वामी की सरकार सदन में बहुमत खो चुकी है। वह लगातार विश्वास मत पर मतदान को टालने में लगे हुए हैं इसलिए कोर्ट कर्नाटक में सोमवार को ही विश्वास मत पर मतदान कराने का आदेश दे। लेकिन मुख्य न्यायाधीश रंजन गोगोई ने कहा कि सोमवार को मामले पर सुनवाई करना संभव नहीं है। इस पर रोहतगी ने मंगलवार को सुनवाई का अनुरोध किया जिस पर पीठ ने विचार करने का आश्वासन दिया। देर शाम जारी सुप्रीम कोर्ट की सूची में विधायकों की याचिका मंगलवार को सुनवाई के लिए लगी है। यह भी कहा गया है कि राज्यपाल ने अनुच्छेद 175 के तहत विश्वास मत साबित करने का संदेश भेजा था लेकिन फिर भी मतदान नहीं कराया जा रहा और उसे लटकाए हुए हैं। विधायकों ने आशंका जताई है कि विश्वास मत पर मतदान टालने के लिए कुमारस्वामी खराब सेहत की इमरजेंसी के आधार पर अस्पताल में भी भर्ती हो सकते हैं। इन दो विधायकों के अलावा कर्नाटक कांग्रेस अध्यक्ष दिनेश गुंडू राव और मुख्यमंत्री कुमारस्वामी ने अलग से याचिका दाखिल कर कोर्ट से गत 17 जुलाई का आदेश स्पष्ट करने की मांग की है। इन याचिकाओं में कहा गया है कि बागी विधायकों को सदन की कार्यवाही में भाग लेने से छूट देने वाला कोर्ट का आदेश पार्टी व्हिप जारी करने के संवैधानिक अधिकार के आड़े आता है।

न अखबार पढ़ो, न टीवी देखो तो खुश रहोगे : सोमवार को वकील लिली थामस ने जब कोर्ट से समक्ष अखबार की खबर का जिक्र करते हुए कर्नाटक में विधायकों की खरीद-फरोख्त की बात कही और कोर्ट से मामले में दखल देने को कहा तो मुख्य न्यायाधीश रंजन गोगोई ने हल्के फुल्के अंदाज में कहा कि मैडम आप न तो अखबार पढ़ें न ही टीवी देखें खुश रहेंगी। इसके बाद मुख्य न्यायाधीश ने गंभीर होते हुए कहा कि आप एक वकील हैं आपको जो भी कहना है अर्जी दाखिल कर कहें।

लेफ्टिनेंट जनरल मनोज मुकुंद नरवाने होंगे सेना के अगले उप प्रमुख

नई दिल्ली, प्रेट्र : पूर्वी सैन्य कमान के प्रमुख लेफ्टिनेंट जनरल मनोज मुकुंद नरवाने को सेना का अगला उप प्रमुख नियुक्त किया गया है। वह लेफ्टिनेंट जनरल डी अंबू की जगह लेंगे जो 31 अगस्त को सेवानिवृत्त हो रहे हैं।

सूत्रों ने बताया कि नरवाने सेना प्रमुख पद के भी बड़े दावेदार होंगे, क्योंकि 31 दिसंबर को जनरल बिपिन रावत की सेवानिवृत्ति के समय वह सबसे वरिष्ठ कमांडर होंगे। अपने 37 साल की सेवा के दौरान वह आतंकवाद निरोधक अभियान के साथ-साथ अन्य सैन्य कार्रवाइयों में तैनात रहे हैं। वह जम्मू-कश्मीर राष्ट्रीय राइफल व ईस्टर्न फ्रंट के इनफेंट्री ब्रिगेड के कमांडर रह चुके हैं। इसी प्रकार सैन्य अभियान के महानिदेशक लेफ्टिनेंट जनरल अनिल चौहान को पूर्वी कमांड का जनरल ऑफिसर कमांडिंग इन चीफ बनाया गया है। लेफ्टिनेंट जनरल एएस क्लेर को दक्षिण-पश्चिम कमांड का जिम्मा सौंपा गया है। वह चेरिश मैथसन का स्थान लेंगे जो 31 अगस्त को सेवानिवृत्त हो रहे हैं। लेफ्टिनेंट जनरल आइएस घुमन को मध्य कमांड का जनरल ऑफिसर कमांडिंग बनाया गया है। वह लेफ्टिनेंट जनरल अभय कृष्ण की जगह लेंगे। लेफ्टिनेंट जनरल आरपी सिंह पश्चिम कमांड प्रमुख लेफ्टिनेंट जनरल सुरिंदर सिंह की जगह लेंगे, जो 31 जुलाई को सेवानिवृत्त हो रहे हैं। वह फिलहाल 21 स्ट्राइक कॉर्प के कमांडर हैं।

धार्मिक संस्थानों में यौन उत्पीड़न रोकने को दिशा निर्देश लागू करने से इन्कार

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

▶ सुप्रीम कोर्ट ने जनहित याचिका पर विचार करने से मना कर दिया

प्रतीकात्मक

धार्मिक संस्थानों में महिलाओं का यौन उत्पीड़न रोकने के लिए विशाखा दिशा निर्देश लागू करने की मांग वाली याचिका पर सुप्रीम कोर्ट ने विचार करने से सोमवार को इन्कार कर दिया। कोर्ट ने याचिका खारिज करते हुए कहा कि वह धार्मिक संस्थानों को विशाखा दिशा निर्देश के दायरे में कैसे ला सकता है।

वकील मनीष पाठक ने जनहित याचिका दाखिल कर सुप्रीम कोर्ट से धार्मिक संस्थानों जैसे- आश्रम, मदरसे और कैथोलिक संस्थान (जहां किसी भी तरह की धार्मिक शिक्षा या उपदेश होते हैं) में महिलाओं का यौन उत्पीड़न रोकने के लिए विशाखा दिशा निर्देश लागू करने की मांग की थी। याचिकाकर्ता की ओर से पेश वरिष्ठ वकील राकेश खन्ना ने कहा कि धार्मिक स्थलों में भी यौन उत्पीड़न की घटनाएं होती हैं। उन्होंने राम रहीम यौन शोषण मामले का हवाला देते हुए कहा कि अशिक्षित होने के कारण ज्यादातर महिलाएं आवाज नहीं उठा पातीं। मामले की सुनवाई कर रही मुख्य न्यायाधीश रंजन गोगोई की अध्यक्षता वाली पीठ ने कहा कि अनुच्छेद 32 के तहत इस मामले पर विचार नहीं किया जा सकता। कोर्ट ने कहा कि आपके पास कानूनी राहत के दूसरे विकल्प हैं। आप आपराधिक मुकदमा क्यों नहीं दाखिल करते।

याचिका में कहा गया था कि धार्मिक संस्थानों और स्थानों में भी महिलाओं का यौन उत्पीड़न रोकने के लिए वैसे ही दिशा निर्देश जारी किए जाएं, जैसे सुप्रीम कोर्ट ने कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न रोकने के लिए विशाखा मामले में जारी किए थे। कहा गया था कि धार्मिक संस्थान या स्थान भी महिलाओं के जीवन के अभिन्न अंग हैं। वहां वे काम भी करती हैं और कई बार आध्यात्मिक और मानसिक शांति के लिए ध्यान या उपदेश लेने जाती हैं। ऐसे में इन स्थानों को भी कार्यस्थल माना जाए और कार्यस्थल पर महिलाओं का यौन उत्पीड़न रोकने के लिए विशाखा मामले में जारी किए गए दिशा निर्देश इन जगहों पर भी लागू हों। ऐसा न होना महिलाओं के जीवन और स्वतंत्रता के अधिकार का हनन है। मांग थी कि सरकार को निर्देश दिया जाए कि वह सभी धार्मिक संस्थानों आश्रम, मदरसों व अन्य के आंकड़े एकत्र करे, जहां पर महिलाएं अपनी आस्था और पूजा-अर्चना के लिए रहती हैं। वहां महिलाओं को मदद मुहैया कराई जाए तथा लैंगिक अपराधों को रोकने की व्यवस्था हो। वहां स्वतंत्र कमेटी बनाई जाए, जिसमें महिलाएं भी शामिल हों। साथ ही समय-समय पर ऐसे धार्मिक संस्थानों की राष्ट्रीय महिला आयोग के सदस्यों द्वारा मुआयना किया जाए, ताकि भविष्य में ऐसी कोई अप्रिय घटना न घटे।

विशाखा मामले में सुप्रीम कोर्ट ने जारी किए थे विस्तृत दिशा-निर्देश : सुप्रीम कोर्ट ने 13 अगस्त 1997 को विशाखा केस में फैसला सुनाते हुए कार्यस्थल पर महिलाओं का यौन उत्पीड़न रोकने के लिए विस्तृत दिशा निर्देश जारी किए थे। इसके मुताबिक यौन उत्पीड़न की शिकायतों की जांच के लिए हर संस्थान में शिकायत समिति गठित करना जरूरी है। कई वर्षों बाद सरकार ने कोर्ट के दिशा निर्देशों के आधार पर ही कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न रोकने का कानून लागू किया।

आचार्यलु बोले, सूचना अधिकार कानून में संशोधन घातक

नई दिल्ली, प्रेट्र : पूर्व केंद्रीय मुख्य सूचना आयुक्त (सीआइसी) श्रीधर आचार्यलु ने आरटीआइ कानून में संशोधन को सीआइसी की पीठ में छुरा घोंपने जैसा करार दिया है। उन्होंने कहा, संशोधन मौजूदा कानून के लिए घातक है। सांसद कानून में बदलाव खारिज करें। कई चर्चित मामलों में पारदर्शिता समर्थक आदेश देने वाले आचार्यलु ने कहा, प्रस्तावित बदलाव का अर्थ सूचना आयोगों की स्वायत्तता को गंभीरता पूर्वक नजरअंदाज करना है।

आचार्यलु ने कहा कि यह गलत कदम आयुक्तों को कोई भी सूचना प्रकाश में लाने का आदेश जारी करने में रीढ़हीन और शक्तिहीन बना देगा। वे सूचना का अधिकार अधिनियम के लक्ष्यों को लागू करने में विफल रहेंगे। सांसदों को लिखे गए पत्र में उन्होंने कहा है, 'यदि सांसद इस विधेयक को मंजूरी देते हैं तो सूचना आयुक्त राज्य और केंद्र सरकारों के वरिष्ठ बाबुओं के पिछलग्गू बनकर रह जाएंगे। मैं लोकसभा और राज्यसभा के सांसदों से इसका विरोध करने की अपील कर रहा हूं और इसे खारिज होते देखना चाहता हूं।' उन्होंने कहा कि ज्यादा जवाबदेही राज्यसभा के सदस्यों पर है। आचार्यलु ने कहा, 'यह आयुक्तों की हैसियत को कम कर देगा। वर्तमान में ये चुनाव आयुक्तों और सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीशों के बराबर हैं।'

सोनभद्र-कर्नाटक के बहाने रास में दिखी विपक्षी एकता

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

▶ विपक्ष ने दोनों मुद्दों पर केंद्र को घेरा, हंगामे के चलते तीन बार सदन हुआ स्थगित

▶ नारेबाजी के बीच विपक्षी दलों के सदस्यों ने आसन की ओर कागज भी उछाले

नई दिल्ली में सोमवार को राज्यसभा में विपक्षी सदस्यों ने सोनभद्र में जमीन विवाद पर हुए नरसंहार मामले में जमकर हंगामा किया (टीवी ग्रैब)। प्रेट्र

उत्तर प्रदेश के सोनभद्र में जमीन विवाद में हुई गंभीर हिंसा और कर्नाटक में विधायकों को तोड़कर सूबे में सत्ता पलटने की कोशिश का आरोप लगा रहे विपक्ष ने राज्यसभा में जबरदस्त हंगामा कर सदन को तीन बार स्थगित कराया। इन दोनों घटनाओं के लिए भाजपा को कठघरे में खड़ा करते हुए विपक्षी दलों ने आरोप लगाया कि उत्तर प्रदेश में गरीब आम लोगों का शोषण ही नहीं हो रहा बल्कि उनके साथ हिंसा की घटनाएं भी बढ़ रही हैं। जबकि कर्नाटक में सरकार गिराने का षड्यंत्र रचते हुए लोकतंत्र और संघीय ढांचे पर प्रहार किया जा रहा है। हंगामे और नारेबाजी के बीच सदस्यों ने आसन की ओर कागज भी उछाले।

राज्यसभा में मौजूदा सत्र के दौरान विपक्षी दलों की एकजुटता पहली बार इन दोनों मुद्दे पर मुखर होकर सामने आई। सदन की कार्यवाही सुबह शुरू होते ही कांग्रेस, तृणमूल कांग्रेस, सपा, बसपा, माकपा, भाकपा, राजद, द्रमुक और आम आदमी पार्टी के सांसद सोनभद्र में गरीब आदिवासी समुदाय के लोगों की जमीन विवाद में की गई हत्या और कर्नाटक के राजनीतिक घटनाक्रम पर हंगामा शुरू कर दिया। कांग्रेस ने कर्नाटक मुद्दे पर कार्यस्थगन प्रस्ताव का नोटिस देकर चर्चा की मांग की तो तृणमूल, सपा, बसपा के साथ कांग्रेसी सोनभद्र हिंसा पर भी बहस चाहते थे।

विपक्षी सदस्यों की मांग पर सभापति वेंकैया नायडू ने कहा कि कर्नाटक का मसला सुप्रीम कोर्ट में विचाराधीन है और दोनों पक्ष वहां गए हैं। इसीलिए सदन में इस पर कोई चर्चा नहीं कराई जा सकती। मगर विपक्षी सदस्यों ने इसके बाद भी नारेबाजी करते हुए अपनी मांग जारी रखी तब सभापति ने सदन को 12 बजे तक स्थगित कर दिया। सदन जब प्रश्नकाल के बाद शुरू हुआ तो विपक्षी सदस्यों ने फिर अपनी मांग पर जोर देते हुए सीट पर खड़े होकर हंगामा शुरू कर दिया। उपसभापति हरिवंश ने विपक्षी सदस्यों को ऐसा नहीं करने की सलाह देते हुए प्रश्नकाल जारी रखा और हंगामे में ही एक सवाल का जवाब भी हो गया। विपक्ष ने अपने मुद्दों को तवज्जो मिलते नहीं देख सदन में इस पर अपनी आक्रामकता बढ़ा दी और विरोधी खेमे के तमाम सांसद वेल में आकर नारेबाजी करने लगे। तानाशाही नहीं चलेगी, लोकतंत्र की हत्या बंद करो से लेकर सोनभद्र के गरीबों को न्याय दो की नारेबाजी के साथ विपक्षी सांसदों के आक्रामक तेवर देख उपसभापति ने सदन दो बजे तक स्थगित कर दिया। राज्यसभा की कार्यवाही दो बजे शुरू हुई तो उपसभापति ने गृह राज्यमंत्री नित्यानंद राय को मानवाधिकार संशोधन बिल पेश करने की इजाजत दी मगर विपक्षी सदस्यों ने सोनभद्र और कर्नाटक के मुद्दे पर फिर वेल में आकर हंगामा शुरू कर दिया। इसी दौरान कुछ सदस्यों ने कागज भी उड़ाए जिसमें से एक कागज आसन पर बैठे हरिवंश पर भी जा गिरा। इसके बाद तृणमूल कांग्रेस के नेता डेरेक ओब्रायन और कांग्रेस नेता आनंद शर्मा ने मानवाधिकार संशोधन बिल जल्दबाजी में पेश करने का आरोप लगाते हुए कहा कि जब विधेयकों को स्थाई समिति को नहीं भेजा जा रहा तो सदस्यों को इसके अध्ययन के लिए दो दिन का समय मिलना चाहिए।

इस बीच उपसभापति ने द्रमुक के त्रिची शिवा समेत विपक्ष के दो सदस्यों को बिल में संशोधन पेश करने की इजाजत दी मगर शिवा ने कहा कि सदन में अव्यवस्था की स्थिति है। इस पर नाखुशी का इजहार करते हुए उपसभापति हरिवंश ने कहा कि सदन में मर्यादाएं तोड़ी जा रही है और उन पर भी कागज फेंका गया। एकजुट विपक्ष इसके बाद भी नहीं माना और हंगामा होता देख सदन तीसरी बार तीन बजे तक के लिए स्थगित हुआ।

उल्लेखनीय है कि उत्तर प्रदेश के सोनभद्र जिले के उम्भा गांव में गत दिनों जमीन पर कब्जे को लेकर ग्राम प्रधान ने हथियारों से लैस साथियों के साथ ग्रामीणों पर हमला कर दिया था। इस दौरान दस लोगों की मौत हो गई थी और कई अन्य घायल हुए थे। मामले के सियासी तूल पकड़ने के बाद प्रशासन ने मुख्य आरोपित समेत कई लोगों को गिरफ्तार कर लिया है।

जस्टिस कुरैशी मामले में जवाब के लिए केंद्र ने मांगा दो हफ्ते का वक्त

नई दिल्ली, प्रेट्र : केंद्र सरकार ने सोमवार को सुप्रीम कोर्ट को बताया कि बांबे हाई कोर्ट के जज एए कुरैशी की मध्य प्रदेश हाई कोर्ट में बतौर मुख्य न्यायाधीश नियुक्ति का मामला विचाराधीन है। केंद्र ने इस मामले में जवाब दाखिल करने के लिए कोर्ट से दो सप्ताह का समय मांगा है। इस मामले में अगली सुनवाई दो अगस्त को होगी।

चीफ जस्टिस रंजन गोगोई, जस्टिस दीपक गुप्ता और जस्टिस अनिरूद्ध बोस की पीठ गुजरात हाई कोर्ट एडवोकेट्स एसोसिएशन की याचिका पर सुनवाई कर रही थी। इसमें जस्टिस कुरैशी को शीर्ष अदालत के कोलेजियम की सिफारिश के अनुसार मध्य प्रदेश हाई कोर्ट का मुख्य न्यायाधीश नियुक्त करने की मांग की गई थी। वह गुजरात हाई कोर्ट के वरिष्ठतम जज हैं और फिलहाल स्थानांतरण पर बांबे हाई कोर्ट में तैनात हैं। केंद्र की ओर से सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने पीठ से कहा कि यह मामला विचाराधीन है। उन्होंने याचिका पर जवाब दाखिल करने के लिए दो हफ्ते का समय देने का आग्रह किया। याचिकाकर्ता की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता फाली नरीमन ने कहा कि उन्हें केंद्र द्वारा समय मांगने पर कोई आपत्ति नहीं है, लेकिन यह भी तथ्य है कि मेमोरैंडम ऑफ प्रोसीजर के अनुसार केंद्र की भूमिका सिर्फ 'एक विशिष्ट संदेश प्रेषक की' है और न्याय विभाग को सिर्फ नियुक्ति की घोषणा करनी है।

वरिष्ठ अधिवक्ता फाली नरीमन ने इसके प्रावधानों का हवाला देते हुए कहा कि कोलेजियम द्वारा नाम की स्वीकृति दिए जाने के बाद सुप्रीम कोर्ट और हाई कोर्ट के न्यायाधीशों की नियुक्ति के मामलों में केंद्र की बहुत अधिक भूमिका नहीं है। उन्होंने कहा कि केंद्र को कोर्ट को यह बताना चाहिए कि क्या उसने मेमोरैंडम ऑफ प्रोसीजर में निर्धारित प्रक्रिया के तहत गुजरात सरकार की राय मांगी थी।

प्रियंका की पैरोकारी कर रहे कांग्रेस नेताओं को नटवर ने दिया टॉनिक

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

▶ पूर्व कांग्रेस नेता के बयान के बाद पार्टी की कमान प्रियंका को सौंपने की आवाज हो सकती है और मुखर

▶ नए नेतृत्व पर राहुल की लक्ष्मण रेखा है प्रियंका की राह में सबसे बड़ी बाधा

कांग्रेस के नए अध्यक्ष की खोज के बीच पूर्व विदेश मंत्री नटवर सिंह के बयान ने पार्टी की कमान प्रियंका गांधी वाड्रा को सौंपने की वकालत करने वाले नेताओं को आवाज और मुखर करने का जज्बा दे दिया है। प्रियंका की पैरोकारी करने वाले नेताओं का मानना है कि किसी गैर गांधी के कांग्रेस अध्यक्ष बनने पर 24 घंटे में ही पार्टी में बिखराव की नटवर की टिप्पणी एक बार फिर गांधी परिवार के नेतृत्व का रास्ता खोल सकता है।

राहुल गांधी के उत्तराधिकारी के तौर पर गांधी परिवार के बाहर के चेहरे को ढूंढ़ने में संघर्ष कर रही कांग्रेस ने औपचारिक या अनौपचारिक तरीके से भले ही नटवर सिंह के बयान पर प्रतिक्रिया नहीं दी है। मगर संसद के गलियारे में पार्टी के कई नेताओं ने अनौपचारिक बातचीत में माना कि नटवर के बयान के बाद प्रियंका को कांग्रेस का नेतृत्व सौंपने की मांग तेज हो सकती है। खासकर यह देखते हुए कि राहुल के उत्तराधिकारी की तलाश लगातार लंबी होती जा रही है। कार्यसमिति की बैठक में इस्तीफे की घोषणा के अब दो माह होने वाले हैं और कांग्रेस गांधी परिवार के बाहर के किसी चेहरे पर अभी तक सहमति नहीं बना सकी है। नए अध्यक्ष पर आम राय नहीं बन पाने की वजह से ही कार्यसमिति की बैठक बुलाकर राहुल का इस्तीफा स्वीकार कर नए अध्यक्ष का चुनाव नहीं किया जा सका है। ऐसे में गांधी परिवार को नेतृत्व सौंपने के पक्षधर नेताओं के लिए नटवर का बयान सियासी टॉनिक बन सकता है।

वहीं प्रियंका ने इस बीच सोनभद्र हिंसा के पीड़ितों से मुलाकात के लिए उत्तर प्रदेश सरकार से सियासी तौर पर आमने सामने की जंग में निडरता दिखा कांग्रेस नेताओं और कार्यकर्ताओं में नई उम्मीद भर दी है। नटवर सिंह के बयान को नोटिस लेते हुए कुछ सांसदों ने कहा, राहुल के इस्तीफे के बाद बीते दो माह में कांग्रेस में बेहद निराशा का दौर है मगर सोनभद्र में प्रियंका ने लड़ाई का जज्बा दिखा पार्टी को भविष्य की उम्मीद दिखाई है। भले ही अभी ज्यादा लोग खुलकर सामने न आएं मगर पार्टी के अधिकांश नेता नटवर सिंह के बयान से पूरी तरह सहमत हैं। वैसे श्रीप्रकाश जायसवाल, अनिल शास्त्री और पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी के बेटे कांग्रेस नेता अभिजीत मुखर्जी सरीखे पार्टी नेता प्रियंका के सोनभद्र जाने से पहले ही पार्टी की कमान उनको सौंपने की वकालत कर चुके हैं।

गांधी परिवार से बाहर का अध्यक्ष बनने की स्थिति में कांग्रेस में 24 घंटे में बिखराव होने की नटवर सिंह की टिप्पणी इसलिए भी मायने रखती है कि फिलहाल वह कई वर्षों से कांग्रेस से बाहर हैं और उनके सीधे राजनीतिक हित नहीं हैं। तेल के बदले अनाज संबंधी वोल्कर रिपोर्ट में घिरने के बाद यूपीए सरकार से इस्तीफा देने से पहले नटवर सिंह का दशकों तक नेहरू-गांधी परिवार से करीबी रिश्ता रहा था।

नेतृत्व पर कांग्रेस में जारी असमंजस के बावजूद प्रियंका को राहुल का उत्तराधिकारी बनाने की राह फिलहाल कठिन है। खुद राहुल ने इस्तीफे की घोषणा करते हुए गांधी परिवार से बाहर के चेहरे को कांग्रेस की कमान सौंपने की बात कही थी। कार्यसमिति की 25 मई की बैठक में भी उन्होंने प्रियंका के नाम का प्रस्ताव करने की कोशिश नहीं करने की हिदायत दे दी थी। ऐसे में प्रियंका के नेतृत्व की पैरोकारी करने वाले नेताओं के लिए राहुल की खींची लक्ष्मण रेखा को पार करना फिलहाल बेहद मुश्किल है।

बंगाल में नाराज सरकारी वकीलों ने किया न्यायाधीश का बहिष्कार

जागरण संवाददाता, कोलकाता

> कम से कम अधिवक्ताओं को हाई कोर्ट के मुख्य न्यायधीश के पद का सम्मान करना चाहिए। मुख्य न्यायाधीश ही यह फैसला करते हैं कि किस मामले की सुनवाई किस पीठ में होगी। उन्होंने इस मामले की जिम्मेदारी मुझे सौंपी है, जिसका मैं निर्वहन कर रही हूं।
>
> -न्यायमूर्ति समाप्ति चटोपाध्याय

पश्चिम बंगाल में उत्तर 24 परगना जिले के बनगांव नगरपालिका मामले में सुनवाई से पहले ही नया विवाद खड़ा हो गया है। राज्य के नगर निकायों में विश्वास मत प्रस्ताव के संचालन को लेकर बंगाल सरकार के खिलाफ तीखी टिप्पणी से नाराज कलकत्ता हाई कोर्ट में गठित नए पैनल में शामिल वकीलों ने न्यायमूर्ति समाप्ति चट्टोपाध्याय की अदालत का बहिष्कार कर दिया है। वकीलों का कहना है कि वे उनकी अदालत में होने वाली किसी भी सुनवाई में हिस्सा नहीं लेंगे। वहीं दूसरी तरफ चट्टोपाध्याय ने कहा,सरकारी पैनल द्वारा उठाया गया कदम मुख्य न्यायाधीश का अपमान है। वह भले एक बुरी न्यायाधीश हो सकती हैं, लेकिन इस कुर्सी पर बैठकर कर्तव्यों को पूरा करने की कोशिश की है। वकीलों की अनैतिक गतिविधियों को बर्दाश्त नहीं करेंगी। अगर वह सरकार के सभी फैसलों से सहमत होकर फैसला करेंगी तो यह अन्याय होगा। बता दें कि जज की टिप्पणी से नाराज वकीलों ने राज्य के महाधिवक्ता किशोर दत्ता से शिकायत की थी। साथ ही कहा था कि वह न्यायमूर्ति चट्टोपाध्याय की अदालत में सुनवाई में उनके शामिल नहीं होने निर्णय संबंधी पत्र को कलकत्ता हाई कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश तक पहुंचाएं।

सुनवाई के दौरान परेशान करने का आरोप : इससे पहले न्यायमूर्ति चट्टोपाध्याय के अदालत कक्ष में पहुंचने के बाद अधिवक्ताओं ने कहा था कि उन्होंने इस पीठ में किसी भी सुनवाई में हिस्सा नहीं लेने का निर्णय लिया है। पैनल में शामिल तृणमूल कांग्रेस के विधि प्रकोष्ठ के अध्यक्ष भास्कर वैश्य ने कहा कि जिस तरह से जज सुनवाई के दौरान अधिवक्ताओं को परेशान कर रही हैं, उस स्थिति में उनकी अदालत में आना संभव नहीं है।

यह है मामला : बीते शुक्रवार को मामले की सुनवाई के दौरान चट्टोपाध्याय ने बनगांव नगरपालिका में अविश्वास प्रस्ताव की मतदान प्रक्रिया को अनुचित करार दिया था। साथ ही नपा चेयरमैन शंकर आढ्य को जमकर फटकार लगाई थी। न्यायाधीश ने कहा था, 'नपा में बहुमत न होने के बाद भी आप कुर्सी पकड़े हुए हैं? आप इतने निर्लज्ज कैसे हो सकते हैं?'

हाई कोर्ट के आदेश के खिलाफ अहमद पटेल की अर्जी पर अगस्त में सुनवाई

नई दिल्ली, प्रेट्र : सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को कहा कि वह कांग्रेस नेता अहमद पटेल की उस याचिका पर छह अगस्त को सुनवाई करेगा, जिसमें उन्होंने गुजरात हाई कोर्ट के आदेश को चुनौती दी है। यह मामला पटेल के 2017 में राज्यसभा के लिए चुने जाने से संबंधित है, जिसे भाजपा प्रत्याशी बलवंत सिंह राजपूत ने हाई कोर्ट में चुनौती दी थी।

गुजरात हाई कोर्ट ने पटेल की उस अर्जी को खारिज कर दिया था, जिसमें राजपूत की याचिका की विचारणीयता को चुनौती दी थी। हाई कोर्ट के फैसले को पटेल ने सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी है। सुप्रीम कोर्ट ने 26 अक्टूबर 2018 के हाई कोर्ट के उस आदेश में दखल देने से इन्कार कर दिया था, जिसके मुताबिक, राजपूत के आरोपों पर सुनवाई की जरूरत है।

प्रधान न्यायाधीश रंजन गोगोई की अध्यक्षता वाली पीठ ने स्पष्ट किया कि अभी चल रही सुनवाई जारी रहेगी और पक्ष व साक्ष्य दर्ज कराए जा सकते हैं। सुप्रीम कोर्ट ने तीन जनवरी को पटेल से कहा था कि वह राजपूत की चुनावी याचिका पर मुकदमे का सामना करें। राजपूत ने निर्वाचन आयोग द्वारा दो बागी विधायकों के मतों को अवैध करार देने को चुनौती दी थी। भाजपा नेता का दावा था कि अगर इन मतों की गिनती होती तो वह पटेल को हरा देते।

रास्ता साफ

उत्तर प्रदेश के लिए सीआरपीसी की धारा-438 में संशोधन का किया गया है प्रावधान, सुनवाई के दौरान जरूरी नहीं होगा आरोपित का मौजूद रहना

उप्र में अग्रिम जमानत के बिल को कोविंद की मंजूरी

नई दिल्ली, प्रेट्र : राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने उत्तर प्रदेश के एक महत्वपूर्ण विधेयक को स्वीकृति दे दी है, इससे अग्रिम जमानत के प्रावधान को फिर से शामिल करने का रास्ता साफ हो जाएगा। इस प्रावधान को 1976 में आपातकाल के दौरान हटा दिया गया था। अधिकारियों ने सोमवार को यह जानकारी दी। बता दें कि उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड को छोड़कर देश के अन्य सभी राज्यों में अग्रिम जमानत का प्रावधान है।

गृह मंत्रालय के एक अधिकारी ने कहा, 'राष्ट्रपति ने दंड प्रक्रिया संहिता (उत्तर प्रदेश संशोधन) विधेयक-2018 को मंजूरी दे दी है। यह विधेयक उत्तर प्रदेश के लिए दंड प्रक्रिया संहिता (सीआरपीसी) की धारा-438 में संशोधन का प्रावधान करता है। संशोधन के मुताबिक अग्रिम जमानत पर सुनवाई के दौरान आरोपित का मौजूद रहना जरूरी नहीं होगा। साथ ही इसमें अग्रिम जमानत देने पर विचार करने से पहले अदालत द्वारा कुछ अनिवार्य शर्तें भी लगाए जाने का प्रावधान है।

गंभीर अपराधों में नहीं मिलेगी अग्रिम जमानत : गंभीर अपराधों के मामले में अग्रिम जमानत नहीं दी जाएगी। इसके अलावा उन मामलों में भी अग्रिम जमानत नहीं मिलेगी जिनमें फांसी की सजा हुई हो। गैंगस्टर कानून के तहत आने वाले मामलों में भी अग्रिम जमानत नहीं दी जाएगी।

रामनाथ कोविंद फाइल फोटो

मायावती के विधेयक को केंद्र ने नहीं दी थी मंजूरी : राज्य सूचना आयोग ने भी 2009 में इस संशोधित विधेयक को लाने की अनुशंसा की थी। फिर 2010 में मायावती की तत्कालीन सरकार ने इस संबंध में एक विधेयक को मंजूरी दी थी और उसे स्वीकृति के लिए केंद्र सरकार के पास भेजा था, लेकिन केंद्र ने कुछ बदलावों के सुझावों के साथ इसे राज्य सरकार को वापस भेज दिया था।

योगी सरकार ने बनाई थी समिति : नए विधेयक को मंजूरी देने से पहले योगी आदित्यनाथ सरकार ने पूर्व की खामियों एवं अन्य राज्यों में प्रावधान के प्रयोग पर अध्ययन के लिए एक समिति गठित की थी। इसकी अध्यक्षता प्रधान सचिव (गृह) ने की और इसमें महानिदेशक (अभियोजन) और कानून विभाग के अधिकारी शामिल थे। सीआरपीसी की धारा-438 के तहत अग्रिम जमानत के लिए किसी तरह की शर्त लगाना कोर्ट के विवेक पर छोड़ा गया है, लेकिन उत्तर प्रदेश संशोधन विधेयक में पहले से ही कुछ शर्तें लगाई गई हैं।

बिना इजाजत देश नहीं छोड़ सकेगा आरोपित : एक अधिकारी के मुताबिक अग्रिम जमानत के लिए लगाई शर्तों में साफ कहा गया है कि आरोपित को जब कभी पुलिस पूछताछ के लिए बुलाएगी, उसे पेश होना होगा। आरोपित मामले में शामिल किसी भी व्यक्ति को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से डरा-धमका नहीं सकता और आरोपित अदालत की इजाजत के बिना देश नहीं छोड़ सकता। अदालत को 30 दिनों के अंदर अग्रिम जमानत पर दिए गए आवेदन पर फैसला देना होगा। अधिकारी ने बताया कि पश्चिम बंगाल में ऐसा प्रावधान है।

पार्किंग मामले में सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली सरकार से मांगा जवाब

नई दिल्ली, प्रेट्र : सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को राष्ट्रीय राजधानी में पार्किंग क्षेत्र प्रबंधन के मामले में पर्यावरण प्रदूषण नियंत्रण प्राधिकार (ईपीसीए) की रिपोर्ट पर दिल्ली सरकार से जवाब मांगा है। मामले की अगली सुनवाई 29 जुलाई को होगी।

ईपीसीए ने अपनी रिपोर्ट में लाजपत नगर में पार्किंग क्षेत्र प्रबंधन पर दक्षिणी दिल्ली नगर निगम (एसडीएमसी) के कार्यों की बड़ाई की है। जस्टिस अरुण मिश्रा और दीपक गुप्ता की पीठ ने दिल्ली सरकार के वकील को इस रिपोर्ट पर जवाब दाखिल करने के लिए एक हफ्ते का समय दिया। ईपीसीए ने अपनी रिपोर्ट में कहा कि एसडीएमसी ने लाजपत नगर में प्रायोगिक परियोजना शुरू की है, जिसमें सेंट्रल मार्केट के वाणिज्यिक और उस इलाके की आसपास की आवासीय कॉलोनियां भी शामिल हैं। न्याय मित्र अपराजिता सिंह ने कहा कि एसडीएमसी ने भीड़भाड़ वाले लाजपत नगर मार्केट और आसपास की कॉलोनियों के लिए पार्किंग क्षेत्र प्रबंधन योजना तैयार कर अच्छा काम किया है।

कह के रहेंगे माधव जोशी

5.6 करोड़ लोग देश में अपने मूल्य राज्य में नहीं रहते हैं। 2011 की जनगणना के मुताबिक, उप्र, बिहार, राजस्थान और मप्र ऐसे राज्य हैं, जहां से सबसे ज्यादा लोग दूसरे राज्यों में नौकरी आदि के लिए जाते हैं। वहीं, महाराष्ट्र, गुजरात और दिल्ली में सबसे ज्यादा लोग दूसरे राज्यों से आकर रहते हैं।

www.jagran.com राष्ट्रीय संस्करण
दैनिक जागरण
मंगलवार 23 जुलाई 2019

नवजोत सिद्धू से कांग्रेसियों ने बनाई दूरी

विपिन कुमार राणा, अमृतसर

- चंडीगढ़ की कोठी खाली कर अमृतसर पहुंचे सिद्धू से कोई भी बड़ा नेता मिलने नहीं पहुंचा
- सिद्धू ने सोमवार को भी साधे रखी चुप्पी, मीडिया से नहीं की बात
- कोठी स्थित कार्यालय में पहुंचे समर्थकों से मिलीं सिद्धू की पत्नी
- बोलीं- दो दिन बाद अपने समर्थकों से मिलेंगे नवजोत सिद्धू

नवजोत सिंह सिद्धू फाइल फोटो

पूर्व कैबिनेट मंत्री नवजोत सिंह सिद्धू मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंह से विवाद के बाद करीब डेढ़ माह से मौन हैं। मंत्री पद से इस्तीफा मंजूर होने के बाद चंडीगढ़ की सरकारी कोठी छोड़कर वह परिवार सहित एक दिन पहले अमृतसर पहुंचे। कयास लगाए जा रहे थे कि यहां पहुंचने पर उनसे मिलने वालों का जमावड़ा लगेगा, लेकिन सोमवार को ऐसा कुछ नहीं दिखा। कोई भी कद्दावर कांग्रेस नेता उनसे मिलने नहीं पहुंचा। शहर के नेताओं ने भी उनसे दूरी बनाए रखी। उनके विधानसभा हलके से कुछ पार्षद मिलने जरूर पहुंचे, पर उनसे सिद्धू मिले नहीं।

सिद्धू की कोठी में सुबह से दोपहर तक सन्नाटा रहा। बाद दोपहर कोठी में ही बने उनके विधानसभा हलके का कार्यालय खुला। उनकी पत्नी डॉ. नवजोत कौर सिद्धू वहां कुछ समय के लिए बैठीं। हलके के कुछ पार्षद और लुधियाना से आए समर्थक उनसे मिले, पर मीडिया के लिए मुख्य द्वार बंद रखा गया। मीडिया ने बातचीत के लिए कई बार संदेश भेजा, लेकिन अंदर से कोई जवाब नहीं आया। कार्यालय में पहुंचे समर्थकों को डॉ. सिद्धू ने भरोसा दिया कि दो दिन में नवजोत सिद्धू उनसे मिलेंगे। बताया जाता है कि समर्थकों ने सिद्धू को समर्थन देते हुए उनके कदम की प्रशंसा की।

कई वरिष्ठ कांग्रेसी सिद्धू को पसंद नहीं करते : नवजोत सिद्धू की कांग्रेस में एंट्री टकसाली कांग्रेसियों को कभी नहीं सुहाई। नगर निगम चुनाव में सिद्धू द्वारा टकसाली कांग्रेसियों को दरकिनार कर अपने चहेतों को टिकट दिलवाने के बाद से ही उनका विरोध शुरू हो गया था। यही कारण है कि अमृतसर पहुंचने के बाद भी छोटे-बड़े कांग्रेसी सिद्धू से दूर रहे। कैप्टन समर्थक कैबिनेट मंत्री सुखविंदर सिंह सुखसरकारिया और ओम प्रकाश सोनी चंडीगढ़ में थे, लेकिन बताया जाता है कि शहर के दोनों विधायकों ने सिद्धू को फोन तक नहीं किया। जिला कांग्रेस कमेटी की प्रधान जतिंदर सोनिया द्वारा कांग्रेस भवन में रखे गए कार्यक्रम में मेयर कर्मजीत सिंह रिंटू व नगर सुधार ट्रस्ट के चेयरमैन दिनेश बस्सी हाजिर रहे, पर किसी ने सिद्धू का नाम तक नहीं लिया।

राजीव कुमार की गिरफ्तारी पर और एक हफ्ते की रोक

जागरण संवाददाता, कोलकाता : कलकत्ता हाई कोर्ट ने सारधा चिटफंड घोटाले की जांच के मामले में कोलकाता पुलिस के पूर्व पुलिस आयुक्त राजीव कुमार की गिरफ्तारी पर अंतरिम राहत की अवधि एक सप्ताह और बढ़ा दी है। यह फैसला अदालत ने सीबीआइ से मिले नोटिस के सिलसिले में लिया है। अदालत ने राजीव कुमार को जांच एजेंसी के अधिकारियों के सामने पेश होने और करोड़ों रुपये के चिटफंड घोटाले की जांच में सहयोग करने का निर्देश दिया है। अंतरिम राहत की अवधि सोमवार को समाप्त हो रही थी। हाई कोर्ट ने 30 मई को राजीव कुमार को 10 जुलाई तक गिरफ्तारी से अंतरिम संरक्षण प्रदान किया था। बाद में यह अवधि 22 जुलाई तक बढ़ा दी गई थी। राजीव कुमार फिलहाल पश्चिम बंगाल सीआइडी के अतिरिक्त महानिदेशक हैं। वह 2013 में सारधा चिटफंड घोटाला सामने आने के वक्त बिधाननगर पुलिस के आयुक्त थे और उन्होंने एसआइटी की दैनिक कार्रवाई की निगरानी की थी। सुप्रीम कोर्ट ने नौ मई, 2014 को चिटफंड घोटालों से जुड़े सारे मामले सीबीआइ को स्थानांतरित कर दिए थे।

कहां गए उत्तर प्रदेश में 200 करोड़ का राशन लेने वाले 43 लाख परिवार..!

अमित मिश्र, लखनऊ

- पिछले महीने प्रॉक्सी वितरण की जांच होते ही गायब हुए फर्जी उपभोक्ता

प्रतीकात्मक

चौंकाने वाली बात है कि एक महीने पहले तक उत्तर प्रदेश के राशन दुकानदार आधार सत्यापन के बिना जिनके नाम पर खाद्यान्न वितरण का दावा कर रहे थे, जांच होते ही उनमें से 43 लाख परिवार गायब हो गए हैं। अधिकारी राशन दुकानों पर इनका इंतजार करते रहे लेकिन इनमें से कोई राशन लेने नहीं आया। इन परिवारों पर हर महीने 200 करोड़ रुपये से अधिक कीमत के गेहूं-चावल की आपूर्ति कागजों पर की जा रही थी, जो पिछले महीने बच गया।

इससे उत्साहित खाद्य अधिकारी पिछले महीने की तरह इस बार फिर मंगलवार से 25 जुलाई तक प्रदेश भर में आधार सत्यापन के बिना प्रॉक्सी वितरण की जांच कराने जा रहे हैं। खाद्य आयुक्त आलोक कुमार ने बताया कि इस दौरान सभी जगह विभागीय निगरानी में वितरण होगा। जहां प्रॉक्सी वितरण का औसत अधिक है, वहां जिलाधिकारियों के जरिए अन्य विभागों के कार्मिकों को भी लगाने के निर्देश दिए गए हैं। कोशिश यही रहेगी कि आधार सत्यापन के बिना राशन लेने वाले प्रत्येक उपभोक्ता को व्यक्तिगत स्तर पर सत्यापित किया जा सके।

बिना आधार 0.09 फीसद, प्रॉक्सी 10 प्रतिशत से ज्यादा : प्रदेश के 3.55 करोड़ राशन कार्ड धारक परिवारों में से 30,219 परिवार ऐसे हैं, जिनमें किसी भी सदस्य का आधार कार्ड खाद्य रसद विभाग के पोर्टल से लिंक नहीं है। यह संख्या एक फीसद के दसवें हिस्से से भी कम है, जबकि बिना आधार सत्यापन के प्रॉक्सी वितरण से राशन लेने वालों की संख्या 10 फीसद से ज्यादा है। सौ गुने से अधिक का यह अंतर खाद्य रसद विभाग के कामकाज पर भी सवाल उठा रहा है।

31 लाख राशन कार्डों पर नजर

खाद्य आयुक्त ने बताया कि पिछले महीने प्रदेश के 3.55 करोड़ में से 3.10 करोड़ परिवारों ने राशन प्राप्त किया था, जिसमें 2.79 करोड़ ने आधार सत्यापन के जरिए और 31 लाख ने प्रॉक्सी वितरण की व्यवस्था से राशन प्राप्त किया। इस बार तीन दिन के प्रॉक्सी वितरण में जहां यह 31 लाख उपभोक्ता खास तौर से निगरानी में होंगे, वहीं बिना आधार सत्यापन के राशन लेने वालों से इस बार उनकी समस्या समझ कर निदान के भी प्रयास किए जाएंगे।

उमर को मलिक का जवाब, मेरे पास तुम्हारी तरह न पैसा है और न बाप-दादा का नाम

दो टूक ▶ कहा, ये लोग गले तक भ्रष्टाचार में डूबे और बात करते हैं जैसे यहां के सुल्तान हों

नेताओं और नौकरशाहों को लेकर राज्यपाल के बयान पर सियासी घमासान

राज्य ब्यूरो, श्रीनगर

सत्यपाल मलिक फाइल फोटो

भ्रष्ट नेताओं और नौकरशाहों को लेकर जम्मू कश्मीर के राज्यपाल सत्यपाल मलिक की ओर से दिए गए बयान के बाद सियासी तूफान खड़ा हो गया है। इस लड़ाई में पूर्व मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला के ट्वीट पर राज्यपाल ने करारा जवाब दिया है। उन्होंने उमर को पॉलिटिकल जुवेनाइल बताते हुए कहा कि मेरे पास न तो तुम्हारी तरह बाप-दादा का नाम है और न ही पैसा। यहां के सियासतदानों को देखो, कइयों के मकान दिल्ली, लंदन और दुबई में हैं, उसके बावजूद वह बातें करते हैं। मैं डेढ़ कमरे के मकान से यहां आया हूं और अपने परिश्रम, लोगों की सेवा और प्रतिष्ठा के कारण राज्यपाल बना हूं।

बता दें कि राज्यपाल सत्यपाल मलिक ने रविवार को कश्मीर में बंदूक उठाने वालों से कहा था कि आप आम लोगों और निर्दोष सुरक्षाबलों को निशाना क्यों बना रहे हो। अगर मारना ही है तो उन लोगों को मारो जिन्होंने इस मुल्क और कश्मीर को लूटा है।

उमर ने जताई आपत्ति : नेकां उपाध्यक्ष और पूर्व मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने कहा कि एक जिम्मेदार व्यक्ति को जो राजभवन में बैठा है, आतंकियों को उन नेताओं और नौकरशाहों को मारने के लिए कह रहा है, जिन्हें वह भ्रष्ट समझता है। अब यहां जो राजनीतिक हत्याएं होंगी, उसके लिए राज्यपाल को जिम्मेदार माना जाएगा। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि मलिक को दिल्ली में अपनी छवि को देखना चाहिए।

कांग्रेस ने भी किया हमला: प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीए मीर ने भी राज्यपाल पर हमला करते हुए कहा कि एक संवैधानिक पद पर बैठे व्यक्ति को इस तरह की बयानबाजी नहीं करनी चाहिए। राज्यपाल क्या यहां जंगल राज कायम करना चाहते हैं।

राज्यपाल ने कहा उमर 'पॉलिटिकल जुवेनाइल' : राज्यपाल मलिक ने कहा कि उमर अब्दुल्ला तो अभी सियासी रूप से नासमझ और अपरिपक्व हैं। वह तो एक 'पॉलिटिकल जुवेनाइल' हैं, जो हर बात पर ट्वीट करते रहते हैं। आप उनके ट्वीट पर लोगों की प्रतिक्रिया देखें। आप समझ जाएंगे।

राज्यपाल ने अब्दुल्ला परिवार पर निशाना साधते हुए कहा कि चूंकि एक साल से मैं यहां हूं, जो चीज खोदता हूं, उसमें यही लोग नजर आते हैं। वहीं, तीन पीढ़ी पहले तक यह कुछ भी नहीं थे।

अपनी टिप्पणी को सही बताया : राज्यपाल ने अपने पक्ष को सही ठहराते हुए कहा कि बेशक एक राज्यपाल होने के नाते मुझे इस तरह की टिप्पणी नहीं करनी चाहिए, लेकिन मैंने यहां भ्रष्टाचार की पराकाष्ठा से हताश और निराश होकर ही बयान दिया था। राज्यपाल ने कहा कि मैं आपको यकीन दिलाता हूं कि मैं इन लोगों (भ्रष्ट नेताओं व नौकरशाहों) को पूरी तरह बेनकाब करने के बाद ही यहां से जाऊंगा।

वहीं, स्थानीय सियासी हल्कों में राज्यपाल के बयान पर तीखी प्रतिक्रिया शुरू हो गई है। सोमवार सुबह राज्यपाल ने कहा कि मेरी निजी भावना वही है जो मैंने कहा है। यहां बहुत से राजनीतिक नेता और वरिष्ठ नौकरशाह गले तक भ्रष्टाचार में डूबे हुए हैं। इन्हीं लोगों के चलते यहां के ऐसे हालात बने हुए हैं। इसके बावजूद यह लोग ऐसे बात करते हैं जैसे यहां के सुल्तान हों।

हिंसा में मारे गए भाजपा कार्यकर्ताओं के परिजनों से शाह करेंगे मुलाकात

जागरण संवाददाता, कोलकाता : लोकसभा चुनाव के पहले व दौरान बंगाल में राजनीतिक हिंसा में मारे गए भाजपा समर्थकों के परिजनों से केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह मुलाकात करेंगे। ये परिवार बुधवार को दिल्ली में केंद्रीय गृहमंत्री से मुलाकात कर उन्हें राज्य के मौजूदा हालात से अवगत कराएंगे। प्रदेश भाजपा की ओर से बताया गया कि राजनीतिक हिंसा में मारे गए कुल 31 भाजपा कार्यकर्ताओं व समर्थकों का परिवार मंगलवार को दिल्ली पहुंचेगा। पीड़ित परिवार के सदस्य राजधानी दिल्ली स्थित कांस्टीट्यूशन क्लब में 'कॉल फॉर जस्टिस' नामक स्वयंसेवी संगठन की ओर से आयोजित विशेष कार्यक्रम में शामिल होंगे, जिसमें बतौर मुख्य अतिथि पूर्व केंद्रीय मंत्री सुषमा स्वराज उपस्थित होंगी। यह संगठन राजनीतिक हिंसा में मारे गए भाजपा कार्यकर्ताओं व समर्थकों के परिवार के सदस्यों को त्वरित कार्रवाई में सहयोग करेगा। साथ ही पीड़ित परिवारों को कानूनी मदद भी दी जाएगी ताकि उन्हें न्याय मिल सके। संस्था का कहना है कि हर हाल में दोषियों को सजा मिलेगी।

वाड्रा व भंडारी की अलग-अलग याचिका पर कोर्ट ने उठाए सवाल

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

- हाई कोर्ट ने पूछा, दोनों की याचिकाओं पर एकसाथ सुनवाई क्यों नहीं हो सकती
- हथियार कारोबारी संजय भंडारी ने मनी लांड्रिंग मामला रद करने को लेकर दायर की है याचिका

दिल्ली हाई कोर्ट का गेट फाइल फोटो

मनी लांड्रिंग मामले में प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) द्वारा दर्ज एफआइआर रद करने की हथियार कारोबारी संजय भंडारी और उद्यमी रॉबर्ट वाड्रा की अलग-अलग याचिका पर दिल्ली हाई कोर्ट ने सवाल उठाया। पीठ ने पूछा कि जब दोनों याचिकाएं संपत्ति से जुड़े मामलों की हैं तो इन पर एक साथ सुनवाई क्यों नहीं हो सकती। इन्हें एक साथ डिवीजन बेंच द्वारा सुना जाना चाहिए।

न्यायमूर्ति मुक्ता गुप्ता की पीठ ईडी के उस आवेदन पर सुनवाई कर रही है, जिसमें उसने एफआइआर रद करने को लेकर भंडारी की याचिका को मनी लांड्रिंग मामले में ही वाड्रा की याचिका पर सुनवाई कर रही पीठ के समक्ष स्थानांतरित करने की मांग की थी। भंडारी की तरफ से पेश वरिष्ठ अधिवक्ता संदीप सेठी ने इसका विरोध करते हुए कहा कि भंडारी की याचिका को एकल पीठ को सुनना चाहिए, क्योंकि वाड्रा ने मनी लांड्रिंग के विभिन्न प्रावधानों को चुनौती दी है, जबकि भंडारी ने ऐसा नहीं किया है। दलीलों को सुनने के बाद पीठ ने सुनवाई 23 अगस्त तक के लिए स्थगित कर दी।

संजय भंडारी और उनकी पत्नी ने फरवरी 2017 में ईडी द्वारा दर्ज मामले को रद करने की मांग को लेकर अलग-अलग याचिका दायर की है। संजय पर ऑफिसियल सीक्रेट एक्ट के तहत 2016 में तब मामला दर्ज किया गया था, जब आयकर विभाग के सर्वे के दौरान घर से रक्षा मंत्रालय के गोपनीय दस्तावेज बरामद हुए थे। संजय भंडारी को निचली अदालत द्वारा 2018 में भगोड़ा घोषित किया गया था। वहीं, रॉबर्ट वाड्रा व उनके करीबी मनोज अरोड़ा ने मनी लांड्रिंग मामले को रद करने की मांग की है। साथ ही मनी लांड्रिंग के प्रावधानों को भी हाई कोर्ट में चुनौती दी है।

73 लाख देकर राजस्थान के मेडिकल कॉलेज में दाखिला ले सकेंगे एनआरआइ

जागरण संवाददाता, जयपुर

राजस्थान के तीन सरकारी मेडिकल कॉलेजों में अब एनआरआइ (प्रवासी भारतीय) कोटे के तहत भी सीटें तय की गई हैं। इस कोटे की एक सीट की फीस करीब 73 लाख रुपये तय की गई है। तीनों कॉलेजों में कुल 30 सीटें तय की गई हैं, जिससे कॉलेजों को करीब 21 करोड़ रुपये से अधिक की आय होगी। इस कोटे में प्रवेश से उक्त कॉलेजों की वित्तीय स्थिति सुधर सकेगी।

राजस्थान में सरकारी मेडिकल कॉलेजों को वित्तीय मजबूती देने के लिए वर्ष 2015 में सरकार ने फैसला किया था कि सत्र 2014-15 के बाद किसी भी सरकारी मेडिकल कॉलेज में सीटों में वृद्धि होती है तो बढ़ी हुई सीटों में से 15 फीसद पर एनआरआइ कोटे से प्रवेश दिया जाएगा। अब कोटा, उदयपुर और अजमेर मेडिकल कॉलेजों में नियमित प्रक्रिया के तहत कुल 200 सीटों का इजाफा हुआ है। उक्त तीनों कॉलेजों में चार वर्ष पहले लिए गए फैसले को लागू करते हुए 30 सीटें एनआरआइ कोटे की तय की गई हैं। राजस्थान में यह पहला मौका है, जब किसी सरकारी मेडिकल कॉलेज में एनआरआइ कोटे से प्रवेश दिया जा रहा है।

कहां कितनी सीटें होंगी : कोटा मेडिकल कॉलेज में इस सत्र में एमबीबीएस की सीटें 150 से बढ़ाकर 250 कर दी गई हैं। यहां 15 सीटें एनआरआइ कोटे की रहेंगी। इसी तरह उदयपुर मेडिकल कॉलेज में इस सत्र में एमबीबीएस में सीटों की संख्या 150 से बढ़ाकर 200 की गई है। यहां सात सीटें एनआरआइ की तय की गई हैं। अजमेर मेडिकल कॉलेज में भी इस सत्र में 150 से बढ़ाकर 200 सीटें की गई है। यहां आठ सीटों का एनआरआइ कोटा निर्धारित किया गया है। इस मामले में हाई कोर्ट में भी याचिका दायर की गई थी। हाई कोर्ट ने इस मामले में सरकार को राहत देते हुए पूर्व में दिए गए एनआरआइ कोर्ट के प्रवेश के स्थगनादेश को निरस्त कर दिया। इसके बाद इन कॉलेजों में एनआरआइ कोटे में प्रवेश की राह खुली। हालांकि, अभी पूरा मामला कोर्ट में विचाराधीन है। दरअसल, इस मामले में जयपुर के निजी महात्मा गांधी विश्वविद्यालय की ओर से सरकारी कॉलेजों को एनआरआइ कोटा दिए जाने का विरोध करते हुए याचिका दायर की गई थी। दायर याचिका पर सुनवाई करते हुए जस्टिस एसपी शर्मा की एकलपीठ ने एनआरआइ कोटा केवल निजी संस्थानों के लिए माना था। साथ ही सरकारी कॉलेज में एनआरआइ कोटे से सीट आवंटन का सरकार को अधिकार नहीं होने की बात कही थी। इस पर सरकार ने खंडपीठ में अपील की। यहां राज्य सरकार की अपील को स्वीकार करते हुए जस्टिस मोहम्मद रफीक की खंडपीठ ने एकलपीठ के अंतरिम आदेश पर रोक लगा दी।

दुर्गापूजा कमेटियों को आयकर नोटिस पर केंद्र पर भड़कीं ममता

जागरण संवाददाता, कोलकाता : दुर्गापूजा कमेटियों को आयकर विभाग की ओर से नोटिस भेजे जाने को लेकर मुख्यमंत्री व तृणमूल कांग्रेस सुप्रीमो ममता बनर्जी ने एक बार फिर भाजपा व केंद्र सरकार पर हमला बोला है। सोमवार को उन्होंने कहा कि चुनाव के समय हिंदू-मुस्लिम की बात करने वाली भाजपा दुर्गापूजा को भी नहीं बख्श रही और पूजा कमेटियों को आयकर नोटिस भेजकर हिसाब मांगा जा रहा है। भाजपा को कम से कम पूजा कमेटियों को आयकर के रडार पर नहीं लाना चाहिए।

नवान्न में राज्यभर के जिला परिषद के सदस्यों के साथ बैठक के बाद मुख्यमंत्री ने कहा-'त्योहार त्योहार होता है। मैं सिर्फ एक बात कहना चाहती हूं कि अगर कोई पार्टी चुनाव के लिए फंड का उपयोग करती है तो वह आयकर के तहत नहीं है। इसी प्रकार अगर पूजा कमेटियां पूजा का आयोजन करती है तो यह आयकर के तहत नहीं आना चाहिए। दुर्गापूजा कमेटी एक गैर-लाभकारी संगठन है। कमेटी पूजा से कोई पैसा नहीं कमाता है बल्कि जनता पूजा के आयोजन के लिए दान देती है। मैं पूजा कमेटियों को केंद्र द्वारा नोटिस भेजकर आयकर के रडार पर लाए जाने के रवैये की कड़ी निंदा करती हूं। उन्होंने आरोप लगाया कि जिस प्रकार से भाजपा बंगाल को लक्ष्य कर यहां के रीति-रिवाजों व संस्कृति के साथ राजनीति फायदे के लिए खिलवाड़ कर रही है, वह पूजा का अपमान है। उन्होंने जोर देकर कहा कि जान-बूझकर पूजा कमेटियों को परेशान किया जा रहा है।

जेपी नड्डा ने शौचालय संबंधी टिप्पणी के लिए प्रज्ञा ठाकुर की खिंचाई की

नई दिल्ली, प्रेट्र : भाजपा के कार्यकारी अध्यक्ष जेपी नड्डा ने भोपाल की सांसद प्रज्ञा सिंह ठाकुर की खिंचाई की। भाजपा सांसद ने टिप्पणी की थी कि वह शौचालय साफ करने के लिए चुनाव जीतकर लोकसभा नहीं पहुंची हैं। उनकी इस टिप्पणी को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के स्वच्छ भारत अभियान का मजाक बनाने के रूप में देखा जा रहा है।

पार्टी सूत्रों ने कहा कि भोपाल की सांसद को भाजपा मुख्यालय बुलाया गया था जहां नड्डा ने उन्हें पार्टी नेतृत्व की नाराजगी के बारे में बताया गया था। सांसद ने मध्य प्रदेश के सिहोर में टिप्पणी की थी। प्रज्ञा की खिंचाई की गई और उन्हें ऐसे बयान से बचने के लिए कहा गया जो पार्टी के कार्यक्रम और विचार के खिलाफ हो।

क्या कहा था सांसद ने : सिहोर में उन्होंने कहा था, 'यह ध्यान में रखें ... हम यहां नाला साफ करने नहीं आए हैं। यह स्पष्ट है? निश्चित रूप से हम यहां आपके शौचालयों को साफ करने के लिए नहीं हैं। हमसे जिस काम की अपेक्षा की जाती है और जिसके लिए हम चुने गए हैं, हम उसे ईमानदारी से करेंगे। हम यह पूर्व में भी कह चुके हैं, आज फिर दोहरा रहे हैं और भविष्य में भी इसपर कायम रहेंगे।'

पहले भी पार्टी को कर चुकी हैं शर्मिंदा : यह पहला मौका नहीं जब प्रज्ञा के बयान के लिए भाजपा शर्मिंदा हुई है। लोकसभा चुनाव प्रचार के दौरान उन्होंने महात्मा गांधी के हत्यारे नाथूराम गोडसे को उन्होंने देशभक्त कहा था। बाद में उन्होंने माफी मांगी थी और प्रधानमंत्री मोदी को कहना पड़ा था कि माफी के बावजूद वह उन्हें माफ नहीं करेंगे। उन्होंने महाराष्ट्र के एटीएस प्रमुख हेमंत करकरे पर भी विवादित बयान दिया था और उन्हें माफी मांगनी पड़ी थी।

नई दिल्ली में सोमवार को भाजपा मुख्यालय में पार्टी के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष जेपी नड्डा से मुलाकात के बाद प्रस्थान करतीं भोपाल की सांसद प्रज्ञा सिंह ठाकुर। नड्डा ने प्रज्ञा ठाकुर को उनकी शौचालय संबंधी टिप्पणी के लिए कड़ी फटकार लगाई है। प्रेट्र

ओवैसी ने कहा, मोदी के कार्यक्रम का विरोध है बयान: एआइएमआइएम प्रमुख असदुद्दीन ओवैसी ने कहा कि भाजपा सांसद प्रज्ञा का बयान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कार्यक्रम का विरोध है। उनके बयान से कोई हैरत नहीं है। वह भेदभाव करने वाला बयान देती रही हैं। यह उनकी विचार प्रक्रिया है और यह दुर्भाग्यपूर्ण है।

लापरवाह अधिकारियों को वीआरएस देने की तैयारी में उत्तराखंड सरकार

राज्य ब्यूरो, देहरादून: प्रदेश में अब लापरवाह अधिकारियों को सरकार वीआरएस देने की तैयारी कर रही है। मुख्यमंत्री त्रिवेंद्र सिंह रावत ने स्पष्ट कहा है कि अधिकारी को जो जिम्मेदारी दी जाती है, उसे निभाना चाहिए। अधिकारी यदि कामचोरी करता है तो उसे वीआरएस देकर घर भेजा जा सकता है। मुख्यमंत्री त्रिवेंद्र सिंह रावत ने समीक्षा बैठकों में अधिकारियों की अधूरी तैयारी और काम के प्रति लापरवाही पर लगातार उठ रहे सवालों पर यह स्टैंड लिया है।

प्रदेश सरकार इस समय अधिकारियों की कार्यशैली को पारदर्शी और जवाबदेह बनाने की दिशा में काम कर रही है। सरकार प्रदेश के अधिकारियों और कर्मचारियों के कार्य की समीक्षा शुरू कर चुकी है। इस कड़ी में मुख्य सचिव पहले ही विभागीय सचिवों को अधिकारियों- कर्मचारियों के कामकाज के आकलन करने को कह चुके हैं। ऐसे अधिकारियों को चिह्नित किया जा रहा है जिन पर भ्रष्टाचार के आरोप हैं या जिन अधिकारियों की कार्यशैली अप्रभावी है और जिनका पिछला रिकार्ड इस लिहाज से संतोषजनक नहीं है। वहीं, इस बीच विभिन्न बैठकों में आधी अधूरी तैयारियों के साथ पहुंच रहे अधिकारी सरकार का पारा चढ़ा रहे हैं। कई दफा निर्देशों के बावजूद काम न करने की बात सामने आ रही है। अब जल्द ही मुख्यमंत्री विभागों की समीक्षा बैठक शुरू कर रहे हैं। उन्होंने स्पष्ट किया है कि बैठकों में अधूरी तैयारी के साथ आना और मोबाइल से खेलना बिल्कुल बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

कलह

छत्तीसगढ़ सरकार ने केंद्र से की केरोसिन कोटा कटौती की शिकायत, लेकिन हर महीने 75 फीसद ही हो रहा उठाव, 26 लाख घरों तक पहुंची उज्ज्वला तो घट रही डिमांड

केरोसिन पर तकरार, कोटा भी नहीं उठा पा रही सरकार

संजीत कुमार, रायपुर

केरोसिन (मिट्टी का तेल) के कोटे में कटौती को लेकर केंद्र व राज्य सरकार के बीच कलह की स्थिति बनी हुई है। मुख्यमंत्री भूपेश बघेल इस मामले में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को दो बार पत्र लिख चुके हैं। सीएम करोसिन कोटा लौटाने की मांग कर रहे हैं। इस सबके बीच यह तथ्य भी सामने आया है कि राज्य को आवंटित कोटे का 25 फीसद केरोसिन राज्य सरकार उठा ही नहीं पा रही है। सरकार कुल आवंटन का करीब 75 फीसद ही केरोसिन ले रही है।

इसकी एक वजह उज्ज्वला योजना के तहत 26 लाख रसोई गैस कनेक्शन बंटना भी बताया जा रहा है। हालांकि उज्ज्वला की रिफिलिंग का आंकड़ा भी महज 33 से 35 फीसद के बीच ही है। खाद्य विभाग के आंकड़ों के अनुसार केरोसिन के कुल आवंटन का उठाव नहीं हो रहा है। यह स्थिति पिछले कई सालों से बनी हुई है। इस वर्ष के शुआती छह महीनों में से किसी भी महीने में शतप्रतिशत उठाव नहीं हुआ है। अफसरों के अनुसार केंद्र से हर महीने 9588 किलो लीटर केरोसिन राज्य को आवंटित की जा रही है, जबकि उठाव 72 से 78 सौ किलो लीटर के बीच है। अफसरों के अनुसार उज्ज्वला योजना लागू होने के बाद से ही केंद्र सरकार कोटे में कटौती कर रही है। इधर राज्य में भी केरोसिन के उठाव में कमी आ रही है।

मई में इस वजह से आवंटन अधिक : मई में 10 हजार 500 किलो लीटर केरोसिन जिलो को आवंटित किया गया था। खाद्य विभाग के अफसरों के अनुसार बारिश की वजह से 222 उचित मूल्य दुकानें पहुंचविहीन हो जाती हैं। इसी वजह से उन्हें चार माह के लिए केरोसिन का आवंटन मई में ही कर दिया गया था। इसी वजह से मई में 912 किलो लीटर केरोसिन का अतिरिक्त आवंटन जारी किया गया था। जून से सितंबर के बीच इसका समायोजन किया जाएगा। इसके बावजूद जिलों ने केवल सात हजार 659 किलो लीटर से अधिक नहीं उठाया।

एक वर्ष में करीब 15 फीसद बढ़ी एलपीजी की कवरेज: छत्तीसगढ़ में एलपीजी की कवरेज करीब 15 फीसद बढ़ी है। केंद्रीय पेट्रोलियम मंत्रालय की रिपोर्ट के अनुसार एक जनवरी 2019 की स्थिति में राज्य में सक्रिय घरेलू गैस कनेक्शनों की संख्या 47 लाख 17 हजार और कवरेज एरिया 72.1 फीसद है। एक वर्ष पहले एक जनवरी 2018 को राज्य में सक्रिय गैस कनेक्शनों की संख्या 37 लाख 19 हजार और कवरेज एरिया 57.3 फीसद था।

केरोसिन की मांग और उज्ज्वला की स्थिति

- वर्ष 2016-17 में कुल 10 लाख रसोई गैस कनेक्शन बांटे गए।
- दिसंबर 2016 की स्थिति में केरोसिन का वार्षिक आवंटन एक लाख नौ हजार आठ सौ 52 किलो लीटर थी। इसमें से राज्य सरकार ने 97 हजार 308 किलो लीटर उठाया था।
- दिसंबर 2017 की स्थिति में राज्य का वार्षिक आवंटन 85 हजार 606 किलो लीटर था। सरकार ने इसमें से 70 हजार 98 किलो लीटर उठाया था।

भूपेश बघेल फाइल फोटो

इस वर्ष केरोसिन का लेखा-जोखा

माह	केंद्र से आवंटन	जिलों को जारी आवंटन	उठाव
जनवरी	9588	9552	7834
फरवरी	9588	9564	7607
मार्च	9588	9564	7303
अप्रैल	9588	9588	7431
मई	9588	10500	7659
जून	9588	9336	7253

नोट- मात्रा किलोलीटर में

राजधानी चंडीगढ़ के बारे में हरियाणा व पंजाब सरकार से दस्तावेज तलब

राज्य ब्यूरो, चंडीगढ़

- विधि अधिकारी जानकारी नहीं दे पाए तो हाई कोर्ट ने दोनों राज्यों के एडवोकेट जनरल को कोर्ट में बुलाया
- चंडीगढ़ निवासी वकील की हरियाणा व पंजाब में आरक्षण के लिए दायर याचिका पर हुई सुनवाई

हरियाणा और पंजाब की राजधानी का मसला अब हाई कोर्ट में पहुंच गया है। दोनों राज्यों की राजधानी चंडीगढ़ है और कोई भी राज्य इस पर हक नहीं छोड़ना चाहता। पंजाब एवं हरियाणा हाई कोर्ट ने एक मामले की सुनवाई के दौरान दोनों राज्यों से पूछ लिया कि क्या कोई ऐसा दस्तावेज उपलब्ध है, जिसके आधार पर माना जाता है कि चंडीगढ़ दोनों राज्यों की राजधानी है। दोनों ही राज्यों के विधि अधिकारी इस मामले में कोई जवाब नहीं दे सके। इस पर हाई कोर्ट ने दोनों प्रांतों के एडवोकेट जनरल को कोर्ट में बुलाया और इस बारे में दस्तावेज प्रस्तुत करने को कहा है।

मूल रूप से चंडीगढ़ निवासी एक वकील ने हाई कोर्ट में याचिका दायर कर बताया कि चंडीगढ़ में हरियाणा और पंजाब के कर्मचारियों का कोटा निर्धारित है। यहां डेपुटेशन पर आने वालों को भी निश्चित अनुपात में स्थान दिया जाता है। चंडीगढ़ के निवासियों को हरियाणा और पंजाब दोनों ही जगहों पर आरक्षण का लाभ नहीं मिलता। याची ने कहा कि चंडीगढ़ में जिला जजों की नियुक्तियां नहीं होती, क्योंकि शहर का खुद का कोई कॉडर नहीं है। ऐसे में हरियाणा और पंजाब से जजों को डेपुटेशन पर लाया जाता है।

याची के अनुसार वह चंडीगढ़ शहर में आरक्षण का लाभ हासिल करने का पात्र है, लेकिन चाहकर भी इसका लाभ नहीं ले सकता। मामला बेहद गंभीर देख हाई कोर्ट ने दोनों राज्यों के एडवोकेट जनरल को बुला लिया। हाई कोर्ट ने उनसे पूछा कि क्या कोई ऐसी नोटिफिकेशन है, जिसमें चंडीगढ़ को हरियाणा और पंजाब की राजधानी बनाने का दर्जा दिया गया है। अब अगली सुनवाई पर इस बारे में दोनों राज्यों को अपना पक्ष रखना होगा।

चांद चले हम

चंद्रमा का गुरुत्वाकर्षण पृथ्वी का 0.166 गुना है। इसलिए यदि आपका वजन पृथ्वी पर 45 किलोग्राम है, तो चंद्रमा पर आपका वजन 7.5 किलोग्राम होगा।

दस, नौ, आठ...शून्य और रच उठा इतिहास। गगनभेदी आवाज के साथ चंद्रयान-2 को लेकर बाहुबली रॉकेट जीएसएलवी-मार्क 3 उड़ चला नीले आकाश की ओर। धरती पर मानो सब कुछ थम सा गया। भारतीयों के अरमान सातवें आसमान पर। दुनिया भारत की इस हैरतअंगेज सफलता पर चकित रह गई। 15 तारीख को तय उड़ान से पहले तकनीकी खामी पर अभियान को रोकने के फैसले पर मीन-मेख निकालने वालों को हमारे वैज्ञानिकों ने करारा जवाब दिया। एक हफ्ते के भीतर सकुशल लांचिंग करके भारतीय वैज्ञानिक मेधा का शानदार प्रदर्शन किया। दुनिया चमत्कृत है, हम सब आह्लादित। बस 48 दिन बाद जैसे ही चांद पर लैंडर ने आसन जमाया और रोवर के पैर वहां की जमीन पर थिरके तो हम भी अमेरिका, रूस और चीन के विशिष्ट क्लब में शामिल हो जाएंगे।

4 बनाम 48 दिन

धरती से चांद की दूरी 3.84 लाख किमी है। धरती से गई किसी चीज को चंदामामा तक पहुंचने के लिए कम से कम इतनी दूरी तय करनी होती है। चांद पर पहली बार इंसान के कदम पड़ने के गत बीस जुलाई को पचास वर्ष पूरे हुए। 20 जुलाई 1969 को नासा ने अपने अपोलो-11 अभियान के तहत तीन अंतरिक्षयात्रियों को चांद पर उतारा था। चंद्रमा पर पहुंचने के उनके इस अभियान में सिर्फ चार दिन लगे थे, ऐसे में भारत के चंद्रयान-2 अभियान के तहत रोवर उतारने में 48 दिन लगने की बहुत तार्किक वजह है। ईंधन बचाने के लिए इसरो ने घुमावदार रास्ते का चयन किया है। इस रास्ते में यान को धरती के गुरुत्व बल का लाभ मिलेगा जिसके प्रभाव से सेटेलाइट चंद्रमा की ओर बढ़ता रहेगा। भारत के पास इतना ताकतवर रॉकेट नहीं है जो चंद्रयान को सीधे रास्ते से चंद्रमा पर उतार दे। जबकि अपोलो-11 अभियान में नासा ने सैटर्न-वी नामक रॉकेट का इस्तेमाल किया था जो अब तक का सबसे बड़ा और ताकतवर रॉकेट है। तभी तो उसने अपने अंतरिक्षयात्रियों को सीधे रास्ते से चंद्रमा पर महज चार दिन में उतार दिया।

₹978 करोड़
चंद्रयान-2 पर भारत का कुल खर्च

₹5,759 करोड़
चांग ई-4 अभियान पर चीन का खर्च

रोवर

लैंडिंग के चार घंटे बाद विक्रम लैंडर से प्रज्ञान रोवर निकलकर चांद की जमीन पर चलेगा और अध्ययन में जुट जाएगा।

ऑर्बिटर चंद्रमा के चारों ओर एक साल तक चक्कर लगाएगा। रोवर प्रज्ञान जानकारी को लैंडर विक्रम से साझा करेगा। विक्रम उस जानकारी को ऑर्बिटर तक पहुंचाएगा। ऑर्बिटर उसे धरती के कमांड सेंटर तक भेजेगा।

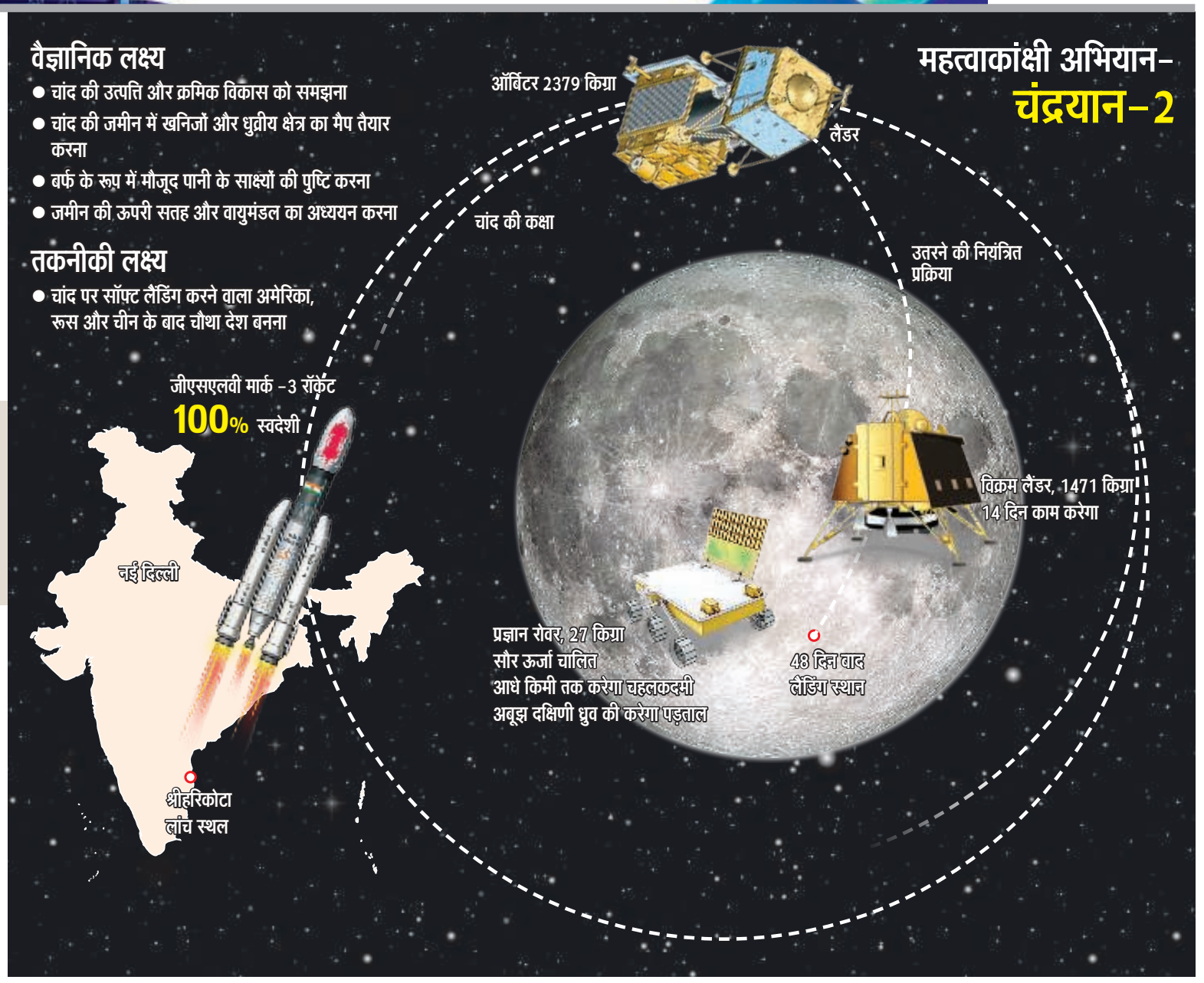

चांद पर पहुंचने वाले देश

अब तक तीन देशों ने ही चांद की सतह पर रोवर उतारने में कामयाबी पाई।

चीन
चांग ई-3 : चीन का पहला मून लैंडर था। जिसे चीन की अंतरिक्ष एजेंसी ने 1 दिसंबर 2013 को सफलतापूर्वक लांच किया था।

चांग ई-4 : चांद के सुदूर हिस्से में उतारने वाला पहला देश बना चीन।

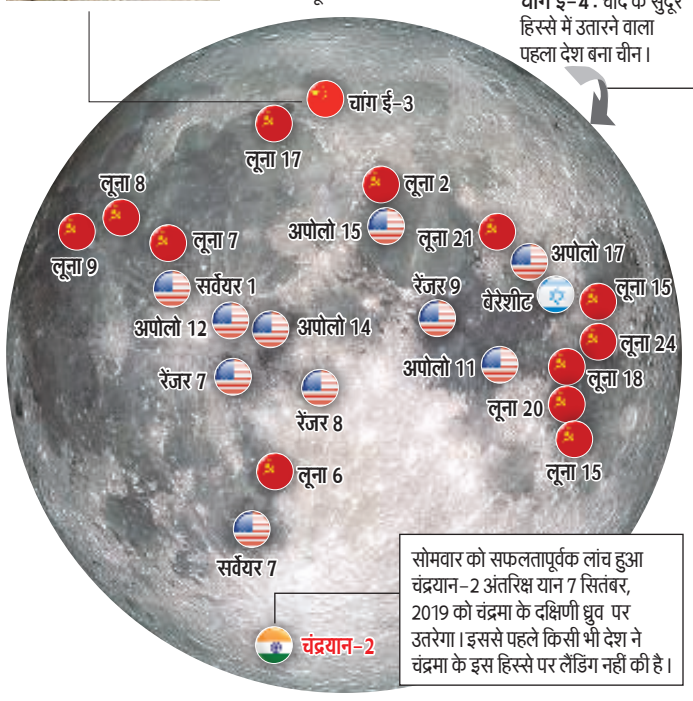

सोमवार को सफलतापूर्वक लांच हुआ चंद्रयान-2 अंतरिक्ष यान 7 सितंबर, 2019 को चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर उतरेगा। इससे पहले किसी भी देश ने चंद्रमा के इस हिस्से पर लैंडिंग नहीं की है।

अमेरिका
रेंजर प्रोग्राम : 1964 में मानव रहित मिशनों का उद्देश्य चंद्रमा की सतह की पहली क्लोज-अप तस्वीरों को प्राप्त करना था।
लांचिंग
रेंजर 7 : जुलाई 1964
रेंजर 8 : फरवरी, 1965
रेंजर 9 : मार्च 1965
सर्वेयर प्रोग्राम : यह नासा का एक प्रोग्राम था, जिसने जून 1966 से जनवरी 1968 तक चंद्रमा के सतह पर सात रोबोटिक अंतरिक्ष यान भेजे। इसका प्राथमिक लक्ष्य चंद्रमा पर सॉफ्ट लैंडिंग करना था।
लांचिंग
सर्वेयर 1 : जुन, 1966
सर्वेयर 2 : सितंबर, 1966
सर्वेयर 3 : अप्रैल, 1967
सर्वेयर 4 : जुलाई, 1967
सर्वेयर 5 : सितंबर, 1967
सर्वेयर, 6 : नवंबर, 1967
सर्वेयर 7 : जून, 1968
अपोलो प्रोग्राम : इस प्रोग्राम के तहत नासा ने पहली बार मानव को चंद्रमा की सतह पर उतारा था।
अपोलो 11 : जुलाई, 1969
अपोलो 12 : नवंबर, 1969
अपोलो 14 : फरवरी, 1971
अपोलो 15 : अगस्त, 1971
अपोलो 16 : अप्रैल, 1972
अपोलो 17 : दिसंबर, 1972
जुलाई, 1969-चांद की सतह पर कदम रखने वाले नील आर्मस्ट्रांग पहले इंसान थे।

सोवियत संघ
लूना प्रोग्राम : 1959 और 1976 के बीच सोवियत संघ द्वारा चंद्रमा पर भेजे गए रोबोट अंतरिक्ष यान मिशनों की एक श्रृंखला थी।
लूना 2 : सितंबर, 1959
लूना 7 : अक्टूबर, 1965
लूना 8 : दिसंबर, 1965
लूना 9 : जनवरी, 1966
लूना 13 : दिसंबर, 1966
लूना 15 : जुलाई, 1969
लूना 16 : सितंबर, 1970
लूना 17 : नवंबर, 1970
लूना 18 : सितंबर, 1971
लूना 20 : फरवरी, 1972
लूना 21 : जनवरी, 1973
लूना 23 : अक्टूबर, 1974
लूना 24 : अगस्त, 1976

इजरायल
बेरेशीट : इजरायल का पहला चंद्र अभियान था। चंद्रमा की सतह पर उतरने की कोशिश में यह क्रैश हो गया था। यह दुनिया का पहला निजी चंद्र अभियान था। 22 फरवरी, 2019 को इसे लांच किया गया था।

चंद्रयान-2 के अहम अंग

चंद्रयान-2 को चंद्रमा की कक्षा में सफलतापूर्वक स्थापित करने के साथ ही भारत इतिहास रच देगा। 48 दिन की दूरी और चांद पर भारत। चांद पर पहुंचने और वहां प्रयोग करने के लिए चंद्रयान-2 के तीन अहम अंग हैं।

ऑर्बिटर : 2,379 किलोग्राम वजन वाला ऑर्बिटर एक साल तक चांद की परिक्रमा करेगा। इसमें आठ पेलोड लगे हैं, जो अलग-अलग प्रयोगों को अंजाम देंगे। यह ऑर्बिटर बेंगलुरु स्थित इंडियन डीप स्पेस नेटवर्क (आइडीएसएन) से संपर्क साधने में सक्षम होगा। इसके अलावा यह लैंडर के संपर्क में भी रहेगा।

लैंडर विक्रम : 1,471 किलोग्राम वजनी लैंडर का नाम भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान के जनक कहे जाने वाले विक्रम साराभाई के नाम पर रखा गया है। इस पर तीन पेलोड लगे हैं। यह दो मीटर प्रति सेकंड की गति से चांद की सतह पर उतरेगा। इसे चांद की एक दिन की अवधि तक काम करने के लिए तैयार किया गया है। धरती के हिसाब से यह अवधि 14 दिन की बनेगी। यह लैंडर बेंगलुरु में आइडीएसएन के साथ-साथ ऑर्बिटर और रोवर से संपर्क स्थापित कर सकेगा।

रोवर प्रज्ञान : रोवर प्रज्ञान का नाम संस्कृत से लिया गया है, जिसका अर्थ होता है ज्ञान। 27 किलोग्राम वजन वाले इस रोवर पर दो पेलोड लगे हैं। यह छह पहियों वाला एक रोबोटिक वाहन है। सौर ऊर्जा की मदद से यह एक सेंटीमीटर प्रति सेकंड की गति से चल सकेगा। इसे भी चांद के एक दिन यानी धरती के 14 दिन के बराबर काम करने के लिए बनाया गया है। इस पूरी अवधि में यह चांद की सतह पर कुल 500 मीटर की दूरी तय करेगा।

ऐसा है इसरो का बाहुबली

चंद्रयान-2 को अपने कंधे पर उठाकर चांद की ओर रवाना करने की जिम्मेदारी इसरो ने अपने 'बाहुबली' को दी थी। 'बाहुबली' इसरो का सबसे शक्तिशाली रॉकेट है। इसका नाम जियोसिंक्रोनस सेटेलाइट लांच व्हीकल-मार्क 3 (जीएसएलवी-एमके 3) है। यह चार टन वजनी सेटेलाइट ले जाने में सक्षम है। इसका वजन 640 टन और ऊंचाई 43.43 मीटर है।

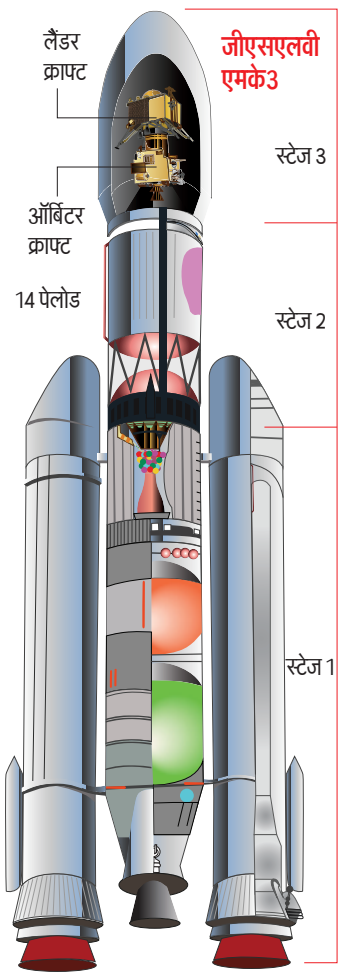

स्पेस रेस की ओर बढ़ते भारत और चीन

21वीं सदी की स्पेस रेस में अमेरिका और रूस जैसे परंपरागत खिलाड़ियों के साथ-साथ चीन और भारत जैसे नए खिलाड़ी भी मैदान में हैं, जो मुकाबले को और ज्यादा रोचक बना रहे हैं। जहां भारत ने आज चंद्रयान-2 को सफलतापूर्वक लांच करके इस रेस में अपना पहला कदम बढ़ा दिया है। वहीं जनवरी, 2019 को चंद्रमा के सुदूर हिस्से में अंतरिक्ष यान उतारकर चीन दुनिया का पहला देश बन गया है। एशिया की यह दोनों महाशक्तियां अंतरिक्ष पर फतह के लिए और व्यापक योजना बना रही हैं।

नई अंतरिक्ष शक्ति बनता भारत

कभी संपेरों का देश कहकर भारत का उपहास उड़ाने वाले पश्चिमी देश आज भारत को अंतरिक्ष की दुनिया की एक बड़ी ताकत मानने लगे हैं। अंतरिक्ष की गहराइयों और उसमें छिपे रहस्यों का पता लगाने के लिए भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने भी कमर कस ली है।

पानी की खोज की

अपने चंद्रयान-1 मिशन के जरिये भारत पहला देश है, जिसने चंद्रमा की सतह पर पानी के अणुओं की खोज की।

मंगल ग्रह पर पहुंचने वाला पहला एशियाई देश बना

2014 में भारत लाल ग्रह पर पहुंचने वाला पहला एशियाई देश बन गया। इस अभियान की लागत मात्र 7.4 करोड डॉलर यानी 450 करोड़ रुपये थी।

एक साथ भेजे 104 उपग्रह

2017 में भारतीय अंतरिक्ष एजेंसी इसरो ने अपने एक और किफायती मिशन के तहत एक साथ कई देशों के 104 उपग्रहों को अंतरिक्ष में भेजकर का नया रिकॉर्ड बनाया।

गगनयान अगला लक्ष्य

चंद्रयान-2 के बाद भारत अपना गगनयान अंतरिक्ष भेजेगा। भारत की धरती से किसी भारतीय नागरिक को अंतरिक्ष में तिरंगा फहराने के लिए ले जाने वाले गगनयान मिशन को साल 2022 तक पूरा करने का लक्ष्य बनाया गया है।

चीन की अंतरिक्ष योजना

चीन अगले वर्ष एक और अंतरिक्ष यान को चंद्रमा पर भेजने की योजना बना रहा है। 2030 तक मानव को चंद्रमा पर भेजने की योजना है। अमेरिका के बाद चीन ऐसा करने वाला दूसरा देश बन जाएगा। बीजिंग तियांगोंग कार्यक्रम पर भी बड़ा खर्च कर रहा है, जो एक स्थायी अंतरिक्ष स्टेशन से जुड़ा कार्यक्रम है, जिसका निर्माण लगभग 2022 तक पूरा करने की योजना है।

अंतरिक्ष स्टेशन करेगा स्थापित

इसरो के अध्यक्ष सिवन ने भी जून में घोषणा की थी कि भारत 2030 तक एक स्वतंत्र अंतरिक्ष स्टेशन स्थापित करने की योजना बना रहा है।

शुक्र की परिक्रमा

भारत की अंतरिक्ष एजेंसी इसरो 2023 तक शुक्र की परिक्रमा करने के लिए एक अंतरिक्ष यान भेजने की योजना बना रही है।

नारी शक्ति ने बनाया भारत को अंतरिक्ष विज्ञान की हस्ती

चंद्रयान-2 के जरिये भारत अपनी कामयाबी की एक नई इबारत विश्व पटल पर लिखने को निकल चुका है। पूरी दुनिया की निगाहें देश के इस मिशन पर हैं, लेकिन अहम बात यह है कि इस अति महत्वाकांक्षी अभियान की कमान देश की नारी शक्ति के हाथों में है। इनमें दो बड़े नाम हैं रितु करिधाल श्रीवास्तव और मुथैया विनीता। यान की उड़ान और उसे सकुशल चांद पर उतारने का जिम्मा इनके ही पास है। इसके अलावा कुछ और महिलाएं भी हैं, जिन्होंने इसरो के विभिन्न अभियानों में अपनी अहम भूमिका निभाई। एक नजर देश की इन वरिष्ठ महिला वैज्ञानिकों पर...

नासा और इसरो में महिलाओं की स्थिति

एजेंसी	कुल लोग	महिलाएं
नासा	17,219	5,000 (30 फीसद करीब)
इसरो	17,000	3,500 (20 फीसद करीब)

15% महिलाओं ने ही नासा के ग्रहीय अभियानों में योगदान दिया है, जबकि इसरो के ग्रहीय अभियानों में 20 से 30 फीसद महिलाओं ने भूमिका निभाई है।

लखनऊ की रितु हैं मिशन निदेशक

रूमा सिन्हा ● लखनऊ

बड़े सपने देखो और उसे पूरा करने के लिए कड़ी मेहनत करो। सफलता की कहानी चांद पर भी लिखी जा सकती है। लखनऊ की बेटी रितु करिधल श्रीवास्तव ने इस वाक्य को जीवन में ऐसे उतारा कि आज वास्तव में उन्होंने सफलता की उड़ान चांद की ओर भर दी है। रितु चंद्रयान-2 की मिशन डायरेक्टर हैं। सफल लांचिंग के बाद इसरो की इस वरिष्ठ वैज्ञानिक के गृह नगर में जश्न का माहौल है।

रितु के भाई-बहन राजाजीपुरम स्थित पैतृक आवास में रहते हैं। भाभी विनुशी कहती हैं कि रितु ने न केवल परिवार, बल्कि देश का नाम रोशन किया है। परिवार और शहर के लिए यह समय बेहद गौरव का है। हम सभी मिशन के सफल होने की प्रार्थना कर रहे हैं।

कुछ ऐसा ही खुशनुमा माहौल लखनऊ विश्वविद्यालय के भौतिकी विभाग का भी है। यहां के अध्यापक अपनी इस पूर्व छात्रा पर गर्व महसूस कर रहे हैं। लविवि की डॉ. पूनम टंडन कहती हैं, एल्यूमनाई की सफलता से सभी विद्यार्थी उत्साहित हैं। हमें उन पर गर्व है और इस बात की खुशी कि उन्होंने यहां से शिक्षा प्राप्त की और देश को चांद तक का सफर पूरा कराने में अहम रोल निभाया।

बड़े सपने देखने वालीं

रितु की शुरुआती पढ़ाई सेंट एगनिस स्कूल और नवयुग कन्या विद्यालय से हुई। इसके बाद लखनऊ विश्वविद्यालय से एमएससी की। फिर वर्ष 1997 में प्रो. मनीषा गुप्ता के अंडर में पीएचडी शुरू की। प्रो. गुप्ता बताती हैं कि वह बेहद मेधावी छात्रा थीं। उनके बड़े-बड़े सपने थे, जिनके लिए बहुत मेहनत करती थीं। प्रो. गुप्ता के मुताबिक, रिसर्च को एक साल ही हुआ था कि रितु ने ग्रेजुएट एप्टीट्यूड टेस्ट (गेट) पास कर लिया। इसके बाद वह बंगलुरु चली गईं। अंतरिक्ष विज्ञान में रुचि थी। इसलिए रितु ने इसरो ज्वाइन किया और फिर कभी कदम नहीं रुके। वह 2007 में इसरो की प्रथम युवा वैज्ञानिक चुनी गईं। विभिन्न अभियानों का हिस्सा रहीं रितु ने मंगलयान मिशन में डिप्टी ऑपरेशन डायरेक्टर की जिम्मेदारी का निर्वाह किया।

मंगलयान अभियान में भी अहम भूमिका

पांच नवंबर, 2013 को मंगलयान उपग्रह को लांच किया गया था, जो 24 सितंबर, 2014 को मंगल की कक्षा में पहुंचा था। रितु ने अभियान की सफलता के बाद कहा था कि यह मेरी और मेरी टीम की जिम्मेदारी थी कि सुनिश्चित किया जाए कि पूरी प्रक्रिया उसके तय तरीके से हो। यह पहला भारतीय उपग्रह था, जिसमें खुद की खामियों को तलाशने और उन्हें दूर करने की क्षमता थी। सबसे महत्वपूर्ण बात, महिला वैज्ञानिकों ने इस मिशन को सफल बनाने के लिए पुरुष वैज्ञानिकों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम किया। रितु ने अपनी कामयाबी का श्रेय बड़े ही सीधे अंदाज में अपने परिवार को दिया था। उन्होंने कहा था, 'मैं लखनऊ की एक साधारण लड़की थी, जो बाहरी अंतरिक्ष के बारे में जानने के लिए उत्सुक थी और जिसे मंगल मिशन के साथ जुड़े रहने का मौका मिला। परिवार के समर्थन के बिना महिलाएं अपने लक्ष्यों को हासिल नहीं कर सकतीं। जब आपका साथी आपका समर्थन करता है, तो आप बड़ी सी बड़ी समस्याओं को दूर कर सकते हैं। पति अविनाश, बेटा आदित्य और बेटी अनीषा मेरे हर प्रोजेक्ट की अहमियत को समझते हैं और यही वजह है कि मुझे उनकी चिंता नहीं करनी पड़ती।' यहां इस बात का उल्लेख बेहद जरूरी है कि विज्ञान में पारंगत रितु का भारतीय परंपराओं में भी पूरा यकीन है। वह पूरी निष्ठा से पति की लंबी उम्र के लिए वटसावित्री का व्रत भी रखती हैं।

मिशन की प्रोजेक्ट डायरेक्टर मुथैया विनीता

जेएनएन, नई दिल्ली : चंद्रयान-2 के प्रोजेक्ट डायरेक्टर की जिम्मेदारी इसरो की दूसरी महिला वैज्ञानिक मुथैया विनीता को सौंपी गई है। इलेक्ट्रॉनिक्स सिस्टम इंजीनियर मुथैया करीब दो दशक से इसरो का हिस्सा हैं। इस दौरान विभिन्न शोध और अनुसंधान से उनका सीधा जुड़ाव रहा। बात चाहे कार्टोसैट-1, ओशनसैट-2 की हो या फिर मेघा-ट्रोपिक रिमोट-सेंसिंग उपग्रहों के लिए डाटा सिस्टम को तैयार करने की, सभी में उनकी अहम भूमिका रही है। उनकी योग्यता को देखते हुए ही 2006 में एस्ट्रोनॉटिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया ने उन्हें सर्वश्रेष्ठ महिला वैज्ञानिक के रूप में चुना। उपग्रह केंद्र में डिजिटल सिस्टम समूह (यूआर राव स्पेस सेंटर में) टेलीमेट्री व टेलीकमांड डिवीजनों का नेतृत्व कर चुकीं विनीता को अन्नादुराई के सेवानिवृत्त होने के बाद करीब 18 महीने पहले चंद्रयान-2 की परियोजना निदेशक बनाया गया। बकौल अन्नादुराई एक परियोजना के दृष्टिकोण से यह पहला मौका है कि वह प्रभारी हैं, लेकिन इससे पहले वह रिमोट-सेंसिंग उपग्रहों के लिए डाटा हैंडलिंग सिस्टम बनाने की अगुआई कर चुकी हैं। यह निश्चित रूप से उनके लिए एक बड़ा मोड़ है।

...और भी हैं नाम

टीके अनुराधा : 1982 में इसरो से जुड़ीं टीके अनुराधा वरिष्ठ वैज्ञानिक हैं। वह पहली महिला थीं, जिन्हें सेटेलाइट प्रोजेक्ट का डायरेक्टर बनने का गौरव हासिल हुआ। जीसैट-12 और जीसैट-10 की लांचिंग इन्हीं की देखरेख में हुई। वर्तमान में यूआर राव स्पेस सेंटर में जियोसैट प्रोग्राम डायरेक्टर के रूप में काम कर रही हैं।

एन वलारमठी : इसरो में सेटेलाइट की लांचिंग इनकी देखरेख में होती है। वलारमठी भारत के पहले राडार इमेजिंग सेटेलाइट रिसैट-1 की प्रोजेक्ट डायरेक्टर थीं। वह पहली थीं, जिन्हें तमिलनाडु द्वारा दिया जाने वाला अब्दुल कलाम अवार्ड प्राप्त हुआ। वह इनसैट-2ए, आइआरएस-आइसी, आइआरएस-आइडी जैसे प्रमुख उपग्रह मिशन में शामिल रहीं।

वीआर ललितांबिका : ललितांबिका गगनयान मिशन की कॉर्डिनेशन प्रमुख हैं। वह इस मानव अंतरिक्ष मिशन में अहम भूमिका निभा रही हैं। उन्नत लांचर तकनीक में विशेषज्ञ ललितांबिका ने रिकॉर्ड 104 उपग्रहों के प्रक्षेपण में अहम भूमिका निभाई है। इनका घर थुंबा परीक्षण केंद्र के नजदीक था। इसलिए वह इसरो की ओर आकर्षित हुईं।

जिन्होंने दिया मंगलयान मिशन में योगदान

सीथा सोमसुंदरम : सीथा इसरो की प्रमुख अंतरिक्ष विज्ञान उपकरण विशेषज्ञ हैं। इन्होंने मंगलयान में पेलोड के आकार तय करने में अहम भूमिका निभाई थी। वर्तमान में अंतरिक्ष विज्ञान कार्यक्रम कार्यालय की प्रोजेक्ट डायरेक्टर हैं।

नंदिनी हरिनाथ : नंदिनी की विज्ञान में रुचि बचपन में मशहूर टीवी सीरीज 'स्टार ट्रेक' देखकर पैदा हुई थी। वह मंगलयान मिशन की डिप्टी ऑपरेशन डायरेक्टर रहीं। उन्होंने भारत के पहले राडार इमेजिंग सेटेलाइट रिसैट-1 की ऑपरेशन डायरेक्टर की भूमिका निभाई।

मीनल रोहित : मीनल मंगलयान मिशन में प्रोजेक्ट मैनेजर थीं। उन्होंने मंगलयान मिशन के लिए मीथेन सेंसर बनाने पर काम किया था। उस मिशन के दौरान वह अपनी टीम के साथ एक कमरे में 18-18 घंटे काम करती थी। वर्तमान में इसरो में सिस्टम इंजीनियर हैं।

मोमिता दत्ता : मोमिता भी मंगल मिशन में प्रोजेक्ट मैनेजर थीं। उन्होंने मंगल पर जाने वाले पेलोड पर काम किया था। वर्तमान में अपनी टीम के साथ ऑप्टिकल साइंस की दिशा में काम कर रही हैं, जो मेक इन इंडिया की पहल का हिस्सा है। देश को अंतरिक्ष की दुनिया में स्थापित करने का इनका जज्बा किसी को भी प्रेरित कर सकता है।

सुबह जल्दी उठने के लिए घड़ी में बांध देते थे पानी से भरा मग

इनसे मिलिए

प्रसून शुक्ल, बरेली

चंद्रयान–2 में अहम भूमिका निभाई है बदायूं के सतपाल अरोरा ने, जिनकी अगुआई में 300 लोगों का दल इस बात को सुनिश्चित करने में लगा है कि यान में लगे सभी सेंसर सुचारू रूप से काम करें। आइए मिलते हैं, इसरो के इस वरिष्ठ वैज्ञानिक से और जानते हैं उनके यहां तक के सफर के बारे में ...

सुबह नींद जल्दी खुल जाए इसके लिए अलार्म घड़ी के साथ पानी के मग को इस तरह बांध कर सोते थे कि अलार्म बजते ही सारा पानी उनके मुंह पर आकर गिरे। बचपन में खौलती चाय के बुलबुले उन्हें आकर्षित करते थे। अब वह इसरो में 300 लोगों के दल का नेतृत्व कर रहे हैं और चंद्रयान-2 में इस बात को सुनिश्चित करने में लगे हैं कि सभी सेंसर सुचारू रूप से काम करें। हम बात कर रहे हैं उत्तर प्रदेश के बदायूं के उझानी निवासी सतपाल अरोरा की। उनका इसरो तक का सफर बेहद शानदार रहा है।

सतपाल बताते हैं कि उनके पिता चरनजीत सिंह अमृतसर से बदायूं के उझानी में आए और यहीं बस गए। अपने बचपन को याद करते हुए सतपाल कहते हैं कि उन्हें हमेशा अलग करने का शौक था। छोटी-छोटी चीजें उन्हें लुभाती थीं। मसलन, खौलती चाय में उठते बुलबुले उन्हें आकर्षित करते थे। वह सोचते थे कि कैसे चाय में बुलबुले बनते हैं और कहां खो जाते हैं। वह चाय में थर्मामीटर डालकर उसकी जांच करते। सतपाल हंसते हुए कहते हैं, बचपन में ऐसी शैतानियों के लिए अक्सर घरवालों की डांट पड़ती थी। शायद उनकी यह अलग सोच ही थी, जिसने उन्हें वैज्ञानिक बनने की दिशा में आगे बढ़ाया।

सतपाल अरोरा उर्फ मिक्कू की पढ़ाई उझानी के न्यू लिटिल एंजिल स्कूल और एमजीएनपी इंटर कॉलेज से हुई। इसके बाद भोपाल में 80 फीसद अंकों के साथ गोल्ड मेडल हासिल कर बीटेक पूरी की। तभी चौधरी चरण सिंह मेरठ विश्वविद्यालय में पढ़ाने का मौका मिला। वहां उन्होंने तीन साल जॉब की। 2007 में ऑल इंडिया साइंटिस्ट एंट्री एग्जाम पास कर इसरो के साथ जुड़ गए।

साहित्य में भी गहरी रुचि

सतपाल भले ही वैज्ञानिक हैं, लेकिन साहित्य में भी उनकी गहरी रुचि है। इसकी वजह शकील बदायुनी के जिले से उनका जुड़ाव है। प्रख्यात गीतकार शकील बदायुनी और उर्मिलेश शंखधर बदायूं के ही थे। उन्हीं की वजह से सतपाल भी साहित्य की ओर आकर्षित हुए। सतपाल बताते हैं कि उनकी कुछ रचनाओं को इन हाउस पुरस्कार मिल चुका है।

बदायूं के सतपाल अरोरा, जिन्होंने चंद्रयान–2 अभियान में अहम भूमिका निभाई है। जागरण आर्काइव

तीन देशों में भारत के बनाए सिस्टम से होगी निगरानी

प्रसून शुक्ल, बरेली

अमेरिका, रूस और चीन के बाद अंतरिक्ष में चौथी महाशक्ति के रूप में विकसित हुए भारत के चंद्रयान-2 प्रोजेक्ट पर देश-दुनिया की निगाहें हैं। चंद्रमा की आर्बिट में पहुंचने तक यह बेहद संवेदनशील प्रक्रिया के अंतर्गत निगहबानी में रहेगा। तीन देशों में भारत के बनाए गए खास सिस्टम इस पर नजर रखेंगे। इसरो के वरिष्ठ वैज्ञानिक और चंद्रयान-2 प्रक्षेपण टीम का हिस्सा रहे बदायूं निवासी सतपाल अरोरा से इस बारे में फोन पर बात हुई।

उन्होंने बताया कि छह और सात सितंबर को चंद्रमा की आर्बिट में पहुंचने की प्रक्रिया के अंतर्गत चंद्रयान-2 की हर गतिविधि पर निगाह रखने की जिम्मेदारी वैसे तो इसरो पर ही है, लेकिन इसरो की देखरेख में अमेरिका, रूस और चीन में बने भारतीय स्पेस सेंटर भी इस पर नजर रखेंगे।

अर्थ आर्बिट से मून आर्बिट तक पहुंचने के दौरान प्रत्येक गतिविधि पर रहेगी नजर

चंद्रयान–2 के प्रक्षेपण की पूरी प्रक्रिया पर इसरो में काफी उत्साह है। यह अपने लक्ष्यों को पूरा करेगा और हमें भरोसा है कि दुनिया के सामने भारत नया कीर्तिमान स्थापित करेगा। यह वन टीम वन ड्रीम है।

–सतपाल अरोरा उर्फ मिक्कू, सीनियर साइंटिस्ट, इसरो

अर्थ आर्बिट यानी पृथ्वी की कक्षा से मून की आर्बिट अर्थात चंद्रमा की कक्षा में पहुंचने पर चंद्रयान-2 की गति में परिवर्तन होंगे। इसको लेकर पूरी दुनिया के खगोल शास्त्रियों में काफी उत्साह है। वे चंद्रयान-2 की प्रत्येक गतिविधि को देखने के लिए अपने-अपने तरह से जुटे हुए हैं। चंद्रमा पर लैंडिंग करने के बाद चंद्रयान-2 का सक्रिय काल एक साल तय है। हालांकि यह अपनी मियाद से भी अधिक काम कर सकता है।

बड़ी सफलता ▸ प्रधानमंत्री ने फोन कर इसरो के वैज्ञानिकों को दी बधाई

गौरवशाली इतिहास का स्वर्णिम दिन : पीएम मोदी

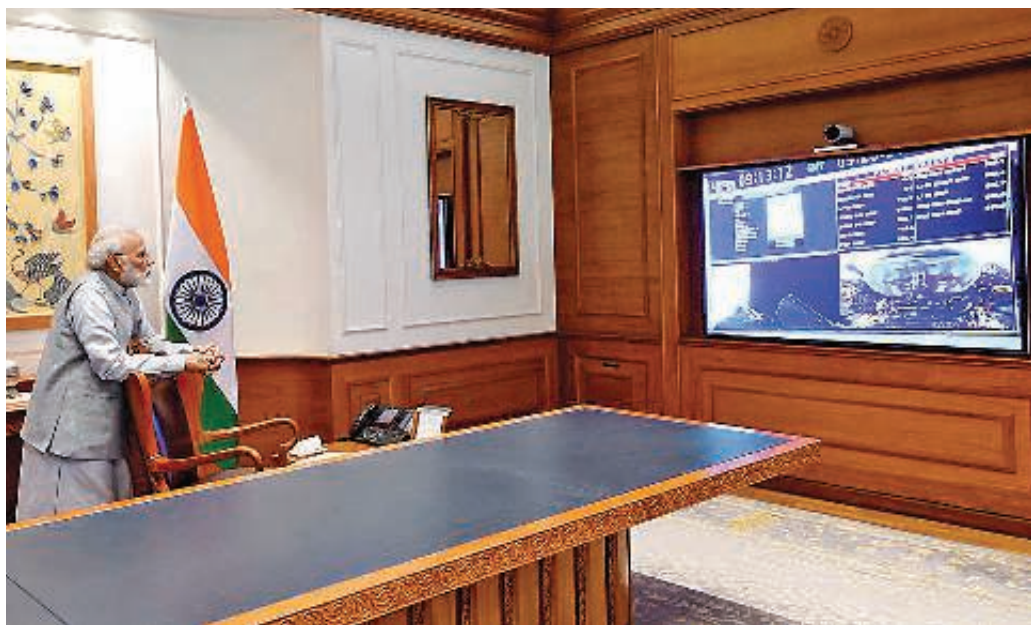

आंध्र प्रदेश के श्रीहरिकोटा स्थित सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से चंद्रयान–2 को इसरो के सबसे शक्तिशाली रॉकेट जियोसिंक्रोनस सेटेलाइट लांच व्हीकल–मार्क 3 (जीएसएलवी–एमके3) के साथ सफलतापूर्वक प्रक्षेपित किया गया। इसे नई दिल्ली में सोमवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लाइव देखा। प्रेट्र

अंतरिक्ष शक्ति के रूप में भारत को स्थापित करने में मिलेगी मदद

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने चंद्रयान-2 के सफल प्रक्षेपण के लिए इसरो के वैज्ञानिकों को बधाई दी है। प्रधानमंत्री ने इस अभियान में लगे वैज्ञानिकों से भी बात की। उन्होंने कहा कि चंद्रयान-2 का प्रक्षेपण भारतीय वैज्ञानिकों के कौशल और विज्ञान के क्षेत्र में नई ऊंचाइयां छूने के लिए 130 करोड़ देशवासियों के दृढ़ संकल्प को प्रकट करता है। सिलसिलेवार ट्वीट में उन्होंने कहा कि आज हर भारतीय गौरवान्वित महसूस कर रहा है और आज का दिन भारत के गौरवशाली इतिहास में सुनहरे अक्षरों में दर्ज हो गया है।

चंद्रयान-2 की सफलता से इसरो के अंतरिक्ष के भविष्य के दूसरे अभियानों को भी बल मिलेगा। इसरो 2022 में मानव को अंतरिक्ष में भेजने के लिए गगनयान की घोषणा कर चुका है और इसकी तैयारियां भी शुरू हो गई हैं। इसके साथ ही इसरो अंतरिक्ष में अपना स्पेस स्टेशन बनाने की भी घोषणा कर चुका है। चंद्रयान-2 के जटिल अभियान की सफलता के बाद इसरो के किसी भी ग्रह पर अंतरिक्ष यान उतारने की क्षमता से लैस हो गया है। इसरो के वैज्ञानिक खुलेआम इसे स्वीकार भी कर रहे हैं। इससे यह भी स्थापित हो गया है कि इसरो अब अमेरिका, रूस और चीन के बाद अंतरिक्ष में एक बड़ी ताकत है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के अनुसार, देशवासियों के लिए सबसे खुशी की बात यह है कि चंद्रयान-2 में स्वदेशी प्रणाली का इस्तेमाल हुआ है। उन्होंने कहा कि यह मिशन, 'दिल से भारतीय, भावना में भारतीय है।' उन्होंने उम्मीद जताई कि ऐसी ऐतिहासिक उपलब्धियों से देश के होनहार नौजवान विज्ञान के प्रति गुणवत्तापूर्ण अनुसंधान और नवोन्मेष के लिए प्रेरित होंगे। 'चंद्रयान की बदौलत भारत के चंद्रमा कार्यक्रम को बड़ा बढ़ावा मिलेगा। चंद्रमा को लेकर हमारी जानकारी भी बढ़ेगी।'

चंद्रयान-2 को दुनिया के दूसरे मिशनों से अलग बताते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि यह चंद्रमा के उस हिस्से का अध्ययन करेगा, जहां अभी तक किसी देश का मिशन नहीं गया है। इससे चंद्रमा के रहस्यों को समझने में मदद मिलेगी। प्रधानमंत्री ने चंद्रयान-2 के प्रक्षेपण का लाइव प्रसारण देखते हुए अपनी तस्वीर भी जारी की है।

नासा ने इसरो को बधाई दी

वाशिंगटन, प्रेट्र : अमेरिकी स्पेस एजेंसी नासा ने चंद्रयान-2 के सफल प्रक्षेपण पर भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) को बधाई दी है। नासा ने कहा है कि उसे इसरो द्वारा चांद के दक्षिणी ध्रुव पर किए जाने वाले अध्ययन के नतीजों का इंतजार है।

नासा ने ट्वीट किया, 'चंद्रमा का अध्ययन करने के मिशन चंद्रयान-2 के प्रक्षेपण पर इसरो को बधाई। हमें अपने डीप स्पेस नेटवर्क का उपयोग करके आपके मिशन का समर्थन करने पर गर्व है और हम यह जानने को उत्सुक हैं कि चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव के बारे में आप क्या पता लगाते हैं, जहां हम कुछ वर्षों में अपने आर्टमिस मिशन से अंतरिक्ष यात्रियों को भेजेंगे।

पता चलेगा चांद पर कितनी तीव्रता के आ रहे भूकंप

सुमन सेमवाल, देहरादून

▸ चंद्रयान–दो में चांद पर भूकंप का पता लगाने को स्थापित किए गए सिस्मोग्राफ

▸ लांचिंग की शुरुआत के समय इसरो ने वाडिया संस्थान से ली थी सलाह

चंद्रयान-दो चांद पर पानी की मौजूदगी, खनिजों की उपस्थिति समेत तमाम संभावनाओं की खोज तो करेगा ही। इसके साथ ही यह भी पता लगाएगा कि धरती के भूकंप की तरह चांद पर भूकंप आते हैं या नहीं। यदि चांद पर भूकंप आ रहे हैं तो उनकी तीव्रता क्या है। उनका पता लगाने के लिए चंद्रयान-दो में सिस्मोग्राफ लगाए गए हैं। खास बात यह कि सिस्मोग्राफ लगाने को लेकर भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने वाडिया हिमालय भूविज्ञान संस्थान से सलाह ली थी।

वाडिया हिमालय भूविज्ञान संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. सुशील कुमार रोहेला ने बताया कि कुछ साल पहले जब चंद्रयान-दो की लांचिंग की तैयारी शुरू की गई थी, तब इसरो के शीर्ष स्तर के एक अधिकारी वाडिया आए थे। उन्होंने चंद्रयान-दो के बारे में जानकारी देते हुए कहा था कि वह चांद पर भूकंप का भी अध्ययन करना चाहते हैं। इसके लिए इसरो ऐसे सिस्मोग्राफ चाह रहा था, जिनका वजन कम से कम हो। ताकि चंद्रयान पर उसके भार का असर न पड़े। इसके साथ ही इसरो की यह भी मांग थी कि सिस्मोग्राफ न्यूनतम से लेकर उच्चतम फ्रीक्वेंसी पर काम करने वाले होने चाहिए। इस पर वाडिया के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. रोहेला ने उन्हें संस्थान की भूकंप संबंधी प्रयोगशाला का भी भ्रमण कराया था। बताया था कि उनके पास जो सिस्मोग्राफ हैं, वह 0.003 से 50 हट्र्ज पर काम करते हैं। कम भार वाले सिस्मोग्राफ के लिए वाडिया संस्थान ने इसरो को कुछ कंपनियों के नाम भी सुझाए थे और कहा था कि चंद्रयान-दो के लिए वह अलग से भी सिस्मोग्राफ तैयार कर सकती हैं।

नासा कर चुकी चांद पर भूकंप आने का दावा

वाडिया के वरिष्ठ विज्ञानी डॉ. रोहेला बताते हैं कि अमेरिका की अंतरिक्ष अनुसंधान एजेंसी नासा चांद पर भूकंप आने का दावा कर चुकी है। हालांकि, अब भारत भी निकट भविष्य में इस पर आधिकारिक रूप से जानकारी दे पाएगा। नासा के डाटा की बात करें तो अध्ययन की अवधि में वहां रिक्टर पैमाने पर 4.5 से 5.5 मैग्नीट्यूट के भूकंप रिकॉर्ड किए गए। साथ ही पता चला था कि वहां चार प्रकार के भूकंप आते हैं। सबसे गहरे भूकंप चांद की सतह से 700 किलोमीटर नीचे, दूसरे चंद्रकंप उल्काओं के टकराने से आ रहे थे, तीसरे प्रकार के चंद्रकंप थर्मल कंप थे, जो कि संभवतः चंद्रमा की सतह पर सूरज की किरणें पड़ने और उसके फैलने से आ रहे थे। वहीं, चौथे प्रकार के कंपन सतह से 20-30 किलोमीटर नीचे से आ रहे थे।

चंद्रयान के डाटा पर अध्ययन करेगा वाडिया

वाडिया संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. सुशील कुमार के मुताबिक चंद्रयान-दो से प्राप्त भूकंप के डाटा को इसरो से प्राप्त किया जाएगा। इसके बाद अध्ययन कर पता लगाया जाएगा कि चांद पर कंपन की स्थिति क्या है और वहां कितने अंतराल में चांद पर भूकंप आ रहे हैं।

बेहद शक्तिशाली भूकंप जितना है चंद्रकंप का अंतराल

नासा के अध्ययन के हवाले से डॉ. रोहेला ने बताया कि पहले तीन प्रकार के चांद के भूकंप आमतौर पर हल्के व कम हानिकारक हैं। मगर, चौथे प्रकार के कंपन पृथ्वी के भूकंप की तुलना में पांच गुना समय तक रहते हैं। सामान्य रूप में भूकंप 20 से 30 सेकंड तक रहते हैं, जबकि कुछ भूकंप 10 मिनट तक भी रहे। इस अंतराल तक वही भूकंप रहते हैं, जो बेहद विनाशकारी होते हैं। इसका मतलब यह है कि जब कभी चांद में भवन निर्माण के बारे में सोचा जाएगा तो बुनियादी ढांचा वैसा ही बनाना पड़ेगा, जैसा हिमालय में अपेक्षित है।

मेरठ के सर्किट को लेकर उड़ा चंद्रयान–2

संतोष शुक्ल, मेरठ : चंद्रयान-2 के इलेक्ट्रानिक पैनल में जिस तार का इस्तेमाल हुआ है, वह 300 डिग्री से लेकर माइनस 60 डिग्री का तापमान भी सहन कर सकता है। इस तार में कॉपर पर सिल्वर की परत चढ़ाकर इंसुलेटर बनाया जाता है। पीटीएफई यानी पॉली टेट्रा फ्लेरो इथाइलीन एक खास किस्म का पॉलीमर वायर है, जिसे दो सौ वर्षों तक जमीन में दबा दें तो भी खराब नहीं होता। मेरठ के परतापुर औद्योगिक क्षेत्र में स्थित पीटीएफई कंपनी तीन दशक से पॉलीमर तार बनाती है।

विशेष पॉलीमर या टेफ्लॉन तारों का प्रयोग इसरो, डीआरडीओ जैसे संस्थानों में किया जाता है। इसका इस्तेमाल लड़ाकू विमानों और मेट्रो रेल में भी किया जाता है। कंपनी के मैनेजिंग डायरेक्टर मुकेश मित्तल ने बताया कि ये तार इसरो के लांचिंग पैड पर लगे इलेक्ट्रोनिक पैनलों में भी लगाए जाते हैं। इसरो के पेलोड सेक्शन में काम करने वाले वैज्ञानिक मनोज तिवारी का कहना है कि चंद्रयान-2 को ऊंचाई तक ले जाने के लिए भारी वजन के प्रक्षेपण यान का प्रयोग हुआ है।

इस प्रक्रिया में बेहद पतले और उच्च ताप में भी न पिघलने वाले तारों का इस्तेमाल होता है। कंपनी के पार्टनर राजीव सिंघल ने बताया कि इन तारों के लिए जरूरी कच्चा माल अब देश में ही बनता है।

कलाम ने कहा था– पूरे देश को नई ऊर्जा से भर देगा चंद्रयान

देश के पूर्व राष्ट्रपति और वैज्ञानिक एपीजे अब्दुल कलाम। फाइल फोटो

जेएनएन, नई दिल्ली

'चंद्रयान के जरिये चंद्रमा पर की गई खोज पूरे देश को खासकर युवा वैज्ञानिकों और बच्चों को नई ऊर्जा से भर देगी। मुझे यकीन है कि बाहरी दुनिया की खोज में चंद्रयान केवल एक शुरुआत भर है।' ये कथन देश के पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम के थे, जो उन्होंने 'चंद्रयान-1' की लांचिंग से पहले कहे थे।

खुद एयरोस्पेस वैज्ञानिक रहे और भारत के मिसाइल मैन के नाम से मशहूर अब्दुल कलाम ने भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के 'चंद्रयान-1' की सफलता के बाद वैज्ञानिकों को कई सुझाव दिए थे। करीब 10 साल पहले 2008 में मुंबई में 'चंद्रयान : प्रॉमिसेस एंड कंसर्न' पर नेशनल साइंस सेमिनार में उन्होंने कहा था कि इसरो को अब ऑर्बिटर मिशन की जगह 'चंद्रयान-2' के तहत अपना लैंडर चांद की सतह पर उतारना चाहिए, ताकि चंद्रमा पर पानी के अणुओं की मौजूदगी के बारे में और अधिक जानकारी हासिल की जा सके।

दरअसल, इसरो के 2008 में लांच हुए ऑर्बिटर मिशन 'चंद्रयान-1' ने ही पहली बार चंद्रमा पर पानी की उपस्थिति का पता लगाया था। चंद्रमा पर पानी की खोज भारत की एमआइपी (मून इंपैक्ट प्रोब) डिवाइस ने की थी और नासा ने भी इसकी पुष्टि की थी। उस सफलता से उत्साहित होकर ही इसरो अपने अगले मिशन की तैयारियों में जुट गया था। वह कलाम ही थे, जो किसी भी अंतरिक्ष मिशन को कम से कम लागत में करने का सुझाव देते थे, जिसका अनुसरण इसरो बखूबी कर रहा है। उन्होंने नासा और इसरो के अंतरिक्ष वैज्ञानिकों को 2050 तक एक किलोग्राम वजन वाले अंतरिक्ष यान बनाने का सुझाव दिया था, जिससे मिशन की लागत को लगभग 10 गुना तक कम किया जा सके। उन्होंने भविष्य में इसरो और नासा को साथ मिलकर अगले मिशनों पर काम करने का भी सुझाव दिया था।

रांची में बने लांच पैड में भरी उड़ान

जागरण संवाददाता, रांची : पूरे देश के लिए सोमवार का दिन बेहद गौरव का था। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) द्वारा चंद्रयान-2 का सफल प्रक्षेपण करने पर जहां पूरा देश मारे खुशी के झूम उठा, वहीं रांची के लिए भी यह घड़ी गौरव की थी। चंद्रयान-2 को इसरो के श्रीहरिकोटा स्थित स्पेस सेंटर के जिस लांचिंग पैड से प्रक्षेपित किया गया, उसके निर्माण में रांची में स्थित सार्वजनिक क्षेत्र की दो बड़ी कंपनियों मेकॉन और एचईसी का अहम योगदान रहा। 2005 में मेकॉन ने दूसरा लांच पैड का प्रोजेक्ट पूरा कर इसरो को सौंपा था। इसकी पूरी डिजाइन से लेकर ढांचा खड़ा करने तक के काम का पूरा प्रोजक्ट जहां मेकन ने पूरा किया वहीं हैवी इंजीनियरिंग कॉरपोरेशन (एचईसी) ने इस लांच पैड के लिए मशीनों, और उपकरणों की आपूर्ति की थी।

एचईसी ने परियोजना के लिए मोबाइल लांच पैड (एमएलपी), टावर क्रेन, हॉरिजेंटल स्लाइडिंग डोर, 400 टन की ईओटी क्रेन और लांच वाहनों को रखने के लिए बनाए गए फोल्डिंग-कम-वर्टिकल प्लेटफॉर्म का निर्माण कर आपूर्ति की थी। मोबाइल लांच पेडेस्टल (एमएलपी) के निर्माण के समय इसका कुल वजन लगभग 800 टन था। साथ ही इसमें नौ मॉड्यूल लगाए गए थे, जिन्हें एचईसी में ही तैयार किया गया था। इनमें कई ढांचे रांची में ही गढ़े गए थे।

बनाया गया था 10 टन का टावर क्रेन : 80 मीटर की ऊंचाई पर अंबिलिकल टावर के ऊपर लगाए गए 10 टन टावर क्रेन को वायु दबाव बनाए रखने के लिए डिजाइन किया गया था। साथ ही 47 मीटर की ऊंचाई पर चक्रीय वायु दाब को बनाए रखने के लिए हॉरिजेंटल डोर और अंतरिक्ष वाहन विधानसभा भवन की सुरक्षा के लिए भी बनाए गए थे।

युवा वैज्ञानिक

रायपुर स्थित युवा वैज्ञानिक के घर पर लगा बधाई देने वालों का तांता, प्रक्षेपण से पहले ही पापा से कह दिया था– इस बार कोई दिक्कत नहीं होगी

यान को नियंत्रित कर रही टीम में छत्तीसगढ़ के आदित्य भी

नईदुनिया, रायपुर

चंद्रयान- 2 की टीम में रायपुर शहर का बेटा आर. आदित्य भी शामिल है। यह युवा वैज्ञानिक मंगलयान से लेकर चंद्रयान-2 के सफल प्रक्षेपण में अपनी जिम्मेदारी बखूबी निभा रहा है। आदित्य की टीम ही यान के चांद पर लैंडिंग और उसके बाद की संपूर्ण प्रक्रिया नियंत्रित कर रही है।

दैनिक जागरण के सहयोगी प्रकाशन 'नईदुनिया' टीम चंद्रयान-2 की लांचिंग के समय आदित्य के पिता आर. मुरली के संपर्क में रही। बेटा इसरो में अपनी ड्यूटी निभा रहा था तो पिता व मां अपने-अपने दफ्तरों में थे। हालांकि, ड्यूटी के बीच में ही पिता खुद को टेलीविजन तक जाने से रोक न सके। वह छत्तीसगढ़ के फाफाडीह में अपने दोस्त की दुकान पर पहुंचे और चंद्रयान-2 के लांचिंग की एक झलक देखी और काम पर लौट आए। उन्होंने कहा, बेटा ऐसा काम करे तो पिता का जीवन सफल हो जाता है। ये गर्व का पल है। उन्होंने कहा कि रविवार रात उससे बात हुई थी। बोला, 'पापा, कल बहुत बड़ा दिन है। आप सभी इसकी कामयाबी के लिए प्रार्थना भी कीजिए। हमारी तैयारी पूरी है। अब कोई तकनीकी कारण आड़े नहीं आएंगे। हम सब पूरे जोश में हैं, विश्वास में हैं। देश की नजर इसरो पर है, हम जरूर कामयाब होंगे।' लांचिंग के बाद माता-पिता के पास फोन कॉल आने शुरू हो गए। बधाई देने वालों का देर रात तक तांता लगा रहा।

मंगलयान में भी अहम जिम्मेदारी : आदित्य के पिता आर. मुरली ने बताया कि उनका बेटा देश सेवा के प्रति जुनूनी है। काफी समय तक परिवार से बात नहीं कर पाता। शोध के समय तो बिल्कुल भी नहीं। उन्होंने बताया कि 2013 में मंगलयान और इसके बाद कई और यान के प्रक्षेपण करने वाली टीम का भी वह हिस्सा रहा है।

माता–पिता दोनों अधिकारी

आर. आदित्य का जन्म रायपुर में ही हुआ था। पिता आर. मुरली लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग में इंजीनियर हैं और मां रामलक्ष्मी एलआइसी में अधिकारी हैं। परिवार दक्षिण भारत से संबंध रखता है। परिजन तेलुगु भाषी हैं। 2012 में आदित्य का आइआइटी जेईई के जरिये भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, त्रिवेंद्रम में चयन हुआ। तब से वह वहीं सेवा दे रहे हैं।

आदित्य फाइल फोटो

चंद्रयान–2 मिशन में शामिल रायपुर के आदित्य के माता–पिता की नजरें भी सफल प्रक्षेपण की कामना के साथ टीवी पर लगी रहीं। नईदुनिया

मानव संसाधन मंत्रालय ने छात्रों को किया प्रोत्साहित

▸ मंत्रालय के 'स्वयं' पोर्टल पर अगले हफ्ते से शुरू होंगे छह नए पाठ्यक्रम

नई दिल्ली, प्रेट्र : चंद्रयान-2 के सफल प्रक्षेपण की प्रशंसा करते हुए मानव संसाधन विकास (एचआरडी) मंत्रालय ने एयरोस्पेस इंजीनियरिंग के क्षेत्र में करियर चुनने के लिए छात्रों को प्रोत्साहित किया है। मंत्रालय ने बताया कि 'स्वयं' पोर्टल 29 जुलाई से इस विषय पर ऑनलाइन पाठ्यक्रमों की शुरुआत करेगा। एचआरडी मंत्रालय ने 2016 में 'स्वयं' पोर्टल लांच किया था। इस पर कई महत्वपूर्ण ऑनलाइन पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं।

मंत्रालय ने ट्वीट किया, 'इसरो फिर 'चांद' पर जाएगा। 'स्वयं' के साथ अंतरिक्ष इंजीनियरिंग का अध्ययन करें। हो सकता है कि आप भी अगले सफर का हिस्सा बन जाएं।' मंत्रालय का 'स्वयं' पोर्टल एयरोस्पस इंजीनियरिंग के क्षेत्र में छह ऑनलाइन पाठ्यक्रम शुरू करेगा। इन पाठ्यक्रमों से छात्रों को अंतरिक्ष यान, यान, मिसाइल एवं हथियार प्रणाली की डिजाइनिंग, निर्माण और रखरखाव के क्षेत्र में कौशल विकास में मदद मिलेगी। पोर्टल पर उपलब्ध कराए जाने वाले पाठ्यक्रमों में 12 हफ्ते का 'एयरक्राफ्ट स्टैबिलिटी एंड कंट्रोल' और आठ हफ्ते का 'डिजाइन ऑफ फिक्स्ड विंग अनमैंड एरियल व्हीकल्स' शामिल हैं। दोनों ही पाठ्यक्रमों को भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आइआइटी) कानपुर द्वारा संचालित किया जाएगा।

आइआइटी कानपुर 'इंट्रोडक्शन टू एंशिएंट इंडियन टेक्नोलॉजी' (आठ हफ्ते) और 'इंट्रोडक्शन टू रॉकेट प्रोपल्शन' (12 हफ्ते) के नाम से दो और पाठ्यक्रम भी संचालित करेगा। आइआइटी बांबे 12 हफ्ते के 'इंट्रोडक्शन टू एयरोस्पेस इंजीनियरिंग/फ्लाइट' पाठ्यक्रम का संचालन करेगा। वहीं, आइआइटी खड़गपुर आठ हफ्ते का 'वाइब्रेशन एंड स्ट्रक्चरल डायनामिक्स' पाठ्यक्रम संचालित करेगा।

चांद चले हम

चंद्रमा पृथ्वी कि परिक्रमा 27 .3 दिन में पूरी करता है और अपने अक्ष के चारों ओर एक पूरा चक्कर भी 27 .3 दिन में लगाता है। यही कारण है कि चंद्रमा का एक ही हिस्सा हमेशा पृथ्वी की ओर होता है।

आंध्र प्रदेश के श्रीहरिकोटा में सोमवार को सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से चंद्रयान-2 को इसरो के सबसे शक्तिशाली रॉकेट जीएसएलवी-एमके3 के साथ सफलतापूर्वक प्रक्षेपित किया गया। प्रेट्र

उमंग और उत्साह से भरा था माहौल

चंद्रयान-2 के सफल प्रक्षेपण ने देशवासियों को गर्व से भर दिया। प्रक्षेपण के मौके का गवाह बनने के लिए श्रीहरिकोटा में बड़ी संख्या में लोग जुटे और तिरंगा लहराकर खुशियां मनाते नजर आए। प्रेट्र

- प्रक्षेपण स्थल के पास जुटी लोगों की भीड़ की बेचैनी लांच के साथ हुई खत्म
- लोगों ने खरीदे रॉकेट के मॉडल और खिंचवाई फोटो

श्रीहरिकोटा, प्रेट्र : चंद्रयान-2 की लांचिंग पर पूरे देश की निगाहें लगी हुई थीं और यहां प्रक्षेपण स्थल पर हर कोई उत्साह से भरा हुआ था। हालांकि उनके बीच यह बेचैनी भी थी कि क्या होगा-खासकर यह देखते हुए कि पिछले दिनों अंतिम समय पर लांचिंग टालनी पड़ी थी। दोपहर 2.43 पर जैसे ही मिशन लांच हुआ, सारी बेचैनी उड़ गई और उत्साह-उमंग के माहौल में हर कोई अगली घोषणा का इंतजार करने लगा।

इसरो ने राकेट लांच देखने का अवसर देने के लिए 7500 सीटों वाली एक गैलरी बनाई थी। यह गैलरी लांच पैड से कुछ किलोमीटर की दूरी पर थी। गैलरी पूरी तरह भरी हुई थी। इनमें से ज्यादातर वे लोग थे जिन्होंने 15 जुलाई को लांचिंग के लिए पहले से सीटें बुक कराई हुई थीं। विजयवाड़ा से आई कालेज छात्रा शिल्पा ने कहा, मैं यहां पहली बार आई हूं। पिछली बार लांचिंग का समय अटपटा था (रात में 2.51 बजे) इसलिए मैं नहीं आ सकी थी। आज हम यहां सुबह दस बजे आ गए। इसी तरह एक निजी कंपनी में काम करने वाले राकेश ने कहा, मेरे लिए यह यादगार अनुभव रहा। रॉकेट बाहुबली की दहाड़ कभी भूल नहीं पाऊंगा। मैं लांच पैड से कुछ किलोमीटर दूर था, लेकिन बाहुबली की आवाज मुझे साफ सुनाई दी। मेरे तमाम मित्र भी यहां आना चाहते थे, लेकिन मुझे उन्हें बताना पड़ा कि गैलरी फुल हो चुकी है। मैंने कुछ सेकेंड के लिए राकेट देखा और फिर यह बादलों में गुम हो गया। यहां से तमाम लोगों ने स्मृति चिह्न के रूप में जीएसएलवी एमके-3-एम 1 के मिनिएचर मॉडल भी खरीदे। विशाल सतीश धवन स्पेस सेंटर में स्थित गैलरी में एक रॉकेट म्यूजियम भी है। अंतरिक्ष को जानने-समझने के लिए उत्सुक लोगों ने इसरो के जीएसएलवी व पीएसएलवी राकेट के तमाम मॉडलों के साथ फोटो भी खिंचवाए। इस गैलरी का मई में इसरो के प्रमुख के. सिवन ने औपचारिक रूप से उद्घाटन किया था। इसरो इस गैलरी की क्षमता दस हजार सीटों तक बढ़ाना चाहता है।

इन्होंने दी बधाई

मिशन नई खोज करने के साथ ही हमारी ज्ञान प्रणालियों को समृद्ध करेगा। मैं चंद्रयान-2 टीम की सफलता की कामना करता हूं।
-राम नाथ कोविंद, राष्ट्रपति

देश के लिए गौरव का क्षण। सरकार में रहकर मैंने चंद्रयान-1 और एमओएम (मार्स ऑर्बिटर मिशन) का बारीकी से अवलोकन किया। मैं इसरो के प्रतिभाशाली वैज्ञानिकों की शानदार प्रगति की सराहना करता हूं।
-प्रणब मुखर्जी, पूर्व राष्ट्रपति

चंद्रयान-2 की कामयाबी से देश का गौरव तथा विश्वास बढ़ा है। यह कामयाबी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा देश के लिए सुनहरा अध्याय होगी।
-एम वेंकैया नायडू, उप राष्ट्रपति

यह देश के लिए गौरवशाली क्षण है। इस प्रक्षेपण के साथ ही अंतरिक्ष के क्षेत्र में भारत की शक्ति और क्षमता को बढ़ावा मिला है।
-ओम बिरला, लोकसभा अध्यक्ष

इसरो ने अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में एक और मानदंड स्थापित किया है। देश को इसरो के वैज्ञानिकों पर गर्व है।
-अमित शाह, गृह मंत्री और भाजपा अध्यक्ष

चंद्रयान-2 को सफलतापूर्वक लांच करके भारत को अंतरिक्ष में सुपर पावर बनाने के लिए वैज्ञानिकों को मैं सलाम करती हूं। मैं मिशन की शानदार सफलता की कामना करती हूं।
-सुषमा स्वराज, पूर्व विदेश मंत्री

टीम इसरो ने चंद्रमा के लिए इस महत्वाकांक्षी और स्वदेशी मिशन के लांच के साथ भारत के अंतरिक्ष इतिहास में एक नया अध्याय लिखा है।
-राजनाथ सिंह, रक्षा मंत्री

इसरो को चंद्रयान की सफल लांचिंग पर बधाई। हम सभी भारतीयों को आप पर गर्व है।
-नितिन गडकरी, सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री

इसरो, आपने इतिहास रचा है। भारत को आप पर गर्व है। इसकी प्राचीनता के समय में अंतरिक्ष विभाग के साथ जुड़े रहने का विशेषाधिकार दिया गया है। गौरव के इस क्षण में अंतरिक्ष विभाग से जुड़े होने पर गर्व है।
-जितेंद्र सिंह, अंतरिक्ष विभाग के राज्यमंत्री

चंद्रयान-2 का आज का प्रक्षेपण अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी में भारत की बढ़ती प्रगति को दर्शाता है। बधाई टीम।
-प्रकाश जावड़ेकर, सूचना प्रसारण मंत्री

चंद्रयान-2 के सफल प्रक्षेपण से प्रत्येक भारतीय गौरवान्वित हैं। इस ऐतिहासिक सफलता के लिए टीम इसरो को बहुत-बहुत बधाई।
-मुख्तार अब्बास नकवी, अल्पसंख्यक कल्याण मंत्री

इस तरह के निर्णायक क्षण ही हमें एक महान राष्ट्र बनाते हैं। इसरो के सभी वैज्ञानिकों और अंतरिक्ष इंजीनियरों को मेरा आभार, जिन्होंने 130 करोड़ भारतीयों को गौरवान्वित करने के लिए दिन-रात एक कर दिया।
-रणदीप सुरजेवाला, मुख्य प्रवक्ता, कांग्रेस

हमारे वैज्ञानिकों द्वारा चंद्रयान-2 के सफल प्रक्षेपण पर हर देशवासी गर्व महसूस कर रहा है। मैं इस सफलता के लिए इसरो के सभी वैज्ञानिकों को हार्दिक बधाई देता हूं।
भय्याजी जोशी, सरकार्यवाह, आरएसएस

हमने पूरी धमक के साथ वापसी की : सिवन

इसरो प्रमुख ने प्रक्षेपण को ऐतिहासिक सफर की शुरुआत बताया

श्रीहरिकोटा, प्रेट्र : हफ्तेभर पहले पकड़ में आई तकनीकी खामी से उबरते हुए हमने पूरी धमक के साथ वापसी की। एक ठहराव के बाद सफलता मिली है। यह एक ऐतिहासिक सफर की शुरुआत है। चंद्रयान-2 की सफल लांचिंग के बाद इसरो के चेयरमैन के. सिवन ने यह बात कही।

सिवन ने कहा, 'मुझे यह बताते हुए बहुत खुशी हो रही है कि जीएसएलवी मार्क 3 ने चंद्रयान-2 को निर्धारित कक्षा में पहुंचा दिया है। प्रक्षेपण उम्मीद से भी बेहतर रहा। यान पहले से तय कक्षा से 6,000 किलोमीटर दूर की कक्षा में स्थापित हुआ।' सिवन ने 15 जुलाई को लांचिंग टालने के घटनाक्रम का भी जिक्र किया। उन्होंने कहा, 'हफ्तेभर पहले पूरी सतर्कता के चलते तकनीकी खामी पकड़ में आई थी और तुरंत बाद ही टीम इसे ठीक करने में जुट गई थी। 24 घंटे में ही रॉकेट को फिर से उड़ान के लिए तैयार कर देना शानदार रहा।' सिवन ने कहा कि इस सफलता का इंतजार इसरो और भारत को ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया को था। इसरो प्रमुख ने चांद पर लैंडिंग के समय की चुनौती का भी जिक्र किया। उन्होंने कहा, 'चांद के दक्षिणी ध्रुव के नजदीक सुरक्षित लैंडिंग सुनिश्चित करने से पहले के 15 मिनट किसी दहशत से कम नहीं होंगे।' सिवन ने अभियान से जुड़े वैज्ञानिकों की भी सराहना की। उन्होंने कहा कि पिछले डेढ़ साल से चंद्रयान-2 की टीम दिन-रात एक करके लगी रही। इस सफल अभियान में उनके योगदान के लिए सलाम किया जाना चाहिए।

आंध्र प्रदेश के नेल्लोर जिले में सोमवार को श्रीहरिकोटा स्थित सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से चंद्रयान-2 के सफल प्रक्षेपण के बाद इसरो चेयरमैन के. सिवन ने टीम के सदस्यों को संबोधित किया और सभी की सराहना करते हुए उनको बधाई दी। प्रेट्र

शब्दों में झलकी खुशी : सफल प्रक्षेपण की खुशी इसरो प्रमुख के चेहरे पर झलक रही थी। यह पल कितना अहम था, इसका अंदाजा बधाई देते समय उनके शब्दों और आवाज से भी लगाया जा सकता था। के. सिवन ने जैसे ही प्रक्षेपण सफल रहने की जानकारी देते हुए पहला शब्द बोला, खुशी से उनका गला रुंध गया। उनका चेहरा भी उस अभिभावक की तरह खिल उठा था, जिसके बच्चे ने कोई अहम पड़ाव पार कर लिया हो।

चांद के बाद सूरज मिशन की तैयारी में इसरो

- अगले साल की पहली छहामी में आदित्य-एल1 लांच करने की योजना
- हजारों किलोमीटर क्षेत्र में फैली सूरज की बाहरी परत का किया जाएगा अध्ययन

नई दिल्ली, प्रेट्र : चंद्रयान-2 के सफल प्रक्षेपण के बाद भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) की योजना अगले साल की पहली छमाही में सूरज मिशन आदित्य-एल1 को अंजाम देने की है। स्पेस एजेंसी के मुताबिक सोलर मिशन का मकसद सूर्य के कोरोना का अध्ययन करना है।

सोलर मिशन के बारे में जानकारी साझा करते हुए इसरो ने अपनी वेबसाइट पर लिखा है कि आदित्य-एल1 मिशन का मकसद सूरज के कोरोना यानी बाहरी परत का अध्ययन करना है, जो हजारों किलोमीटर क्षेत्र में फैली है।

इसरो ने कहा है कि सौर भौतिकी के लिए यह अभी भी रहस्य बना हुआ है कि कोरोना का तापमान इतना अधिक कैसे हो जाता है।

इसरो के प्रमुख के सिवन ने पिछले महीने प्रेस कांफ्रेंस में कहा था, 'कोरोना पृथ्वी से 15 लाख किलोमीटर दूर है। सूर्य की बाहरी परत का अध्ययन करना इसलिए जरूरी है, क्योंकि जलवायु परिवर्तन पर इसका बड़ा प्रभाव पड़ता है।' उन्होंने कहा था कि 2020 की पहली छमाही में सोलर मिशन को लांच करने की योजना है।

इसरो प्रमुख सिवन अंतरिक्ष विभाग के सचिव भी हैं। उन्होंने यह भी कहा था कि अगले दो-तीन साल में एक अन्य अंतरग्रहीय मिशन शुक्र पर भेजने की योजना है।

आदित्य-एल1 अतिरिक्त परीक्षणों के साथ कोरोना के अलावा सूर्य के बाह्यमंडल और वर्णमंडल का विश्लेषण भी उपलब्ध करा सकता है। इसरो ने कहा कि इसके अलावा पार्टिकल पेलोड सूर्य से उठते कण प्रवाह का अध्ययन भी किया जाएगा।

धरती के चुंबकीय क्षेत्र के प्रभाव से बाहर स्थापित किया जाएगा पेलोड को

अंतरिक्ष एजेंसी ने कहा कि इन पेलोड को धरती के चुंबकीय क्षेत्र के प्रभाव से बाहर स्थापित किया जाएगा, क्योंकि ये धरती की निचली कक्षा में उपयोगी नहीं हो सकते। बता दें कि भारत ने सोमवार को अपने दूसरे चंद्र मिशन चंद्रयान-2 का श्रीहरिकोटा से सफल प्रक्षेपण किया। इसका प्रक्षेपण जीएसएलवी-मार्क तीन रॉकेट से किया गया, जिसे बाहुबली नाम दिया गया है। चंद्रयान-2 चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर उतरेगा, जहां अभी तक कोई यान नहीं उतरा है। रोवर के जरिए चांद पर पानी और जीवन की संभावनाओं का पता लगाने के लिए विभिन्न तरह के अनुसंधान किए जाएंगे।

मिशन के लिए सेल ने की स्पेशल स्टील की आपूर्ति

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली : स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया (सेल) ने चंद्रयान-2 के लिए स्पेशल क्वालिटी के स्टेनलेस स्टील की आपूर्ति की है। यह स्टील सेलम के स्टील प्लांट से सप्लाई किया गया। चंद्रयान-2 के लांच होने के बाद जारी अपने एक बयान में सेल ने कहा है कि इस स्पेशल क्वालिटी वाली स्टील शीट का इस्तेमाल चंद्रयान-2 के क्रायोजेनिक इंजन (सीई-20) में किया गया है। यह इसके स्पेसीफिकेशन को पूरा करने, सरफेस के फिनिश को बेहतर रखने और मानकों के हिसाब से बनाने में उपयोगी रहा है। सेल ने पहले की ही तरह स्पेशल क्वालिटी के स्टेनलेस स्टील की आपूर्ति करके इसरो के साथ देश निर्माण की दिशा में अपनी भागीदारी को और मजबूत किया है।

चांद पर प्लॉट लेने वाले को उम्मीद, सच होगा सपना

हैदराबाद, प्रेट्र : 16 साल पहले चंद्रमा पर पांच एकड़ का प्लॉट लेने वाले राजीव वी. बागड़ी को उम्मीद है कि चंद्रयान-2 अभियान की सफलता से उनका चांद पर घर बनाने का सपना साकार होगा। राजीव ने न्यूयॉर्क स्थित लूनर सोसाइटी इंटरनेशनल से 2003 में 140 डॉलर में चांद पर पांच एकड़ का प्लॉट खरीदा था। राजीव ने कहा, चंद्रयान-2 अभियान पूरी मानवता के लिए अच्छा है। एक भारतीय के रूप में मुझे इस कामयाबी पर गर्व महसूस हो रहा है। मुझे नहीं पता कि मैं चांद को लेकर इतना उत्साहित क्यों हूं।

राजीव के पास लूनर रिपब्लिक द्वारा जारी आधिकारिक दस्तावेज हैं, जिसमें रजिस्ट्री क्लेम शामिल है। रजिस्ट्री में उनके प्लॉट की लोकेशन तक बताई गई है। राजीव स्टॉक मार्केट विश्लेषक हैं।

कांग्रेस ने चंद्रयान-2 की सफलता का श्रेय नेहरू और मनमोहन को दिया

नई दिल्ली, प्रेट्र : चंद्रयान-2 के सफल प्रक्षेपण से हर भारतीयों का दिल जहां गर्व से भर गया है, वहीं कांग्रेस ने इसका सारा श्रेय अपनी पार्टी के दो पूर्व प्रधानमंत्रियों को देने की कोशिश की है।

वैज्ञानिकों को बधाई देते हुए कांग्रेस ने अंतरिक्ष अनुसंधान के क्षेत्र में भारत की प्रगति के लिए अपने दो प्रधानमंत्रियों पंडित जवाहर लाल नेहरू और डॉक्टर मनमोहन सिंह द्वारा उठाए गए कदमों का उल्लेख किया।

कांग्रेस पार्टी ने ट्वीट किया, '1962 में इनस्कोप (अब इसरो) के जरिये अंतरिक्ष अनुसंधान के लिए धन देने के भारत के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू के दूरदर्शी कदम के साथ ही 2008 में चंद्रयान-2 परियोजना को मंजूरी देने वाले पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह को याद करने का यह अच्छा समय है।'

कांग्रेस प्रवक्ता राजीव गौड़ा ने भी बीती शताब्दी के सातवें दशक में आर्यभट्ट के निर्माण से लेकर संप्रग सरकार के दौरान चंद्रयान-1 और अब चंद्रयान-2 की सफलता के लिए वैज्ञानिकों को बधाई देते हुए इसे पूर्व प्रधानमंत्री नेहरू की दूरदर्शिता का नतीजा बताया।

भाजपा ने साधा कांग्रेस पर निशाना, कहा-इस पर न करें राजनीति

नई दिल्ली, प्रेट्र : चंद्रयान-2 की सफलता का श्रेय लेने की कोशिश करने पर भाजपा ने कांग्रेस पर निशाना साधा है। भाजपा ने कांग्रेस पर इस मुद्दे पर राजनीति करने का आरोप लगाया। भाजपा प्रवक्ता संबित पात्रा ने ट्वीट किया, 'यह वास्तव में निराशाजनक है .. यह प्रत्येक भारतीय के लिए गर्व का क्षण है। इसे राजनीति के क्षेत्र में नहीं लाना चाहिए था। वैसे, जब भविष्य में कोई नेतृत्व नजर नहीं आता है तो प्रासंगिक बने रहने के लिए अतीत में देखने की प्रवृत्ति होती है .. दुर्भाग्य से कांग्रेस के साथ ऐसा ही हुआ है।'

संसद के दोनों सदनों ने इसरो को दी बधाई

नई दिल्ली, प्रेट्र : संसद के दोनों सदनों ने सोमवार को चंद्रयान-2 के सफल प्रक्षेपण पर संबंधित वैज्ञानिकों एवं परियोजना से जुड़े लोगों को बधाई दी। सदस्यों ने इसे पूरे देश के लिए गौरव का क्षण बताया। प्रक्षेपण के कुछ देर बाद ही लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने कहा कि इसरो वैज्ञानिकों ने चंद्रयान-2 का सफलतापूर्वक प्रक्षेपण किया है। यह देश के लिए गौरवशाली क्षण है। उन्होंने कहा कि इस प्रक्षेपण के साथ ही अंतरिक्ष के क्षेत्र में भारत की शक्ति और क्षमता को बढ़ावा मिला है। बिरला ने कहा कि यह इसरो वैज्ञानिकों के अथक प्रयासों और प्रधानमंत्री के नेतृत्व में संभव हुआ है। हम वैज्ञानिकों को बधाई देते हैं। सदस्यों ने मेजें थपथपा कर इस उपलब्धि के लिए वैज्ञानिकों की सराहना की। हालांकि विपक्ष के कुछ सदस्यों ने कहा कि यह वैज्ञानिकों की उपलब्धि है, इसमें प्रधानमंत्री का नाम क्यों लिया जाए?

सोशल मीडिया

चंद्रयान-2 के सफल प्रक्षेपण के बाद सोशल मीडिया पर दिनभर चलता रहा प्रतिक्रियाओं का दौर, दिग्गजों सहित आम लोगों ने अपने अंदाज में दी इसरो को बधाई

ट्विटर पर दिनभर छाया रहा गौरव बढ़ाने वाला अभियान

जेएनएन, नई दिल्ली

ट्विटर की चिड़िया सोमवार को इसरो के चंद्रयान अभियान की शान में चहचहाती रही। चाहे आम लोग हों या खास शख्सियतें, सभी ने अपने अंदाज में चंद्रयान-2 को लेकर अपनी भावनाएं व्यक्त कीं। इनमें कुछ धीर-गंभीर, वार-पलटवार वाली थीं तो कुछ हल्की-फुल्की हास-परिहास वाली, जिन्होंने इस माइक्रोब्लॉगिंग साइट पर माहौल को संतुलित बनाए रखा।

इस खास पल के गवाह बनने के लिए सद्गुरु के नाम से मशहूर जाने-माने आध्यात्मिक गुरु जग्गी वासुदेव खुद श्रीहरिकोटा में मौजूद थे। इस मौके पर उन्होंने ट्विटर के माध्यम से वैज्ञानिकों की कड़ी मेहनत और समर्पण के साथ ही राजनीतिक इच्छाशक्ति को भी सराहा। वहीं, कांग्रेस के दिग्गज नेता अहमद पटेल ने इसके लिए पिछली सभी सरकारों को भी श्रेय दिया, जिन्होंने अंतरिक्ष नीति को अपनी प्राथमिकताओं में रखा। अपने चुटीले अंदाज के लिए विख्यात शाहरुख खान ने इस मौके पर अपने ही एक गाने को आधार बनाया। किंग खान ने ट्वीट किया कि 'चांद तारे तोड़ लाऊं, सारी दुनिया पर मैं छाऊं। ऐसा करने के लिए लंबे वक्त तक जीतोड़ मेहनत, ईमानदारी एवं स्वयं में विश्वास की दरकार होती है। इसरो के वैज्ञानिकों को बधाई।' पूंजीवाद-साम्राज्यवाद की धुर विरोधी लेखिका अरुंधती रॉय पर निशाना साधते हुए सुनंदा वशिष्ठ ने ट्वीट किया, 'अब मैं अरुंधती रॉय के 23468483758576 शब्दों में लिखे निबंध का इंतजार कर रही हूं, जिसमें वह यह साबित करेंगी कि एक हिंदू राष्ट्रवादी सरकार कैसे पृथ्वी के हर एक हिस्से को हड़पने के बाद अब चंद्रमा के उपनिवेशीकरण में जुटी है।' चूंकि चंद्रयान-2 अभियान में दो प्रमुख महिला वैज्ञानिकों की भी अहम भूमिका रही तो केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी ने मुथैया विनीता और रितु करिधल सहित इसरो की पूरी टीम को बधाई दी। उनके सुर में सुर मिलाते हुए मंत्रिपरिषद में उनके सहयोगी हरदीप सिंह पुरी ने ट्वीट किया, 'यदि अपोलो 11 का चंद्रमा पर उतरना 'मैनकाइंड' के लिए बड़ी छलांग थी तो चंद्रयान-2 का प्रक्षेपण 'वूमनकाइंड' के लिए एक ऊंची छलांग के रूप में याद किया जाएगा।' भारत में शायद ही ऐसा कोई अवसर हो जहां राजनीतिक वार-पलटवार न हो। चंद्रयान-2 के लांच अवसर पर ट्विटर ने एक बार फिर इसकी पुष्टि की। हुआ यूं कि इसरो को बधाई संदेश देते हुए हुए कांग्रेस ने अपने आधिकारिक हैंडल पर भारत में अंतरिक्ष विज्ञान के लिए कांग्रेसी प्रधानमंत्रियों की उपलब्धियों का भी उल्लेख किया और भाजपा के हैंडल से सिर्फ 'जय हिंद' हैशटैग से बधाई संदेश जारी हुआ तो इस पर चुटकी लेते हुए यो यो फनी सिंह नाम के हैंडल ने लिखा कि भाजपा के लिए इसरो का अर्थ 'इंडियन स्पेस रिसर्च ऑर्गेनाइजेशन' है, जबकि कांग्रेस के लिए इसका मतलब 'इंदिरा सोनिया राहुल ऑर्गेनाइजेशन है'।

फनी मीम्स भी आए सामने, क्या सारे काम इसरो ही करेगा...

चंद्रयान-2 पर तमाम फनी मीम्स भी सामने आए जिनमें किसी ने कहा कि 'अगर सारे काम इसरो ही करेगा तो फिर नासा क्या करेगा?' तो किसी ने अक्षय कुमार और जॉन अब्राहम पर चुटकी लेते हुए मीम्स बनाए कि देखें इनमें से कौन चंद्रयान-2 की स्क्रिप्ट पर फिल्म बनाने की पहल करता है। इस दौरान ऑस्कर विजेता फिल्मकार शेखर कपूर ने दिल को छू लेने वाला एक ट्वीट किया। उन्होंने लिखा, 'जब मैं 12 साल का था तो छत पर सोने के दौरान दिल्ली के प्रदूषणमुक्त आसमान में आकाशगंगा को निहारते हुए अपनी मां से पूछता था कि अंतरिक्ष कहां तक फैला है?' वह जवाब देती थीं कि 'अनंत' तक। तबसे मैं उस 'अनंत' की खोज में ही लगा हूं। मेरे ख्याल से एक दिन भारतीय वैज्ञानिक उस अथाह अनंत अंतरिक्ष की भी थाह ले लेंगे।

दुनियाभर के मीडिया ने की तारीफ

- प्रमुख अंतरराष्ट्रीय अखबारों और समाचार पोर्टल पर दिखी अभियान की व्यापक कवरेज

वाशिंगटन, प्रेट्र : चंद्रयान-2 के सफल प्रक्षेपण पर दुनियाभर की निगाह टिकी थी। जैसे ही रॉकेट ने यान को पृथ्वी की कक्षा में स्थापित किया, हर ओर से बधाइयों का तांता लग गया। वैश्विक मीडिया ने अंतरिक्ष के क्षेत्र में इस छलांग के लिए भारत की प्रशंसा की।

वाशिंगटन पोस्ट ने 50 साल पहले चांद पर गए मानव मिशन के साथ चंद्रयान-2 की उपलब्धि को जोड़ते हुए भारत की तारीफ की। वाशिंगटन पोस्ट ने हफ्तेभर के भीतर ही रॉकेट की खामी सुधारते हुए सफल प्रक्षेपण के लिए भी इसरो की क्षमता को सराहा। द न्यूयॉर्क टाइम्स ने अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में इसे भारत की बड़ी छलांग बताया। न्यूयॉर्क टाइम्स ने लिखा, 'दुनियाभर के वैज्ञानिक और रक्षा विशेषज्ञ इस पर निगाह रखे हुए हैं। करोड़ों भारतीयों की भी इससे उम्मीदें जुड़ी हैं। बहुत कम चीजें होती हैं, जो पूरे देश को एक कर देती हैं। एक सफल अंतरिक्ष अभियान वही पल है। पिछले कुछ हफ्ते से हर ओर चंद्रयान-2 की खबरें हैं। स्कूल जाने वाले बच्चे उत्साह में सोडा की बोतल से रॉकेट उड़ाते दिख रहे हैं।' सीएनएन ने भी भारत की तारीफ की। ब्रिटिश समाचार पत्रों द गार्जियन और टाइम्स ने भी चंद्रयान-2 को जगह दी। बीबीसी ने इसे भारत का सबसे जटिल अंतरिक्ष अभियान बताया। चीन की सरकारी समाचार एजेंसी शिन्हुआ ने चंद्रयान-2 को बड़ी कवरेज दी। पाकिस्तानी समाचार पत्रों ने अंतरराष्ट्रीय समाचार एजेंसियों के हवाले से खबर को अपनी वेबसाइट पर जगह दी।

चीन के चंद्र अभियान के प्रमुख ने दी बधाई : चीन के चंद्र अभियान के प्रमुख वू वीरेन ने चंद्रयान-2 के सफल प्रक्षेपण पर इसरो को बधाई दी है। उन्होंने आगे का अभियान सफल रहने की शुभकामना भी दी। इसी के साथ उन्होंने यह भी कहा कि चीन अंतरिक्ष अभियानों को लेकर किसी तरह की प्रतिस्पर्धा में नहीं है। वह पहले से निर्धारित योजनाओं के अनुरूप आगे बढ़ता रहेगा। भारत में विभिन्न देशों के दूतावासों ने भी प्रक्षेपण की सफलता पर बधाई दी है। इजरायल, अमेरिका, जर्मनी और फ्रांस के दूतावासों और राजदूतों ने ट्वीट करके इस सफलता पर भारत का अभिनंदन किया।

Downloaded from: www.iascgl.com

www.jagran.com राष्ट्रीय संस्करण
दैनिक जागरण
मंगलवार 23 जुलाई 2019

दैनिक जागरण
हर बड़े सफर की शुरुआत एक छोटे कदम से होती है

इसरो ने फिर कर दिखाया

चंद्रयान-2 का सफल प्रक्षेपण भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन यानी इसरो की श्रेष्ठता पर मुहर लगाने के साथ ही यह भी रेखांकित कर रहा है कि उसके लिए अंतरिक्ष की चुनौतियों से पार पाना अब कहीं अधिक आसान हो गया है। यह इसरो की काबिलियत का ही प्रमाण है कि उसके वैज्ञानिकों ने उन तकनीकी खामियों को बहुत जल्द दूर कर लिया जिनके चलते इस अंतरिक्ष अभियान को कुछ दिनों के लिए टाल दिया गया था। चूंकि इसरो चंद्रयान-1 अभियान को सफलतापूर्वक अंजाम दे चुका था इसलिए यह भरोसा बढ़ गया था कि चंद्रयान-2 भी कामयाब रहेगा। आखिरकार ऐसा ही हुआ। अब इंतजार है उस दिन का है जब सितंबर के पहले सप्ताह में हमारा यान चंद्रमा की उस सतह पर पहुंचेगा जहां आज तक कोई नहीं पहुंचा। चंद्रमा का दक्षिणी ध्रुव न केवल दुनिया से अपरिचित है, बल्कि काफी जटिल भी है। माना जाता है कि चंद्रमा के इस हिस्से में पानी के साथ खनिज भंडार भी हो सकते हैं। इसी कारण भारत के इस अंतरिक्ष अभियान पर दुनिया की निगाहें हैं। निगाहें इस उत्सुकता की वजह से भी हैं कि आखिर इसरो के वैज्ञानिक कहीं कम कीमत में अपने अंतरिक्ष अभियान को सफलतापूर्वक कैसे पूरा कर लेते हैं? अब इसमें कोई संदेह नहीं कि भारत अंतरिक्ष की एक बड़ी शक्ति के रूप में उभर आया है। इसका प्रमाण मंगलयान की सफलता ने भी दिया था और फिर अभी हाल में एंटी सैटेलाइट तकनीक के सफल परीक्षण ने भी। अब इसके प्रति सुनिश्चित हुआ जा सकता है कि इसरो के वैज्ञानिक वह सब कुछ हासिल करने में सक्षम होंगे जिसे अंतरिक्ष की चुनौतियों के रूप में देखा जाता है।

इसरो की ओर से अर्जित सफलताएं हर भारतीय को गौरवान्वित कराने वाली हैं। देशवासियों को रह-रहकर गौरव भरे क्षण उपलब्ध कराने वाले इसरो के वैज्ञानिक बधाई के पात्र हैं। यह स्वाभाविक है कि उन्हें चारों ओर से बधाई और प्रोत्साहन मिल रहा है, लेकिन यह सही समय है जब इस पर विचार किया जाए कि आखिर सफलता की जैसी गाथा इसरो लिखने में सक्षम है वैसी ही अन्य वैज्ञानिक, तकनीकी संस्थान क्यों नहीं लिख पा रहे हैं? इस पर विचार इसलिए किया जाना चाहिए, क्योंकि रक्षा सामग्री के निर्माण के मामले में हम आत्मनिर्भर नहीं हो पा रहे हैं। यह अच्छी स्थिति नहीं कि भारत दुनिया के सबसे बड़े हथियार आयातक देश के रूप में जाना जाए? समस्या केवल यही नहीं कि हम उन्नत किस्म के लड़ाकू विमान, पनडुब्बियां आदि नहीं बना पा रहे हैं, बल्कि यह भी है कि सेना की जरूरत पूरी कर सकने लायक छोटे हथियार भी नहीं बना पा रहे हैं। केवल इतना ही नहीं, विभिन्न क्षेत्रों में काम आने वाली तमाम मशीनों के लिए भी हम दूसरे देशों पर निर्भर हैं। हमारे नीति-नियंताओं को यह ध्यान रखना चाहिए कि विभिन्न क्षेत्रों में आत्मनिर्भर बनकर ही भारत को विकसित देश बनाया जा सकता है। बेहतर होगा कि इसरो का गुणगान करते हुए हमारे नीति-नियंता उन कारणों पर भी ध्यान दें जिनके चलते अन्य तकनीकी संस्थान अपेक्षाओं पर खरे नहीं उतर पा रहे हैं या फिर धीमी गति से बढ़ रहे हैं।

सपनों पर ग्रहण

उत्तराखंड के पांच सौ से ज्यादा गांवों को सड़क से जोड़ने के सपने पर ग्रहण लगता दिख रहा है। वजह यह कि तय समय सीमा के भीतर इन गांवों तक सड़क नहीं पहुंच पाई। वक्त गुजरने के बाद राज्य सरकार की आंखें खुलीं। अब कहा जा रहा है इसके लिए केंद्र सरकार में दस्तक दी जाएगी। अभी तक सोए क्यों रहे, इसका किसी के पास के कोई ठोस जवाब नहीं है। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत प्रदेश के 2658 गांवों को सड़क से जोड़ा जाना था। इनमें से 2142 गांवों को जोड़ भी लिया गया, लेकिन 516 गांवों के लिए सड़क अभी भी सपना बना हुआ है। दरअसल वर्ष 2000 में तत्कालीन केंद्र सरकार ने ढाई सौ से ज्यादा आबादी वाले सभी गांवों तक सड़क पहुंचाने की घोषणा की थी। यह लक्ष्य मार्च 2019 तक पूरा किया जाना था, लेकिन दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति यह कि राज्य सरकारें इस डेडलाइन से अनजान बनी रहीं। सरकारी दस्तावेज खुद इसकी चुगली कर रहे हैं। राज्य सरकार ने शेष वन भूमि के पेच की वजह से फंसी आठ सड़कों को छोड़कर बाकी के 508 गांवों को मार्च 2020 तक सड़क से जोड़ने का लक्ष्य रखा है, इनमें से 63 गांवों के लिए प्रक्रिया भी शुरू कर दी गई है, लेकिन सरकार की आखें पिछले दिनों तब खुली की खुली रह गईं, जब नई दिल्ली में केंद्र सरकार की परफारमेंस रिव्यू कमेटी और रीजनल रिव्यू कमेटी की साझा बैठक हुई। इसमें बताया गया कि केंद्र सरकार की योजना के दायरे में आने वाले सभी गांवों को मार्च 2019 तक सड़क से जोड़ा जाना था। इसके बाद जो भी कार्य मंजूर किए गए, उनके लिए केंद्र सरकार बजट आवंटित नहीं करेगी। चूंकि राज्य में इसके बाद 508 गांवों को सड़क से जोड़ने के आदेश तो जारी हुए हैं, लेकिन लोक निर्माण विभाग ने इन पर काम शुरू नहीं किया है। ऐसे में इनके लिए बजट की उपलब्धता की गुंजाइश कम ही नजर आ रही है। यद्यपि सरकार तर्क दे रही है कि इनके लिए केंद्र सरकार में दस्तक दी जाएगी, पर अहम सवाल यह कि तंत्र अभी तक क्यों हरकत में नहीं आया। क्या विभाग को डेडलाइन वाकई में मालूम नहीं था या फिर आदतन सुस्त चाल से काम करता रहा। यह स्थिति केवल सड़कों के मामले में नहीं, दूसरी योजनाओं में सामने आती रही है।

बड़े लक्ष्य के लिए बदलनी होगी राह

डॉ. भरत झुनझुनवाला

पांच ट्रिलियन डॉलर अर्थव्यवस्था का लक्ष्य सही है, लेकिन बेहतर होगा कि निवेश आधारित विकास के स्थान पर मांग आधारित विकास को अपनाएं तो सफलता मिलने की संभावना अधिक होगी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश के सामने वर्ष 2024 तक पांच ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने का लक्ष्य रखा है। पांच ट्रिलियन डॉलर यानी पांच हजार अरब डॉलर। इसमें कोई संशय नहीं कि प्रधानमंत्री ने सरकारी कार्यकुशलता में बेजोड़ सुधार हासिल किया है। शीर्ष अधिकारी आज चाहते हैं कि वे प्रधानमंत्री की बताई दिशा के अनुसार लक्ष्यों को प्राप्त करें। सरकार ने बैंकों से धन लेकर गबन करने वाले निजी बड़े उद्यमियों पर नकेल कसी है, फिर भी पांच ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने के लिए कुछ नीतिगत परिवर्तन करने की भी जरूरत हो सकती है। आम बजट की पूर्वसंध्या पर मुख्य आर्थिक सलाहकार कृष्णमूर्ति सुब्रमण्यन ने कहा था कि देश को 'निवेश आधारित' आर्थिक विकास की राह पर चलना होगा। सरकार का मानना है कि ब्याज दर न्यून होने से उद्यमियों द्वारा भारी मात्रा में ऋण लेकर निवेश किया जाएगा। वे फैक्ट्रियां लगाएंगे, रोजगार के अवसर सृजित होंगे और उस आय से लोग उन्हीं फैक्ट्रियों में बने माल को खरीदेंगे। यहां प्रश्न है कि पहले मांग आएगी अथवा पहले निवेश? मांग उत्पन्न होने से निवेश आएगा अथवा निवेश करने से मांग उत्पन्न होगी? इसे एक उदाहरण से समझा जा सकता है। जैसे किसी उद्यमी ने कपड़ा बनाने की फैक्ट्री स्थापित की। उसमें कुछ कर्मियों को रोजगार दिया। उस एवज में मिले वेतन से कर्मियों ने कपड़े खरीदे, लेकिन वे फैक्ट्री में बने सभी कपड़ों की खपत नहीं कर सकते। कहीं से बाहरी मांग आएगी तभी फैक्ट्री सफल होगी।

उद्यमी पहले व्यापक मांग देखता है और फिर निवेश करता है। अपने देश में पहले ब्याज दरें 10 से 15 प्रतिशत के बीच रहती थीं फिर भी उद्यमी निवेश करते थे, क्योंकि बाजार में मांग थी। आज ब्याज दर कम है, परंतु वे निवेश नहीं कर रहे हैं। निवेश आधारित आर्थिक विकास पर पुनर्विचार करने की जरूरत है। आर्थिक सर्वेक्षण के अनुसार पूर्वी एशिया और चीन ने निवेश आधारित आर्थिक विकास हासिल किया। सच यह है कि इन देशों के विकास के पीछे विकसित देशों की मांग थी। उस मांग की पूर्ति के लिए इन देशों ने निवेश किया था। यानी पहले निर्यात की मांग आई और उसके बाद निवेश आया, लेकिन अब चीन द्वारा अपनाई गई निर्यात-एवं निवेश आधारित नीति को आज हम नहीं अपना पाएंगे। कारण यह है कि 1980-90 के दशक में विकसित देशों में तकनीकी आविष्कार हो रहे थे जैसे इंटरनेट और पर्सनल कंप्यूटर। इन आविष्कारों के चलते इन देशों की आय और खपत बढ़ रही थी। इस खपत की पूर्ति के लिए उन्होंने चीन में निवेश किया। आज विकसित देशों में इस प्रकार के तकनीकी सुधार कम हो रहे हैं। उनकी अर्थव्यवस्थाएं नरम पड़ी हुई हैं। इसलिए निर्यात के आधार पर भी हम आज निवेश को आकर्षित नहीं कर पाएंगे। दूसरा कारण यह है कि रोबोट के कारण विनिर्माण का विकसित देशों को वापस जाना शुरू हो गया है। चीन और भारत में उपलब्ध सस्ते श्रम का लालच अब समाप्त हो गया है। इन कारणों से चीन द्वारा अपनाई गई निर्यात-निवेश आधारित नीति को आज हम लागू नहीं कर सकेंगे। सरकार को चाहिए कि घरेलू मांग आधारित विकास की नीति को अपनाए।

अवधेश राजपूत

आर्थिक सर्वेक्षण में कहा गया है कि देश औपचारिक अर्थव्यवस्था की तरफ बढ़ रहा है। अनौपचारिक यानी नकद के धंधे कम हो रहे हैं। इसमें कोई संशय नहीं कि नोटबंदी और जीएसटी से नकद के धंधे पर कुछ अंकुश लगा है, लेकिन जीएसटी का संग्रह सपाट है। हालांकि रिटर्न दाखिल करने वालों की संख्या में भारी वृद्धि हुई है। इसका एक कारण यह हो सकता है कि उद्यमी जीएसटी में दिखावटी रजिस्ट्रेशन कराकर नकदी में कार्य कर रहे हैं। औपचारिकता का अर्थव्यवस्था को लाभ मिलता नहीं दिखा, लेकिन औपचारिकता के कारण मांग का संकुचन हो रहा लगता है। जीएसटी और नोटबंदी से छोटे उद्यमों का संकट बढ़ा। कुछ महीने पहले दिल्ली के एक ओला ड्राइवर ने बड़ी मार्मिक कहानी बताई। वह तीस साल से साड़ी में एंब्राइडरी का काम करा रहे थे। उनके तीन-चार कर्मी थे। नोटबंदी के कारण उनके पेमेंट रुक गए। उनका धंधा बंद हो गया। उन्हें अपने कर्मचारी हटाने पड़े और खुद ड्राइवर बनने को मजबूर हुए। उनके कर्मियों और उनकी स्वयं की मांग कम हो गई। इस प्रकार औपचारिकता के कारण बाजार में मांग कम हुई है। मांग कम होने से निवेश कम हुआ है। अतः औपचारिक अर्थव्यवस्था को अपनाना अच्छा है, परंतु यह आर्थिक विकास का मंत्र नहीं हो सकता है।

आर्थिक सर्वेक्षण में कहा गया है कि छोटे उद्योगों को एक निश्चित समय तक ही एक छोटे उद्योग का संरक्षण उपलब्ध होना चाहिए। आशय यह है कि बच्चे को आजीवन बच्चा बने रहने के लिए हमें प्रलोभन नहीं देना चाहिए। यह बात छोटे उद्योगों पर लागू नहीं होती है। यह उदाहरण सही नहीं है। सही उदाहरण है कि दौड़ लगाने वाले अलग-अलग रफ्तार के होते हैं। धीरे दौड़ लगाने वाले ज्यादा तेज नहीं दौड़ पाते। उनके लिए जरूरी है कि वे धीमी दौड़ से चलने वाले उद्योग ही चलाएं और आजीवन चलाएं। साड़ी में एंब्राइडरी का काम तीस साल से करने वाले उद्यमी को यदि दस साल बाद छोटे उद्योगों का संरक्षण समाप्त कर दिया जाता तो उनका धंधा बंद हो जाता, क्योंकि उनकी क्षमता ही नहीं थी कि वे इससे बड़े उद्योग को संभाल सकें। अतः छोटे उद्योगों को आजीवन संरक्षण देना चाहिए जिससे देश में रोजगार बने और मांग स्थापित हो। बाजार में मांग होगी तो निवेश स्वतः आएगा।

आर्थिक सर्वेक्षण के अनुसार हमें विदेशी बचत के ऊपर ध्यान देना चाहिए। यह सही है कि निवेश के लिए यदि हम विदेशी ऋण लें तो इसमें कोई हानि नहीं है। जैसे यदि बुलेट ट्रेन बनानी है तो इसके लिए जापान से ऋण लेना ठीक है, लेकिन हम अपनी बचत की बर्बादी कर रहे हैं और विदेशी बचत के पीछे भाग रहे हैं। जैसे वर्तमान बजट में 70,000 करोड़ रुपये की विशाल राशि को सरकारी बैंकों में पूंजी निवेश के लिए आवंटित किया गया है। इसके स्थान पर यदि सरकारी बैंकों का निजीकरण कर दिया जाता तो हम इससे सौ गुना ज्यादा रकम हासिल कर सकते थे और उसका उपयोग निवेश के लिए कर सकते थे। बजट में कहा गया कि एयर इंडिया के निजीकरण के लिए पुनः प्रयास किए जाएंगे। यह सही है, लेकिन केवल घाटे में चल रही सरकारी इकाइयों का निजीकरण करने से काम नहीं चलेगा। लाभ में चल रही इकाइयों का भी निजीकरण करने की जरूरत है। इस राशि का उपयोग अंतरिक्ष में शोध, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एवं डाटा एनालिसिस इत्यादि में किया जाए तो अर्थव्यवस्था में मांग उत्पन्न होगी और निवेश स्वयं आएगा। प्रधानमंत्री मोदी को पांच ट्रिलियन डॉलर अर्थव्यवस्था का लक्ष्य रखने के लिए साधुवाद, लेकिन बेहतर होगा कि निवेश आधारित विकास के स्थान पर मांग आधारित विकास को अपनाएं तो सफलता मिलने की संभावना अधिक होगी।

(लेखक वरिष्ठ अर्थशास्त्री एवं आइआइएम बेंगलूर के पूर्व प्रोफेसर हैं)

response@jagran.com

अंतरिक्ष में एक और बड़ी छलांग

मुकुल व्यास

सबसे महत्वपूर्ण पहलू यह है कि चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर सॉफ्ट लैंडिंग कराने वाला भारत दुनिया का पहला देश होगा

इसरो ने चंद्रमा पर दूसरा मिशन रवाना करके अंतरिक्ष विज्ञान के इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ दिया है। चंद्रयान-2 इसरो का अत्यंत महत्वाकांक्षी मिशन है। चंद्रमा पर तकनीकी रूप से कठिन मिशन भेजने का साहस दिखाकर भारत ने एक बार फिर पूरी दुनिया को अपनी तकनीकी क्षमता दिखाई है। भारत अब एक बड़ी अंतरिक्ष शक्ति बन चुका है जिसका लोहा अब दूसरे देश भी मानने लगे हैं। इसी साल 27 मार्च को भारत ने अंतरिक्ष में शत्रु के उपग्रह को मार गिराने की क्षमता प्रदर्शित की थी। अब चार महीने के अंदर भारत ने चंद्रयान-2 के जरिये अंतरिक्ष में एक और बड़ी छलांग लगाई है। इस नए मिशन की सफलता के बाद इसरो के वैज्ञानिक 2022 में अंतरिक्ष में मानव मिशन भेजने की तैयारियों में जुट जाएंगे। निःसंदेह वह एक गौरवशाली पल था जब शक्तिशाली उपग्रह प्रक्षेपण वाहन जीएसएलवी-मार्क 3 जिसे बाहुबली का नाम दिया जा रहा है, ने श्रीहरिकोटा से उड़ान भरकर चंद्रयान-2 को सफलतापूर्वक अंतरिक्ष में पहुंचाया। यह मिशन पहले 15 जुलाई को रवाना होना था, लेकिन प्रक्षेपण से एक घंटे पहले जीएसएलवी रॉकेट के क्रायोजेनिक स्टेज में लीक दिखने के बाद रवानगी कुछ दिनों के लिए स्थगित कर दी गई। इसरो के इंजीनियरों ने बहुत जल्द इस खराबी को दूर कर दिया। चंद्रयान-2 को सबसे पहले 2010 या 2011 में छोड़े जाने की योजना थी। तब यह रूस के साथ संयुक्त मिशन था। रूस इस मिशन के लिए लैंडर और रोवर देने वाला था। रूसी लैंडर और रोवर के डिजाइन में खामियां नजर आने के बाद यह मिशन आगे नहीं बढ़ पाया। रूस भी पीछे हट गया। इसरो को स्वदेशी साधनों से ही लैंडर और रोवर का विकास करना पड़ा। इसमें वक्त लग गया। चंद्रमिशन 2017 तक तैयार हो गया था। पिछले साल इस मिशन को रवाना करने की योजना बनी, लेकिन चंद्रमा पर लैंडिंग के उपयुक्त अवसर के अभाव में इसे दो बार स्थगित करना पड़ा।

चंद्रमा के इस मिशन से पहले भारत ने अक्टूबर 2008 में चंद्रयान-1 को चंद्रमा से 100 किमी की ऊंचाई पर वृत्ताकार कक्षा में स्थापित किया था। चंद्रमा पर पानी की उपस्थिति की खोज चंद्रयान-1 की सबसे बड़ी उपलब्धि थी। चंद्रयान-2 की विशेषता यह है कि इसके साथ एक लैंडर विक्रम और एक रोवर प्रज्ञान भी है। रोवर छह पहियों वाली एक गाड़ी है। चंद्रयान-2 अत्यंत चुनौतीपूर्ण और जटिल मिशन है, क्योंकि इसमें इसरो न सिर्फ मुख्य परिक्रमा-यान (ऑर्बिटर) को चंद्रमा की कक्षा में स्थापित करेगा, बल्कि लैंडर को बहुत धीरे-धीरे चंद्रमा की सतह पर उतारेगा। रोवर से युक्त लैंडर ऑर्बिटर से अलग होने के बाद सात सितंबर को धीरे-धीरे चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर उतरेगा। इस तरह चंद्रयान-2 को

पृथ्वी से चंद्रमा की सतह तक 3.84 लाख किमी की दूरी तय करने में 48 दिन लगेंगे। चंद्रयान-2 मिशन का सबसे महत्वपूर्ण पहलू यह है कि चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर सॉफ्ट लैंडिंग कराने वाला भारत दुनिया का पहला देश होगा। अभी तक अमेरिका, रूस और चीन ने भी वहां यान उतारने की कोशिश नहीं की है। ऑर्बिटर से अलग होने के बाद लैंडर को चंद्रमा की सतह को छूने में 15 मिनट लगेंगे। लैंडर में लगे हुए सेंसर यान को चट्टानों और क्रेटरों से बचाते हुए सही जगह पर उतरने में मदद करेंगे। सतह पर उतरने के करीब साढ़े चार घंटे बाद लैंडर से रोवर बाहर निकल कर चंद्रमा की सतह पर चहलकदमी करते हुए प्रयोग शुरू कर देगा। ऑर्बिटर 100 किमी ऊंची कक्षा में स्थापित होकर चंद्रमा की सतह के नक्शे तैयार करेगा। उसका कार्यकाल एक वर्ष का है। लैंडर और रोवर के मिशन का कार्यकाल एक-एक चंद्र दिवस का है। एक चंद्र दिवस पृथ्वी के 14-15 दिन के बराबर होता है।

चंद्रयान-2 मिशन के ऑर्बिटर, लैंडर और रोवर में कुल 14 उपकरण हैं जो चंद्रमा की तस्वीरें खींचेंगे और खनिजों, हीलियम गैस और भूमिगत बर्फ की तलाश करेंगे। लैंडर और रोवर को बेंगलुरु स्थित लूनर टेरेन टेस्ट फेसिलिटी में जांचा-परखा गया है। इसके लिए तमिलनाडु के सलेम से खास तरह की मिट्टी मंगाई गई। पहले अमेरिका से चंद्रमा जैसी मिट्टी मंगाने पर भी विचार किया गया था, जिसका मूल्य 150 डॉलर प्रति किलो था। चूंकि इसमें 60-70 टन मिट्टी खर्च होनी थी तो देसी वैज्ञानिकों ने घरेलू समाधान तलाश कर इसे किफायती बना दिया।

लैंडिंग के लिए चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव का चुनाव उसकी सुविधाजनक स्थिति और बेहतर संचार के हिसाब से किया गया है। रोवर को अपनी बैटरी चार्ज करने के लिए सौर ऊर्जा चाहिए। दक्षिणी ध्रुव में पर्याप्त मात्रा में सूरज की रोशनी उपलब्ध है। लैंडिंग की जगह पर 12 डिग्री से ज्यादा ढलान नहीं होना चाहिए, अन्यथा लैंडर लुढ़क जाएगा। इस दृष्टि से भी यह स्थल उपयुक्त पाया गया। यहां उत्तरी ध्रुव की तुलना में जल-बर्फ की मौजूदगी की संभावना अधिक है। अतः भारतीय मिशन से नई वैज्ञानिक जानकारियों की उम्मीद की जा सकती है। चंद्रयान-2 शत प्रतिशत स्वदेशी मिशन है, क्योंकि प्रक्षेपण वाहन, ऑर्बिटर, लैंडर और रोवर का निर्माण इसरो की निर्माणशालाओं में हुआ है। चंद्रयान-2 को अंतरिक्ष में पहुंचाने वाले प्रक्षेपण वाहन, बाहुबली रॉकेट का डिजाइन और निर्माण तिरुवनंतपुरम स्थित विक्रम साराभाई स्पेस सेंटर ने किया है। तीन चरणों वाले रॉकेट का वजन 640 टन है। देश के तमाम शोध संस्थानों ने भी इसमें योगदान दिया है। समूचा देश इस मिशन से लाभान्वित होगा। संपूर्ण मिशन की लागत करीब 1000 करोड़ है। इसमें 603 करोड़ रुपये चंद्रयान-2 के कंपोजिट मॉड्यूल के निर्माण और इसरो को ट्रैकिंग और नौसंचालन सुविधाएं उपलब्ध कराने वाली विदेशी एजेंसियों को भुगतान में खर्च किए गए हैं। जीएसएलवी-मार्क 3 के निर्माण में करीब 375 करोड़ रुपये खर्च हुए। इस रॉकेट के निर्माण में देश भर के करीब 500 उद्योगों ने योगदान किया है। कंपोजिट मॉड्यूल के लिए हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर जुटाने में 120 उद्योगों का योगदान है।

चंद्रयान-2 के लैंडर का वजन 1.4 टन है। इसमें चार पेलोड हैं जिनमें एक नासा का है। तीन भारतीय उपकरण चंद्रमा के भूकंपों पर प्रयोग करेंगे और लैंडिंग की जगह के ताप-भौतिक गुणों का अध्ययन करेंगे। नासा के पेलोड, लेजर रेट्रोरिफ्लेक्टर अरे को अंतिम समय में शामिल किया गया है। यह पृथ्वी-चंद्रमा सिस्टम की बारीकियों को समझने की कोशिश करेगा और चंदमा पर लैंडर और पृथ्वी के बीच की दूरी को नापेगा। रोवर का वजन करीब 27 किलो है। इसमें अल्फा पार्टिकल एक्स-रे स्पेक्ट्रोमीटर सहित दो पेलोड हैं। ये उपकरण चंदमा की सतह की रासायनिक संरचना का अध्ययन करेंगे।

(स्तंभकार विज्ञान मामलों के लेखक हैं)

response@jagran.com

ऊर्जा

दृष्टिकोण

मनुष्य के जीवन में दृष्टिकोण एक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता है। यह संसार विभिन्न विचारों वाले मनुष्यों की उपस्थिति से घिरा हुआ है। प्रत्येक मनुष्य के विचारों में भिन्नता होती है। विचार ही हैं जो दृष्टिकोण का निर्माण करने का कार्य करते हैं। यदि विचारों में श्रेष्ठता एवं पवित्रता के भाव हैं तो उनका प्रतिबिंब मनुष्य के दृष्टिकोण में स्पष्ट रूप में प्रतीत होता है, किंतु यदि विचारों में वैचारिक दुर्बलता के भावों का समावेश हो तो ऐसे विचार वाले मनुष्य के दृष्टिकोण में संकुचित भाव जन्म ले लेते हैं। निम्नस्तरीय विचारों से स्तरीय दृष्टिकोण विकसित नहीं हो पाता। विचार ही व्यवहार के निर्धारक तत्व की भूमिका में अपना योग देते हैं। इसलिए मनुष्य के व्यवहार में विचार तत्व सम्मिलित होता है। मनुष्य अपने व्यवहार में उन लक्षणों का ही प्रदर्शन करता है जो मस्तिष्क में विचार रूप में होते हैं। हम प्रायः किसी व्यक्ति विशेष या किसी वस्तु के संदर्भ में जब एक दृष्टिकोण को निर्धारित करते हैं तो हम मस्तिष्क में चल रहे विचारों का ही सहारा लेते हैं। कभी-कभी क्षणिकता में किसी व्यक्ति के प्रति उसके अच्छे या बुरे होने का दृष्टिकोण बना लिया जाता है। ठीक इसी प्रकार का दृष्टिकोण किसी वस्तु के संदर्भ में भी तय कर लिया जाता है। असल में हमारे मन में जो भाव विचरण करते हैं उन्हीं आधार हम यह तय करने का कार्य करते हैं, किंतु जब तय किया गया दृष्टिकोण गलत साबित हो जाता है तो ऐसी स्थिति में मन में दुख के भावों का परिलक्षण होता है। स्थिति तो विपरीत भी निर्मित होती है, जहां दृष्टिकोण नकारात्मक हो, किंतु हकीकत सकारात्मक रूप में भी सामने आ सकती है।

दृष्टि दृष्टिकोण को निर्मित करती है। सुख और दुख ये दोनों स्थितियां इसी बात पर निर्भर करती हैं कि हम किसी व्यक्ति या वस्तु का अवलोकन किस रूप में कर रहे हैं। अवलोकन का आधार ही दृष्टिकोण के निर्माण तक का सफर तय करता है और दृष्टिकोण का निर्धारण ही वह कला है जिसके आधार पर सुख और दुख जैसी स्थिति तय होती है। आवश्यक है कि मनुष्य अपने विवेक के आधार पर सकारात्मक रूप में स्थितियों का अवलोकन करे, अनुभव करे तत्पश्चात ही किसी दृष्टिकोण का निर्माण करे। क्षणिक रूप में कुछ भी तय करने से बचना चाहिए।

सौरभ जैन

दूसरों को बदलने की चाहत

फिर से

मैं आज जमाने की ठोकरों से इतना बदल गई हूं कि अपना बदला रूप देखने के लिए मुझे किसी एप की जरूरत नहीं पड़ती

जिंदगी में आप कितना बदल जाते हैं, कभी गौर करके देखना। बचपन से लेकर जवानी तक और जवानी से लेकर बुढ़ापे तक हमारी सूरत ही नहीं बदलती, अपितु हमारी सोच भी बदल जाती है। कई बार हम अधिक सहिष्णु बन जाते हैं और कई बार अधीर। बुढ़ापे के एप से तो हमने अपनी फोटो मिलान करा ली, लेकिन हमारी सोच में कितना बदलाव आया है, इसकी भी कभी आप गणना करना। मेरा बचपन में खिलंदड़ा स्वभाव था। अंदर कितना ही रोना छिपा हो, लेकिन बाहर से हमेशा हंसते रहना ही आदत थी। कठोर अनुशासन में बचपन बीता, लेकिन अपना स्वभाव नहीं बदला। जब जिंदगी के दूसरे पड़ाव में आई तब स्वभाव बदलने लगा। हम महिलाओं के साथ स्वाभाविकता खोने के दो कारण होते हैं, एक नौकरी और दूसरा पराया घर। नौकरी तो आप छोड़ सकते हैं, पर पराए घर को अपनाने की जिद होती है तो अपनाते रहते हैं। इस अपनाने में हम अपना स्वभाव बदल देते हैं। पराया घर तो होता ही है, हमें बदलने के लिए। तभी तो कहा जाता है कि इस घर में ऐसा नहीं चलेगा।

इस संसार में हर व्यक्ति एक काम जरूर करता है और वह है कि दूसरे पर खुद को थोपना। जैसे ही हमें अंश मात्र अधिकार मिलता है, हम दूसरों को बदलने के लिए आतुर हो जाते हैं। बच्चों को हम अपनी मर्जी का बनाना चाहते हैं। पति पत्नी को अपनी राह पर चलने को मजबूर करता है और पत्नी भी पति को बदलने में कोई कसर नहीं छोड़ती। हम हर क्षण दूसरे को प्रभावित करने की फिराक में रहते हैं। मैं बचपन के अनुशासन से इतनी संतृप्त थी कि मैंने प्रण लिया कि अपने बच्चों को खुली हवा में सांस लेने दूंगी। वे जो बनना चाहें बनें, जैसा जीवन जीना चाहें जीएं, मेरा हस्तक्षेप नहीं होगा, लेकिन फिर भी न चाहते हुए भी हमने न जाने कितनी बातें उन पर थोपी होंगी। कई बार मैं आश्चर्य में पड़ जाती हूं, जब बच्चों के बीच होती हूं। उनके पास शिकायत रहती ही है, जिसकी आपको कल्पना तक नहीं होती। तब मैं और बदल जाती हूं। घर परिवार के किसी सदस्य से बात कर देख लीजिए, उनके पास नई कहानी होगी। आप पर उनकी कहानी भारी पड़ने लगती है और आप बदलने लगते हैं।

जिंदगी भर देखा कि यहां हर व्यक्ति को ऐसे व्यक्ति की तलाश रहती है, जिसे वह अपना अनुयायी कह सके, उसे अपने अनुरूप उपयोग कर सके। मैं कुछ लोगों से प्रभावित होकर निकटता बनाने का प्रयास करती हूं तो क्या पाती हूं कि लोग मुझे अपना अनुयायी बनाने में जुट गए हैं। कुछ दिनों बाद वे अचानक ही मुझसे दूर हो गए! मैं आश्चर्य में पड़ जाती हूं कि क्या हुआ! पता लगता है कि मुझे अनुयायी बनाने की क्षमता नहीं रखते तो किनारा कर लिया। ऐसे में मैं बदलने लगती हूं। मैं आज जमाने की ठोकरों से इतना बदल गई हूं कि अपना बदला रूप देखने के लिए मुझे किसी एप की जरूरत नहीं पड़ती। मुझे खुद को ही समझ आता है कि मेरा खिलंदड़ा स्वभाव कहीं छिप गया है। मन का आनंद कम होने लगा है। अब रोज नए संबंध बनाने में रुचि नहीं रही, क्योंकि मैं शायद किसी के उपयोग की वस्तु नहीं रही, लेकिन जब कभी कोई महिला हंसती हुई दिख जाती है तो सुकून मिल जाता है कि अभी हंसी का जीवन शेष है।

(अजित गुप्ता का कोना ब्लॉग से साभार)

मेलबाक्स

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की आवश्यकता

नई शिक्षा नीति को लागू करने की चुनौती शीर्षक से लिखे अपने लेख में जगमोहन सिंह राजपूत ने नई शिक्षा नीति के संदर्भ में जिस विरोधाभास को व्यक्त किया है, वह हकीकत के बहुत करीब है। स्वतंत्र भारत में शिक्षाविद् डॉ. राधाकृष्णन, लक्ष्मण स्वामी मुदलियार और डीएस कोठारी की अध्यक्षता में गठित क्रमशः विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग, माध्यमिक शिक्षा आयोग और भारतीय शिक्षा आयोग की महत्वपूर्ण संस्तुतियों को यदि तत्कालीन भारत सरकार द्वारा प्राथमिक, माध्यमिक एवं विश्वविद्यालय शिक्षा के लिए लागू कर दिया जाता तो आज देश की शिक्षा व्यवस्था में घुन नहीं लगते। यह दुर्भाग्यपूर्ण रहा कि भारत में विकास की अन्य योजनाओं के सापेक्ष शिक्षा को निचले पायदान पर रखकर इसकी हर स्तर पर अनदेखी की जाती रही। जिसका दुष्परिणाम यह रहा कि आज वैश्विक रैंकिंग में भारतीय शिक्षा अपना स्थान नहीं बना पा रही है। मोदी सरकार नई शिक्षा नीति के माध्यम से भारत की शिक्षा व्यवस्था में आमूल-चूल परिवर्तन के लिए कृतसंकल्पित जरूर दिखाई दे रही है, लेकिन जब अवा ही खराब हो तो कुम्हार क्या कर सकता है? वस्तुतः शिक्षा की स्ववित्त पोषित व्यवस्था से उपजे लाभदायक शैक्षिक व्यापार ने देश की शिक्षा को जिस तरह से रसातल में पहुंचाने का काम किया है, उससे उबर पाना मुश्किल है। ऐसे में कोई भी आदर्श शिक्षा नीति तब तक कारगर नहीं हो सकती जब तक कुशल प्रबंधन, नियमन और निगरानी के द्वारा स्ववित्त पोषित शिक्षा के दोषपूर्ण अवे को दुरुस्त नहीं किया जाता। माना कि देश की बढ़ती आबादी के सापेक्ष स्ववित्त शिक्षा व्यवस्था आवश्यक है और यह होनी भी चाहिए, लेकिन शिक्षा की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए इन संस्थाओं पर सरकार के साथ-साथ सामाजिक नियंत्रण भी जरूरी है। इसी तरह अच्छे संसाधनों से सुसज्जित विद्यालय भवनों की तब तक कोई उपयोगिता नहीं है जब तक ठीक से प्रशिक्षित शिक्षक अपने विद्यार्थियों को शिक्षित करने में इनका सदुपयोग नहीं करते। इसके लिए शिक्षक प्रशिक्षण की कमजोर होती कड़ी को भी सुदृढ़ करने की आवश्यकता है।

डॉ. वीपी पाण्डेय, अलीगढ़

वोट की राजनीति और गरीब

उत्तर प्रदेश के सोनभद्र हत्याकांड को लेकर राजनीतिक दलों ने अपनी रोटियां सेकनी प्रारंभ कर दी हैं। अभी कांग्रेस की नेत्री प्रियंका गांधी गई थीं और उनके दुख में शामिल होकर तमाम मदद का भरोसा दिया। हालांकि यह भूमि का विवाद काफी पुराना है और उस दौर में प्रदेश में कांग्रेस की सरकार भी रही, लेकिन तब किसी ने इस समस

40 प्रतिशत से अधिक की कमी आई है देश के वनक्षेत्र में वर्ष 1880 से लेकर वर्ष 2013 तक। देश के अलग-अलग इलाकों में बारिश कम होने या फिर बहुत अधिक होने का एक बड़ा कारण इससे भी जुड़ा है।

आजकल

सूखे के बाद अब बाढ़ की त्रासदी

निरंकार सिंह
स्वतंत्र टिप्पणीकार

देश के कुछ क्षेत्रों में पिछले दिनों जहां पानी को लेकर हाहाकार मचा था, अब वहां भारी वर्षा से लोगों की परेशानी बढ़ गई है। बिहार और उत्तर प्रदेश समेत असम और महाराष्ट्र के भी कई इलाकों में लोग भारी वर्षा से परेशान हैं। इधर देश के 255 जिले पानी के लिए तरस रहे हैं। दक्षिण भारत का प्रमुख महानगर चेन्नई भीषण जल संकट से जूझ रहा है। ऐसे में समाज और सरकार को अतिवृष्टि और अनावृष्टि से जुड़े तथ्यों पर गौर करते हुए इस समस्या का समाधान तलाशना होगा

देश में वर्षा जल के संचय के अभाव में जहां कई राज्यों में सूखे और जल का संकट पैदा हो जाता है, वहीं वर्षाकाल में बाढ़ और जलभराव से कई क्षेत्रों में भारी समस्या पैदा हो जाती है। दुनिया के कई देशों के साथ भारत भी बाढ़ और जलवायु परिवर्तन से परेशान है। इसके कारण हर साल लगभग 10 अरब डॉलर की चपत लग रही है। केरल, गुजरात, राजस्थान, पश्चिम बंगाल, ओडिशा सहित देश के कुछ हिस्से जहां भारी वर्षा और बाढ़ से तस्त्र हैं, वहीं कुछ राज्य पर्याप्त वर्षा नहीं होने से जलसंकट झेल रहे हैं। बिहार, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल, और पूर्वोत्तर के राज्यों में भी बाढ़ की समस्या हर साल पैदा होती है। पर अब तक बाढ़ रोकने और नियंत्रित करने के लिए हम किसी कारगर योजना को अंजाम नहीं दे सके हैं। इसलिए जब वर्षा कम होती है तो सूखा पड़ जाता है और जब अधिक हुई तो बाढ़ आ जाती है।

बाढ़ तथा नदी के तटों के कटाव का सबसे अधिक असर उत्तर प्रदेश, बिहार, असम तथा पश्चिम बंगाल पर पड़ता है। उत्तरी बिहार की नदियां तो अपने मार्ग बदलकर अपने तट को काटकर सड़कों को भी काट देती हैं। केंद्र एवं राज्यों के सहयोग से जो तटबंध बना था उसका आरंभ में अच्छा परिणाम रहा, लेकिन कई कारणों से अब ये बांध बाढ़ के प्रवाह को रोक पाने में कामयाब नहीं हो पा रहे हैं। वास्तव में बाढ़ और सूखे की समस्याएं एक-दूसरे से जुड़ी हैं। इसलिए इनका समाधान भी जल प्रबंधन की कारगर और बेहतर योजनाएं बनाकर एक साथ किया जा सकता है। राष्ट्रीय बाढ़ नियंत्रण कार्यक्रम के अंतर्गत 150 लाख हेक्टेयर क्षेत्र को बाढ़ की एक सीमा तक सुरक्षा की व्यवस्था की जा चुकी है। इसके लिए 12,905 किमी लंबे तटबंध 25,331 किमी लंबी नालियां तथा 4,694 गांवों को ऊंचा उठाने का कार्य किया गया है। इन कामों पर 1,442 करोड़ रुपये खर्च किए गए हैं। पिछले 50 वर्षों में कुल मिलाकर बाढ़ पर 170 हजार करोड़ रुपये खर्च किए जा चुके हैं। लेकिन हमारे देश में बाढ़ जिस बड़े पैमाने पर आती है उस हिसाब से अभी बहुत सारा काम बाकी है। बाढ़ निरोध के उपायों की अधिकांश जिम्मेदारी अभी राज्यों पर ही है। केंद्र सरकार विभिन्न योजनाओं के माध्यम से राज्य को सहयोग करता है।

भारत में बाढ़ की रोकथाम के बारे में सबसे अधिक कार्य वैज्ञानिक डॉ. मेघनाद साहा ने किया है। उन्होंने भारत की नदियों की समस्या की व्याख्या की और बताया कि जर्मनी, अमेरिका और रूस में कैसे नदियों को नियंत्रित किया जाता है। डॉ. साहा ने अनुभव किया कि झारखंड में दामोदर जैसी नदी में बाढ़ की समस्या का हल रोकथाम के असंबद्ध उपायों के जरिये संभव नहीं है। बाढ़ नियंत्रण योजनाएं इंजीनियरिंग की दृष्टि से तभी सफल हो सकती हैं, जब बाढ़-पीड़ित क्षेत्रों की नदियों के जलविज्ञान व स्थलाकृति संबंधी विज्ञान का गहन अध्ययन किया जाए। आवश्यकता इस बात की है कि नदी के विशेष स्थानों पर बाढ़ का सही अनुमान लगाया जाए। प्राकृतिक रूप से कई निचले स्थानों को और गहरा कर बरसाती तथा बाढ़ के पानी को एकत्र कर सूखे की समस्या भी हल की जा सकती है। भारत के अधिकतर क्षेत्रों में बाढ़ के बहाव संबंधी आंकड़े प्राप्त नहीं हैं। ऐसे उद्देश्य की पूर्ति के लिए किसी केंद्रीय व्यवस्था पर ही उत्तरदायित्व होना चाहिए जो आधुनिक प्रणाली से आंकड़े संकलित कर सके। संकलन के बाद इन आंकड़ों का एकीकरण तथा विश्लेषण भी समुचित रूप से होना आवश्यक है। इसके लिए सेटेलाइट से अपनी धरती की आकृति का विश्लेषण किया जाना चाहिए।

बाढ़ पर लगाम लगाने के लिए जल संसाधन मंत्रालय से संबद्ध केंद्रीय जल आयोग है। इसके उत्तरदायित्वों में बाढ़ नियंत्रण, सिंचाई, पेयजल आपूर्ति और जल विद्युत विकास के उद्देश्यों के लिए संबद्ध राज्य सरकारों के सहयोग से देश भर में जल संसाधनों के नियंत्रण, संरक्षण और आयोग के लिए स्कीमें बनाना, समन्वय करना और उन्हें आगे बढ़ाना शामिल है। आयोग आवश्यकता पड़ने पर ऐसी किसी भी स्कीम की जांच, निर्माण और कार्यान्वयन भी करता है। इसका प्रमुख कार्य राज्य सरकारों द्वारा प्रस्तावित सिंचाई, बाढ़ नियंत्रण और बहुउद्देशीय परियोजनाओं का तकनीकी-आर्थिक मूल्यांकन करना है। इसके साथ ही 175 बाढ़ पूर्व सूचना केंद्रों के नेटवर्क के जरिये भारत की सभी प्रमुख बाढ़ की आशंका वाली अंतर राज्य नदी घाटियों के लिए बाढ़ पूर्व सूचना सेवाएं उपलब्ध कराना है। बाढ़ पर लगाम लगाने के लिए राज्य पहले से तैयारी करते हैं, लेकिन कई राज्यों में बाढ़ की निधि भ्रष्ट राजनेताओं और अधिकारियों की जेब में चला जाता है। कागजों पर बाढ़ के मद में खर्च दिखा दिया जाता है। इस समस्या से जुड़ी कई और चीजों पर समय रहते ध्यान देना होगा।

जलवायु परिवर्तन के कारण इस सदी के अंत तक खेती की उत्पादकता गंभीर रूप से प्रभावित होगी। एक संसदीय समिति में प्रस्तुत अपनी रिपोर्ट में कृषि मंत्रालय ने यह जानकारी दी है। रिपोर्ट के अनुसार, जलवायु परिवर्तन से कई फसलों की पैदावार में कमी आ सकती है, लेकिन सोयाबीन, चना, मूंगफली, नारियल (पश्चिमी तट में) और आलू (पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में) की पैदावार में वृद्धि भी हो सकती है। मंत्रालय का यह भी मानना है कि अगर जलवायु परिवर्तन को ध्यान में रखते हुए खेती का पैटर्न बदल दिया जाए तो तमाम फसलों की पैदावार में 10 से 40 फीसद तक की बढ़ोतरी संभव है।

विशेषज्ञों के मुताबिक जलवायु परिवर्तन की वजह से कई नदियों ने अपना रास्ता बदल दिया है। मानसून की अनिश्चितता के कारण 55 प्रतिशत असिंचित भूमि वाले किसान पहले से ही मुश्किल में थे, अब शेष 45 प्रतिशत इलाके में भी किसानों के सामने संकट मंडराने लगा है। जाहिर है, बड़े फैसले लेने का वक्त आ गया है। हमें अपनी खेती में व्यापक परिवर्तन करने होंगे। मौसम के उतार-चढ़ाव की सबसे ज्यादा मार वर्षा सिंचित कृषि पर पड़ती है। इसलिए कम पानी में पैदा हो सकने वाली फसलें विकसित की जानी चाहिए। कहीं भी एक फसल पर आश्रित रहने से काम नहीं चलेगा। बहु-फसली खेती की व्यवस्था हर जगह करनी होगी। ड्रिप और स्प्रिंकलर जैसी इजरायली तकनीक का इस्तेमाल बढ़ाया जाए ताकि पानी का बेहतर इस्तेमाल हो सके। लेकिन यह तभी हो पाएगा जब खेती को सरकार के एजेंडा में ऊपर लाया जाए। इस दिशा में केंद्र की मोदी सरकार ने कुछ कदम उठाए हैं, लेकिन उनका नतीजा आने में अभी वक्त लगेगा।

नदी प्रबंधन से हल होगी समस्या!

ज्ञानेंद्र रावत
वरिष्ठ पत्रकार एवं पर्यावरणविद्

देश में भीषण गर्मी के चलते लू के थपेड़ों से होने वाली मौतों का सिलसिला थमा भी नहीं था कि बाढ़ ने अपना प्रकोप दिखाना शुरू कर दिया, जबकि सभी जगहों पर बारिश सही से शुरू भी नहीं हुई है। देश में बाढ़ की समस्या का समाधान निकाल पाने में सरकारें नाकाम रही हैं। हर साल आने वाली बाढ़ का सामना देश का एक बड़ा हिस्सा करता है। विडंबना यह कि इसे रोकने का ढिंढोरा तो हर साल पीटा जाता है और बाढ़ से पहले ही हरेक साल बाढ़ रोकने के नाम पर करोड़ों की राशि खर्च भी की जाती है, लेकिन होता कुछ नहीं।

देश के अनेक हिस्सों में बाढ़ से हुई मौतों का आंकड़ा भी स्पष्ट नहीं है। ऐसे हालात में मवेशियों की मौत का आंकड़ा मिलना बहुत मुश्किल है। इसमें जान के साथ-साथ अरबों की राशि का हर साल नुकसान होता है। हजारों जीव-जंतुओं की जान जाती है, जैव-विविधता और बहुमूल्य वनस्पतियों का विनाश होता है सो अलग। दुख इस बात का है कि इस ओर किसी का ध्यान ही नहीं है। जबकि बाढ़ से होने वाली तबाही हर साल बढ़ती ही जा रही है। इसका प्रमुख कारण जंगलों के अंधाधुंध कटान के कारण बारिश के चक्र का बदलना है। इस बारे में इंटर-डिसिप्लीनरी प्रोग्राम इन क्लाइमेट स्टडीज आइआइटी मुंबई के प्रोफेसर सुबिमल घोष की मानें तो देश में कुल होने वाली बारिश में आई कमी का मुख्य कारण जंगलों के बेतहाशा कटान से बारिश के चक्र में आया बदलाव है। यदि आंकड़ों पर नजर डालें तो पता चलता है कि 1880 से लेकर 2013 तक देश के वनक्षेत्र में 40 फीसद से भी अधिक की कमी आई है। इससे देश में कहीं औसत से ज्यादा बारिश हो रही है तो कहीं औसत से भी काफी कम। दुख इस बात का है कि इस सबके बावजूद विकास के नाम पर लाखों पेड़ों की सरकार हर साल बलि दे रही है। वनों के क्षेत्रफल में गिरावट ने सीधे-साधे मौसम पर बुरा असर डाला है। विडंबना देखिए कि हालात की भयावहता के बावजूद सरकार के अनुसार बाढ़ को राष्ट्रीय आपदा घोषित करना समस्या का समाधान नहीं है।

अब जरा एशियाई विकास बैंक और पोस्टडैम इंस्टीट्यूट फॉर क्लाइमेट इंपैक्ट रिसर्च की रिपोर्ट पर नजर डालें। इसमें कहा गया है कि अगले 30 सालों में दक्षिण एशिया में 20 फीसद बारिश बढ़ जाएगी। इसकी प्रमुख वजह जलवायु परिवर्तन है। आने वाले सालों में हालात और भयावह होंगे। भौगोलिक क्षेत्र की ज्यादातर नदियां ग्लेशियरों पर 80 फीसद तक निर्भर हैं। जलवायु परिवर्तन से ग्लेशियर पिघल रहे हैं। नदियों की स्वाभाविक प्रकृति प्रभावित हो रही है। यहां पर शहरों की आबादी में बेतहाशा बढ़ोतरी के कारण सीवर प्रणाली विकसित किए जाने की बेहद जरूरत है। कचरा प्रबंधन का पर्याप्त उपाय किया जाना भी जरूरी है, ताकि बारिश के मौसम में पानी का जमाव न हो। जाहिर सी बात है कि इनका हमारे देश में अभाव है। इसमें भी पूरी तरह से सुधार करने की जरूरत है।

हर साल आने वाली बाढ़ की प्रकृति में बढ़ोतरी ढांचागत विकास में जल निकासी की अनदेखी का ही नतीजा है। इसमें परंपरागत जलस्रोतों की अनदेखी की गई जो जल भंडारण के बड़े स्रोत हुआ करते थे। नदियों में गाद की समस्या भी बाढ़ का प्रमुख कारण है जिसका समाधान करने में सरकारें अब तक नाकाम रही हैं। जबकि नदियों में गाद की समस्या के निदान हेतु एक समग्र सिल्ट पॉलिसी बनाने और नदी प्रबंधन की मांग बरसों से पर्यावरणविद्, नदी विशेषज्ञ और नदी जल वैज्ञानिक कर रहे हैं। यही नहीं, वनविहीन हो चुके नदियों के जलागम को वनाच्छादित करने में भी सरकार की विफलता जगजाहिर है। इससे एक ओर जहां नदियों के जल बहाव नियंत्रित करने में मदद मिलती, वहीं दूसरी ओर वनाच्छादित तट प्राकृतिक तौर पर बांधों के रूप में अपनी सक्रिय भूमिका भी निभाते। मौसम के बदलाव के मद्देनजर नदियों की प्रकृति का सूक्ष्म रूप से विश्लेषण-अध्ययन किया जाना चाहिए। उसी के तहत नदी प्रबधंन की व्यवस्था की जाए। इस दिशा में सरकार और समाज दोनों को ईमानदारी से प्रयास करने होंगे, तभी कुछ बात बनेगी।

खरी-खरी

एक स्थगित श्रद्धांजलि सभा...!

डॉ. पिलकेंद्र अरोरा

एक लेखक की मृत्यु हुई थी। अखबारों में श्रद्धांजलियां बरस रही थीं। कॉफी हाउस में डोसा खाते हुए संस्था सचिव ने अध्यक्ष से कहा- सर के लिए हमें भी एक श्रद्धांजलि सभा रखनी चाहिए, सर।

यार 'ई-उठावना' और 'ई-तेरहवीं' के डिजिटल युग में कैसी श्रद्धांजलि और कैसी सभा! वैसे भी संस्था में फूटी कौड़ी नहीं है! पर वे हमारी संस्था के संरक्षक थे और पूर्व अध्यक्ष भी। हमारा इतना नैतिक दायित्व तो बनता है कि उनकी स्मृति में कोई सभा करें।

ओह! अब आप बताएंगे कि हमारा दायित्व क्या है! मैं पहले ही अध्यक्ष बनकर पछता रहा हूं। पिछली पार्टी में दो हजार मेरे खर्च हुए। मुझे जेब कटवाने का इतना शौक नहीं। लोग तो मरते रहते हैं! हम कितनी सभाएं करेंगे! फिर श्रद्धांजलि सभा में हॉल, साउंड-सिस्टम, फ्लैक्स, चित्र, हार, चाय-नाश्ता आदि में कितना रुपया वेस्ट होता है! पता भी है!

सर, कई संस्थाओं ने सभाएं की हैं। कितना बुरा लगेगा यदि हम अपने ही संरक्षक के लिए नहीं करेंगे तो! यार इतने सेंटी मत बनो। अच्छा बताओ! यदि हमारी संस्था ने श्रद्धांजलि नहीं दी तो क्या उनकी आत्मा को शांति नहीं मिलेगी! जब इतनी संस्थाओं ने श्रद्धांजलियां दे ही डाली हैं तो अब तक उनकी आत्मा को तो कबकी शांति मिल चुकी होगी!

जैसा आप चाहें सर, मैं तो संस्था की गुडविल के लिए कह रहा हूं।

देखो, तुम सिर्फ एक काम करो। दूसरी संस्थाओं की तरह एक प्रेसनोट जारी कर दो कि दिवंगत की स्मृति में एक सभा का आयोजन किया गया। सभा में अमुक-अमुक ने भाग लिया, अमुक-अमुक ने उनके जीवन पर प्रकाश डाला। कौन कन्फर्म करता है कि सभा हुई भी या नहीं?

पर सर, झूठी श्रद्धांजलि! कहां तक ठीक है? सोचिए, कल यदि आपको भी ऐसी श्रद्धांजलि में ही निपटा दिया जाए तो? ओह! माफ कीजिए! आप जिएं हजारों साल! मगर मेरा मतलब है कि कागजी श्रद्धांजलि से दिवंगत की आत्मा को शांति तो क्या मिलेगी, कष्ट ही होगा!

यार बी प्रैक्टिकल! जैसा कहा, वैसा करो! तुम्हें जरा भी एक्सपीरियंस नहीं! तभी वेटर बिल ले आया। पेमेंट कर दोनों कॉफी हाउस से बाहर आ गए। अगले दिन नगर के सभी समाचार पत्रों में संस्था द्वारा दिवंगत लेखक को श्रद्धांजलि देने के समाचार डबल कॉलम में प्रकाशित हुए। और सचिव ने अध्यक्ष को बधाई देते हुए कहा- यू आर जीनियस सर!

ट्वीट-ट्वीट

झारखंड में चार लोगों को डायन बताकर मॉब लिंचिंग हुई। उनकी जान गई पर कोई हंगामा नहीं, क्योंकि कुछ लोगों के लिए उस जान की कीमत ही नहीं जिस पर कोई सियासत न हो सके। यही हिंदू-मुस्लिम एंगल निकलता तब देखते कुछ लोगों का जोश।
सुशांत सिन्हा@SushantBSinha

कुछ देशों- पाकिस्तान, तुर्की ट्यूनीशिया, लीबिया, अजरबैजान, अल्जीरिया, मलेशिया, मालदीव आदि के ध्वज में चांद है और कुछ देशों- अमेरिका, रूस, भारत और चीन के ध्वज चांद पर हैं।
हरभजन सिंह@harbhajan_singh

इसरो ने पंद्रह दिन पहले तकनीकी गड़बड़ी के कारण अपने मिशन को टाल दिया, लेकिन तेजी से सुधार करते हुए अपने मिशन का सफलतापूर्वक आगाज भी कर दिया। कर्नाटक विधानसभा का सत्र भी लगभग इसी समय शुरू हुआ और वह अभी भी जारी है। लगता है कि विधायकों की तुलना में चांद कहीं अधिक करीब है।
डीपी सतीश@dp_satish

कश्मीर घाटी में कम हो रहे हैं पत्थरबाज

प्रमोद भार्गव
वरिष्ठ पत्रकार

देश के बदले राजनीतिक माहौल और जम्मू-कश्मीर पर नरेंद्र मोदी एवं अमित शाह की सख्ती के चलते आतंकवाद, अलगाववाद व पत्थरबाजों पर शिकंजा कसा है। नतीजन घाटी की आबोहवा बदली नजर आ रही है। गृह मंत्रालय द्वारा जारी एक रिपोर्ट में खुलासा हुआ है कि 2016 में सेना पर पत्थर बरसाने वाले युवाओं की संख्या ढाई हजार से ज्यादा थी, जो कुछ दर्जनों में सिमट गई है। इसे सरकार की कठोर रणनीति और सैन्यबलों की सख्त कारईवाई की वजह माना जा रहा है।

जम्मू-कश्मीर में सख्ती के चलते हालात तेजी से सुधर रहे हैं। आम जन-जीवन सामान्य हो रहा है और पत्थरबाजी की घटनाएं घट रही हैं। वर्ष 2016 में जहां पत्थरबाजी की 2,653 घटनाएं हुई। वर्ष 2017 में पत्थरबाजी की 1,412 घटनाएं घटीं, नतीजतन गड़बड़ी फैलाने वाले 2,838 लोगों को गिरफ्तार किया गया। वर्ष 2018 में पत्थरबाजी की 1,458 घटनाएं घटीं जिनमें 3,797 असामाजिक तत्व हिरासत में लिए गए। वर्ष 2019 के छह महीनों के भीतर पत्थरबाजी की मात्र 40 घटनाएं घटीं, जिनमें करीब 100 लोग गिरफ्तार किए गए। दरअसल 19 जून 2018 को राज्यपाल शासन लागू होने के बाद घाटी में आतंक लगातार काबू में आ रहा है और सुरक्षा की स्थिति सुधर रही है। नतीजन फारूख अब्दुल्ला और महबूबा मुफ्ती द्वारा भड़काऊ बयान देने के बावजूद घाटी में शांति कायम है। वर्ष 1987 के बाद ऐसी शांति पहली बार बाहर हुई है। ये हालात इसलिए बने, क्योंकि 2018 में पाकिस्तान द्वारा प्रशिक्षित 240 से ज्यादा युवा आतंकियों को सुरक्षा बलों ने मार गिराया।

पाकिस्तान स्थित प्रतिबंधित आतंकवादी संगठन जैश-ए-मोहम्मद और हिजबुल मुजाहिदिन 2019 से पहले तक जम्मू-कश्मीर में सेना और सुरक्षा बलों पर आत्मघाती हमले करने के लिए बड़ी संख्या में मासूम बच्चों और किशोरों की भर्तियां कर रहे थे। इन्हें सेना और आतंकियों के बीच हुई मुठभेड़ों के दौरान इस्तेमाल भी किया गया। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की एक रिपार्ट में इन तथ्यों का

खुलासा भी किया गया है। रिपोर्ट के मुताबिक ऐसे आतंकी संगठनों में शामिल किए जाने वाले बच्चों और किशोरों को आतंक का पाठ मदरसों में पढ़ाया गया है। पिछले साल कश्मीर में हुए तीन आतंकी हमलों में बच्चों के शमिल होने के तथ्यों की पुष्टि हुई थी। जम्मू-कश्मीर में युवाओं को आतंकवादी बनाने की मुहिम कश्मीर के अलगाववादी भी चला रहे थे। इस तथ्य की पुष्टि 20 वर्षीय गुमराह आतंकवादी अरशिद माजिद खान के आत्म-समर्पण से हुई थी। अरशिद कॉलेज में फुटबॉल का अच्छा खिलाड़ी था, किंतु कश्मीर के बिगड़े हुए माहौल में धर्म की अफीम चटा देने के कारण वह बहक गया और लश्कर-ए-तैयबा में शामिल हो गया। उसके आतंकवादी बनने की खबर से मां-बाप जिस बेहाल स्थिति को प्राप्त हुए, उससे अरशिद का हृदय पिघल गया और वह घर लौट आया।

कश्मीरी युवक जिस तरह से आतंकी बनाए जा रहे थे, यह पाकिस्तानी सेना और वहां पनाह लिए आतंकी संगठनों का नापाक मंसूबा है। पाकिस्तान की अवाम में यह मंसूबा पल रहा है कि वे हिंदुस्तान को अपने कब्जे में कर लेंगे। इसी मकसद के साथ वे इस तरह की गतिविधियों को अंजाम दे रहे हैं। हालांकि इस सच्चाई से पर्दा संयुक्त राष्ट्र ने तो बहुत बाद में उठाया, खुद पाकिस्तान के पूर्व लेफ्टिनेंट जनरल एवं पाक खुफिया एजेंसी आइएसआइ के सेवानिवृत्त अधिकारी रहे शाहिद अजीज ने 'द नेशनल डेली अखबार' में पहले ही उठा दिया था। अजीज ने कहा था कि 'कारगिल की तरह हमने कोई सबक नहीं लिया है। हकीकत यह है कि हमारे गलत और जिद्दी कामों की कीमत हमारे बच्चे अपने खून से चुका रहे हैं।'

किंतु शाहिद अजीज के कहे से कोई सबक न तो पाकिस्तानी आतंकियों ने लिया और न ही कश्मीर के अलगाववादियों ने? घाटी में जो भी बदलाव आया है, वह अलगाववादियों का हुक्का-पानी बंद करने और पाकिस्तान से भेजे गए आतंकियों को मौत के घाट उतार देने से आया है। दरअसल पाक से मिल रही आर्थिक मदद कश्मीर में अलगाव की आग सुलगाए रखने का बहाना बनी हुई थी। राष्ट्रपति शासन लागू होने के बाद एनआइए ने जब घाटी के अलगाववादी नेता यासीन मलिक, नईम खान, अल्ताफ शाह, शब्बीर शाह, मसरत आलम और आसिया अंद्राबी को जेल भेज दिया और हुर्रियत के प्रमुख सैयद अली शाह गिलानी को घर में ही नजरबंद कर दिया तब से घाटी में शांति की शुरुआत हो गई। लेकिन इस शांति की स्थाई रूप से बहाली तभी होगी, जब संविधान के अनुच्छेद 370 और 35ए के प्रावधान खत्म होंगे।

हालांकि नरेंद्र मोदी और अमित शाह की जोड़ी ने मिशन कश्मीर पूरा करने की दृष्टि से विधानसभा सीटों का नए सिरे से परिसीमन शुरू कराने की पहल कर दी है। परिसीमन पूरा होने के बाद विधानसभा सीटों के मतदाताओं के जनसंख्यामक घनत्व में परिवर्तन आएगा, जो घाटी में धार्मिक व जातीय बहुलतावाद का आधार बनेगा। इस बहुलतावादी वातावरण के निर्माण होने के बाद जो चुनाव होंगे, उससे निकले जनादेश से यह उम्मीद बंध जाएगी कि वह जम्मू-कश्मीर विधानसभा में प्रस्ताव लाकर धारा-370 और 35-ए जैसे अलगाववाद को उकसाने वाले अस्थाई प्रावधानों को खत्म करने की सिफारिश केंद्र सरकार से करे। ऐसा संभव हो जाता है तो कश्मीर में स्थाई शांति हमेशा के लिए कायम हो जाएगी।

जागरण जनमत — कल का परिणाम

क्या कानून बनाकर मॉब लिंचिंग की घटनाएं रोकी जा सकती हैं?

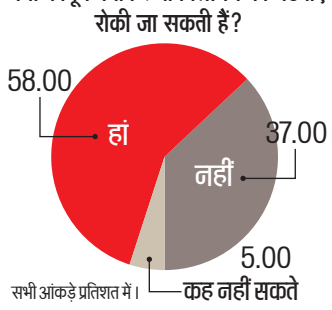

सभी आंकड़े प्रतिशत में।

आज का सवाल

बंगाल में पंचायत व नगर पालिका चुनाव बैलेट पेपर से कराने का ममता बनर्जी का फैसला सही है?

अपनी राय और अधिक लोगों तक पहुंचाने के लिए अपने मोबाइल के मैसेज बॉक्स में जाकर **POLL** लिखें, स्पेस देकर **Y, N** या **C** लिखकर 57272 पर भेजें
Y -हां, **N**-नहीं, **C**-कह नहीं सकते

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है।

जनपथ

भारत उड़ता बाज है सके न कोई बांध,
खबर बधाई की सुनो है मुट्ठी में चांद।
है मुट्ठी में चांद खुशी से मन लहराए,
अब तो तीनों लोक तिरंगा ध्वज फहराए।
जल-थल-नभ के पार पहुंचती दिखती है हद,
चांद-सितारे चूम रहा है अपना भारत।
- ओमप्रकाश तिवारी

मुद्दा

तीसरे वर्ग के रूप में पहचान का अधिकार

सौरभ
शोध अध्येता, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर

वर्तमान में विश्व के अनेक राष्ट्रों में ट्रांसजेंडरों को कानूनी अधिकार प्राप्त हैं। भारत में इस वर्ग के लोगों को समान रूप से मान-सम्मान भी नहीं है। ऐसे में इस तीसरे वर्ग को कानूनी पहचान का अधिकार मुहैया कराना एक स्वागत योग्य कदम है

समाज के स्वरूप पर जब चर्चा की जाती है तो स्त्री और पुरुष के संबंध में तो बातें होती हैं, किंतु एक वर्ग पीछे रह जाता है जो न तो स्त्री और न ही पुरुष की श्रेणी में है। यही कारण है कि इस वर्ग को समाज में कोई मान-सम्मान, अधिकार नहीं मिला है। इस कमी को दूर करने के उद्देश्य से हाल ही में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने ट्रांसजेंडर व्यक्ति (अधिकारों की सुरक्षा) विधेयक 2019 को प्रस्तुत करने के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है। बिल के अध्याय-3 की धारा 19 के अनुसार, 'अगर कोई व्यक्ति ट्रांसजेंडर को भीख मांगने या किसी अन्य प्रतिबंधित काम करने के लिए मजबूर करेगा, उसे कम से कम छह महीने या दो साल तक की जेल की सजा तथा जुर्माने से दंडित किया जा सकता है।' बाद में विधेयक से भीख शब्द हटा लिया गया है, जबकि अन्य सभी बातें समान हैं। गत वर्ष अगस्त में दिल्ली हाई कोर्ट ने अपने एक ऐतिहासिक फैसले में भीख मांगने को अपराध की श्रेणी से बाहर कर दिया था।

हालांकि सुधारों की दिशा में प्रयास काफी समय पूर्व से प्रारंभ हो गए थे। दिसंबर, 2018 में ट्रांसजेंडर व्यक्ति (अधिकारों का संरक्षण) विधेयक, 2016 लोकसभा में 27 संशोधन के साथ पास किया गया था। यह विधेयक दो वर्ष पूर्व सदन में प्रस्तुत हुआ था जिसे परामर्श के लिए सामाजिक न्याय और सशक्तिकरण विभाग की स्थाई समिति के पास भेजा गया।

स्थाई समिति ने लोकसभा में 27 संशोधन प्रस्तुत किए जिन्हें लोकसभा ने स्वीकृत करते 17 दिसंबर 2018 को पास कर दिया। इस संबंध में उल्लेखनीय है कि ट्रांसजेंडर वह व्यक्ति होता है जो अपने जन्म से निर्धारित लिंग के विपरीत लिंगी की तरह जीवन बिताता है। जब किसी व्यक्ति के जननांगों और मस्तिष्क का विकास उसके जन्म से निर्धारित लिंग के अनुरूप नहीं होता है, महिला यह महसूस करने लगती है कि वह पुरुष है और पुरूष यह महसूस करने लगता है कि वह महिला है। इस विधेयक के अंतर्गत एक व्यक्ति को पुरुष, महिला या ट्रांसजेंडर के रूप में पहचान का अधिकार प्रदान किया गया है। ट्रांसजेंडर व्यक्तियों को मताधिकार वर्ष 1994

में ही मिल गया था, परंतु इन्हें मतदाता पहचान-पत्र जारी करने का कार्य पुरुष और महिला के प्रश्न पर उलझ गया। इस विधेयक के माध्यम से सरकार ने ऐसी व्यवस्था लागू की है जिससे किन्नरों को भी सामाजिक जीवन, शिक्षा और आर्थिक क्षेत्र में आजादी से जीने का अधिकार मिल सके। इस विधेयक के अंतर्गत ट्रांसजेंडर व्यक्ति के भेद को निषेध करता है।

साथ ही यह विधेयक व्यक्ति को उसके स्वरूप के अनुसार अनुभव की जाने वाली लैंगिक पहचान के रूप में मान्यता प्रदान करने का अधिकार देता है। बाकायदा इसके लिए उन्हें पहचान पत्र जारी किए जाएंगे जिसके माध्यम से ट्रांसजेंडर व्यक्ति किसी भी स्थान पर भर्ती, नियोजन और प्रोन्नति में भेद का शिकार न हो सकें। यदि इस प्रकार की कोई घटना होती है तो इसके लिए एक अलग से शिकायत निवारण तंत्र की स्थापना का भी प्रावधान इस विधेयक में किया गया है। और इस विधेयक में उक्त प्रावधानों का उल्लंघन करने वालो को दंड देने की बात भी कही गई है। दो वर्ष पूर्व यह विधेयक सदन में पेश किया गया था, फिर इसे ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के संबंध में गठित समिति के समक्ष भेजा गया था। समिति ने अपनी रिपोर्ट में कई महत्वपूर्ण बातें कही हैं जिनमें प्रमुख रूप से ट्रांसजेंडर व्यक्ति की परिभाषा को पुनःपरिभाषित करने का कार्य हुआ है। यह वर्ग समाज में सदैव भेदभाव का शिकार होता रहा है और समाज में किन्नर समुदाय को उपहास की दृष्टि से देखा जाता है। किन्नरों को सम्मानजनक जीवन मिले इसके लिए समिति ने ही शिकायत निवारण तंत्र की स्थापना की बात की थी जिसे विधेयक में स्वीकार कर लिया गया। यही नहीं, समिति ने तो इस वर्ग को विकास के मार्ग पर आगे बढ़ाने हेतु आरक्षण देने संबंधी बात भी कही थी। समिति की रिपोर्ट में जिक्र है कि इस वर्ग के लोगों को भिक्षा वृत्ति की प्रवृत्ति से रोकने हेतु कौशल प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।

इस विधेयक में ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के मौलिक अधिकारों को संविधान द्वारा प्रदत्त मौलिक अधिकार (अनुच्छेद 14, 19, 21) के साथ जोड़ते हुए इनकी व्याख्या की गई। इतना ही नहीं, मानसिक स्वास्थ्य देखरेख विधेयक में और विकलांग व्यक्तियों के अधिकार अधिनियम में भी अधिकारों की इसी भाषा का प्रयोग किया गया।

भारत में वर्तमान में यह आवश्यक भी हो गया था, क्योंकि यहां इस वर्ग के व्यक्तियों को न तो पुरुषों की श्रेणी में गिना जा सकता है और न ही महिलाओं की। पुरातन व्यवस्था के अनुरूप दो लिंग ही लैंगिक आधार पर विभाजन के लिए उपयुक्त हैं, इसलिए यह वर्ग सामाजिक तौर पर बहिष्कृत कर दिया जाता है जिसके चलते शिक्षा इनकी पहुंच से दूर हो जाती है और वे रोजगार प्राप्त करने के स्तर तक नहीं पहुंच पाते। तथा तमाम सुविधाओं से मात्र लैंगिक आधार पर स्वीकृति न होने के चलते वे वंचित रह जाते थे, इसलिए यह विधेयक आवश्यक था। पूर्व में उच्चतम न्यायालय ने भी ट्रांसजेंडर व्यक्तियों द्वारा स्वयं अपना लिंग निर्धारित किए जाने के अधिकार को सही ठहराया और राज्य सरकारों को कानूनी निर्देश तक दिए थे। न्यायालय ने तो इस वर्ग को आर्थिक दृष्टि से पिछड़ा वर्ग मानने की बात कही थी, क्योंकि शैक्षणिक संस्थाओं में प्रवेश और नौकरियों में आरक्षण का लाभ इन्हें नहीं मिल रहा था।

अब विधेयक के माध्यम से इस वर्ग को एक अलग पहचान प्रदान करने का प्रयास किया गया है तो भारत के अन्य नागरिकों के लिए भी आवश्यक है कि वे इन्हें सामाजिक कलंक के तौर पर न देखें शिक्षा, बल्कि स्वास्थ्य और आजीविका के साधनों में मदद करने का कार्य करें, क्योंकि सदन सिर्फ कानून बना सकता है, उस कानून का पालन करना देश के सभी नागरिकों का कर्तव्य है।

508 गांवों के सड़क से जुड़ने का सपना उत्तराखंड में टूट सकता है। पीएमजीएसवाई के तहत मार्च 2019 तक का था 2658 गांवों को सड़कों से जोड़ने का लक्ष्य था। अब तक 2142 गांव ही जोड़े जा चुके हैं। योजना निरस्त होता देख शासन केंद्र से मदद की गुहार लगाने की तैयारी कर रहा है।

www.jagran.com राष्ट्रीय संस्करण
दैनिक जागरण
मंगलवार 23 जुलाई 2019

कश्मीर में पाकिस्तान ने की भारी गोलाबारी, सैनिक शहीद

नापाक हरकत ▸ भारतीय चौकियों व नागरिक ठिकानों को बनाया निशाना

सीमा पार से पुंछ के खड़ी करमाडा सेक्टर में तीन घंटे तक चली गोलाबारी

जेएनएन, जम्मू/पुंछ

जम्मू संभाग के जिला राजौरी के सुंदरबनी में नियंत्रण रेखा से सटे केरी सेक्टर में पाकिस्तान ने सोमवार सुबह भारतीय चौकियों और नागरिक ठिकानों पर भारी गोलाबारी की। इसमें सेना का एक जवान शहीद और एक अन्य गंभीर रूप से घायल हो गया। जबकि रविवार मध्य रात्रि पाक सेना ने जिला पुंछ में खड़ी करमाडा सेक्टर को भी निशाना बनाया जिससे कई घरों को नुकसान पहुंचा है।

केरी सेक्टर में सुबह करीब साढ़े छह बजे पाक ने पहले हल्के हथियारों से गोलीबारी की। देखते ही देखते नागरिक ठिकानों पर गोले दागे जाने लगे। इसके बाद गोलाबारी में और तेजी आई। एलओसी से सटे कई गांवों में दहशत फैल गई। लोग सुरक्षित स्थानों की तरफ भागने लगे। गांव बट्टल और इखनी नाले के पास छह गोले गिरे। भारतीय सेना ने गोलाबारी का मुंह तोड़ जवाब दिया जिसमें पाकिस्तान के एक सैनिक के मारे जाने की सूचना है। जिस समय यह गोलीबारी शुरू हुई तो लोग श्रावण मास के पहले सोमवार होने के कारण मंदिरों में जा रहे थे। गोलाबारी में सेना की 18वीं राज राइफल में तैनात दो सैनिक गंभीर रूप से घायल हो गए। आरिफ खान ने अस्पताल में दम तोड़ दिया। एक अन्य सैनिक का इलाज कमान अस्पताल में चल रहा है। शहीद आरिफ मूलता उत्तर प्रदेश के कासगंज के रहने वाले हैं, लेकिन उनका परिवार इन दिनों वडोदरा में रहता है। जवाबी कार्रवाई के बाद पाक की ओर से गोलाबारी रुक-रुक कर होने लगी। अंतरराष्ट्रीय सीमा और नियंत्रण रेखा पर जवानों को मुस्तैद रहने को कहा है। बट्टल गांव के लोगों का कहना है कि साल 1965 और 1971 के युद्ध में भी इस गांव में गोले नहीं पड़े। यह पहला मौका है जब पाक ने नागिरक ठिकानों पर यहां गोलाबारी की है।

पुंछ में गोलाबारी : पाक की 41 बलोच के सैनिकों ने अग्रिम पोस्ट बकरी मेन, बकरी एक के अलावा कई अन्य चौकियों से भारतीय सेना की अग्रिम चौकियों और रिहायशी क्षेत्रों में मोर्टार दागे। गोलीबारी में जानी नुकसान की जानकारी नहीं, लेकिन कई घरों को नुकसान जरूर पहुंचा।

बीएसएफ जवान ने गोली मार की आत्महत्या

राज्य ब्यूरो, श्रीनगर : उत्तरी कश्मीर में नियंत्रण रेखा से सटे नौगाम सेक्टर, कुपवाड़ा में तैनात सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) के एक जवान ने सोमवार खुद को गोली मार आत्महत्या कर ली। बीएसएफ प्रशासन ने इस संदर्भ में विभागीय जांच का आदेश जारी कर दिया है।

जानकारी के अनुसार, नौगाम सेक्टर में तैनात बीएसएफ की 77वीं वाहिनी के शिविर में दोपहर को अचानक गोली की आवाज सुनाई दी। शिविर में मौजूद जवान और अधिकारी तुरंत उस जगह पहुंचे, जहां से आवाज आई थी। आवाज एक बैरक से आई थी। जवानों ने जब भीतर देखा तो वहां उनका एक साथी खून से लथपथ पड़ा मिला। वह अकेला ही था। जवानों ने उसे निकटवर्ती अस्पताल पहुंचाया, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत लाया घोषित कर दिया।

अधिकारियों ने बताया कि मृत कर्मी की पहचान 42 वर्षीय रविंद्र कुमार के रूप में हुई है। उसने अपनी सर्विस राइफल से अपने सिर में गोली मार आत्महत्या की है। उसने यह कदम क्यों उठाया, इसका पता लगाया जा रहा है।

मोदी सरकार ने कहा, विकास के वादों पर हो रहा अमल

नई दिल्ली, प्रेट्र : केंद्र की मोदी सरकार ने सोमवार को कहा कि तेज विकास का उसने जो वादा किया था उस पर पहले ही अमल शुरू हो चुका है। सरकार ने 50 दिन का रिपोर्ट कार्ड पेश करते हुए कहा कि पिछले कार्यकाल की तुलना में मोदी सरकार के दूसरे कार्यकाल में सुधार की रफ्तार तेज है। सूचना प्रसारण मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने रिपोर्ट कार्ड और सरकार की उपलब्धियां पेश करते हुए कहा कि सरकार के दूसरे कार्यकाल के 50 दिन में 'गति, कौशल और पैमाने' का प्रदर्शन हुआ है। उन्होंने कहा कि सरकार किसानों, कारोबारियों, छोटे उद्यमियों, बेरोजगारों और मध्यम वर्ग समेत समाज के सभी वर्गों के कल्याण के लिए जमीनी स्तर पर काम कर रही है। देश को यह महसूस होने लगा है कि सुधार की गति बढ़ी है।

पिछले लोस चुनाव में भाजपा के अकेले 303 सीटें जीतने के बाद पीएम मोदी ने 30 मई को फिर से पीएम पद की शपथ ली थी। 1971 के बाद यह पहला अवसर था जब कोई सरकार बहुमत के साथ सत्ता में वापस आई। जावड़ेकर ने कहा, अब पांच ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था कोई सपना नहीं है, बल्कि इसका रोडमैप बताया जा चुका है। इस सरकार के पहले पचास दिन ने बता दिया है कि उसका कार्यक्रम कहीं अधिक प्रभावी होगा। उन्होंने कहा, सभी किसानों को छह हजार रुपये की सहायता दी गई, कई फसलों का समर्थन मूल्य तीन गुना तक बढ़ाया गया और दस हजार किसानों के संगठन बनाए गए। श्रम कानूनों में बदलाव से 40 करोड़ श्रमिकों को लाभ होगा।

मुंबई में एमटीएनएल की इमारत में आग, 60 लोगों को बचाया

मुंबई में सोमवार को एमटीएनएल की बहुमंजिला इमारत में आग लग गई। प्रेट्र

मुंबई, प्रेट्र : मुंबई के बांद्रा में सोमवार को एमटीएनएल की बहुमंजिला इमारत में आग लग गई। अभी तक क्रेन के जरिये 60 लोगों को सुरक्षित निकाला जा चुका है। इमारत में फंसे अन्य लोगों को निकालने का काम जारी है। बचाव कार्य में लगे दमकल विभाग के दो कर्मचारी घायल हो गए हैं, उन्हें पास के अस्तपाल में भर्ती कराया गया है।

बांद्रा में एमटीएनएल की नौ मंजिला इमारत है। सप्ताह का पहला कार्य दिवस होने के चलते इमारत में कर्मचारियों के साथ ही काफी संख्या में लोग मौजूद थे। अचानक तीन बजे के आसपास इमारत की तीसरी-चौथी मंजिल पर आग लग गई। थोड़ी देर में पूरी बिल्डिंग में धुआं फैल गया। इमारत में फंसे लोग बिल्डिंग की 8वीं और 9वीं मंजिल की सीढ़ियों के पास खड़े थे। क्रेन की मदद से कई लोगों को सुरक्षित नीचे उतार लिया गया है जबकि बाकी लोग अभी भी अंदर फंसे हैं। अंदर फंसे लोग अपने मुंह को कपड़ों से ढक कर खड़े नजर आ रहे हैं। एक अधिकारी के मुताबिक पांचवीं मंजिल से नीचे के लोगों को निकाल लिया गया है, जबकि छठी से नौवीं मंजिल तक के लोग अभी फंसे हुए हैं। मौके पर 14 दमकल गाड़ियां, एक एंबुलेंस और रोबोट वाहन मौजूद है। इसे हाल ही में आग बुझाने के बेड़े में शामिल किया गया है।

रतन टाटा समेत अन्य के खिलाफ मानहानि की कार्यवाही रद

मुंबई, प्रेट्र : बांबे हाई कोर्ट ने सोमवार को टाटा संस के पूर्व चेयरमैन रतन टाटा व अन्य के खिलाफ स्थानीय कोर्ट द्वारा शुरू की गई मानहानि की कार्यवाही को रद कर दिया। नुस्ली वाडिया की तरफ से दाखिल आपराधिक मानहानि के मामले में टाटा संस के मौजूदा चेयरमैन एन. चंद्रशेखरन और आठ निदेशक भी नामजद किए गए थे।

दिसंबर 2018 में शहर के एक मजिस्ट्रेट कोर्ट ने वाडिया की तरफ से दाखिल आपराधिक मानहानि मामले में रतन टाटा व अन्य को नोटिस जारी किया था। टाटा समूह की कुछ कंपनियों से बाहर किए जाने के बाद वाडिया ने वर्ष 2016 में यह मामला दर्ज कराया था। इसके बाद टाटा व अन्य ने स्थानीय अदालत में चल रही मुकदमे की कार्यवाही को खारिज करने के लिए हाई कोर्ट का दरवाजा खटखटाया था।

रतन टाटा की तरफ से पक्ष रखते हुए वरिष्ठ अधिवक्ता अभिषेक मनु सिंघवी ने पहले कहा था कि कारपोरेट विवाद के मामले में मानहानि का मुकदमा दाखिल किया गया है। उन्होंने कहा कि यह पूरा मुकदमा ही कानून की जानकारी के अभाव में दाखिल किया गया है।

वाडिया ने मजिस्ट्रेट को की गई शिकायत में कहा था कि टाटा व अन्य ने 24 अक्टूबर 2016 को टाटा संस के चेयरमैन पद से सायरस मिस्त्री को बाहर करने के बाद उनके खिलाफ अपमानित करने वाले बयान दिए थे। वह टाटा समूह की कई कंपनियों- ताज ग्रुप द्वारा संचालित इंडियन होटल्स कंपनी, टीसीएस, टाटा मोटर्स और टाटा स्टील आदि में स्वतंत्र निदेशक थे।

न्यूज गैलरी

अब 29 तक पुलिस हिरासत में रहेगा दाऊद का भतीजा

मुंबई : महाराष्ट्र के मुंबई की एक अदालत ने सोमवार को गैंगस्टर दाऊद इब्राहिम के भतीजे रिजवान कासकर, अहमद रजा व दो अन्य की पुलिस हिरासत 29 जुलाई तक के लिए बढ़ा दी। इससे पहले कोर्ट ने 18 जुलाई को रिजवान को 22 जुलाई तक के लिए पुलिस हिरासत में भेजा था। मामला शहर के दो कारोबारियों के विवाद को लेकर रंगदारी मांगने से संबंधित है। पुलिस के अनुसार, दुबई के गैंगस्टर फहीम मचमच ने शिकायतकर्ता को धमकाया और कहा कि उसे अपने कारोबारी साझीदार से रुपये की उम्मीद नहीं करनी चाहिए। जांच में पता चला कि कारोबारी के साझीदार ने अहमद के जरिये मचमच से संपर्क किया था। अहमद को मंगलवार को छत्रपति शिवाजी अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट से गिरफ्तार किया गया था। पूछताछ के दौरान रिजवान का नाम भी सामने आया था। 17 जुलाई को उसे दुबई फरार होने से पहले मुंबई हवाईअड्डे से गिरफ्तार कर लिया गया था। (एएनआइ)

ओडिशा में आय से अधिक संपत्ति में डीएफओ गिरफ्तार

भुवनेश्वर : ओडिशा में कटक विजिलेंस विभाग की टीम ने आय से अधिक संपत्ति के मामले में बरहमपुर वनखंड अधिकारी (डीएफओ) आशीष कुमार बेहरा को गिरफ्तार किया है। सोमवार को कोर्ट में पेशी के बाद उन्हें तीन अगस्त तक के लिए न्यायिक हिरासत में भेज दिया। जांच में आशीष कुमार बेहरा की स्थाई एवं अस्थाई संपत्ति दो करोड़ रुपये से अधिक होने का प्रमाण मिलने के बाद यह कार्रवाई की गई है। इसमें एक करोड़ 60 लाख की संपत्ति आय से अधिक बतायी जा रही है। भुवनेश्वर स्थित विशेष विजिलेंस अदालत के निर्देश पर कटक विजिलेंस विभाग की टीम ने डीएफओ आशीष के कुल नौ ठिकानों पर छापामारी की थी। (जासं)

चारा घोटाले में आपूर्तिकर्ता को तीन साल की सजा

रांची : चारा घोटाला के चाईबासा कोषागार से अवैध निकासी से संबंधित कांड संख्या आरसी 20ए/96 के पूरक अभिलेख में आपूर्तिकर्ता शैरून निशा को सीबीआइ कोर्ट ने तीन साल कैद की सजा सुनाई है। अदालत ने उनपर 1.40 लाख रुपये का जुर्माना भी लगाया है। इस राशि में से एक लाख रुपये राज्य सरकार के क्षतिपूर्ति मद में देने का निर्देश दिया। दरअसल जिस समय सीबीआइ कोर्ट ने पूरक अभिलेख के 18 आरोपियों को सजा सुनाई थी, उस समय शैरून निशा फरार थी। (राब्यू)

महाराष्ट्र में दो लोगों को धमकाया, जबरन 'जय श्रीराम' के नारे लगवाए

औरंगाबाद, प्रेट्र : महाराष्ट्र के शहर औरंगाबाद में कुछ अज्ञात लोगों ने कथित तौर पर दो लोगों को धमका कर 'जय श्रीराम' के नारे लगवाए। रविवार रात हुई इस घटना के बाद इलाके में तनाव हो गया। इसके बाद पुलिस को सुरक्षा बढ़ानी पड़ी।

एक पुलिस अधिकारी ने बताया, शेख आमेर (24) एक एप आधारित खानपान कंपनी में डिलीवरी ब्वाय है। वह दोस्त शेख नासिर (26) के साथ आजाद चौक पर ऑटो रिक्शा का इंतजार कर रहा था। इस बीच एक कार में सवार पांच लोग आए। आरोप है कि उन्होंने गालियां दीं और जान से मारने की धमकी देते हुए 'जय श्रीराम' का नारा लगाने को कहा। भयभीत दोनों ने 'जय श्रीराम' के नारे लगाए। इस बीच कुछ राहगीरों को उधर आता देख कार सवार फरार हो गए। पुलिस आयुक्त ने बताया कि पीड़ितों की शिकायत पर मामला दर्ज कर लिया गया है। कार की पहचान के लिए सीसीटीवी फुटेज को खंगाला जा रहा है। हालांकि, अब तक यह साफ नहीं है कि आरोपितों के पास हथियार थे या नहीं।

उल्लेखनीय है कि पिछले शुक्रवार को भी बेगमपुरा इलाके में एक होटलकर्मी को ऐसी ही एक वारदात का शिकार होना पड़ा था।

सोनीपत में तीन मासूमों को जहर देकर पिता ने दी जान

जागरण संवाददाता, गोहाना (सोनीपत)

गांव दोदवा में एक व्यक्ति ने अपने तीन मासूम बच्चों को जहरीला पदार्थ खिला कर स्वयं भी खा लिया। इससे चारों की मौत हो गई। बच्चे चार दिन तक स्कूल नहीं गए तो एक शिक्षक ने स्कूल के कुछ बच्चों को पता करने के लिए सोमवार को उनके घर भेजा। जब स्कूली बच्चों ने घर के अंदर प्रवेश किया तो एक कमरे में तीनों बच्चों और उनके पिता के शव सड़ी-गली हालत में पड़े थे। बच्चों के चीखते हुए बाहर भागे। इसके बाद घटना की जानकारी ग्रामीणों को हुई। सूचना पर पुलिस ने मौके पर पहुंच शवों को अपने कब्जे में लिया।

मूल रूप से दिल्ली में नजफगढ़ में गांव दीनपुर निवासी महेंद्र करीब सात साल से अपने बच्चों के साथ अनुमंडल के गांव दोदवा में रहता था। इसी गांव में महेंद्र की शादीशुदा बहन भी रहती है, लेकिन वह उससे अलग रहता था। महेंद्र का अपनी पत्नी नूरजहां से मनमुटाव चल रहा था और वह करीब दो माह पहले घर से चली गई थी। इससे महेंद्र मानसिक रूप से परेशान रहने लगा। करीब चार दिन पहले महेंद्र ने अपने बेटे समीर (11), बेटी सोनिया (9) और बेटे राज (6) को घर पर ही जहरीला पदार्थ खिला दिया और बाद में स्वयं भी खा लिया। इस घटना में चारों की मौत हो गई।

> मृतक महेंद्र के भांजे सद्दाम ने बताया कि उसकी मामी नूरजहां से मनमुटाव के कारण मामा परेशान रहता था। मामी दो माह पहले घर से भी चली गई थी, जिससे महेंद्र अधिक परेशान रहने लगा था। मानसिक परेशानी के चलते ही महेंद्र ने पहले बच्चों को जहरीला पदार्थ खिलाया और बाद में स्वयं निगल लिया।
>
> **-समुंद्र सिंह, जांच अधिकारी, सदर थाना गोहाना।**

तीनों बच्चे गांव के सरकारी स्कूल में पढ़ते थे। चार दिन से बच्चे स्कूल नहीं गए तो एक शिक्षक ने सोमवार को कुछ बच्चों को महेंद्र के घर भेजा। जब बच्चों ने महेंद्र के घर में प्रवेश किया तो दुर्गंध आ रही थी और तीनों बच्चों के शव एक चारपाई और महेंद्र का शव बेड पर सड़ी-गली हालत में पड़ा था। बच्चों ने स्कूल जाकर घटना के संबंध में शिक्षकों को बताया। पुलिस ने शवों को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए गोहाना के नागरिक अस्पताल में भिजवाया।

लॉटरी घोटाले में ईडी ने जब्त की 119 करोड़ से ज्यादा की संपत्ति

नई दिल्ली, प्रेट्र : प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने सोमवार को कहा कि उसने कथित रूप से एक लॉटरी घोटाले में मनी लांड्रिंग जांच के क्रम में 119 करोड़ रुपये की संपत्तियां कुर्क की हैं। इस घोटाले के जरिये सिक्किम सरकार को चूना लगाया गया है।ईडी ने लॉटरी क्षेत्र के चर्चित सांतियागो मार्टिन और उसके सहयोगियों के खिलाफ प्रिवेंशन ऑफ मनी लांड्रिंग एक्ट (पीएमएलए) के तहत कार्रवाई का आदेश दिया है। इसके तहत तमिलनाडु के कोयंबटूर जिले में स्थित 88 प्लॉट और 61 फ्लैट जब्त किए गए। इनका कुल मूल्य 119.6 करोड़ रुपये है। ईडी ने सीबीआइ की प्राथमिकी और आरोप पत्र के आधार पर मार्टिन और उसकी कंपनी फ्यूचर गेमिंग सॉल्यूशंस (अब फ्यूचर गेमिंग एंड होटल सर्विसेज) के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज की थी। आरोप है कि मार्टिन की कंपनी और सरकारी अधिकारियों ने बिक्री से प्राप्त राशि सिक्किम सरकार के खाते में नहीं डाली और गैरकानूनी तरीके से फायदा लिया। उन्होंने सिक्किम राज्य की लॉटरियों की बिक्री केरल में भी की। मार्टिन और उसके सहयोगियों ने अप्रैल 2009 से अगस्त 2010 के बीच गलत तरीके से 910.3 करोड़ रुपये की आमदनी की।

निदा प्रकरण : फतवा के खिलाफ हाई कोर्ट में अर्जी की तैयारी

जासं, बरेली

- सालभर से सामाजिक बहिष्कार सहने के बाद लिया निर्णय
- पुलिस पर चार्जशीट से मुख्य धाराएं हटाने का आरोप

इस्लाम से खारिज करने के फतवे पर सालभर से सामाजिक बहिष्कार का सामना कर रहीं आला हजरत खानदान की बहू रहीं निदा खान ने अब हाईकोर्ट में याचिका डालने का निर्णय लिया है। उन्होंने आरोप लगाया कि पुलिस ने चार्जशीट से सभी मुख्य धाराएं हटा दी हैं। परिवार को आए दिन धमकियां दी जा रहीं हैं। समानता और मौलिक अधिकारों की रक्षा के लिए हाईकोर्ट जाऊंगी।

17 जुलाई 2017 को निदा खान के खिलाफ दरगाह आला हजरत स्थित दारुल इफ्ता से फतवा जारी हुआ था। इसमें कहा गया था कि वह बीमार पड़ जाएं तो कोई उन्हें देखने न जाए। मर जाएं तो दफनाने के लिए कब्रिस्तान में दो गज जमीन न दी जाए। इस फतवे की कड़ी आलोचना हुई थी। अल्पसंख्यक, महिला आयोग ने भी संज्ञान लिया। 25 जुलाई 2017 को निदा ने फतवा के खिलाफ बारादरी थाने में मुकदमा दर्ज कराया था। वह बोलीं, इस सबके बावजूद कोई कार्रवाई न होना दुखद है। इससे खुराफात करने वालों के हौसले बढ़ रहे। वे आए दिन परिवार के लोगों के साथ अभद्रता कर रहे हैं। धार्मिक सार्वजनिक स्थलों पर आने से रोक रहे हैं। ऐसा कब तक बर्दाश्त किया जाएगा। अपने अधिवक्ता से मशविरा लेने के बाद वह इसी महीने हाईकोर्ट में याचिका दाखिल करेंगी।

कौन हैं निदा खान : शहदाना मुहल्ला में रहने वाले निदा खान की शादी आला हजरत खानदान के शीरान रजा खां से वर्ष 2015 में हुई थी। उसी साल विवाद के बाद दोनों के बीच तलाक का प्रकरण कोर्ट में चला गया। तब से वह खुद के लिए और अन्य तीन तलाक पीड़ितों के लिए लड़ाई लड़ रहीं हैं।

यह है आरोप : निदा की ओर से फतवा के खिलाफ दर्ज कराए मुकदमे में धारा 295-ए (यानी धार्मिक विश्वास का अपमान), 504 यानी धमकी देने की धारा भी शामिल थी। मई में पुलिस ने चार्जशीट लगाई तब यह धाराएं हटा दीं। महज धमकी देने की धारा पर चार्जशीट लगाई। निदा इसका विरोध कर रहीं हैं। वह कह रहीं कि धारा 295 ए हटाना गलत है।

हाई कोर्ट ने पूछा, कब पूरी होगी मालेगांव मामले की सुनवाई

- खंडपीठ ने एनआइए से दो सप्ताह में समय सीमा बताने को कहा

मुंबई, प्रेट्र : बांबे हाईकोर्ट ने राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआइए) से यह बताने को कहा कि सितंबर 2008 में हुए मालेगांव बम विस्फोट मामले के मुकदमे की सुनवाई कब तक पूरी होगी। जस्टिस रंजीत मोरे और जस्टिस भारती डांगरे की खंडपीठ सोमवार को मामले में आरोपित समीर कुलकर्णी द्वारा दायर याचिका पर सुनवाई कर रही थी। कुलकर्णी ने याचिका में मुकदमे की कार्यवाही की वीडियो रिकॉर्डिंग करने और छह महीने में सुनवाई पूरी करने का निर्देश देने की मांग की है।

हाई कोर्ट ने एनआइए के वकील संदेश पाटिल को दो सप्ताह में यह बताने को कहा है कि आखिर मुकदमे की सुनवाई कब तक पूरी होगी। पाटिल के मुताबिक अभियोजन पक्ष के 475 गवाहों में से निचली अदालत में अब तक 124 गवाहों के बयान हो चुके हैं। बता दें कि 29 सितंबर 2008 को महाराष्ट्र के मालेगांव में एक मस्जिद के बाहर खड़ी मोटरसाइकिल में हुए विस्फोट में छह लोगों की जहां मौत हो गई थी, वहीं 100 से अधिक लोग घायल हो गए थे। पिछले साल अक्टूबर में एक विशेष अदालत ने लेफ्टिनेंट कर्नल प्रसाद पुरोहित, प्रज्ञा सिंह ठाकुर (अब भाजपा सांसद), समीर कुलकर्णी और इस मामले के कुछ अन्य आरोपितों के खिलाफ गैरकानूनी गतिविधि रोकथाम अधिनियम (यूएपीए) के तहत आरोप तय किए थे।

पुरोहित की याचिका पर दो अगस्त को सुनवाई : मालेगांव विस्फोट के एक अन्य मामले में एनआइए ने अभियोजन गवाहों के उन नामों की सूची देने के लिए और समय मांगा है, जिनके बयानों में काट-छांट की गई है। आइए महंती और एएम बदर की खंडपीठ इसी मामले में एक अन्य आरोपित लेफ्टिनेंट कर्नल प्रसाद पुरोहित की याचिका पर सुनवाई कर रही थी। पुरोहित ने कोर्ट से चार्जशीट का हिस्सा रहे गवाहों के बिना काट-छांट वाले बयानों की प्रतियां दिलाने की मांग की है। खंडपीठ इस मामले पर दो अगस्त को सुनवाई करेगी। एनआइए के वकील ने कोर्ट को बताया ायानों के काट-छांट वाले सुबूतों की अब तक जांच नहीं की गई है। पिछले सप्ताह हाई कोर्ट ने एनआइए को उन अभियोजन गवाहों के नामों की सूची देने को कहा था जिनके बयानों के साथ काट-छांट की गई थी।

ओडिशा के कालाहांडी में नक्सलियों ने दो ठेकेदारों को भूना

जेएनएन, भुवनेश्वर : ओडिशा में कुछ अर्से की चुप्पी के बाद नक्सलियों ने एक बार फिर अपनी उपस्थिति का अहसास कराते हुए कालाहांडी जिले में दो अलग-अलग जगहों पर दो ठेकेदारों को मौत के घाट उतार दिया।

पहली घटना कालाहांडी जिले के लांजीगड़ ब्लॉक के विश्वनाथपुर थाना क्षेत्र अंतर्गत बाबूपदर गांव की है। यहां नक्सलियों ने भीम दोरा नाम के एक ठेकेदार की रविवार देर रात गोली मारकर हत्या कर दी है। बताया जा रहा है कि इससे पहले नक्सलियों ने ठेकेदार भीम दोरा को सरकारी काम करने से मना किया था और बात नहीं मानने पर अंजाम भुगतने की धमकी दी थी। घटना के बाद पुलिस अधिकारी मौके पर पहुंचकर छानबीन में जुटे हैं। दूसरी घटना रविवार को ही इससे पहले हुई। कालाहांडी जिले के बीजेपुर थाना क्षेत्र अंतर्गत मालीपड़ा साप्ताहिकी हाट में नक्सलियों ने राजेंद्र साहू नाम के ठेकेदार को गोली मार दी। बताया जा रहा है कि दो नक्सली पैदल चलते हुए आए और राजेंद्र पर चार राउंड गोली चला दी। इससे राजेंद्र की घटनास्थल पर ही मौत हो गई। इसके बाद नक्सलियों ने ठेकेदार के कार्यालय में रखे सामानों को भी आग के हवाले कर दिया।

पुतले में उलझाकर सुरक्षा बलों को नुकसान पहुंचाने की साजिश नाकाम

नईदुनिया, दंतेवाड़ा

छत्तीसगढ़ के दंतेवाड़ा में सीआरपीएफ कैंप के पास नक्सलियों द्वारा लगाया गया पुतला बम। नईदुनिया

दंतेवाड़ा जिले में नक्सलियों के पुतले का सहारा लेकर सुरक्षा बलों को नुकसान पहुंचाने की साजिश नाकाम की गई। नक्सलियों ने अरनपुर थाना क्षेत्र के कोंडासांवली सीआरपीएफ कैंप से महज 650 मीटर दूर दो पुतले लगा दिए थे। इन पुतलों के नीचे बम प्लांट किया गया था। सीआरपीएफ जवानों ने पुतले की साजिश भांप ली। जांच करने पर बम की मौजूदगी का पता चला, जिसे मौके पर ही निष्क्रिय कर दिया गया।

एसपी डॉ. अभिषेक पल्लव ने बताया कि नक्सलियों ने एक पुतले को पैंट-शर्ट पहनाकर बांस के सहारे खड़ा किया और दूसरे को जमीन पर लिटा दिया था। इसके नीचे पांच और तीन किलोग्राम का रिलीज बम लगा रखा था लेकिन जवानों की सतर्कता ने उनकी सारी योजना को ध्वस्त कर दिया। बता दें कि कोंडासांवली में सीआरपीएफ की 231 बटालियन तैनात है। सीआरपीएफ के संरक्षण में कैंप तक सड़क बन चुकी है। वहां से जगरगुंडा (सुकमा) की दूरी कुछ ही किलोमीटर रह गई है। ऐसे में स्थानीय लोगों की आवाजाही भी मार्ग पर होने लगी है।

पहली बार पुतला बम लगाया : नक्सलियों द्वारा पुतला बम का इस्तेमाल करने का दंतेवाड़ा जिले में पहला मामला है। इस घटना के बाद से ग्रामीणों की चिंता बढ़ गई है। पुलिस अधिकारियों का कहना है कि इससे जवान तो धोखा खाएंगे ही, ग्रामीण और मवेशियों को भी नुकसान होगा।

जागरण पड़ताल

बिहार के मुजफ्फरपुर, शिवहर व सीतामढ़ी के सीमावर्ती क्षेत्रों के व्यवसायियों को थमाई लेवी की चिट्ठी, संगठन को मजबूत करने के लिए बढ़ी नक्सलियों की सक्रियता

चार गुना लेवी मांग रहे नक्सली, व्यवसायी खौफ में

जागरण संवाददाता, मुजफ्फरपुर

नक्सलियों के कई एरिया कमांडर चार साल जेल में थे। इस दौरान उनकी लेवी की वसूली ठप पड़ गई थी। अब जमानत पर जेल से बाहर हैं तो एकमुश्त चार साल की लेवी वसूल कर इसकी भरपाई करना चाह रहे। घटनाक्रम बिहार से सामने आया है, जहां नक्सलियों ने पूरे चार साल की लेवी की एक साथ मांग की है।

व्यवसायी खौफ में हैं और सरकार नींद में। दरअसल, सिस्टम में यही वह बड़ी चूक है, जो नक्सलवाद के सफाए में रोड़ा बनती आई है। केंद्रीय सुरक्षा बलों और अन्य प्रयासों के बूते इस नासूर का स्थायी इलाज करने में भी यह बाधा बनती है।

बिहार के मुजफ्फरपुर जिले का उदाहरण सामने है। यहां मुजफ्फरपुर जिले और उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में सीमावर्ती शिवहर और सीतामढ़ी के व्यवसाइयों में इन दिनों नक्सलियों की उगाही से खौफ का माहौल है। ईंट-भट्ठा संचालकों, पेट्रोल पंप मालिकों व अन्य व्यवसाइयों को नक्सलियों ने चिट्ठी थमाई है। इसमें धमकी दी गई है कि अगर लेवी (तय धनराशि) नहीं दी तो अंजाम भुगतने के लिए तैयार रहें। हालत यह है कि नक्सलियों के भय से कोई भी मुंह खोलने को तैयार नहीं है।

खुफिया विभाग ने इसकी रिपोर्ट मुख्यालय भेजी है। प्रतीकात्मक

बताया जाता है कि खुफिया विभाग ने इसकी रिपोर्ट मुख्यालय को भेजी है। इसमें शिवहर के औरा मलिकाना गांव के लालबाबू सहनी उर्फ भास्कर, सुखारी महतो, भुट्टा पटेल, इसराफिल मियां, विजय पासवान उर्फ करण की संलिप्तता बताई गई है। लालबाबू सहनी उर्फ भास्कर सभी का नेतृत्व कर रहा है। लेवी की चिट्ठियां उसी के नाम से भेजी जा रही हैं।

सीतामढ़ी जिले के रुन्नीसैदपुर थाना क्षेत्र के महिंदवारा में 11 किमी सड़क का निर्माण करा रहे ठेकेदार से भी नक्सलियों ने लेवी की मांग की। उसने इस संबंध में थाने में केस भी दर्ज कराया। इसके बाद वह नक्सलियों के भय से काम छोड़कर भाग खड़ा हुआ। सड़क का निर्माण कार्य ठप है।

> मुजफ्फरपुर, शिवहर व सीतामढ़ी में नक्सलियों की ओर से लेवी मांगने की अपुष्ट खबर मिली है। पुलिस अधिकारियों से सत्यापन के लिए कहा गया है। हाल में कई नक्सलियों की गिरफ्तारी सुनिश्चित की गई है। फरार नक्सलियों की गिरफ्तारी को लेकर संयुक्त ऑपरेशन चलाने का निर्देश दिया गया है।
>
> **-रवींद्र कुमार, डीआइजी, तिरहुत रेंज**

कहां है पुलिस...

नक्सलियों ने व्यवसाय के हिसाब से लेवी की राशि भी तय कर दी है। ईंट-भट्ठा व्यवसायी को 35 हजार रुपये सालाना देना है। पेट्रोल पंप व्यवसायी को कारोबार के हिसाब से 40 हजार से लेकर 60 हजार रुपये, ठेकेदारों को 10 से 20 फीसद व अन्य व्यवसायी से उनके कारोबार के हिसाब से सालाना लेवी तय की गई है। मुजफ्फरपुर, शिवहर, सीतामढ़ी के 50 से अधिक ईंट-भट्ठा, 30 पेट्रोल पंप मालिक एवं बड़ी संख्या में अन्य कारोबारी नक्सलियों की लेवी की जद में हैं। इस राशि को चार गुना जोड़ कर एकमुश्त भुगतान करना है।

बदरीनाथ में बदरी तुलसी के संरक्षण का कार्य शुरू

रणजीत सिंह रावत, जोशीमठ (चमोली)

'दैनिक जागरण' में खबर प्रकाशित होने के बाद बदरीनाथ धाम में भगवान नारायण की पूजा में प्रयुक्त होने वाली दुर्लभ 'बदरी तुलसी' के संरक्षण को वन विभाग आगे आया है। इसके तहत नंदा देवी राष्ट्रीय पार्क प्रशासन ने धाम के आसपास 66 हेक्टेयर क्षेत्र में बदरी तुलसी की खेती शुरू कर दी गई है। जागरण ने 17 जुलाई के अंक में 'अनियोजित दोहन से खतरे में बदरी तुलसी का अस्तित्व' शीर्षक से यह खबर प्रकाशित की थी।

ओरिगनम वल्गर प्रजाति की यह दुर्लभ तुलसी बदरीनाथ क्षेत्र में नारायण पर्वत पर मनांग, देवदर्शनी, रडांग बैंड, बामणी गांव, वसुधारा, माणा गांव, नाग-नागिन, इंद्रधारा, चरणपादुका, हनुमानचट्टी, सरो, जोशीमठ आदि स्थानों पर उगती है। यह इस क्षेत्र के लोगों की आजीविका का प्रमुख स्रोत भी है। भगवान बदरी विशाल को अर्पित की जाने वाली पूजा के थाल में बदरी तुलसी की माला अवश्य होती है। जिससे यात्रा काल में इसकी भारी मांग रहती है और यही इसके अनियोजित दोहन की मुख्य वजह भी है। लेकिन, अब वन विभाग इस दुर्लभ प्रजाति की तुलसी को बचाने के लिए बदरीनाथ के पास माणा व बामणी वन पंचायत में 33-33 हेक्टेयर भूमि पर इसकी खेती शुरू कर दी है। विभाग पौधों की सुरक्षा के लिए चारों ओर घेरबाड़ भी लगा रहा है।

नंदा देवी राष्ट्रीय पार्क के वन क्षेत्राधिकारी बृजमोहन भारती बताते हैं कि बदरी तुलसी को संरक्षित करने के लिए फिलहाल 40 हजार पौधों का रोपण किया जा रहा है। इस तुलसी वन को संरक्षित कर इसका फैलाव किया जाएगा। ताकि बदरीनाथ धाम में भगवान की पूजा-अर्चना के लिए तुलसी की कमी न हो। विदित हो कि भगवान बदरी विशाल के शृंगार में बदरी तुलसी के अलावा अन्य किसी फूल का प्रयोग नहीं होता। साथ ही तुलसी की माला बेचने से स्थानीय लोगों को रोजगार भी मिलता है। यात्रा सीजन के दौरान 20 लाख से अधिक की मालाएं बिक जाती हैं।

11 जगहों पर दिल्ली समेत तीन राज्यों में सीबीआइ ने छापेमारी की। यह कार्रवाई सारधा घोटाले (पोंजी योजना) की जांच के सिलसिले में थी। बंगाल के उत्तरी 24 परगना, बिहार के पटना, त्रिपुरा के अगरतला व नई दिल्ली स्थित चक्र इंफ्रास्ट्रक्चर लिमिटेड के निदेशकों व प्रमोटरों के ठिकानों पर कार्रवाई की गई।

सोनभद्र नरसंहार पर सदन में हंगामा, नारेबाजी

बड़ा मामला ▶ विपक्षी दलों ने जहां सरकार को कुसूरवार बताया, वहीं सरकार ने सपा व कांग्रेस को जिम्मेदार ठहराया

भाजपा का कांग्रेस महासचिव पर तंज, वह तो फोटो खिंचवाने गईं थीं

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

सोनभद्र नरसंहार को लेकर सोमवार को सदन में कांग्रेस समेत विपक्ष ने जमकर हंगामा किया। इस दौरान सत्ता पक्ष से तीखी नोक-झोंक हुई। विधानसभा में कांग्रेस सदस्यों ने वेल में आकर सरकार के खिलाफ नारेबाजी की तो विधान परिषद में विपक्ष और सत्ता पक्ष के बीच जबरदस्त तकरार हुई। विपक्षी दलों ने इसके लिए जहां सरकार को कुसूरवार ठहराया, वहीं सरकार ने सपा व कांग्रेस को जिम्मेदार ठहराया। सरकार के जवाब से असंतुष्ट सपा-कांग्रेस के सदस्यों ने सदन से बहिर्गमन किया। विधानसभा में कांग्रेस विधायक दल के नेता अजय कुमार लल्लू ने कहा कि सोनभद्र में जमीन की रजिस्ट्री भाजपा शासन में हुई और गांव वालों ने अपना हक मांगा तो उनका उत्पीड़न किया गया। उनका कहना था कि इस मामले में भाजपा विधायक हरिराम चेरो ने भी आदिवासियों के पक्ष में पत्र लिखा लेकिन, उनकी भी नहीं सुनी गई। इस पर संसदीय कार्यमंत्री सुरेश खन्ना ने कहा कि इस विषय पर चर्चा हो चुकी है। अब कोई औचित्य नहीं है। कांग्रेस महासचिव पर तंज कसते हुए कहा कि वह तो फोटो खिंचवाने गई थीं और उनका उद्देश्य पूरा हो गया।

लखनऊ में सोमवार को विधानमंडल के मानसून सत्र के दौरान पत्रकारों को सोनभद्र की घटना से जुड़े कागज दिखाते कांग्रेस दल के नेता अजय कुमार। जागरण

मूर्तिया गांव का विकास कार्य देखेगी तीन सदस्यीय टीम : घोरावल क्षेत्र के उभ्भा गांव नरसंहार के मुख्य आरोपित मूर्तिया ग्राम प्रधान यज्ञदत्त के खिलाफ प्रशासनिक कार्रवाई तेज हो गई है। प्रधान की गिरफ्तारी के बाद सोमवार को मूर्तिया ग्राम पंचायत में तीन सदस्यीय टीम गठित कर दी गई। मूर्तिया ग्राम प्रधान द्वारा अब तक कराए गए सभी विकास कार्यों की जांच के आदेश दिए गए हैं।

एक-एक काम की होगी जांच : नरसंहार के आरोपित मूर्तिया ग्राम पंचायत के प्रधान के कराए सभी कार्यों का सत्यापन कराया जाएगा। जिला पंचायत राज अधिकारी ने बताया कि सभी कार्यों की जांच के लिए एडीओ पंचायत घोरावल के नेतृत्व में जांच कमेटी गठित कर दी गई है। टीम सभी कार्यों का भौतिक निरीक्षण कर रिपोर्ट देगी।

छठवें दिन बांटी सामग्री : नौ घरों में एक साथ दस अर्थियां उठने का गम है। घटना के बाद मुख्यमंत्री ने पीड़ित परिवार को सुनहरे भविष्य का सपना दिखाया लेकिन उनका गम कम नहीं है। छठवें दिन सोमवार को प्रशासनिक टीम ने पीड़ित परिवारों को जब राहत सामग्री बांटनी शुरू की तो सभी की आंखें भर आईं।

वीडियो वायरल : धांय-धांय चल रही थीं गोलियां, गिर रहीं थीं लाशें

जागरण संवाददाता, सोनभद्र

- सोशल मीडिया पर नरसंहार से जुड़े दो वीडियो वायरल
- ग्रामीण बचने के लिए भागने की भी कोशिश करते देखे जा रहे हैं

उप्र के सोनभद्र जिला स्थित घोरावल के उभ्भा गांव में 17 जुलाई को भूमि कब्जे को लेकर नरसंहार में धांय-धांय गोलियां चल रही थीं। लाशें गिर रहीं थीं, घटनास्थल पर भगदड़ मची थी। कोई कुछ सुन नहीं रहा था। सिर्फ शोर-शराबा सुनाई दे रहा था। यह पता चला घटना के छठवें दिन सोमवार को वायरल वीडियो से। वीडियो में लाठी-डंडा के साथ गोलियां चलने और लाशें गिरने के दृश्य हैं। ग्रामीण बचने के लिए भागने की भी कोशिश करते देखे जा रहे हैं।

सोशल मीडिया पर उभ्भा नरसंहार से जुड़े दो वीडियो वायरल हैं। एक वीडियो 18 सेकंड का है। जिसमें दर्जनों की संख्या में ट्रैक्टर खेत की जोताई करने के लिए खड़े हैं। इन्हीं पर सवार होकर 300 हमलावर आए थे। उन्हें रोकने के लिए कुछ ग्रामीण खेत से ही जाते देखे जा रहे हैं। थोड़ी ही देर में विवाद बढ़ने लगता है। वहीं दूसरा वीडियो एक मिनट का है। उसमें पीड़ित पक्ष पर ग्राम प्रधान पक्ष की ओर से लाठी-डंडे से हमला करने का दृश्य है। वीडियो में बीच-बीच में गोली चलने की भी आवाज आ रही है। इसी वीडियो में बचकर भागने के लिए कहने की आवाज भी है। वीडियो वायरल होने को लेकर तरह-तरह की चर्चाएं हैं। सवाल उठा कि आखिर यह वीडियो किसने बनाया। बता दें कि 17 जुलाई को 148 बीघे भूमि पर कब्जे को लेकर हुए नरसंहार में दस लोगों की मौत हो गई थी और 28 लोग घायल हुए। घटना के पांचवें दिन रविवार को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने भी गांव का दौरा किया। मामले में एसडीएम, सीओ, एसएचओ घोरावल सहित पांच को निलंबित कर दिया गया। शासन द्वारा विस्तृत जांच भी कराई जा रही है। साथ ही सीएम ने घटना के मुख्य आरोपित ग्राम प्रधान यज्ञ दत्त भूर्तिया को सपा का कार्यकर्ता बताया था।

सोनभद्र से लखनऊ तक बैठे थे भूमाफिया के हिमायती

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

- कांग्रेस ने जुटाए साक्ष्य, बेनकाब हुई आला अधिकारियों तक की कारस्तानी
- सीएम पोर्टल पर भी लगाई थी पीड़ितों ने गुहार, अफसरों ने दिखा दिया 'निस्तारित'

सोनभद्र नरसंहार पर कांग्रेस का 'होमवर्क' उप्र सरकार के लिए बड़ा सिरदर्द बन सकता है। सरकार जहां इस प्रकरण को कांग्रेस की देन बता रही है, वहीं विपक्ष भाजपा शासनकाल में हुई कागजी खानापूर्ति का साक्ष्य बटोर लाई है। ये दस्तावेज बता रहे हैं कि जो भूमि विवाद नरसंहार में तब्दील हुआ, उसकी शिकायत आइजीआरएस पोर्टल पर मुख्यमंत्री से भी पीड़ितों ने की थी लेकिन, अफसरों ने उसे 'निस्तारित' बताकर पर्दा डालने का प्रयास किया।

विधानसभा के मानसून सत्र में सोमवार को सोनभद्र प्रकरण पर जमकर हंगामा हुआ। कांग्रेस विधानमंडल दल के नेता अजय कुमार लल्लू ने कुछ दस्तावेज हाथ में थाम सरकार पर तीखा हमला बोला। कांग्रेस नेता ने बतौर सुबूत जो दस्तावेज दिखाए, उसमें उपजिलाधिकारी घोरावल द्वारा जिलाधिकारी सोनभद्र को भेजा गया आइजीआरएस संबंधी पत्र है। इसमें उल्लेख है कि मूर्तिया निवासी रामराज की शिकायत मार्च 2018 में अपर मुख्य सचिव, प्रमुख सचिव, सचिव राजस्व एवं आपदा विभाग और जुलाई 2018 में जिलाधिकारी सोनभद्र को नियमानुसार कार्रवाई के लिए प्रेषित की गई। अगस्त 2018 में नायब तहसीलदार की जांच आख्या प्रकरण के बाबत वाद न्यायालय सिविल जज सीनियर डिवीजन सोनभद्र के यहां विचाराधीन है। वर्तमान में प्रशासनिक आधार पर किसी प्रकार की कार्रवाई किया जाना संभव नहीं है। आवेदन को उक्त के संबंध में अवगत करा दिया गया है कि प्रकरण निक्षेपित किए जाने योग्य है। इसके साथ ही इसे निस्तारित दिखा दिया गया।

इसी वर्ष 30 आदिवासियों पर दर्ज हुआ मुकदमा: कांग्रेस ने यह सवाल भी उठाया है कि आदिवासियों की शिकायत पर प्रशासन कार्रवाई नहीं कर सकता था तो दूसरे पक्ष की शिकायत पर आदिवासियों के खिलाफ मुकदमा क्यों दर्ज कर दिया। राजकुमार सिंह ने सात अप्रैल 2019 को शिकायत की थी कि हमारी जमीन से आदिवासियों ने अरहर काट ली। इस पर थाना घोरावल में 30 आदिवासियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया गया था।

भाजपा विधायक ने भी सीएम से की थी शिकायत: विपक्ष अब इस बात को भी तूल देने की तैयारी में है कि प्रकरण की पूरी जानकारी मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को भी थी। उन्होंने सोनभद्र के दुद्धी से भाजपा विधायक हरीराम चेरो का पत्र दिखाया। इस पत्र में लिखा था कि ग्राम उभ्भा के आदिवासियों की पैतृक भूमि भूमाफिया द्वारा जबरन हड़पी जा रही है। इसमें पूरा प्रकरण लिखकर न्याय की गुहार लगाई गई थी।

न्यूज गैलरी

मप्र के बालाघाट से चेन्नई ले जाए गए 29 बच्चों को बचाया

भोपाल : मध्य प्रदेश के भोपाल में मानव तस्करी का बड़ा मामला सामने आया है। सोमवार को जीआरपी और हैदराबाद महिला बाल विकास की टीम ने तस्करी के जरिये चेन्नई पहुंचे 29 बच्चों को भोपाल चाइल्ड लाइन को सौंपा। हैदराबाद की टीम मध्य प्रदेश के सभी 29 बच्चों को अंडमान एक्सप्रेस से भोपाल लाई थी। ये सभी बच्चे बालाघाट जिले से हैं। इनमें 13 लड़कियां और 16 लड़के हैं। सभी बच्चों की उम्र करीब 10 से 16 वर्ष की है। बच्चों को अभी अलग-अलग आश्रय गृह भेजा गया है। जानकारी के मुताबिक, बालाघाट जिले के उक्त 29 बच्चों को खम्मम जिला बाल संरक्षण अधिकारी और उनकी टीम ने हैदराबाद से छुड़ाया था। (नईदुनिया)

तमंचा चलाने की खींचतान में चली गोली, युवक की मौत

बदायूं : दोस्तों में तमंचा चलाकर देखने को लेकर हुई खींचतान में चली गोली से रविवार रात बिहार निवासी युवक की मौत हो गई। उप्र के बदायूं स्थित उसहैत थाना क्षेत्र के त्रिलोकपुर गांव के पास रविवार रात बिहार के मुथियारी का रहने वाला सोनू गोली लगने से घायल हो गया था। शाहजहांपुर के कलान थाना क्षेत्र के गांव मानन नगला में रहने वाला उसका दोस्त धर्मवीर उसे जिला अस्पताल लेकर पहुंचा। यहां डॉक्टर ने उसे मृत घोषित कर दिया। धर्मवीर ने पुलिस को बताया था कि हरियाणा के सोनीपत में बहालगढ़ स्थित मोटर वाइंडिंग फैक्ट्री में दोनों एक साथ काम करते थे। रास्ते में बदमाशों ने उन्हें लूट लिया। मोबाइल भी छीन लिए। सोनू ने विरोध किया तो बदमाशों ने उसे गोली मार दी। पुलिस जांच में पता लगा कि लूट की कहानी झूठी है। (जासं)

बंगाल में पत्नी ने पति को बांधकर जिंदा जलाया

हुगली : पश्चिम बंगाल के हुगली में एक महिला ने अपने प्रेमी और उसके दो दोस्तों के साथ मिलकर अपने पति को बिस्तर से बांधकर जिंदा जला दिया। घटना के समय उसका पति सो रहा था। सोमवार सुबह सूचना पाकर मौके पर पुलिस पहुंची। बिस्तर से बंधा पति जल कर राख हो चुका था। आशंका है कि केरोसिन अथवा पेट्रोल छिड़ककर उसे जला दिया गया है। पुलिस ने आरोपित पत्नी मयना प्रमाणिक, उसके प्रेमी समेत तीन लोगों को गिरफ्तार कर लिया। प्राप्त जानकारी के अनुसार मयना और उसका प्रेमी दोनों पड़ोस में रहते हैं। दोनों के बीच प्रेम संबंध था। (जासं)

केंद्र सरकार ने नियुक्त किए 33 संयुक्त सचिव, केवल सात आइएएस

नई दिल्ली, प्रेट्र : सरकार ने सोमवार को केंद्र में 33 नए संयुक्त सचिवों की नियुक्ति की है। इनमें केवल सात भारतीय प्रशासनिक सेवा (आइएएस) व चार भारतीय राजस्व सेवा (आइआरएस) के अधिकारी हैं। सरकार ने वादा निभाते हुए दूसरी सेवाओं के अधिकारियों की बतौर संयुक्त सचिव नियुक्ति की है। इनमें भारतीय रेलवे के मैकेनिकल इंजीनियर, भारतीय डाक एवं दूरसंचार, अकाउंट व फाइनेंस सेवा तथा भारतीय सैन्य अकाउंट सेवा आदि के अधिकारी शामिल हैं।

इन अधिकारियों को संयुक्त सचिव बनाए जाने की रूपरेखा पहली नरेंद्र मोदी सरकार के दौरान फरवरी में तैयार की गई थी। मई में दोबारा सत्ता में आने के बाद मोदी सरकार ने इनकी नियुक्ति की प्रक्रिया शुरू की और सोमवार को नियुक्ति कर दी। प्रमुख नियुक्तियों में भारतीय राजस्व सेवा के अधिकारी संदीप एम. प्रधान शामिल हैं, जिन्हें भारतीय खेल प्राधिकार का महानिदेशक बनाया गया है। भारतीय रेलवे कार्मिक सेवा की राधिका चौधरी व केंद्रीय सचिवालय सेवा से जी. जयंती को कार्मिक एवं प्रशिक्षण विभाग में संयुक्त सचिव बनाया गया है।

33 साल पहले पुलिस फायरिंग में चार युवकों की मौत, अब नोटिस

राज्य ब्यूरो, चंडीगढ़

- पंजाब के नकोदर में बेअदबी की घटनाओं के बाद प्रदर्शनकारियों पर की गई थी फायरिंग
- हाई कोर्ट ने पूर्व मुख्य सचिव दरबारा सिंह, पूर्व डीजीपी इजहार आलम से भी मांगा जवाब

लगभग 33 साल पहले जालंधर के नकोदर में एक धार्मिक प्रदर्शन के दौरान पुलिस की गोली से मारे गए चार सिख युवाओं की मौत की उच्च स्तरीय जांच की मांग पर पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट ने पंजाब सरकार को नोटिस जारी किया है। कोर्ट ने पंजाब के पूर्व मुख्य सचिव दरबारा सिंह, पूर्व डीजीपी मोहम्मद इजहार आलम, पूर्व एसपी अश्वनी कुमार शर्मा और अन्य प्रतिवादियों को भी नोटिस जारी कर 14 अगस्त तक जवाब देने को कहा है।

इस घटना में मारे गए रविंदर सिंह के 72 वर्षीय पिता बलदेव सिंह की ओर से दायर याचिका में कहा गया है कि 4 फरवरी, 1986 को हुई फायरिंग के लिए जिम्मेदार तीन पूर्व अधिकारी प्रतिवादियों के खिलाफ हत्या व अन्य धाराओं के तहत मामला दर्ज कर इसकी उच्च स्तरीय जांच कराई जाए। लगभग चार साल पहले बरगाड़ी में हुए बेअदबी मामलों के समान बताए गए इस मामले में याचिकाकर्ता ने कहा है कि 2 फरवरी, 1986 को नकोदर में गुरु ग्रंथ साहिब की बीड़ जलाए जाने के विरोध में किए जा रहे प्रदर्शन पर पुलिस ने फायरिंग की थी। इसमें कुल चार सिखों की मौत हुई थी और आठ लोग घायल हुए थे। पुलिस ने चारों के चुपके से पोस्टमार्टम कराए और परिजनों को बताए बिना उनका अंतिम संस्कार भी कर दिया।

जांच आयोग ने कहा था- बिना मंजूरी चलाई गोलियां : याचिकाकर्ता ने कहा कि सरकार ने 13 फरवरी, 1986 को ही जस्टिस गुरनाम सिंह जांच आयोग का गठन कर दिया था, लेकिन आयोग की रिपोर्ट पर पहले तो 15 साल तक कोई कार्रवाई नहीं की गई। वर्ष 2001 में तत्कालीन गृह मंत्री ने इस रिपोर्ट को विधानसभा के पटल पर रखे जाने की इजाजत दी, लेकिन आज तक इस रिपोर्ट पर कोई कार्रवाई नहीं हुई है। याचिकाकर्ता ने कहा है कि जांच आयोग ने अपनी रिपोर्ट में स्पष्ट लिखा है कि प्रदर्शन के लिए इकट्ठा हुए लोग हिंसा नहीं कर रहे थे।

पैलेट गन पर प्रतिबंध के मामले में छह सप्ताह में निर्णय ले हाई कोर्ट

नई दिल्ली, प्रेट्र : सुप्रीम कोर्ट ने जम्मू-कश्मीर हाई कोर्ट को पैलेट गन को लेकर दायर याचिका पर छह सप्ताह के भीतर फैसला लेने का निर्देश दिया है। प्रधान न्यायाधीश रंजन गोगोई, न्यायमूर्ति दीपक गुप्ता और न्यायमूर्ति अनिरुद्ध बोस की पीठ ने हाई कोर्ट के रजिस्ट्रार जनरल के चार जुलाई के उस पत्र का संज्ञान लिया है, जिसमें यह मामला पीठ के समक्ष मंगलवार के लिए सूचीबद्ध है। बता दें कि इस मुद्दे पर जम्मू कश्मीर हाई कोर्ट बार एसोसिएशन ने 2016 में हाई कोर्ट में जनहित याचिका दायर की थी और प्रदर्शनकारियों की भीड़ पर पैलेट गन के प्रयोग पर रोक का अनुरोध किया था।

पीठ ने हाई कोर्ट के रजिस्ट्रार का पत्र रिकार्ड में लेते हुए कहा, 'हम हाई कोर्ट की खंडपीठ से इस मामले का तेजी से निर्णय करने और यथासंभव छह सप्ताह के भीतर आदेश पारित करने का अनुरोध करते हैं।' वकीलों के इस संगठन ने हाई कोर्ट के अंतरिम आदेश के खिलाफ शीर्ष अदालत में अपील दायर की थी। उच्च न्यायालय ने अपने आदेश में पैलेट गन के इस्तेमाल पर रोक लगाने से इन्कार करते हुए कहा था कि केंद्र पैलेट गन का विकल्प तलाशने के लिए एक समिति गठित कर चुका है।

पौड़ी के सुमाड़ी में ही स्थापित होगा एनआइटी : निशंक

राज्य ब्यूरो, देहरादून

- सितंबर के पहले हफ्ते में सुमाड़ी में होगा स्थायी परिसर का शिलान्यास
- अगले सत्र से श्रीनगर में आरंभ होगा एनआइटी का अस्थायी परिसर

उत्तराखंड में राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआइटी) का उलझा मसला सुलझने के प्रबल आसार बन गए हैं। केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री रमेश पोखरियाल निशंक ने सोमवार को आश्वस्त किया कि एनआइटी सुमाड़ी में ही स्थापित किया जाएगा। सितंबर के पहले सप्ताह में एनआइटी के स्थायी परिसर का सुमाड़ी में शिलान्यास किया जाएगा। वहीं अगले सत्र से अस्थायी परिसर श्रीनगर में प्रारंभ हो जाएगा।

उत्तराखंड से एनआइटी छिनने का मामला अब सुलझने जा रहा है। सुमाड़ी में एनआइटी की स्थापना को लेकर विवाद का भी पटाक्षेप होने को है। केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री रमेश पोखरियाल निशंक ने एनआइटी को लेकर मंत्रालय के रुख को साफ कर दिया। दिल्ली में सोमवार को केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री रमेश पोखरियाल निशंक के साथ बैठक में उत्तराखंड के उच्च शिक्षा राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डॉ धन सिंह रावत, गढ़वाल सांसद तीरथ सिंह रावत और अपर मुख्य सचिव ओमप्रकाश उपस्थित रहे। बैठक में केंद्रीय मंत्री निशंक ने बताया कि एनआइटी के लिए 309 एकड़ में से 203 एकड़ भूमि उपयुक्त पाई गई है। उपयुक्त पाई गई भूमि पर ही स्थायी परिसर का निर्माण किया जाएगा। बैठक में यह सहमति भी बनी कि एनआइटी के अस्थायी परिसर को श्रीनगर में अगले सत्र से प्रारंभ किया जाएगा। एनआइटी जयपुर से बच्चों को लाने के लिए उच्चस्तरीय समिति बनाई जाएगी। अगले सत्र से प्रवेश की पूरी प्रक्रिया श्रीनगर में होगी।

केंद्रीय मंत्री निशंक ने दोहराया कि सुमाड़ी में युद्धस्तर पर कार्य करवाकर एनआइटी बनाया जाएगा। गौरतलब है कि निशंक के मुख्यमंत्रित्व काल में ही सुमाड़ी में एनआइटी आरंभ करने के लिए जमीन चयनित की गई। बीते वर्ष एनआइटी को लेकर विवाद गहराने के बाद वहां अध्ययनरत छात्रों को जयपुर एनआइटी शिफ्ट कर दिया गया था। अब इन छात्रों को वापस श्रीनगर ले जाने की तैयारी भी शुरू होगी।

सुप्रीम कोर्ट के रिटायर्ड जज बन सकेंगे एनएचआरसी के अध्यक्ष

नई दिल्ली, प्रेट्र : संसद ने सोमवार को मानवाधिकार संरक्षण संशोधन विधेयक 2019 को मंजूरी दे दी। सरकार ने भरोसा जताया कि राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग और राज्य मानवाधिकार आयोगों को और अधिक सक्षम बनाने में विधेयक के प्रावधानों से मदद मिलेगी।

राज्यसभा ने विधेयक को चर्चा के बाद ध्वनिमत से पारित कर दिया। लोकसभा इसे पहले ही पारित कर चुकी है। विधेयक पर हुई चर्चा का जवाब देते हुए गृह मंत्री अमित शाह ने विपक्ष के कुछ सदस्यों की इन आपत्तियों को निराधार बताया कि पुनर्नियुक्ति के प्रावधान के कारण यह ''सरकार का आयोग'' बन जाएगा।

शाह ने कहा कि आयोग के सदस्य की नियुक्ति एक समिति करती है जिसमें प्रधानमंत्री, लोकसभा के अध्यक्ष, राज्यसभा के उपसभापति तथा संसद के दोनों सदनों के नेता प्रतिपक्ष या सबसे बड़े विपक्षी दल के नेता होते हैं। शाह ने कहा कि समिति द्वारा नियुक्ति के बारे में यदि इस तरह के संदेह किया जाएगा तो ''कोई भी लोकतांत्रिक संस्था काम नहीं कर पाएगी।''

उन्होंने कहा कि आयोग के सदस्यों के कार्यकाल को पांच साल से घटाकर तीन साल करने का उद्देश्य है कि खाली पदों को भरा जा सकेगा। उन्होंने पुनर्नियुक्ति के प्रावधानों को लेकर विपक्ष के सदस्यों के संदेहों पर कहा कि इनकी पुनर्नियुक्ति सरकार नहीं नियुक्ति समिति करेगी। साथ ही आयोग के नियम के तहत इसका कोई सदस्य या अध्यक्ष सरकार के किसी अन्य पद पर नियुक्त नहीं हो सकता है। विधेयक के प्रावधान के अनुसार राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष के रूप में ऐसा व्यक्ति होगा, जो उच्चतम न्यायालय का प्रधान न्यायाधीश रहा हो। उसके अतिरिक्त किसी ऐसे व्यक्ति को भी नियुक्त किया जा सके जो उच्चतम न्यायालय का न्यायाधीश रहा है। इसमें आयोग के सदस्यों की संख्या दो से बढ़ाकर तीन करने का प्रावधान है जिसमें एक महिला हो।

सुप्रीम कोर्ट फाइल

झारखंड में डायन के आरोप में तीन को जबरन मैला पिलाया

जागरण संवाददाता, गिरिडीह : झारखंड के गिरिडीह में डायन का आरोप लगाते हुए एक महिला और उसके घर आए दो रिश्तेदारों को लोगों ने जबरन मैला पिला दिया गया। उनके साथ मारपीट की और उसका वीडियो बनाकर वायरल कर दिया। आंखों में मिर्च डालकर कहा गया कि अगर किसी से शिकायत की तो अंजाम और भी बुरा होगा। पीड़िता और आरोपित रिश्तेदार हैं। लगातार दूसरे दिन झारखंड से डायन बिसाही के नाम पर हिंसा की खबर आई है। इससे पहले गुमला में लोगों ने चार बुजुर्गों को पीट-पीट कर मार डाला था।

घटना 16 जुलाई की बताई जाती है। सोमवार को किसी तरह हिम्मत कर एक पीड़िता महिला ने थाने में शिकायत की। उसने बताया कि एक महिला कुछ दिनों से बीमार चल रही थी। जिसका इलाज सदर अस्पताल में चल रहा, बावजूद वो ठीक नहीं हो पा रही थी। इसकी जानकारी मिलने के बाद पीड़िता का भाई व ननद बीमार महिला को देखने के लिए मेरे घर पहुंचे थे। 16 जुलाई की सुबह बीमार महिला की बीमारी ठीक कराने के लिए वे लोग अपने घर पर झाड़ फूंक करा रहे थे। इतने में उनके घर पर लोगों ने हमला कर दिया।

बर्धमान रेलवे स्टेशन का नाम बदलने की घोषणा पर चढ़ा सियासी पारा

जागरण संवाददाता, कोलकाता

केंद्र सरकार द्वारा पश्चिम बंगाल के बर्धमान रेलवे स्टेशन का नाम बदलकर महान क्रांतिकारी बटुकेश्वर दत्त किए जाने के निर्णय के बाद सियासत गर्म हो उठी है। राज्य की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने केंद्र सरकार के इस निर्णय पर नाराजगी जाहिर करते हुए इस असंवैधानिक करार दिया।

उन्होंने आरोप लगाया कि राज्य सरकार को अंधेरे में रखकर स्टेशन का नाम बदलने का निर्णय लिया गया। गौरतलब है कि गत 20 जुलाई को महान स्वतंत्रता सेनानी बटुकेश्वर दत्त की 54वीं पुण्यतिथि पर केंद्रीय गृह राज्यमंत्री नित्यानंद राय पटना के जक्कनपुर गांव में उनके परिवार से मिलने पहुंचे थे। इस मौके पर उन्होंने बर्धमान रेलवे स्टेशन का नाम बदलकर बंगाल के महान क्रांतिकारी बटुकेश्वर दत्त के नाम पर रखने का एलान किया था। उन्होंने कहा कि शीघ्र ही केंद्र सरकार इस बाबत आदेश जारी कर देगी। इस घोषणा को लेकर पहले से ही तृणमूल और भाजपा के बीच चल रही खींचतान के बीच फिर से बंगाल का सियासी पारा चढ़ गया।

> मैं दो बार रेलमंत्री रह चुकी हूं इसलिए मुझे नियम पता है। राज्य में जब किसी स्टेशन का नाम बदला जाता है तो रेल मंत्रालय नए नाम का प्रस्ताव राज्य सरकार को भेजता है। इसके बाद उसे रेलवे स्टैंडिंग कमेटी के पास भेजा जाता है। कमेटी की स्वीकृति के बाद ही उक्त स्टेशन का नाम बदला जाता है।
>
> **-ममता बनर्जी, मुख्यमंत्री, पश्चिम बंगाल**

सोमवार को मुख्यमंत्री ने मीडिया के सामने खुलकर केंद्र की भाजपा सरकार के खिलाफ नाराजगी जाहिर की। उन्होंने आरोप लगाया कि राज्य सरकार को अंधेरे में रखकर स्टेशन का नाम बदला जा रहा है, जो असंवैधानिक है। बिना राज्य सरकार को विश्वास में लिए किसी स्टेशन का नाम नहीं बदला जा सकता।

गौरतलब है कि क्रांतिकारी बटुकेश्वर दत्त का जन्म 1910 में बर्धमान में हुआ था। केंद्र सरकार के स्टेशन का नाम बदलने के निर्णय के बाद उनके गांव ऊंयाड़ी के लोग बेहद खुश हैं।

गुमनामी बाबा की जांच रिपोर्ट होगी सार्वजनिक

राज्य ब्यूरो, लखनऊ : अयोध्या में गुमनामी बाबा की जांच के लिए गठित जस्टिस विष्णु सहाय आयोग की रिपोर्ट सार्वजनिक होगी। इस रिपोर्ट को विधानसभा पटल पर रखने के लिए मंगलवार को कैबिनेट की बैठक में प्रस्ताव आ सकता है। इसके अलावा अनुपूरक बजट समेत और कई महत्वपूर्ण प्रस्ताव कैबिनेट के लिए प्रस्तावित हैं।

मंगलवार की सुबह मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की अध्यक्षता में लोकभवन में कैबिनेट की बैठक होगी। इस बैठक में गुमनामी बाबा उर्फ भगवान जी की जांच के लिए गठित एक सदस्यीय न्यायमूर्ति विष्णु सहाय आयोग की रिपोर्ट के संदर्भ में प्रस्ताव आना है। सितंबर 2017 में न्यायमूर्ति सहाय ने गुमनामी बाबा की 347 पृष्ठ की जांच रिपोर्ट राज्यपाल को सौंपी थी। राज्यपाल ने सौंपी गई रिपोर्ट को परीक्षण के बाद अगली कार्रवाई के लिए राज्य सरकार को भेज दिया था। जस्टिस सहाय ने चार जुलाई, 2016 को आयोग के अध्यक्ष के रूप में कार्यभार ग्रहण कर जांच शुरू की थी। करीब 14 माह में पूरी हुई इस जांच रिपोर्ट के सामने आने से एक बड़े रहस्य से पर्दा हट सकता है। इलाहाबाद हाई कोर्ट की लखनऊ खंडपीठ ने प्रदेश सरकार को गुमनामी बाबा की जांच के लिए एक पैनल गठित करने के निर्देश दिये थे।

बदलेगी तस्वीर

खेती-किसानी की तस्वीर संवारने को 'एक गांव-एक खेत' की योजना, गांव के सभी खेतों को एक मानते हुए उनमें सामूहिक रूप से खेती करेंगे लोग, उत्पादित अनाज का गांव के सभी किसानों में होगा समान रूप से वितरण

उत्तराखंड में सामूहिक खेती को प्रोत्साहित करेगी सरकार

केदार दत्त, देहरादून

पलायन का दंश झेल रहे उत्तराखंड के गांवों में खेत अब वीरान नहीं रहेंगे, बल्कि इनमें फसलें लहलहाएंगी। खेती-किसानी की तस्वीर संवारने के मकसद से राज्य सरकार 'एक गांव-एक खेत' की अवधारणा को धरातल पर उतारने जा रही है। इसमें पर्वतीय इलाकों पर विशेष फोकस रहेगा। योजना के तहत गांव के सभी खेतों को एक मानते हुए उनमें सामूहिक रूप से खेती की जाएगी। खेती करने वाले सभी किसानों को उत्पादित अनाज का समान रूप से वितरण किया जाएगा। यही नहीं, जो लोग गांव से बाहर हैं, उनके खेतों का उपयोग करने पर उन्हें अनाज के रूप में कुछ हिस्सेदारी दी जाएगी। सरकार की कोशिश है कि आने वाले खरीफ सीजन से इस व्यवस्था को धरातल पर उतारा जाए।

खेती के नजरिये से देखें तो इसकी हालत बहुत बेहतर नहीं है। राज्य के सकल घरेलू उत्पाद (जीएसडीपी) में कृषि की हिस्सेदारी इसकी तस्दीक करती है। वर्ष 2010-12 में यह 7.05 फीसद थी, जो अब घटकर 4.67 फीसद पर आ गई है। आंकड़े बताते हैं कि गुजरे 18 वर्षों में राज्य में 72 हजार हेक्टेयर से ज्यादा कृषि योग्य भूमि बंजर में तब्दील हुई है। हालांकि, गैर आधिकारिक आंकड़ों पर गौर करें तो यह रकबा एक लाख हेक्टेयर के करीब पहुंच चुका है।

यही नहीं, राज्य गठन के समय विरासत में मिली सवा तीन लाख हेक्टेयर कृषि योग्य बंजर भूमि का उपयोग अभी खोजना बाकी है। वर्तमान में कृषि योग्य बंजर भूमि का आंकड़ा करीब सवा चार लाख हेक्टेयर पहुंच चुका है। हालांकि कृषि की सूरत संवारने को दावे तो हुए, मगर धरातल पर गंभीरता से पहल नहीं हो पाई। यही कारण भी है कि जिन खेतों में फसलें लहलहाया करती थीं, वे धीरे-धीरे बंजर में तब्दील होते चले गए। गांवों से निरंतर हो रहे पलायन ने इसमें आग में घी का काम किया।

इस सबके मद्देनजर सरकार ने अब केंद्र से मिले संबल के बाद खेती-किसानी की तस्वीर संवारने की ठानी है। किसानों की आय दोगुना करने के मद्देनजर उन्हें कृषि व इससे जुड़े क्षेत्रों के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। इसी कड़ी में परंपरागत कृषि विकास योजना के तहत राज्य में तैयार होने जा रहे 3900 कृषि क्लस्टरों में सामूहिक खेती पर जोर दिया जा रहा है।

इस अवधारणा को नाम दिया गया है 'एक गांव-एक खेत'। यह एक प्रकार से कलेक्टिव फार्मिंग (सामूहिक खेती) है। कृषि मंत्री सुबोध उनियाल के मुताबिक इसके तहत गांव के सभी खेतों को एक मानते हुए इसमें वहां रह रहे सभी लोग सामूहिक रूप से खेती करेंगे। इसमें उन लोगों के बंजर हो चुके खेत भी शामिल होंगे, जो गांव से बाहर रह रहे हैं। फसल का सभी लोगों में समान वितरण होगा।

पलायन का दंश झेल रहे उत्तराखंड के गांवों में खेत अब वीरान नहीं रहेंगे। प्रतीकात्मक

ये होंगे फायदे

- गांव के सभी खेतों में लौटेगी हरियाली, लहलहाएंगी फसलें
- सामूहिक रूप से खेती करने पर समय और श्रम की होगी बचत
- क्लस्टर आधार पर होने वाली खेती से उत्पादों के विपणन में होगी आसानी
- जो लोग गांव से बाहर रह रहे हैं, वे भी खेती के लिए होंगे प्रोत्साहित
- बंजर हो चुकी कृषि योग्य भूमि फिर से हो सकेगी उपजाऊ
- पर्यावरणीय लिहाज से जलस्रोतों के संरक्षण में सहायक होगा यह प्रयास

जेलों की सुरक्षा के लिए अभी नहीं मिलेगी सीआरपीएफ

कैलाश नाथ, चंडीगढ़

जेलों की सुरक्षा की जिम्मेदारी अभी पंजाब सरकार को ही उठानी होगी। केंद्र सरकार अभी बठिंडा, लुधियाना व पटियाला जेल के लिए सीआरपीएफ की तीन कंपनियों को नहीं भेजेगी। अमरनाथ यात्रा के कारण केंद्र ने अभी सीआरपीएफ की कंपनियां भेजने से असमर्थता जताई है। अमरनाथ यात्रा पूरी होने के बाद ही स्थिति स्पष्ट होगी।

बता दें कि केंद्रीय गृह विभाग ने पंजाब की तीन हाई प्रोफाइल जेलों बठिंडा,

रिकॉर्ड उच्च स्तर पर सोना, चांदी भी मजबूत

नई दिल्ली : सोना सोमवार को रिकॉर्ड उच्च स्तर पर पहुंच गया। ऑल इंडिया सराफा एसोसिएशन के मुताबिक स्थानीय ज्वेलरों के द्वारा खरीदारी बढ़ाने से राष्ट्रीय राजधानी के सराफा बाजार में सोना 100 रुपये उछलकर 35,970 रुपये प्रति 10 ग्राम पर पहुंच गया। औद्योगिक इकाइयों और सिक्का निर्माताओं के बीच मांग बढ़ने से चांदी भी 260 रुपये मजबूत होकर 41,960 रुपये प्रति किलोग्राम की हो गई। ऑल इंडिया सराफा एसोसिएशन के वाइस प्रेसिडेंट सुरेंद्र जैन ने कहा कि सोने का यह भाव अब तक के उच्च स्तर पर है। (प्रेट्र)

पांच लाख करोड़ डॉलर से अधिक की अर्थव्यवस्था के लिए आठ फीसद से ज्यादा विकास दर हासिल करनी ही होगी। इसमें निजी क्षेत्र की बड़ी भूमिका होगी।

— अमिताभ कांत
सीईओ, नीति आयोग

सेंसेक्स	38,031.13	▼ 305.88
निफ्टी	11,346.20	▼ 73.05
सोना प्रति दस ग्राम	₹ 35,970	▲ ₹100
चांदी प्रति किलोग्राम	₹ 41,960	▲ ₹260
$ डॉलर	₹ 68.92	▲ ₹0.12
क्रूड (ब्रेंट) प्रति बैरल	$ 63.06	

कारपोरेट हलचल

आइसीएआर का बेस्ट वर्कर अवार्ड

आइसीएआर के मुख्य प्रचार व जनसंपर्क अधिकारी अनिल कुमार शर्मा को वर्ष 2018 का आइसीएआर बेस्ट वर्कर (टेक्निकल) अवार्ड दिया गया है। उन्हें यह सम्मान आइसीएआर के 91वें स्थापना दिवस के मौके पर आयोजित एक समारोह में आइसीएआर के महानिदेशक डॉ. त्रिलोचन महापात्र ने दिया। वर्ष 2018 में गणतंत्र दिवस में पहली बार आइसीएआर की झांकी के लिए शर्मा ने उल्लेखनीय काम किया था।

उप्र में दो स्किल सेंटर ऑफ एक्सिलेंस

कौशल विकास उद्यमिता मंत्री डॉ. महेंद्र नाथ पांडे और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के बीच हुई एक बैठक में प्रदेश में दो स्किल सेंटर ऑफ एक्सीलेंस की स्थापना का फैसला लिया गया। इनमें से एक केंद्र की स्थापना प्लंबिंग के लिए ग्रेटर नोएडा में और दूसरा सर्विस सेक्टर के लिए वाराणसी में स्थापित किया जाएगा। राज्य में कौशल विकास के लिए विश्वस्तरीय ढांचे के निर्माण को प्रोत्साहित करने हेतु कानपुर में इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ स्किल्स का संचालन जल्द होगा।

सीआइएसएफ को एनसीआरबी ट्रॉफी

केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल (सीआइएसएफ) को अपने एप 'ट्रेनिंग मैनेजमेंट सॉफ्टवेयर' (टीएमएस) के लिए एनसीआरबी ट्रॉफी मिली है। लखनऊ में हुई ऑल इंडिया पुलिस ड्यूटी मीट में सीआइएसएफ को यह ट्रॉफी प्रदान की गई। सीआइएसएफ के मुख्यालय में तैनात असिस्टेंट इंस्पेक्टर जनरल बीएसएन रेड्डी और डिप्टी कमांडेंट सोनू सिकरवार ने उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से यह ट्रॉफी प्राप्त की।

आइटीबीपी का कारगिल विजय दिवस

भारत तिब्बत सीमा पुलिस (आइटीबीपी) ने लगभग एक सप्ताह के कारगिल विजय दिवस समारोह की शुरुआत की है। इस सिलसिले में बल द्वारा अपने कार्य क्षेत्रों और विशेष तौर पर सीमावर्ती इलाकों में कई जागरूकता कार्यक्रमों के आयोजनों की तैयारी की गई है। ये कार्यक्रम 27 जुलाई तक चलेंगे।

पद्मिनी दिल्ली ट्रांसको की सीएमडी

श्रीमती पद्मिनी सिंगला को दिल्ली ट्रांसको लिमिटेड का चेयरमैन व प्रबंध निदेशक बनाया गया है। 2002 बैच की आइएएस अधिकारी सिंगला ने दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स से कॉमर्स में स्नातकोत्तर डिग्री हासिल की। अभी तक वह दिल्ली, अंडमान व निकोबार द्वीप समूह, चंडीगढ़ और अरुणाचल प्रदेश में विभिन्न पदों पर काम कर चुकी हैं।

एनएफएल ने असम भेजी किसान यूरिया

नेशनल फर्टिलाइजर्स लिमिटेड (एनएफएल) ने दक्षिण भारत में पैर पसारने के बाद अब उत्तर पूर्व का रुख किया है। कंपनी ने उत्तर पूर्व की सरकारी कंपनी ब्रह्मपुत्र वैली फर्टिलाइजर कॉरपोरेशन के साथ असम में 40000 टन यूरिया को किसानों तक पहुंचाने का करार किया है। इस दिशा में किसान यूरिया की पहली खेप 15 जुलाई को तिनसुकिया स्टेशन पर अनलोड हुई।

विश्व युवा कौशल विकास सप्ताह

एपेरल ट्रेनिंग एंड डिजाइन सेंटर (एटीडीसी) ने 15 से 19 जुलाई 2019 के दौरान विश्व युवा कौशल विकास सप्ताह मनाया। इस अवसर पर संस्थान ने कई श्रेणियों में कौशल प्रतिस्पर्धा का आयोजन किया। इनमें पोस्टर मेकिंग, फैब्रिक पेंटिंग, एम्ब्रायडरी और कचरे से सामान बनाने जैसी श्रेणियां शामिल थीं।

वित्त मंत्रालय चाहता था क्रिप्टोकरेंसी पर नियमन

तैयारी ▸ आरबीआइ ने नियमन के बजाय प्रतिबंध लगाने की वकालत की थी

केंद्रीय बैंक की सिफारिश पर ही समिति ने डिजिटल करेंसी पर प्रतिबंध की पेशकश की

हरिकिशन शर्मा, नई दिल्ली

सरकार की एक अंतर-मंत्रालयी समिति ने क्रिप्टोकरेंसी पर प्रतिबंध लगाने की सिफारिश की है। लेकिन हकीकत यह है कि वित्त मंत्रालय का आर्थिक कार्य विभाग प्रतिबंध के बजाय इसके नियमन के पक्ष में था। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआइ) ने क्रिप्टोकरेंसी पर प्रतिबंध लगाने की वकालत की थी, जिसके बाद समिति को अपनी रिपोर्ट में प्रतिबंध लगाने के लिए कानून का मसौदा पेश करने की सिफारिश करनी पड़ी।

सरकार ने दो नवंबर, 2017 को वर्चुअल करेंसी से जुड़े मुद्दों का अध्ययन करने के लिए वित्त मंत्रालय के आर्थिक कार्य विभाग के सचिव सुभाष चंद्र गर्ग की अध्यक्षता में इस समिति का गठन किया था। इसमें आरबीआइ, भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के शीर्ष अधिकारी शामिल थे। सोमवार को इस समिति की रिपोर्ट सरकार ने सार्वजनिक की। रिपोर्ट में समिति की बैठकों का विवरण देखकर पता चलता है कि क्रिप्टोकरेंसी पर प्रतिबंध लगाने की वकालत आरबीआइ ने की थी।

रिपोर्ट में दिये गये ब्योरे के मुताबिक समिति की पहली बैठक 27, नवंबर 2017 को हुई जिसमें कहा गया कि क्रिप्टोकरेंसी पर प्रतिबंध लगाने के विकल्प का क्रियान्वयन कठिन होगा। इसके चलते ऐसी करेंसी का अवैध उपयोग बढ़ सकता है। समिति की दूसरी बैठक 22 फरवरी, 2018 को हुई जिसमें आरबीआइ के डिप्टी गवर्नर बीपी कानूनगो ने क्रिप्टोकरेंसी पर प्रतिबंध लगाने के पक्ष में तर्क दिए। इस बैठक में उनकी दलीलें इसलिए महत्वपूर्ण थीं क्योकि पिछली बैठक में क्रिप्टोकरेंसी पर प्रतिबंध लगाने के विकल्प को स्वीकार नहीं किया गया था। खास बात यह है कि 22 फरवरी की बैठक में केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड (सीबीडीटी) के चेयरमैन ने भी क्रिप्टोकरेंसी पर प्रतिबंध लगाने का समर्थन किया। हालांकि गर्ग ने दलील दी कि वर्चुअल करेंसी एक आर्थिक व्यवस्था है इसलिए इसका नियमन होने से बेहतर परिणाम निकल सकते हैं।

उन्होंने जी-20 की बैठक में भी इस मुद्दे पर बात होने का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि इस तकनीक की प्रकृति को देखते हुए प्रतिबंध प्रभावी साबित नहीं हो सकता है। उन्होंने इस संबंध में दक्षिण कोरिया का हवाला दिया जिसने वर्चुअल करेंसी पर प्रतिबंध लगाने का निर्णय वापस ले लिया था। उन्होंने कहा कि अगर प्रतिबंध लगाने का प्रस्ताव समिति में स्वीकार किया जाता है तो फिर आरबीआइ और सीबीडीटी एक कानून का मसौदा तैयार करें। सेबी सदस्य ने कहा कि वर्चुअल करेंसी का नियमन एक ही नियामक के माध्यम से संभव नहीं होगा। सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के सचिव ने बैठक में कहा कि यह ऐसा क्षेत्र है जो अभी विकसित हो रहा है। इसलिए भारत को अपना विकल्प इसी तरह रखना चाहिए।

आखिरकार बैठक में इस बात पर सहमति बनी कि वित्त मंत्रालय का आर्थिक कार्य विभाग वर्चुअल करेंसी के नियमन पर तथा आरबीआइ और सीबीडीटी उस पर प्रतिबंध लगाने के विकल्प पर 15 दिन के भीतर रिपोर्ट तैयार कर देंगे।

प्रतीकात्मक

कॉरपोरेट कंपनियों द्वारा दुरुपयोग की आशंका

समिति की तीसरी बैठक इस वर्ष नौ जनवरी को हुई जिसमें क्रिप्टोकरेंसी पर प्रतिबंध लगाने के लिए विधेयक का मसौदा और ड्राफ्ट रिपोर्ट रखी गई। इस बैठक में आरबीआइ के डिप्टी गवर्नर ने कहा कि विधेयक के शीर्षक से नियमन शब्द हटा देना चाहिए। उन्होंने इस बैठक में क्लोज्ड लूप टोकन के संबंध में भी चिंता प्रकट की और कहा कि इसकी अनुमति नहीं दी जानी चाहिए क्योंकि बड़ी कॉरपोरेट कंपनियां इसका इस्तेमाल अपनी आनुषंगिक कंपनियों से खरीद-फरोख्त के लिए कर सकती हैं। उन्होंने इस संबंध में अमेजन और रिलायंस इंडस्ट्रीज का जिक्र किया।

समिति की प्रमुख सिफारिशें

- **क्रिप्टोकरेंसी** पर प्रतिबंध लगाने के लिए 'बैनिंग क्रिप्टोकरेंसी एंड रेग्युलेशन ऑफ ऑफिशियल डिजिटल करेंसी बिल, 2019' लाने की सिफारिश
- **क्रिप्टोकरेंसी** के मुद्दे पर एक स्थायी समिति बनाने की सिफारिश
- **वित्तीय** क्षेत्र में डिस्ट्रीब्यूटेड लेजर टेक्नॉलाजी के इस्तेमाल पर विचार करे वित्त मंत्रालय
- **आधिकारिक** रूप से जारी की जाने वाली डिजिटल करेंसी का नियामक हो आरबीआइ
- **आइपीओ** और एफपीओ जारी करने के लिए डीएलटी का इस्तेमाल करने पर विचार कर सकता है सेबी
- **स्टांप** ड्यूटी संग्रह करने के लिए भी किया जा सकता है डीएलटी का इस्तेमाल

क्या है डीएलटी ? : डीएलटी का मतलब है डिस्ट्रीब्यूटेड लेजर टेक्नॉलाजी। इसमें ब्लॉकचेन तकनीक का इस्तेमाल करते हुए ट्रांजेक्शन और डाटा एक स्वतंत्र कंप्यूटर में रिकार्ड या स्टोर किया जाता है, जबकि परंपरागत लेजर में डाटा एक जगह केंद्रीयकृत रूप से स्टोर किया जाता है।

बैंक की गलती से चेक गुम हुआ तो ग्राहक को होगा रकम का भुगतान

नई दिल्ली, प्रेट्र : शीर्ष उपभोक्ता अदालत ने एक मामले में फैसला देते हुए कहा कि बैंक में जमा किए गए चेक के गुम हो जाने पर उसे ग्राहक को रकम की भरपाई करनी होगी। साथ ही बाउंस हो चुके चेक के मामले में भी यही फैसला लागू होगा। नेशनल कंज्यूमर डिस्प्यूट्स रिड्रेसल कमिशन (एनसीडीआरसी) ने बैंक ऑफ बड़ौदा (बीओबी) को आदेश दिया कि वह गुजरात के निवासी को तीन लाख रुपये से अधिक का भुगतान करे। व्यक्ति के पक्ष में जारी किया गया 3.6 लाख रुपये का चेक बैंक से गुम हो गया था। यह चेक बाउंस भी हो चुका था।

शीर्ष उपभोक्ता अदालत ने कहा कि बैंक ने न सिर्फ बाउंस चेक को खो दिया, बल्कि शिकायतकर्ता चित्रोदिया बाबूजी दीवानजी को चेक रिटर्न मेमो भी नहीं दिया। शिकायर्ता ने बैंक से लंबे समय तक इसके लिए आग्रह किया था। इसके कारण दीवानजी को 3.6 लाख रुपये का नुकसान हुआ।

एनसीडीआरसी ने कहा कि दीवानजी ने लंबे समय तक बैंक से बाउंस चेक और चेक रिटर्न मेमो वापस किए जाने का आग्रह किया। दुर्भाग्य से चेक खो चुका था। न तो उन्हें बाउंस चेक मिला और न ही 3.6 लाख रुपये की राशि मिली। चूंकि विवादास्पद चेक बैंक द्वारा गुम हुआ, इसलिए नुकसान की भरपाई करना बैंक की जिम्मेदारी है।

- **उपभोक्ता अदालत ने कहा कि बाउंस हो चुके चेक पर भी लागू होगा यह फैसला**
- **बैंक ऑफ बड़ौदा को 3.6 लाख रुपये ग्राहक को भुगतान करने का दिया आदेश**
- **एनसीडीआरसी ने कहा- भरपाई बैंक की जिम्मेदारी**

करीब एक दशक बाद ग्राहक को मिली राहत। प्रतीकात्मक

एनसीडीआरसी ने बैंक के खिलाफ दिए गए गुजरात राज्य उपभोक्ता आयोग के फैसले को सही ठहराया और इस फैसले की चुनौती देने वाली बैंक की याचिका को खारिज कर दिया। राज्य उपभोक्ता आयोग ने जिला फोरम के फैसले को खारिज करते हुए 20 जनवरी 2016 को दीवानजी के पक्ष में फैसला दिया था और बैंक को उन्हें 3.6 लाख रुपये भुगतान करने का आदेश दिया था। जिला फोरम ने 2013 में बैंक को ब्याज सहित सिर्फ 15,000 रुपये का भुगतान करने का आदेश दिया था।

दीवानजी को किसी ने बकाया भुगतान के लिए चेक दिया था। उन्होंने 11 सितंबर 2010 को अपने बचत खाता में इस चेक को जमा किया था। चेक बाउंस हो गया और इसे दीवानजी को वापस भेज दिया गया। लेकिन दीवानजी के पास यह चेक नहीं पहुंच पाया। इसके बाद दीवानजी ने बैंक को कई कानूनी नोटिस भेजे, लेकिन बैंक सभी आरोपों से इंकार करता रहा।

क्रिप्टोकरेंसी में लेनदेन पर 50 करोड़ रुपये तक जुर्माना संभव

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

▸ **प्राइवेट क्रिप्टोकरेंसी पर लगेगी रोक, जारी होगा डिजिटल रुपया**

सरकार बिटकॉइन जैसी क्रिप्टोकरेंसी पर प्रतिबंध लगाने के लिए एक कानून बनाने की तैयारी कर रही है। यह कानून बनने पर प्राइवेट क्रिप्टोकरेंसी में किसी भी तरीके का लेन-देन या निवेश अपराध होगा और दोषी व्यक्ति को दस साल के कारावास की सजा और 50 करोड़ रुपये तक का जुर्माना देना होगा। हालांकि सरकार अत्याधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल करते हुए आधिकारिक तौर पर डिजिटल रुपया जारी कर सकती है जो लेन-देन के लिए पूरी तरह वैध होगा। डिजिटल रुपया करेंसी नोट की तरह लीगल टेंडर होगा।

सरकार की एक अंतर-मंत्रालयी समिति ने प्राइवेट क्रिप्टोकरेंसी पर प्रतिबंध लगाने और आधिकारिक तौर पर डिजिटल करेंसी जारी करने की सिफारिश की है। सरकार ने दो नवंबर, 2017 को वर्चुअल करेंसी से जुड़े मुद्दों का अध्ययन करने के लिए वित्त मंत्रालय के आर्थिक कार्य विभाग के सचिव सुभाष चंद्र गर्ग की अध्यक्षता में इस समिति का गठन किया था। इसमें रिजर्व बैंक, सेबी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के शीर्ष अधिकारी शामिल थे।

समिति ने क्रिप्टोकरेंसी पर प्रतिबंध लगाने के लिए 'बैनिंग क्रिप्टोकरेंसी एंड रेग्युलेशन ऑफ ऑफिशियल डिजिटल करेंसी बिल, 2019' शीर्षक से विधेयक का एक मसौदा भी तैयार किया है। सरकार ने सोमवार को समिति की रिपोर्ट और विधेयक का मसौदा आम लोगों की टिप्पणी के लिए वित्त मंत्रालय की वेबसाइट पर जारी किए। प्रस्तावित विधेयक में इस बात का प्रावधान है कि किसी भी व्यक्ति को क्रिप्टोकरेंसी खरीदने या बेचने, निवेश करने या इसे फंड के रूप में जुटाने की अनुमति नहीं होगी। साथ ही सरकार भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआइ) के सेंट्रल बोर्ड के साथ परामर्श कर डिजिटल रुपया जारी कर सकती है। साथ ही आरबीआइ किसी भी विदेशी डिजिटल मुद्रा को भी वैध विदेशी मुद्रा की मान्यता प्रदान कर सकती है। डिजिटल रुपया डीएलटी यानी डिस्ट्रीब्यूटेड लेजर टेक्नोलॉजी पर आधारित होगा। क्रिप्टोकरेंसी को प्रतिबंधित करने वाले कानून का उल्लंघन करने पर दोषी व्यक्ति को दस साल तक की सजा और 50 करोड़ रुपये तक का जुर्माना लगाया जा सकता है।

भारत में क्रिप्टोकरेंसी का कारोबार कितना है, इस बारे में कोई अनुमान नहीं है। लेकिन समिति ने एक न्यूज पोर्टल की खबर का हवाला देते हुए कहा है कि फरवरी 2018 में देश के 24 एक्सचेंज में 50 लाख ट्रेडर थे, जो हर दिन करीब 1,500 बिटकॉइन यानी लगभग एक अरब रुपये के बराबर लेन-देन कर रहे थे।

आरसीईपी पर बातचीत से पहले उद्योगों के साथ हुई चर्चा

- **वाणिज्य व उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने की विभिन्न उद्योग प्रतिनिधियों से मुलाकात**
- **आरईसीपी वाले 11 देशों के साथ भारत का व्यापार असंतुलन**

उद्योग जगत मुक्त व्यापार समझौते को फायदेमंद नहीं मान रहा। एएनआइ

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

क्षेत्रीय समग्र आर्थिक भागीदारी (आरसीईपी) करार पर मंत्री-स्तरीय वार्ता के लिए चीन जाने से पूर्व सरकार ने सभी उद्योगों के साथ इसके नुकसान और फायदों को लेकर चर्चा की। मुंबई में हुई इन बैठकों में वाणिज्य व उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने टेक्सटाइल, इंजीनियरिंग, ऑटो, कृषि समेत तमाम उद्योगों के साथ अलग-अलग मुलाकात की।

दुनिया के 16 देशों के बीच व्यापक मुक्त कारोबारी समझौता (एफटीए) प्रस्तावित है। आरसीईपी के मसौदे पर इन सभी देशों में वार्ता चल रही है। इस समझौते में आसियान समूह के 10 देश ब्रुनेई, कंबोडिया, इंडोनेशिया, मलेशिया, म्यांमार, सिंगापुर, थाईलैंड, फिलीपींस, लाओस और वियतनाम शामिल हैं। इसके अतिरिक्त भारत, चीन, जापान, दक्षिण कोरिया, आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड भी इस समझौते का हिस्सा होंगे। इस महीने के अंत में चीन में इन देशों के वार्ताकारों की 27वीं बैठक प्रस्तावित है। इसके अतिरिक्त इन सभी देशों के व्यापार मंत्री भी बीजिंग में इस समझौते पर चर्चा करेंगे। भारत की तरफ से वाणिज्य व उद्योग मंत्री बैठक में शामिल होंगे। घरेलू उद्योगों में बेस मेटल और स्टील उद्योग में प्रस्तावित आयात शुल्क को लेकर भारी चिंता है। इस समझौते में इन धातुओं पर आयात शुल्क में कटौती का प्रस्ताव है। घरेलू उद्योग पहले ही ऐसी धातुओं को जापान और दक्षिण कोरिया के साथ हुए मुक्त व्यापार समझौते से हटाने की मांग कर रहा है।

गौरतलब है कि आरसीईपी के दायरे में आने वाले करीब 11 देशों के साथ भारत का व्यापार संतुलन उसके पक्ष में नहीं है। इनमें चीन, दक्षिण कोरिया और आस्ट्रेलिया जैसे देश शामिल हैं। आरसीईपी पर सभी 16 देशों के बीच नवंबर 2012 से बातचीत की प्रक्रिया चल रही है।

अगले वित्त वर्ष से आठ फीसद पार होगी विकास दर

- **नीति आयोग के वाइस चेयरमैन ने कहा, उच्च विकास दर के लिए बुनियाद रख दी गई है**

न्यूयॉर्क, प्रेट्र : नीति आयोग के वाइस चेयरमैन राजीव कुमार ने कहा कि वित्त वर्ष 2020-21 से देश की विकास दर आठ फीसद से अधिक रहेगी। इसका मुख्य कारण यह है कि जीएसटी जैसे संरचनात्मक सुधारों के मनचाहे परिणाम मिलने शुरू हो जाएंगे। कुमार यहां टिकाऊ विकास लक्ष्यों पर उच्चस्तरीय राजनीतिक फोरम मंत्रिस्तरीय बैठक में हिस्सा लेने के लिए पहुंचे हैं। यह बैठक संयुक्त राष्ट्र के मुख्यालय में होगी। इस दौरान उन्होंने न्यूयॉर्क स्थित भारतीय महावाणिज्य दूतावास में आयोजित इंडिया इन्वेस्टमेंट सेमिनार में मुख्य वक्तव्य दिया। उन्होंने कहा कि अगले पांच साल में मोदी सरकार विकास दर को वर्तमान करीब सात फीसद से बढ़ाकर आठ फीसद से ऊपर ले जाएगी। इससे देश को पांच लाख करोड़ डॉलर (करीब 347 लाख करोड़ रुपये) की अर्थव्यवस्था बनाने का लक्ष्य आसानी से हासिल हो जाएगा।

एक साक्षात्कार में राजीव कुमार ने कहा कि निजी तौर पर मेरा मानना है कि 2020-21 से देश की विकास दर आठ फीसद से अधिक रहने वाली है। यह दर कई साल तक जारी रहेगी। बुनियाद रख दी गई है और जीएसटी व इन्सॉल्वेंसी एंड बैंक्रप्सी कोड जैसे संरचनात्मक सुधारों के लागू होने के बाद परिवर्तन शुरू हो चुका है। इनके प्रभाव के लिए जितना वक्त लगना चाहिए, वह लग चुका है और अब उनके लाभ मिलने शुरू होंगे। हमारे पास दहाई अंकों की विकास दर हासिल करने की क्षमता है।

आठ फीसद से अधिक की विकास दर जरूरी : कांत

नई दिल्ली : नीति आयोग के मुख्य कार्यकारी अधिकारी अमिताभ कांत ने सोमवार को कहा कि 2024-25 तक पांच लाख करोड़ डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने का लक्ष्य हासिल करने के लिए देश को आठ फीसद से अधिक की विकास दर हासिल करना होगा। आइआइएलएम इंस्टीट्यूट फॉर हाइयर एडुकेशन द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम में कांत ने कहा कि आर्थिक विकास को निजी क्षेत्र से गति मिलती है। इसलिए भारत को निजी क्षेत्र के निवेश के लिए उचित माहौल बनाना होगा। अभी हमारी विकास दर करीब सात फीसद है। अब इसे बढ़ाने की चुनौती है। 2024-25 तक पांच लाख करोड़ डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने के लिए हमें साल-दर-साल आठ फीसद से अधिक की दर से विकास करना होगा।

आइएलएफएस की एक कंपनी हुई भुगतान पर डिफॉल्टर

नई दिल्ली, प्रेट्र : इन्फ्रास्ट्रक्चर लीजिंग एंड फाइनेंशियल सर्विसेज (आइएलएंडएफएस) की एक शाखा आइएलएंडएफएस ट्रांसपोर्टेशननेटवर्क्स एक कर्ज के ब्याज पर डिफॉल्टर हो गई है। कंपनी गैर-परिवर्तनीय डिबेंचर्स (एनसीडी) के माध्यम से जुटाई गई दो रकम पर ब्याज भुगतान में विफल रही। इन एनसीडी की परिपक्वता अवधि 21 जुलाई को खत्म हो गई, लेकिन कंपनी ब्याज का भुगतान नहीं कर पाई। इनमें ब्याज की एक रकम 14.62 करोड़ रुपये और दूसरी रकम 11.40 करोड़ रुपये थी।

इस बीच, आइएलएंडएफएस को उसकी सात पवन ऊर्जा कंपनियों में शेष 51 फीसद हिस्सेदारी जापान की ओरिक्स कॉरपोरेशन के हाथों बेचने की मंजूरी मिल गई है। एनक्लैट) द्वारा नियुक्त जस्टिस (सेवानिवृत्त) डीके जैन ने कंपनी को यह अनुमोदन दे दिया। जैन को आइएलएंडएफएस ग्रुप और उसकी कंपनियों की समाधान प्रक्रिया के पर्यवेक्षण के लिए नियुक्त किया गया है। आइएलएंडएफएस विंड एनर्जी लिमिटेड (आइडब्ल्यूईएल) के नियंत्रण वाली इन कंपनियों में ओरिक्स कॉरपोरेशन की इस वक्त 49 फीसद हिस्सेदारी है। आइएलएंडएफएस का निदेशक बोर्ड इन बिक्री प्रस्तावों को पहले ही मंजूर कर चुका है।

रिलायंस की मदद भी नहीं आई बाजार के काम

नई दिल्ली, प्रेट्र : दिग्गज शेयर रिलायंस इंडस्ट्रीज में करीब ढाई फीसद उछाल के बावजूद एचडीएफसी के दोनों शेयरों और एफएमसीजी शेयरों में भारी गिरावट के कारण शेयर बाजारों में सोमवार को लगातार तीसरे सत्र में गिरावट दर्ज की गई। बीएसई का सेंसेक्स और नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) का निफ्टी दो महीने से अधिक के निचले स्तर पर बंद हुए। सेंसेक्स 305.88 अंकों की गिरावट के साथ 38,031.13 पर बंद हुआ। निफ्टी 73.05 अंकों की गिरावट के साथ 11,346.20 पर बंद हुआ। लगातार तीन सत्रों में सेंसेक्स कुल 1,184.15 अंक और निफ्टी कुल 350 अंक लुढ़क चुका है।

इस बीच बीएसई पर रिलायंस इंडस्ट्रीज 2.52 फीसद उछलकर 1,280.50 रुपये पर बंद हुआ। कंपनी का बाजार पूंजीकरण (एमकैप) 19,973.81 करोड़ रुपये बढ़ गया। कंपनी ने शुक्रवार को बाजार बंद होने के बाद जारी नतीजे में कहा था कि जून तिमाही में उसके शुद्ध लाभ में 6.8 फीसद बढ़ोतरी दर्ज की गई। सेंसेक्स में एचडीएफसी में सर्वाधिक 5.09 फीसद गिरावट रही। एचडीएफसी बैंक 3.32 फीसद लुढ़का। निजी बैंक ने एनपीए में बढ़ोतरी और कर्ज वृद्धि में सुस्ती दर्ज की है। कोटक महिंद्रा बैंक 3.08 फीसद गिरा। दूसरी ओर यस बैंक में सर्वाधिक 9.49 फीसद तेजी रही।

बीएसई के अन्य प्रमुख शेयरों में विमानन कंपनी इंडिगो का संचालन करने वाली कंपनी इंटरग्लोब एविएशन के शेयरों में 3.74 फीसद तेजी रही। कंपनी ने जून तिमाही में 1,203.14 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ दर्ज किया है, जो इसका अब तक का सर्वाधिक तिमाही शुद्ध लाभ है।

तीन दिनों में निवेशकों के चार लाख करोड़ डूबे : शेयर बाजारों में लगातार तीन सत्रों की गिरावट से शेयर बाजार में सूचीबद्ध कंपनियों का कुल एमकैप चार लाख करोड़ रुपये से अधिक घट चुका है। इस दौरान बीएसई में सूचीबद्ध कंपनियों का कुल एमकैप 4,37,602.4 करोड़ रुपये घट गया।

बीएसई का शंघाई स्टॉक एक्सचेंज से समझौता : बीएसई ने कहा कि उसने शंघाई स्टॉक एक्सचेंज के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर किया है। इसके तहत दोनों स्टॉक एक्सचेंज बाजार के विकास में आपसी सहयोग की तलाश और लघु व मध्यम उद्यमों को सहयोग करने के लिए मिलकर शोध करेंगे। समझौते के तहत दोनों एक्सचेंज में एक साथ लिस्टिंग पर भी ध्यान दिया जाएगा।

पीनोट्स निवेश घटा : भारतीय बाजार में पार्टिसिपेटरी नोट्स के जरिये होने वाला निवेश जून में घटकर 81,913 करोड़ रुपये पर आ गया। इससे पहले के चार महीनों में पीनोट्स निवेश में बढ़ोतरी दर्ज की गई थी। पीनोट्स पंजीकृत विदेशी पोर्टफोलियो निवेशक (एफपीआइ) जारी करते हैं। यह ऐसे निवेशकों को जारी किया जाता है, जो भारतीय बाजार में निवेश तो करना चाहते हैं, लेकिन यहां अपना पंजीकरण नहीं कराना चाहते हैं।

- **सेंसेक्स 305.88 अंकों की गिरावट के साथ 38,031.13 पर बंद**
- **निफ्टी 73.05 अंकों के नुकसान के साथ 11,346.20 पर स्थिर**

एचडीएफसी बैंक और कोटक महिंद्रा बैंक ने किया मायूस। प्रतीकात्मक

चीन में साइ-टेक इनोवेशन बोर्ड का आरंभ, शेयरों ने लगाई छलांग

शंघाई : शंघाई स्टॉक एक्सचेंज के नए साइ-टेक इनोवेशन बोर्ड या स्टार मार्केट ने सोमवार से काम करना शुरू कर दिया। यह अमेरिका के नैसडाक की तरह का प्लेटफॉर्म है। इसकी शुरुआत के साथ ही इसमें सूचीबद्ध शेयरों में भारी उछाल दर्ज किया गया। इस प्लेटफॉर्म पर 25 शेयरों को सूचीबद्ध किया गया है। इसमें ट्रेडिंग और लिस्टिंग के नियम साधारण शेयर बाजारों के मुकाबले अधिक आसान हैं। इसमें सूचीबद्ध अंजी टेक्नोलॉजी सुबह के कारोबार में 415.44 फीसद उछलकर 202 युआन (करीब 2,023 रुपये) पर बंद हुआ। अन्य शेयरों में भी काफी तेजी रही।

मोटर बिल से फर्जी ड्राइविंग लाइसेंस पर लगेगी रोक : गडकरी

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली : सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने कहा है कि नए मोटर बिल में ड्राइविंग लाइसेंस के लिए कैमरा व कंप्यूटर आधारित परीक्षा का प्रावधान किया गया है। इससे फर्जी ड्राइविंग लाइसेंसों पर अंकुश लगेगा तथा सड़क दुर्घटनाओं में कमी आएगी।

लोकसभा में मोटर (संशोधन) विधेयक, 2019 को चर्चा के लिए पेश करते हुए गडकरी ने कहा कि देश में 30 फीसद फर्जी ड्राइविंग लाइसेंस हैं। इसलिए हमने इस बिल में ऑनलाइन पहचान व सत्यापन के बाद लाइसेंस देने की व्यवस्था की है। इससे फर्जी लाइसेंस बनने बंद हो जाएंगे। गडकरी ने कहा कि देश में 25 लाख ड्राइवरों की कमी है। इसे दूर करने के लिए हम हर पिछड़े राज्य को में ड्राइविंग लाइसेंस इंस्टीट्यूट खोलेंगे।

9 सितंबर को भारत के एक दिवसीय दौरे पर आएंगे इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू। विश्लेषकों का कहना है कि मोदी से मुलाकात कर नेतन्याहू चुनाव से पहले अपने अभियान में मजबूती लाना चाहते हैं। नेतन्याहू 20 जुलाई को सबसे ज्यादा समय तक प्रधानमंत्री रहने वाले इजरायल के पहले नेता बन चुके हैं।

न्यूज गैलरी

शादी समारोह में पहुंच ट्रंप ने सभी को चौंकाया

न्यूजर्सी : यहां के बेडमिंस्टर स्थित अपने गोल्फ क्लब में शनिवार को एक शादी समारोह में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप अचानक पहुंच गए और वहां मौजूद सभी लोगों को चौंका दिया। समारोह में अमेरिकी राष्ट्रपति को देखते ही दूल्हा-दुल्हन समेत वहां उपस्थित मेहमानों ने अमेरिका-अमेरिका के नारे भी लगाए। ट्रंप को गेट पर देख दूल्हे ने आगे बढ़कर उनकी अगवानी की। गोल्फ क्लब में शादी के बाद आयोजित रिसेप्शन समारोह में दूल्हे पीजे मोंगेली ने राष्ट्रपति ट्रंप को भी आमंत्रित किया था। हालांकि उनके समारोह में ट्रंप शरीक होंगे, ऐसा उन्होंने सोचा नहीं था। ट्रंप को वहां देख उनकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। मोंगेली ने कहा कि यह उनके लिए खुशी और आश्चर्य से भरा अनुभव रहा। गोल्फ क्लब पहुंचे ट्रंप अगले दिन रविवार को व्हाइट हाउस के लिए रवाना हो गए। दो साल पहले भी ट्रंप ने जापान के प्रधानमंत्री शिंजो एबी को साथ लेकर फ्लोरिडा स्थित अपने मार-ए-लागो क्लब में आयोजित एक शादी समारोह में शरीक होकर सबको चौंका दिया था। (एएनआइ)

सीरिया में रूसी हवाई हमले में 27 की मौत

माआरा-अल-नोमान (सीरिया): उत्तर-पश्चिमी सीरिया में विद्रोहियों के कब्जे वाले एक कस्बे के व्यस्त बाजार में सोमवार को रूसी हवाई हवाई हमलों में 27 लोगों की मौत हो गई और 46 से अधिक लोग घायल हैं। युद्ध पर नजर रखने वाली ब्रिटेन स्थित संस्था सीरियन ऑब्जर्वेटरी फॉर ह्यूमन राइट्स ने यह जानकारी दी है। हालांकि मॉस्को ने हमलों के लिए खुद को जिम्मेदार मानने से इन्कार करते हुए इन खबरों को फर्जी करार दिया। रूसी विदेश मंत्रालय ने बयान में कहा कि रूसी वायुसेना इस इलाके में किसी भी मिशन में शामिल नहीं है। इससे पहले संस्था ने बताया कि माआरा-अल-नोमान कस्बे में सोमवार को हुए इस हमले में 25 नागरिकों की मौत हो गई और दो मृतकों की पहचान की जानी बाकी है। हमले इदलिब प्रांत के निकट हुई, जहां अब भी विद्रोहियों की मौजूदगी है। (एएफपी)

सोमालिया में धमाका, 17 लोगों की जान गई

मोगादिशु: सोमालिया की राजधानी मोगादिशु में सोमवार को हुए हमले में 17 लोगों की मौत हो गई है और दो दर्जन से अधिक लोग घायल हैं। अस्पताल अधिकारियों ने यह जानकारी दी। धमाके की जिम्मेदारी आतंकी संगठन अल-शबाब ने ली है। मदीना अस्पताल के निदेशक मोहम्मद यूसुफ ने कहा कि धमाके में मारे गए 17 लोगों के शवों को अस्पताल शवगृह ले जाया गया है जबकि 28 घायलों को भर्ती कर लिया गया है। (एएफपी)

बोरिस जॉनसन और जेरमी हंट के बीच सिमटा ब्रिटिश पीएम चुनाव

लंदन, प्रेट्र : ब्रिटेन की सत्तारूढ़ कंजरवेटिव पार्टी के अध्यक्ष पद का चुनाव अंतिम चरण में पहुंच गया है। इस पद के लिए अब बोरिस जॉनसन और जेरमी हंट के बीच सीधा मुकाबला है। इसके लिए सोमवार को पार्टी के अंदर मतदान कराया गया। नतीजों का एलान मंगलवार को होगा। पार्टी का अध्यक्ष चुना जाने वाला व्यक्ति ही प्रधानमंत्री टेरीजा मे की जगह लेगा। टेरीजा ने बेक्जिट समझौते पर संसद में कई बार विफलता हाथ लगने के बाद गत मई में पीएम पद छोड़ने का एलान कर दिया था। उन्होंने कहा था कि अपना उत्तराधिकारी चुने जाने तक वह कार्यवाहक प्रधानमंत्री बनी रहेंगी।

ब्रिटेन का अगला प्रधानमंत्री चुनने के लिए कंजरवेटिव पार्टी में दस जून से चुनाव प्रक्रिया चल रही है। कई चरणों के चुनाव के बाद अंतिम दौर में सिर्फ जॉनसन और हंट बचे हैं। इसके लिए सोमवार को चुनाव कराया गया। पार्टी के एक लाख 60 हजार से ज्यादा सदस्यों ने मतपत्रों के जरिये मतदान किया। मतदान के तुरंत बाद मतों की गिनती शुरू हो गई। टेरीजा सरकार में विदेश मंत्री रह चुके 54 वर्षीय जॉनसन कंजरवेटिव पार्टी का नेता चुने जाने और प्रधानमंत्री बनने की होड़ में सबसे आगे बताए जा रहे हैं।

टेरीजा का अंतिम संबोधन आज : कंजरवेटिव पार्टी के नए नेता का चुनाव होने के बाद टेरीजा मे बतौर प्रधानमंत्री बुधवार को संसद में अपना अंतिम भाषण देंगी। इसके बाद वह बकिंघम पैलेस जाएंगी और महारानी एलिजाबेथ द्वितीय को औपचारिक तौर पर अपना इस्तीफा सौंप देंगी। फिर 93 वर्षीय महारानी कंजरवेटिव पार्टी के नवनिर्वाचित अध्यक्ष को नई सरकार बनाने के लिए आमंत्रित करेंगी।

जॉनसन की जीत पर कई मंत्री देंगे इस्तीफा

टेरीजा कैबिनेट के वरिष्ठ मंत्रियों फिलिप हैमंड और डेविड गौक ने इरादा जाहिर किया है कि अगर जॉनसन चुनाव जीते तो वे अपने पदों से इस्तीफा दे देंगे। कैबिनेट के कई अन्य सदस्यों ने भी इसी तरह का इरादा जाहिर किया है। वे ब्रेक्जिट (यूरोपीय यूनियन से अलगाव) पर जॉनसन के नजरिये का विरोध कर रहे हैं। इस बीच इसी मसले को लेकर विदेश मामलों के जूनियर मंत्री एलन डंकन ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया।

पार्लियामेंट हाउस में सोमवार को कंजरवेटिव पार्टी की ओर से प्रधानमंत्री पद के प्रमुख दावेदार बोरिस जॉनसन (बाएं) और अपने घर के पास मॉर्निंग रन करते कंजरवेटिव पार्टी की ओर से प्रधानमंत्री पद के दावेदार जेरेमी हंट। (दाएं) रायटर

ईरान ने ध्वस्त किया सीआइए का जासूसी नेटवर्क

तनातनी जारी ▶ अमेरिका के साथ बहरहाल रिश्तों में सुधार के आसार नहीं, गिरफ्तार किए 17 लोग, कुछ को दी मौत की सजा

तेहरान, एएफपी/रायटर : अमेरिका के साथ बढ़ते तनाव के बीच ईरान ने मुल्क में फैले अमेरिकी खुफिया एजेंसी सीआइए का जासूसी नेटवर्क ध्वस्त करने का दावा किया है। ईरानी अधिकारियों के अनुसार, इस मामले में 17 लोगों को गिरफ्तार किया गया है। इनमें से कुछ को मौत की सजा भी दे दी गई।

ईरान के सरकारी टेलीविजन ने सोमवार को खुफिया मंत्रालय के एक बयान के हवाले से कहा, 'अमेरिका की खुफिया एजेंसी सीआइए के जासूसी नेटवर्क को सफलतापूर्वक ध्वस्त कर दिया गया है। मुल्क के साथ विश्वासघात करने वालों को न्याय के दायरे में लाया गया। कुछ को मौत और कुछ को जेल की लंबी सजा दी गई है। इन जासूसों को आर्थिक, परमाणु, सैन्य और साइबर क्षेत्रों के संवेदनशील केंद्रों में नियुक्त किया गया था।' बयान में यह भी बताया गया कि सीआइए के लिए जासूसी करने के मामले में पकड़े गए सभी लोग ईरानी नागरिक हैं। वे सभी स्वतंत्र रूप से काम कर रहे थे। सीआइए ने अमेरिका जाने की चाहत रखने वाले कुछ ईरानी लोगों को वीजा के जाल में फंसाकर भर्ती किया था।

ईरान ने पिछले माह भी सीआइए से जुड़े एक नेटवर्क को ध्वस्त करने का दावा किया था। इरना न्यूज एजेंसी से खुफिया मंत्रालय के एक अधिकारी ने कहा, 'अमेरिकी खुफिया एजेंसी के बारे में कुछ नए सुराग मिले थे। इसके आधार पर हमने हाल में एक नए नेटवर्क को ध्वस्त किया है।'

बढ़ता जा रहा है तनाव : खाड़ी में वाशिंगटन और तेहरान के बीच जारी तनाव लगातार बढ़ता जा रहा है। अमेरिकी युद्धपोत द्वारा ईरानी ड्रोन को मार गिराए जाने के बाद तनातनी और बढ़ गई है। अमेरिका ने अब सऊदी अरब में सेना की तैनाती करने का फैसला किया है। सऊदी अरब ने अमेरिका के इस इस कदम स्वागत किया है। सऊदी अरब ने कहा है कि वह इलाके में क्षेत्रीय सुरक्षा और स्थिरता की रक्षा के लिए अमेरिकी सैनिकों की मेजबानी करने के लिए तैयार है।

सऊदी रक्षा एजेंसी के मुताबिक किंग सलमान बिन अब्दुलअज़ीज़ अल-सऊद ने क्षेत्रीय सुरक्षा और स्थिरता की रक्षा में संयुक्त सहयोग बढ़ाने के लिए अमेरिकी सशस्त्र बलों की मेजबानी को मंजूरी दी है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने बीते दिनों अमेरिकी युद्धपोत द्वारा स्ट्रेट ऑफ हॉर्मुज में एक ईरानी ड्रोन को मार गिराए जाने का दावा किया था। अमेरिका के इस दावे को खारिज करते हुए ईरान के उप विदेश मंत्री अब्बास अर्घाची ने कहा कि ईरान के किसी भी ड्रोन को कोई नुकसान नहीं पहुचा है। उन्होंने कहा कि अमेरिका ने अपने ड्रोन को ही गलती से गिरा दिया है।

ईरान ने अमेरिकी खुफिया एजेंसी पर वीजा के जाल में फंसा कर काम करवाने का लगाया है आरोप।

तेल टैंकर छुड़ाने के लिए ब्रिटेन में आपात बैठक

लंदन, एपी : ब्रिटेन की प्रधानमंत्री टेरीजा मे ने तेल टैंकर जब्त किए जाने के मसले पर सोमवार को आपात बैठक बुलाई। उन्होंने ईरान के कब्जे से तेल टैंकर को सुरक्षित छुड़ाने के विकल्पों पर मंत्रियों और अधिकारियों के साथ चर्चा की। ईरान ने गत शुक्रवार रात होर्मुज जलडमरूमध्य (स्ट्रेट) से गुजरते समय ब्रिटेन के तेल टैंकर स्टेना इंपेरो को पकड़ लिया था। इसके चालक दल के 23 सदस्यों में 18 भारतीय हैं। इसके पहले गत चार जुलाई को ब्रिटेन ने अपने अधिकार वाले द्वीपीय क्षेत्र जिब्राल्टर में ईरान के एक तेल टैंकर को पकड़ लिया था। इसी के जवाब में ईरान ने उसके तेल टैंकर को जब्त किया है। इसके चलते दोनों देशों में तनाव काफी बढ़ गया है।

प्रधानमंत्री टेरीजा मे के कार्यालय के प्रवक्ता जेम्स स्लेक ने कहा, 'ईरान ने गलत और अवैध तरीके से तेल टैंकर को जब्त किया है। उसे तेल टैंकर और उस पर सवार चालक दल को तुरंत छोड़ने की जरूरत है।' इसके साथ ही उन्होंने यह भी कहा, 'यूरोप में हमारी सेना का सबसे बड़ा बजट है और हम विश्व स्तरीय रॉयल नेवी में निवेश कर रहे हैं।' यह माना जा रहा है कि संवेदनशील इलाके से अपने तेल टैंकर को सुरक्षित छुड़ाने के लिए ब्रिटेन कई विकल्पों पर विचार कर रहा है। ईरान पर आर्थिक से लेकर कूटनीतिक दबाव बनाने पर गौर किया जा रहा है। हालांकि सैन्य विकल्प के बारे में विचार नहीं किया जा रहा है। तेल टैंकर को जब्त किए जाने के मामले में विदेश मंत्री जेरमी हंट शुक्रवार को संसद में बयान दे सकते हैं।

टेरीजा मे। फाइल

- टेरीजा मे ने टैंकर को सुरक्षित छुड़ाने के विकल्पों पर मंत्रियों के साथ की चर्चा
- अपना तेल टैंकर जब्त किए जाने के जवाब में ईरान ने होर्मुज स्ट्रेट में ब्रिटिश पोत को पकड़ा

ईरान जाएंगे ओमान के शीर्ष राजनयिक

मस्कट, एएफपी : ओमान ने सोमवार को एलान किया कि मुल्क के शीर्ष राजनयिक युसूफ बिन अल्वी शनिवार को ईरान जाएंगे। वह द्विपक्षीय और हालिया घटनाओं पर चर्चा करेंगे। उनके दौरे का एलान ऐसे समय किया गया है, जब खाड़ी क्षेत्र में तनाव चरम पर है। ओमान का अमेरिका के साथ ही ईरान से भी अच्छे संबंध हैं। यह माना जा रहा है कि वह दोनों देशों में तनाव दूर करने के लिए मध्यस्थ की भूमिका निभा सकते हैं।

जारी किया नया वीडियो

तेहरान, एएफपी : ईरान ने सोमवार को ब्रिटेन के जब्त किए गए तेल टैंकर का नया वीडियो जारी किया। वीडियो के जरिये यह दिखाने का प्रयास है कि टैंकर पर सवार चालक दल के सभी सदस्य सुरक्षित हैं। इस बीच ईरान सरकार के एक प्रवक्ता ने कहा, 'ब्रिटिश तेल टैंकर को कानूनी दायरे में रहकर जब्त किया गया है।'

अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी के प्रमुख अमानो का निधन

वियना, रायटर : अंतराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी (आइएईए) के प्रमुख यूकिया अमानो का निधन हो गया है। 72 वर्षीय अमानो 2009 से संयुक्त राष्ट्र (यूएन) की इस परमाणु निगरानी एजेंसी के महानिदेशक थे।

एजेंसी सचिवालय ने उनकी मृत्यु पर दुख प्रकट करते हुए सोमवार को कहा, 'बहुत खेद के साथ सूचित करना पड़ रहा है कि आइएईए के महानिदेशक युकिया अमानो अब नहीं रहें।' एजेंसी का कहना है कि स्वास्थ्य संबंधी कारणों से वह जल्द ही अपना पद छोड़ने की तैयारी में थे। पिछले साल सितंबर में अमानो की सर्जरी होने की जानकारी सामने आई थी। लेकिन इसका कारण स्पष्ट नहीं किया गया था। अमानो 2005 से ही आइएईए में जापान का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। जुलाई, 2009 में उन्हें एजेंसी का महानिदेशक चुना गया था। उनका तीसरा कार्यकाल नवंबर, 2021 में खत्म होना था। निरस्त्रीकरण और परमाणु संबंधित कई मुद्दों के विशेषज्ञ अमानो ने ईरान के साथ परमाणु समझौते में भी अहम भूमिका निभाई थी। टोक्यो यूनिवर्सिटी से पढ़े अमानो को 1972 में जापान के विदेश मंत्रालय में नियुक्त किया गया था। विदेश मंत्रालय के अधिकारी के तौर पर उन्होंने फ्रांस, अमेरिका और स्विटजरलैंड समेत कई देशों में काम किया।

यूकिया अमानो। फाइल

फिलीपींस में जलाए ट्रंप व चिनफिंग के पोस्टर

राजधानी मनीला में सोमवार को रैली के दौरान कार्यकर्ताओं ने अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप, चीन के शी चिनफिंग और फिलीपीस के प्रेसीडेंट रोड्रिगो डुटर्टे के विशाल पोस्टरों को जलाकर विरोध जताया। रोड्रिगो इसी माह राष्ट्र के नाम संदेश देंगे। इससे पहले उनके खिलाफ विरोध प्रदर्शनों का सिलसिला प्रारंभ हो गया है। एएफपी

एक हैकर ने बुल्गारिया की लगभग पूरी आबादी का डाटा किया हैक

लंदन, आइएएनएस : एक हैकर ने बुल्गारिया की लगभग पूरी आबादी की निजी जानकारियों में सेंध लगाकर वहां के साइबर सुरक्षा तंत्र को चुनौती दी है। हैकर क्रिस्टियन बॉयकोव ने हाल में बुल्गारिया की 70 लाख आबादी में 50 लाख से ज्यादा लोगों का निजी डाटा हैक कर लिया था। इसे अब तक सबसे बड़ा साइबर अपराध बताया जा रहा है।

बॉयकोव को पिछले हफ्ते बुल्गारिया की राजधानी सोफिया से गिरफ्तार किया गया था। उसके घर से कई कंप्यूटर और मोबाइल बरामद किए गए। एक न्यूज रिपोर्ट के अनुसार, बॉयकोव ने अवैध रूप से नेशनल रेवेन्यू एजेंसी (एनआरए) से बड़ी मात्रा में डाटा डाउनलोड किया। एनआरए का कहना है कि बॉयकोव ने लोगों की कमाई, टैक्स रिटर्न और उनका पता तक हैक कर लिया था। शुरुआत में बॉयकोव पर साइबर अपराध से जुड़ी गंभीर धाराओं के तहत मुकदमा दर्ज किया गया था। लेकिन बाद में कई आरोप वापस ले लिए गए। दरअसल, बॉयकोव सिक्योरिटी फर्म टीएडी ग्रुप से जुड़ा है। उसका कहना है कि वह सिर्फ अपना कर्तव्य निभा रहा था। समर्थकों का कहना है कि बॉयकोव केवल सरकारी तंत्र की खामियां सामने लाने के लिए ही हैकिंग करता है।

हांगकांग में हो रहे प्रदर्शन बर्दाश्त नहीं : चीन

बीजिंग, एएफपी : चीन ने हांगकांग में हो रहे विरोध प्रदर्शनों पर रोष व्यक्त करते हुए कहा है कि वह इन्हें कतई बर्दाश्त नहीं करेगा। स्थानीय प्रशासक कैरी लाम और चीन की शासन व्यवस्था के विरोध में एक दिन पहले हांगकांग में हजारों की संख्या में प्रदर्शनकारियों ने विरोध मार्च निकाला था। इस दौरान कई प्रदर्शनकारियों ने चीनी प्रतिनिधि के दफ्तर पर अंडे भी फेंके थे।

हांगकांग में चीन के शीर्ष दूत वांग झीमिन ने इस चेतावनी के साथ कहा कि इस हरकत से चीन की जनता के साथ ही हांगकांग वासियों की भावनाओं को भी ठेस पहुंची है। हांगकांग में प्रस्तावित प्रत्यर्पण कानून के खिलाफ पिछले दो माह से चल रहा विरोध प्रदर्शन अब विशाल रूप ले चुका है। विरोध के चलते अस्थायी रूप से प्रत्यर्पण कानून के निलंबन के बाद प्रदर्शनकारी इस कानून को निरस्त करने की मांग कर रहे हैं। चीन के दबाव में काम करने वाली हांगकांग की वर्तमान प्रशासक कैरी लाम के इस्तीफे के अलावा प्रदर्शनकारी शहर में लोकतांत्रिक व्यवस्था स्थापित करने की मुहिम भी छेड़ चुके हैं।

क्यों हो रहे हैं प्रदर्शन: हांगकांग चीन का स्वायत्त क्षेत्र है। चीन इसे अपने संप्रभु राज्य का हिस्सा मानता है। हांगकांग के लोग कई बार इसको चीन से आजाद करने की मांग कर चुके हैं। हांगकांग में हो रहे प्रदर्शन प्रत्यर्पण कानून में संशोधन के विरोध में हो रहे हैं। प्रदर्शनकारियों का कहना है कि इस बिल के पारित होने के बाद हांगकांग में लोगों को मनमाने ढंग से हिरासत में ले लिया जाएगा और उन्हें यातनाएं दी जाएंगी।

पूरी दुनिया में हांगकांग को सुर्खियों में लाने वाले इस प्रदर्शन की वजह था एक शख्स ताइवान में एक महिला की हत्या कर हांगकांग वापस आ गया था। मुकदमा चलाने के लिए जरूरी था कि उसको ताइवान भेजा जाए, लेकिन ताइवान के साथ हांगकांग की प्रत्यर्पण संधि नहीं है। इसी वजह से शख्स को ताइवान भेजना मुश्किल है।

वर्तमान में हांगकांग का जो कानून है वह अंग्रेजों के समय का बनाया हुआ है। इसकी करीब एक दर्जन से अधिक देशों के साथ प्रत्यर्पण संधि है। इसमें अमेरिका, ब्रिटेन और सिंगापुर शामिल हैं। चीन ने मौजूदा कानून में जो बदलाव किया है उसके तहत चीन को किसी भी व्यक्ति को हिरासत में लेकर पूछताछ करने उसको वापस भेजने संबंधी अधिकार प्राप्त हो जाएंगे। इसका ही हांगकांग के लोग विरोध कर रहे हैं।

- प्रत्यर्पण बिल का विरोध कर रहे हैं स्थानीय लोग
- रविवार को प्रदर्शनकारियों ने चीनी दफ्तर पर फेंके थे अंडे

कंबोडिया के नौसैनिक अड्डे का इस्तेमाल करेगा चीन

वाशिंगटन, रायटर : अपने सामरिक मंसूबों का विस्तार करते हुए चीन ने कंबोडिया के साथ एक गुप्त समझौता किया है। इसके तहत चीन को थाइलैंड की खाड़ी में कंबोडिया के रीम नौसैनिक अड्डे का इस्तेमाल करने की इजाजत मिल गई है। अमेरिकी अखबार वाल स्ट्रीट जर्नल के रविवार को एक रिपोर्ट में इसका दावा किया। इस रिपोर्ट में अमेरिकी रक्षा और विदेश मंत्रालय को भी इसकी जानकारी होने की बात कही गई है। रिपोर्ट में कंबोडिया में चीनी सैनिकों की मौजूदगी से दक्षिण चीन सागर में पड़ोसी मुल्कों के साथ चीन के रिश्ते और बिगड़ने की संभावना जताई गई है। कंबोडिया और चीन ने हालांकि ऐसे किसी समझौते से इन्कार किया है। कंबोडिया के पीएम हुन सेन ने इसे मनगढ़ंत खबर बताया। इस समझौते को लेकर अमेरिका ने इस महीने की शुरुआत में कंबोडिया को चीन की विस्तारवादी नीति से आगाह कर दिया है। अमेरिका ने कंबोडियाई सरकार को पत्र लिखकर कहा है कि कंबोडिया के संवैधानिक कानून के मुताबिक देश को स्वतंत्र विदेश नीति अपनानी चाहिए।

जापान में पीएम एबी ने जीता उच्च सदन का चुनाव, बहुमत से चूके

टोक्यो, एएनआइ : जापान के प्रधानमंत्री एबी शिंजो के नेतृत्व वाले गठबंधन ने संसद के उच्च सदन का चुनाव जीत लिया है। लेकिन वह दो-तिहाई बहुमत पाने से चूक गया। इसके चलते संवैधानिक सुधार की एबी की योजना को करारा झटका लगा है।

एबी की लिबरल डेमोक्रेटिक पार्टी और सहयोगी कोमीटो पार्टी को उच्च सदन में दो-तिहाई बहुमत हासिल करने के लिए इस चुनाव में 85 सीटें जीतनी थीं। लेकिन उन्हें 69 सीटें ही मिलीं। जापान के उच्च सदन में कुल 245 सीटें हैं। इनमें से आधी सीटों के लिए हर तीन साल में चुनाव होता है। रविवार को 124 सीटों के लिए मतदान हुआ था जिसके लिए 370 प्रत्याशी मैदान में थे। सत्तारूढ़ गठबंधन के पास उच्च सदन में पहले से 70 सीटें थीं। सदन में बहुमत होने के बावजूद यह गठबंधन संवैधानिक सुधारों की दिशा में आगे नहीं बढ़ सकता। दरअसल, संविधान में किसी भी संशोधन के लिए दो-तिहाई बहुमत की जरूरत होती है।

यूक्रेन के संसदीय चुनाव में जेलेंस्की की पार्टी को बहुमत

कीव, एएफपी : कॉमेडियन से देश के शीर्ष पद पर पहुंचे यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदीमीर जेलेंस्की ने संसदीय चुनाव में भी बाजी मार ली है। इस सप्ताहांत देश में हुए संसदीय चुनाव में जेलेंस्की की सर्वेंट ऑफ द पीपुल पार्टी ने बहुमत का आंकड़ा पार कर लिया है। सोमवार को मतगणना में जेलेंस्की की पार्टी ने 42 प्रतिशत मत पाकर शीर्ष स्थान पर कब्जा जमाया। रुझानों में सर्वेंट ऑफ द पीपुल पार्टी को 450 सीटों वाली संसद में बहुमत का आंकड़ा पार करते बताया जा रहा है। इसकी निकटतम प्रतिद्वंद्वी पार्टी महज 12 प्रतिशत मत हासिल कर पाई। इस साल अप्रैल में राष्ट्रपति चुनाव जीतने वाले जेलेंस्की को यूक्रेन की संसद में मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा था। इस चुनाव से पहले संसद में उनकी पार्टी का कोई सदस्य नहीं था।

इमरान ने वंशवाद को बढ़ावा देने के लिए विपक्ष पर निशाना साधा

वाशिंगटन, प्रेट्र: भारत में मुगल साम्राज्य के पतन का हवाला देते हुए पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान ने देश की वर्तमान स्थिति के लिए विपक्षी दलों पर करारा प्रहार किया। उन्होंने इन पर प्रतिभा के स्थान पर वंशवाद को बढ़ावा देने का आरोप लगाया।

अमेरिका की पहली यात्रा पर आए खान ने रविवार को वाशिंगटन में प्रवासी पाकिस्तानियों को संबोधित किया और उनसे कहा कि उनकी सरकार ने निर्वाचित नेताओं को जवाबदेह बनाने के लिए कदम उठाए हैं। इस संबंध में उन्होंने पूर्व प्रधानमंत्री नवाज शरीफ और पूर्व राष्ट्रपति आसिफ अली जरदारी जैसे विपक्षी नेताओं पर की गई कार्रवाई का उल्लेख किया। पिछले साल अगस्त में प्रधानमंत्री निर्वाचित हुए खान ने कहा, 'पाकिस्तान में आज जो कुछ हो रहा है, वह नया पाकिस्तान है। वहां अब प्रभावशाली व्यक्तियों को जवाबदेह ठहराया जा रहा है।' क्रिकेट से राजनीति में आए खान ने कहा कि वह देश में प्रतिभा को उचित जगह दिलाने की व्यवस्था लाने को कटिबद्ध हैं। उन्होंने अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए मुगल साम्राज्य का उदाहरण दिया। उन्होंने कहा, 'मुस्लिम जगत पीछे क्यों रह गया? उसकी वजह है। मुगल साम्राज्य कभी शिखर पर था, लेकिन उसका पतन हो गया, क्योंकि वंशवादी उत्तराधिकारियों में नेतृत्व क्षमता नहीं थी।' खान ने कहा, 'भारत, मुगल साम्राज्य के दौरान दुनिया में महा ताकत था। उन डेढ़ सौ सालों में भारत की जीडीपी दुनिया की जीडीपी से 25 फीसद अधिक थी, लेकिन जल्द ही वह लुढ़क गई, क्योंकि औरंगजेब के बाद मुगल साम्राज्य के उत्तराधिकारी उतने काबिल नहीं थे।'

वाशिंगटन स्थित व्हाइट हाउस में सोमवार को पाकिस्तानी प्रधानमंत्री इमरान खान के पहुंचने पर अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अगवानी की। एएफपी

भाषण के दौरान बलूचिस्तान के पक्ष में नारेबाजी

वाशिंगटन, प्रेट्र: पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान के यहां एक सभागार में भाषण के दौरान युवा बलूचों के एक समूह ने पाकिस्तान के खिलाफ और आजाद बलूचिस्तान के पक्ष में नारेबाजी की। तीन दिवसीय दौरे पर इमरान रविवार को ही यहां पहुंचे हैं। बता दें कि पाक सुरक्षा बलों द्वारा बलूचों पर किए जा रहे कथित अत्याचार, उनकी अकारण गुमशुदगी और मानवाधिकार उल्लंघनों के खिलाफ अमेरिका में रह रहे बलूच लगातार आवाज उठाते रहे हैं।

इमरान पाकिस्तानी मूल के अमेरिकियों की सभा को संबोधित कर रहे थे कि तभी तीन बलूच युवा अचानक अपने स्थानों पर खड़े हो गए और नारेबाजी करने लगे। हालांकि इस दौरान खान ने बिना रुके अपना भाषण जारी रखा। करीब ढाई मिनट के बाद स्थानीय सुरक्षा कर्मियों ने तीनों को सभागार से जाने को कहा। इमरान खान के कुछ समर्थकों को उन्हें पीछे धकेलते हुए और स्टेडियम से बाहर जाने के लिए कहते हुए देखा गया। बता दें कि पिछले दो दिनों से बलूच युवा मोबाइल बिलबोर्ड अभियान चलाकर राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप से पाकिस्तान में बलूचों को गुप्त तरीके से अगवा करने की घटनाओं पर लगाम लगाने में मदद करने की अपील कर रहे हैं।

व्हाइट हाउस के सामने एमक्यूएम ने किया प्रदर्शन: इस बीच मुत्ताहिदा कौमी मूवमेंट (एमक्यूएम) के सदस्यों एवं समर्थकों ने व्हाइट हाउस के सामने खान के खिलाफ रविवार को शांतिपूर्ण प्रदर्शन किया। एमक्यूएम समर्थकों के समूह ने इमरान और पाक के खिलाफ नारे लगाए और आरोप लगाया कि कराची एवं देश के अन्य हिस्सों में मुहाजिरों के मानवाधिकारों का गंभीर उल्लंघन किया जाता है। आरोप लगाया कि सेना और आइएसआइ मुहाजिरों के खिलाफ अत्याचार में शामिल हैं। एमक्यूएम संस्थापक नेता अल्ताफ हुसैन आत्मनिर्णय का अधिकार मांग रहे हैं।

बधाई देने के लिए धन्यवाद नरेंद्र मोदी सर। मैं देश के लिए सम्मान हासिल करने की खातिर खूब मेहनत करुंगी।
— हिमा दास, भारतीय एथलीट

ओपन चैंपियनशिप में संयुक्त 51वें रहे शुभंकर

पोर्टरश (आयरलैंड) : भारत के शुभंकर शर्मा ने यहां आयोजित 148वीं ओपन चैंपियनशिप में संयुक्त रूप से 51वां स्थान हासिल किया। किसी ओपन टूर्नामेंट में शुभंकर का अब तक का सबसे अच्छा प्रदर्शन है। शुभंकर ने अंतिम होल पर 45 फुट की बर्डी लगाई और 68 स्कोर के साथ यह राउंड समाप्त किया। किसी एक राउंड में यह शुभंकर का सबसे अच्छा स्कोर है। शुभंकर ने कुल 3 ओवर 287 स्कोर हासिल किया।

टीम प्रबंधन नहीं चाहता, अभी संन्यास लें धौनी

धौनी को मेंटर के रूप में रखना चाहता है टीम प्रबंधन, साथ ही जरूरत पड़े तो मौजूद रह सकें एमएस

नई दिल्ली, आइएएनएस : मुख्य चयनकर्ता एमएसके प्रसाद ने वेस्टइंडीज दौरे के लिए विकेटकीपर बल्लेबाज रिषभ पंत को तीनों प्रारूपों के लिए भारतीय टीम में शामिल किया है। पंत को इसलिए तीनों प्रारूपों के लिए चुना गया है क्योंकि अनुभवी विकेटकीपर महेंद्र सिंह धौनी ने अगले दो महीने तक क्रिकेट से ब्रेक लेने का फैसला किया है।

धौनी के इस दौरे पर नहीं जाने के फैसले के बाद लोगों ने उनके संन्यास के कयास लगाने शुरू कर दिए थे। लेकिन, सूत्रों का कहना है कि पंत को टी-20 विश्व कप को ध्यान में रखकर टीम में चुना गया है। हालांकि, टीम प्रबंधन यह भी नहीं चाहता है कि धौनी इस दौरान संन्यास ले लें। टीम प्रबंधन का मानना है कि धौनी अगर संन्यास ले लेते हैं और पंत चोटिल हो जाते हैं तो फिर विश्व कप के लिहाज से एक खालीपन आ जाएगा, जिसे भर पाना मुश्किल हो जाएगा।

सूत्र ने कहा कि धौनी अपनी भूमिका और स्थिति को जानते हैं। सभी उनके संन्यास के बारे में बात करते हैं और जब वह इसे छोड़ने का फैसला करेंगे तो वह फिर टीम के खिलाड़ी नहीं रहेंगे। वह कभी भी किसी विवाद पर अपनी प्रतिक्रिया नहीं देंगे। आप सभी उनकी नैतिकता के बारे में बहुत कुछ जानते हैं। उन्होंने कहा कि ऐसे में जब टीम प्रबंधन टी-20 विश्व कप को ध्यान में रखकर पंत को बेहतर बना रहा है तो वे चाहते हैं कि धौनी एक मेंटर के रूप में रहें और जब भी टीम को उनकी जरूरत पड़े तो वह मौजूद रहें।

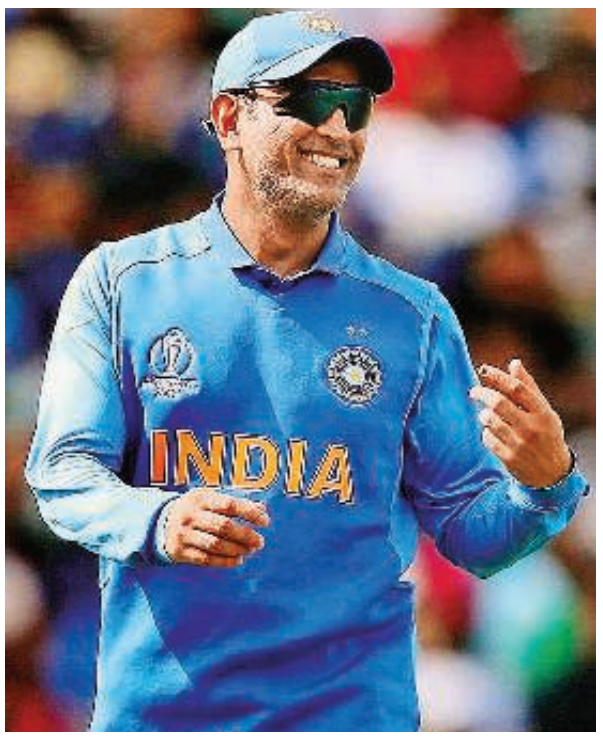

भारतीय विकेटकीपर बल्लेबाज व पूर्व कप्तान महेंद्र सिंह धौनी ● फाइल फोटो, एपी

सूत्र ने कहा कि आप देखें और बताएं कि अगर पंत चोटिल होते हैं तो कौन है जो उनका विकल्प होगा। सच कहूं तो दूसरी तरफ हमारे पास जितने भी नाम हैं, उनमें से कोई भी धौनी का मुकाबला करने के लायक नहीं है। हां, इस बात से कोई इन्कार नहीं कर सकता है कि पंत टीम का भविष्य हैं और उन्हें सभी प्रारूपों में आजमाया जाए। लेकिन, धौनी का मार्गदर्शन और मौजूदगी भी बहुत जरूरी है। प्रसाद ने कहा था कि टीम पंत को सभी प्रारूपों के लिए देख रही है और यह धौनी को फैसला लेना है कि वह कब संन्यास ले रहे हैं। उन्होंने कहा कि संन्यास का फैसला पूरी तरह से व्यक्तिगत है। धौनी जैसे दिग्गज क्रिकेटर अच्छी तरह से जानते हैं कि उन्हें कब संन्यास लेना है। लेकिन, जहां तक भविष्य की बात है तो वह चयनकर्ताओं के हाथ में है। वह (धौनी) इस सीरीज के लिए अनुपलब्ध हैं। प्रसाद ने कहा कि हमने विश्व कप तक एक रोडमैप तैयार किया था और हमारी आगे की योजनाएं भी तैयार है। हम फिलहाल, पंत जैसे खिलाड़ियों के कौशल को निखारना चाहते हैं। पंत ने कुछ भी गलत नहीं किया जिसके कारण हम उन्हें टीम में शामिल ना करें।

धौनी के पास खुद फैसले लेने का मौका : भोगले

नई दिल्ली, जेएनएन : प्रसिद्ध क्रिकेट कॉमेंटेटर हर्षा भोगले ने महेंद्र सिंह धौनी की उम्र और उनकी आर्मी की ट्रेनिंग को लेकर बयान दिया है। वेस्टइंडीज दौरे के लिए टीम की घोषणा से पहले ही धौनी ने खुद को इस दौरे के लिए उपलब्ध नहीं बताया था। ऐसे में रिषभ पंत को बतौर विकेटकीपर बल्लेबाज मौका दिया गया। दरअसल, धौनी ने आर्मी की ट्रेनिंग के लिए छुट्टी मांगी थी। इसके अलावा विश्व कप के बाद धौनी के संन्यास को लेकर चर्चा हुई, लेकिन अब इस पर विराम लग गया। उधर, उम्र के इस पड़ाव पर आर्मी की ट्रेनिंग और क्रिकेट से दो महीने का आराम लेने पर हर्षा ने कहा है कि शायद उनकी प्राथमिकता बदल गई है। हर्षा ने धौनी को लेकर दो ट्वीट किए हैं, जिसमें से पहले ट्वीट में लिखा है कि जीवन के इस मोड़ पर अचानक धौनी ने टेरिटोरियल आर्मी में ट्रेनिंग लेने का फैसला करके सबको चौंका दिया। लेकिन, उम्र के साथ-साथ इंसान की प्राथमिकता बदलती रहती है। वेस्टइंडीज के बाद सितंबर में दक्षिण अफ्रीका भारत दौरे पर होगी। उम्मीद है कि चयनकर्ता धौनी से लगातार बातचीत कर रहे होंगे। इसलिए हमें ज्यादा कयास लगाने की जरूरत नहीं होगी। भोगले ने दूसरे ट्वीट में लिखा कि सभी महान खिलाड़ियों के पास यह मौका होता है कि वह जब तक चाहें खेलें और खुद ही अपने भविष्य का फैसला करें, लेकिन खुद को वेस्टइंडीज दौरे के लिए अनुपलब्ध घोषित कर धौनी ने पूरी चर्चा से खुद को बाहर कर लिया। उनके फैसले का स्वागत किया जाना चाहिए।

हर्षा भोगले ● फाइल फोटो, प्रेट्र

धौनी को विश्वास में लें चयनकर्ता : अजहरुद्दीन

हैदराबाद, प्रेट्र : पूर्व भारतीय कप्तान मुहम्मद अजहरुद्दीन ने कहा कि चयनकर्ताओं और महेंद्र सिंह धौनी के बीच संवाद महत्वपूर्ण होगा क्योंकि यह पूर्व कप्तान संन्यास की अटकलों के बीच अपने शानदार करियर के अंतिम चरण पर है।

यह पूछे जाने पर कि धौनी जैसे बड़े खिलाड़ियों के संन्यास का सर्वश्रेष्ठ तरीका क्या होगा, अजहरुद्दीन ने कहा कि एक खिलाड़ी खेलना चाहता है, लेकिन चयनकर्ताओं को बात करनी होगी कि वह कब तक खेलेगा, वह कैसे खेलेगा, क्या होगा। उन्होंने कहा कि बड़े खिलाड़ी के मामले में खिलाड़ी को भी विश्वास में लिया जाना चाहिए और उससे बात करनी चाहिए। मुझे लगता है कि कोई फैसला आएगा। अन्यथा लोग लिखते रहेंगे कि उन्हें संन्यास लेना चाहिए, नहीं लेना चाहिए। क्योंकि धौनी ने कोई बयान नहीं दिया है। अधिकांश विशेषज्ञों का मानना है कि धौनी अब उतने सक्षम नहीं है, लेकिन अजहरुद्दीन का मानना है कि वह अब भी अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट खेलना जारी रख सकते हैं अगर उनके अंदर इच्छाशक्ति और शत-प्रतिशत फिट शरीर है तो। उन्होंने कहा कि मेरा नजरिया है कि अगर वह फिट हैं और अच्छा खेल रहे हैं तो उन्हें खेलना चाहिए। अगर वह फिट हैं और प्रदर्शन अच्छा है तो वह खेल सकते हैं। अगर उनकी रुचि अब भी शत-प्रतिशत है तो मुझे लगता है कि वह अच्छे खिलाड़ी हैं और उन्हें खेलना चाहिए।

भारत-ए ने किया वनडे सीरीज पर 4-1 से कब्जा

एंटिगा, प्रेट्र : भारत-ए ने पांच मैचों की वनडे सीरीज में वेस्टइंडीज-ए को 4-1 से शिकस्त देकर सीरीज पर कब्जा जमाया। सीरीज का आखिरी मुकाबला एंटिगा में खेला गया। इस पांचवें मुकाबले में भारत-ए ने रितुराज गायकवाड़ की 99 रनों की पारी की बदौलत वेस्टइंडीज-ए को आठ विकेट से मात दी। उन्होंने 89 गेंदों का सामना किया और 11 चौके व तीन छक्के जड़े।

कैरेबियाई कप्तान रोस्टन चेज ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी चुनी, जिसके बाद वेस्टइंडीज-ए की टीम 47.4 ओवर में 236 रन पर ढेर हो गई। वेस्टइंडीज-ए को अच्छी शुरुआत मिली, लेकिन भारतीय गेंदबाजों ने वापसी करते हुए टीम को झटके पर झटके दिए और ऑलआउट कर दिया। वेस्टइंडीज-ए की ओर से शेरफन रदरफोर्ड ने 65 रन, सुनील एंब्रिस ने 61 रन और खारे पियरे ने नाबाद 35 रन की पारी खेली। वहीं, भारत की ओर से दीपक चाहर, नवदीप सैनी और राहुल चाहर ने दो-दो विकेट चटकाए।

237 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए रितुराज एक रन से शतक से चूक गए। रितुराज के अलावा श्रेयस अय्यर और शुभमन गिल ने अर्धशतकीय पारी खेलकर टीम को आठ विकेट से जीत दिलाई। शुभमन गिल ने 40 गेंदों पर आठ चौकों व तीन छक्कों की मदद से 69 और श्रेयस अय्यर ने 64 गेंदों पर तीन चौकों व दो छक्कों के सहारे नाबाद 61 रन बनाकर भारतीय टीम को एकतरफा जीत दिलाई। रितुराज ने पहले विकेट के लिए शुभमन के साथ 110 रन जोड़े, जबकि श्रेयस के साथ दूसरे विकेट के लिए 112 रन की साझेदारी की। कप्तान मनीष पांडे सात रन बनाकर नाबाद लौटे। मालूम हो कि श्रेयस अय्यर, दीपक चाहर, राहुल चाहर और मनीष पांडे को इस सीरीज पर दमदार प्रदर्शन की वजह से वेस्टइंडीज दौरे के लिए विराट ब्रिगेड में शामिल किया गया है, जबकि शुभमन वेटिंग लिस्ट में हैं।

शानदार

- पांचवें मैच में वेस्टइंडीज-ए को आठ विकेट से हराया
- रितुराज शतक से चूके, शुभमन व श्रेयस के भी पचासे

बीसीसीआइ ने दी भारत-ए टीम को बधाई

नई दिल्ली, प्रेट्र : भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआइ) ने सोमवार को भारत-ए को सीरीज जीतने पर बधाई दी है। बीसीसीआइ ने ट्विटर पर लिखा कि बधाई टीम इंडिया वेस्टइंडीज-ए के खिलाफ पांच मैचों की वनडे सीरीज 4-1 से जीतने के लिए। भारत-ए की टीम के सलामी बल्लेबाज शुभमन गिल का सीरीज में प्रदर्शन शानदार रहा था और उन्हें मैन ऑफ द सीरीज चुना गया। गिल ने कहा कि यह शानदार सीरीज थी और मैन ऑफ द सीरीज बनकर खुश हूं। नीली जर्सी पहनने पर हमेशा गर्व महसूस होता है। हालांकि वेस्टइंडीज दौरे के लिए शुभमन गिल टीम इंडिया में जगह नहीं बना पाए।

भारतीय पैडलरों ने किया क्लीन स्वीप

कटक, प्रेट्र : भारतीय टेबल टेनिस खिलाड़ियों ने अपना शानदार प्रदर्शन जारी रखते हुए सोमवार को यहां जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में समाप्त हुए 21वीं कॉमनवेल्थ टेबल टेनिस चैंपियनशिप में सभी वर्गों में स्वर्ण पदक अपने नाम किए। भारत ने चैंपियनशिप में सात स्वर्ण पदक जीते, जो कि उसका अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन है। इसके अलावा भारत ने पांच रजत और तीन कांस्य पदक भी अपने नाम किए और वह टूर्नामेंट की पदक तालिका में शीर्ष पर रहा।

पुरुष सिंगल्स में हरमीत देसाई ने जी साथियान को मात दी। पुरुष डबल्स में एंथनी और मानव की जोड़ी ने साथियान और शरत की जोड़ी को 3-1 से हराकर स्वर्ण पदक जीता। महिला सिंगल्स में अहिका ने मधुरिका को 4-0 से हराकर स्वर्ण अपने नाम किया। महिला डबल्स में पूजा सहस्त्रबुद्धे और कृत्विका सिंघा राय ने श्रीजा अकुला और मौसमी पॉल को 3-1 से हराकर स्वर्ण जीता।

पुरुष सिंगल्स में हरमीत व महिला सिंगल्स में अहिका बनी विजेता, पुरुष व महिला डबल्स में भी भारतीय जोड़ियां जीतीं

टीम से अभी तक नहीं जुड़े कोच देजान

नई दिल्ली, प्रेट्र : टोक्यो ओलंपिक में अब केवल एक साल का समय बचा है, लेकिन भारतीय टेबल टेनिस टीम के विदेशी कोच देजान पेपिक अभी तक राष्ट्रीय टीम से नहीं जुड़े हैं जिससे खिलाड़ियों की तैयारियां प्रभावित हो रही हैं।

भारतीय टेबल टेनिस महासंघ (टीटीएफआइ) ने मार्च में मैसिमो कोस्टेनटिनी की जगह पर पेपिक को मुख्य कोच नियुक्त किया था। कोस्टेनटिनी ने निजी कारणों से अपना पद छोड़ दिया था। कोस्टेनटिनी के रहते हुए भारत ने अच्छी प्रगति की थी तथा उसने गोल्ड कोस्ट कॉमनवेल्थ गेम्स और जकार्ता एशियन गेम्स में ऐतिहासिक प्रदर्शन करते हुए टेबल टेनिस में पदक का 60 साल का इंतजार खत्म किया था। लेकिन, उनके जाने के बाद खिलाड़ी कोच के बिना ही अभ्यास कर रहे हैं। भारत के चोटी के पैडलर अचंता शरत कमल ने कहा, 'कोच के बिना ओलंपिक के लिए तैयारियां करना मुश्किल है।' पेपिक ने बुडापेस्ट में विश्व चैंपियनशिप के दौरान भारत के सीनियर खिलाड़ियों से बात की थी। उन्हें इस महीने टीम से जुड़ना था तथा कटक में चल रही कॉमनवेल्थ टेबल टेनिस चैंपियनशिप उनका भारतीय टीम के साथ पहला टूर्नामेंट होता। शरत ने कहा, 'आप परिणाम देख लो। केवल मैं, जी साथियान और मनिका (बत्रा) ही अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं। हम खुद ही अभ्यास कर रहे हैं और सिंगल्स के अभ्यास पर अपने आप ही नजर रख रहे हैं, लेकिन डबल्स के लिए हमें विशेषज्ञ कोचिंग की जरूरत पड़ती है।'

पीवी सिंधू की नजरें खिताबी सूखा खत्म करने पर

टोक्यो, प्रेट्र : भारत की शीर्ष बैडमिंटन खिलाड़ी पीवी सिंधू इंडोनेशिया ओपन के फाइनल में मिली हार के बाद मंगलवार से शुरू हो रहे जापान ओपन में जीत के साथ इस साल के खिताबी सूखे को खत्म करना चाहेंगी। इस टूर्नामेंट में साइना नेहवाल की वापसी होगी, जो फिटनेस समस्याओं के कारण इंडोनेशिया ओपन में भाग नहीं ले पाई थीं।

सिंधू रविवार को जकार्ता में इंडोनेशिया ओपन के फाइनल में जापान की अकाने यामागुची से हारकर सात महीने के खिताबी सूखे को खत्म नहीं कर सकी थीं। वह इस कसक को जापान में पूरा करना चाहेंगीं, जहां उनका अभियान चीन की हान यूई के खिलाफ शुरू होगा। सिंधू अगर पहले दौर के मुकाबले को जीत जाती हैं तो दूसरे दौर में उनका सामना स्कॉटलैंड की क्रिस्टी गिलमोर या जापान की आया ओहोरी से होगा। पांचवीं वरीयता प्राप्त यह भारतीय खिलाड़ी इंडोनेशिया में यामागुची से मिली शिकस्त का बदला इस टूर्नामेंट के क्वार्टर फाइनल में ले सकती हैं, जहां सिंधू का सामना चौथी वरीयता प्राप्त इस खिलाड़ी से हो सकता है।

टूर्नामेंट में आठवीं वरीयता प्राप्त नेहवाल इकलौती भारतीय खिलाड़ी हैं जिन्होंने मौजूदा सत्र में खिताब जीता है। वह अपने अभियान की शुरुआत में थाइलैंड की बुसनान ओंगबुरूंगपान से भिड़ेंगी। इस खिलाड़ी के खिलाफ साइना का जीत का रिकॉर्ड 3-1 का है।

प्रणय और श्रीकांत में मुकाबला : पुरुष सिंगल्स के शुरुआती दौर में ही दो-शीर्ष भारतीय खिलाड़ियों को सामना होगा। जहां एचएस प्रणय आठवीं वरीयता प्राप्त किदांबी श्रीकांत को चुनौती पेश करेंगे। अंतरराष्ट्रीय मुकाबलों में हालांकि श्रीकांत का पलड़ा भारी है, जिन्होंने पांच मुकाबलों में से चार में जीत दर्ज की है। अन्य भारतीय खिलाड़ियों में स्विस ओपन के उप विजेता बी साई प्रणीत पहले दौर में जापान के केंटा निशिमोटो के खिलाफ उतरेंगे। चोट के कारण इंडोनेशिया ओपन से बाहर रहने वाले समीर वर्मा इसके उप विजेता डेनमार्क के आंद्रेस अंटोनसेन को पहले दौर में चुनौती पेश करेंगे। पुरुष डबल्स में सात्विकसाईराज रेंकीरेड्डी और चिराग शेट्टी की भारतीय जोड़ी पहले दौर में रियो ओलंपिक की कांस्य पदक विजेता इंग्लैंड के मार्कस इल्लिस और क्रिस लांग्रिज की जोड़ी का सामना करेगी।

एशिया जूनियर चैंपियनशिप से बाहर हुआ भारत

नई दिल्ली, प्रेट्र : मेसनाम मेराबा के उम्दा खेल के बावजूद भारत को बैडमिंटन एशिया जूनियर चैंपियनशिप की मिक्स्ड टीम स्पर्धा के क्वार्टर फाइनल में इंडोनेशिया के खिलाफ हार का सामना करना पड़ा। चीन के सुजोऊ में खेले जा रहे टूर्नामेंट की मिक्स्ड टीम स्पर्धा में भारतीय टीम इंडोनेशिया से 0-3 से हारकर टूर्नामेंट से बाहर हो गई। विश्व जूनियर रैंकिंग में शीर्ष-20 में शामिल दो खिलाड़ियों के बीच हुई भिड़ंत में 14वें स्थान पर काबिज मेराबा पर 17वीं रैंकिंग वाले बॉबी सेतियबुदी भारी पड़े। सेतियबुदी ने 59 मिनट तक चले इस मुकाबले को 21-17, 15-21, 21-11 से अपने नाम किया। टूर्नामेंट में इस हार से पहले शानदार प्रदर्शन करने वाले मेराबा के अलावा कोई और भारतीय खिलाड़ी इंडोनेशिया को चुनौती नहीं पेश कर सका। लड़कियों के सिंगल्स में मालविका बंसोद को कुसुमा वर्दानी से 20-22, 7-21 से हार का सामना करना पड़ा। तनीशा क्रास्टो और सतीश कुमार करुणाकरण की मिक्स्ड डबल्स जोड़ी को लियो रोली कार्नांडो और इंदा कहया सारि जमील की जोड़ी ने हराया। भारतीय खिलाड़ी अब व्यक्तिगत स्पर्धा पर ध्यान देंगे।

श्लोक को दोहरी सफलता

नई दिल्ली : भारत के श्लोक रामचंद्रन ने घाना में जे ई विल्सन अंतरराष्ट्रीय बैडमिंटन सीरीज में पुरुष डबल्स व मिक्स्ड डबल्स खिताब जीते। शीर्ष वरीय एमआर अर्जुन व श्लोक की जोड़ी ने नाइजीरिया के गाडविन ओलोफू और अनुलुवापो जुवोन ओपेयोरी को 21-11, 21-12 से मात दी। श्लोक ने रितुपर्णा पांडा के साथ भारत के अर्जुन व मनीशा को 21-19, 21-15 से हराया। महिला डबल्स में मनीषा व रितुपर्णा ने नाइजीरिया की डोरकास व डेबोराह उकेह को 21-11, 21-11 से मात दी।

जापान ओपन

- पीवी पिछले सात महीने से नहीं जीत पाई कोई खिताब
- चोट के बाद साइना नेहवाल करेंगी वापसी

इस्नर ने जीता हॉल ऑफ फेम खिताब

न्यूपोर्ट, एएफपी : अमेरिका के जॉन इस्नर ने पुरुष सिंगल्स के खिताबी मुकाबले में कजाखिस्तान के सातवीं वरीय एलेक्सांद्र बुबलिक को सीधे सेटों में शिकस्त देकर हॉल ऑफ फेम चैंपियनशिप का खिताब जीत लिया। इस्नर ने बुबलिक को 7-6, 6-3 से हराकर चौथा एटीपी ग्रास कोर्ट टूर्नामेंट जीता। इस्नर इससे पहले 2011, 2012 और 2017 में खिताब जीत चुके हैं। वहीं, 22 वर्षीय बुबलिक पहली बार एटीपी फाइनल मुकाबला खेल रहे थे। इस्नर ने कहा, 'बुबलिक के खिलाफ खेलकर अच्छा लगा। वह अच्छा खिलाड़ी है और मुझे उम्मीद है कि वह भविष्य में भी अच्छा करेगा। मैं अपने प्रदर्शन से खुश हूं।'

पहले सेट में बुबलिक ने इस्नर को कड़ी टक्कर दी और इस सेट को टाई-ब्रेक में ले गए जहां इस्नर ने बाजी मारते हुए यह सेट 7-6 से अपने नाम कर लिया। दूसरे सेट को इस्नर को ज्यादा परेशानी नहीं हुई और इसे 6-3 से अपने नाम किया। इससे पहले इस्नर ने फ्रांस के चौथी वरीय यूगो हैंबर्ट को सेमीफाइनल में 6-7, 7-6, 6-3 से हराकर फाइनल में जगह बनाई थी। वहीं, बुबलिक ने अंतिम चार के मैच में स्पेन के मार्सेल ग्रेनोलर्स को 7-6, 3-6, 6-4 से हराकर फाइनल का टिकट कटाया था।

डब्ल्यूटीए रैंकिंग में शीर्ष-10 में बदलाव नहीं : डब्ल्यूटीए की नवीनतम रैंकिंग में शीर्ष-10 स्थानों में कोई बदलाव नहीं हुआ, जबकि एटीपी टेनिस रैंकिंग में रूस के डेनियल मेदवेदेव करियर के सर्वश्रेष्ठ नौवें स्थान पर पहुंच गए। सोमवार को जारी डब्ल्यूटीए रैंकिंग में ऑस्ट्रेलिया की महिला खिलाड़ी एश्ले बार्टी पहले पायदान पर बरकरार हैं, जबकि जापान की नाओमी ओसाका दूसरे और चेक गणराज्य की कैरोलिना प्लिस्कोवा तीसरे स्थान पर हैं।

विंबलडन चैंपियन रोमानिया की सिमोना हालेप रैंकिग में चौथे स्थान पर हैं, जबकि इस टूर्नामेंट की उप विजेता अमेरिकी दिग्गज खिलाड़ी सेरेना विलियम्स नौवें पायदान पर हैं। वहीं, पुरुषों की विश्व एटीपी रैंकिंग में शीर्ष-आठ स्थानों में कोई बदलाव नहीं हुआ। रूस के मेदवेदेव करियर के सर्वश्रेष्ठ नौवें स्थान पर पहुंच गए हैं।

बोपन्ना फिर बने देश के नंबर एक डबल्स खिलाड़ी

नई दिल्ली : रोहन बोपन्ना एटीपी की सोमवार को जारी ताजा विश्व रैंकिंग में तीन पायदान आगे बढ़ने में सफल रहे, जिससे वह फिर से भारत के नंबर एक डबल्स खिलाड़ी बन गए। बोपन्ना अब विश्व टेनिस रैंकिंग में 43वें नंबर पर पहुंच गए हैं, जबकि पिछले सप्ताह तक भारतीय खिलाड़ियों में शीर्ष पर काबिज रहे दिविज शरण तीन पायदान नीचे 46वें स्थान पर खिसक गए हैं।

दिग्गज टेनिस खिलाड़ी लिएंडर पेस भी डबल्स रैंकिंग में तीन पायदान आगे बढ़कर 72वें स्थान पर पहुंच गए। पूरव राजा (दो पायदान नीचे 84वें) और जीवन नेदुचेझियन (पांच पायदान नीचे 86वें) शीर्ष-100 में शामिल अन्य भारतीय हैं। प्रजनेश गुणेश्वरन (88वें) सिंगल्स में शीर्ष-100 में शामिल अकेले भारतीय हैं। उन्हें एक पायदान का फायदा हुआ है, लेकिन रामकुमार रामनाथन लगातार लचर प्रदर्शन के कारण 51 पायदान नीचे 185वें स्थान पर खिसक गए। महिलाओं की डब्ल्यूटीए सिंगल्स रैंकिंग में अंकिता रैना अब भी भारतीयों में शीर्ष पर हैं, लेकिन ओवरऑल रैंकिंग में वह 19 पायदान नीचे 191वें स्थान पर फिसल गईं।

पूर्व टेनिस स्टार मैकनामारा का निधन

सिडनी, एएफपी : ऑस्ट्रेलिया के पूर्व डेविस कप टेनिस स्टार और विंबलडन डबल्स चैंपियन पीटर मैकनामारा का 64 साल की उम्र में सोमवार को निधन हो गया। मैकनामारा लंबे समय से कैंसर से जूझ रहे थे। टेनिस ऑस्ट्रेलिया ने कहा, 'हम पीटर मैकनामारा के निधन की खबर से दुखी हैं। हमारे टेनिस परिवार के वह काफी सम्मानित और प्रिय सदस्य थे।' मैकनामारा सिंगल्स में पांच खिताब जीतकर सातवीं रैंकिंग तक पहुंचे, लेकिन डबल्स में पॉल मैकनामी के साथ उनकी जोड़ी काफी चर्चित रही। मैकनामारा 1983 में करियर के शीर्ष सातवें स्थान पर थे। उन्होंने जिमी कॉनोर्स और इवान लेंडल को हराया था। 1980 मैकनामारा ऑस्ट्रेलिया ओपन के सेमीफाइनल में स्थान बनाने में कामयाब रहे थे। वह 1981 में विंबलडन के क्वार्टर फाइनल तक पहुंचे थे। सोशल मीडिया पर लोगों ने मैकनामारा को श्रद्धांजलि दी।

एनसीए बल्लेबाजी सलाहकार के लिए राठौर व कानितकर दौड़ में

नई दिल्ली, प्रेट्र : पूर्व भारतीय बल्लेबाज विक्रम राठौर ने राहुल द्रविड़ की अध्यक्षता वाली राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी (एनसीए) के बल्लेबाजी सलाहकार के लिए आवेदन किया है। उनके अलावा इस पद के लिए एक अन्य पूर्व अंतरराष्ट्रीय क्रिकेटर ऋषिकेश कानितकर ने भी आवेदन किया है जिनकी अगुआई में राजस्थान दो बार रणजी चैंपियन बना था।

राठौर का नाम इससे पहले अंडर-19 बल्लेबाजी कोच पद के लिए सामने आया था लेकिन हितों के टकराव के मामले की वजह से उनके नाम पर विचार नहीं किया गया था। उनके रिश्तेदार आशीष कपूर के जूनियर राष्ट्रीय चयनकर्ता होने के कारण उनके नाम पर चर्चा नहीं हो पाई थी।

खबर है कि राठौर और कानितकर उन चार उम्मीदवारों में शामिल हैं जिन्होंने एनसीए पद के लिए आवेदन किया है। एनसीए का बल्लेबाजी कोच सीनियर टीम के सदस्यों नहीं बल्कि मुख्य रूप से आयु वर्ग के खिलाड़ियों के साथ काम करता है। सीनियर खिलाड़ी मुख्य तौर पर चोटों से उबरने के लिए बेंगलुरु स्थित एनसीए में आते हैं।

बीसीसीआइ के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि महाप्रबंधक (क्रिकेट संचालन) सबा करीम ने प्रशासकों की समिति (सीओए) को अंधेरे में रखा और इस पद के लिए उनके नाम की सिफारिश करने से पहले पर्याप्त अध्ययन नहीं किया गया। खबर है कि फिर से राठौर का नाम सामने आया है और एक वरिष्ठ अधिकारी राठौर की नियुक्ति का रास्ता साफ करने के लिए लगातार द्रविड़ के नाम का हवाला दे रहा था। अभी द्रविड़ ने लिखित में नहीं दिया है कि उन्होंने इस पद के लिए राठौर के नाम की सिफारिश की है।

दुनिया की सर्वश्रेष्ठ क्रिकेट टीम तैयार करेंगे : इमरान

वाशिंगटन, प्रेट्र : पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान ने पाकिस्तानी-अमेरिकियों से वादा किया है कि ब्रिटेन में हाल में हुए विश्व कप में राष्ट्रीय टीम के खराब प्रदर्शन के बाद वह 'दुनिया की सर्वश्रेष्ठ क्रिकेट टीम' तैयार करने की योजना पर काम कर रहे हैं।

विश्व कप में पाकिस्तानी टीम के लचर प्रदर्शन के बारे में इमरान ने कहा कि उन्होंने टीम में सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ियों को लाकर उसे अगले टूर्नामेंट तक दुनिया की सर्वश्रेष्ठ क्रिकेट टीम बनाने की तैयारी शुरू कर दी है। इमरान ने कहा, 'मेरे शब्द याद रखना।' इमरान ने हालांकि अपनी योजना के बारे में विस्तार से कोई जानकारी नहीं दी। इमरान ने 16 जून को विश्व कप में भारत के खिलाफ अहम मुकाबले के लिए हार का डर भुलाने की राष्ट्रीय टीम को सलाह दी थी और कहा था कि हार के डर के कारण नकारात्मक और रक्षात्मक रणनीति बनती है।

चाहता हूं, अगला विश्व कप खेलूं और अर्जेंटीना जीते : अग्यूरो

सर्जियो अग्यूरो संभवत : प्रीमियर लीग में खेलने वाले सर्वश्रेष्ठ विदेशी खिलाड़ी हैं। अर्जेंटीना के लिए पेशेवर फुटबॉल खेलने वाले सबसे युवा खिलाड़ी बने अग्यूरो मैनचेस्टर सिटी के सर्वश्रेष्ठ गोल स्कोरर बन चुके हैं। अग्यूरो ने 2011 में एटलेटिको मैड्रिड को छोड़कर मैनचेस्टर सिटी का रुख किया था। अब उनका कहना है कि उनमें अभी काफी खेल बचा है और वह एक और शानदार सत्र के लिए पूरी तरह तैयार हैं।

साक्षात्कार

- **जब आप 2011 में क्लब में आए थे, क्या तब आपने सोचा था कि मैनचेस्टर सिटी के सर्वकालिक सर्वश्रेष्ठ गोल स्कोरर बनेंगे?**

-यह दो साल पहले की बात है। यह मेरे दिमाग कभी नहीं था, यहां तक कि मुझे पता भी नहीं था कि 178वें गोल के साथ मैंने रिकॉर्ड तोड़ दिया। मैं सिर्फ मौजूदा और अगले मैच के बारे में सोच रहा था। लोगों को यह अजीब लग सकता है, लेकिन मैं ऐसे ही सोचता हूं। रिकॉर्ड के बारे में संन्यास के बाद सोचना चाहिए। अभी तो समय नया हासिल करने का है। मैं जानता हूं कि यह एक खूबसूरत सम्मान है, लेकिन अभी मेरा ध्यान ज्यादा से ज्यादा गोल करने पर है।

- **किस साथी ने आपको गोल करने में सबसे ज्यादा मदद की?**

-शुरुआत में याया टूरे और डेविड सिल्वा दोनों मेरे लिए काफी अच्छे साबित हुए। मगर अब केविन डी ब्रूने काफी मदद कर रहे हैं। वह हमेशा मुझे ढूंढने की कोशिश में लगे रहते हैं और उन्हें पता रहता है कि गेंद कहां पास करनी है, ताकि गोल किया जा सके। ईमानदारी से कहूं तो टीम की जीत ज्यादा जरूरी होती है।

- **आपसे किस तरह की विपक्षी टीमें सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कराती हैं?**

-मुझे बड़े मैचों में खेलना पसंद है। मुझे लगता है कि बड़ी टीमों के खिलाफ मैं ज्यादा अच्छा कर पाता हूं। इसका कारण है कि बड़ी टीमें गोल करने की कोशिश में होती हैं। इससे ज्यादा स्पेस मिलता है। यहीं पर मैं सर्वश्रेष्ठ कर पाता हूं।

- **इस सत्र के लिए आपके लक्ष्य क्या हैं?**

-लक्ष्य कई सारी ट्रॉफी जीतने का ही है। गोल करना अच्छी बात है, पर इन सबसे ऊपर मैं ज्यादा से ज्यादा खिताब जीतना चाहता हूं। सत्र की शुरुआत से यही मेरा लक्ष्य होगा, और अगर हम चैंपियंस लीग भी जीतते हैं तो यह मेरे लिए बहुत बड़ी खुशी की बात होगी।

- **फुटबॉल के बिना अपना जीवन किस तरह देखते हैं?**

-मेरे लिए यह कल्पना करना बहुत कठिन है। मेरा ज्यादातर जीवन खेलते हुए ही बीता है। आठ साल का था जब मैं अपने पहले क्लब से जुड़ा था और 15 की उम्र में अर्जेंटीना की ओर से खेलना शुरू कर दिया था। 18 की उम्र में एटलेटिको मेड्रिड चला गया और यूरोप में खेलना शुरू किया। इसके बाद फुटबॉल के अलावा और कुछ सोचने का समय नहीं मिलता। अब तक के लिए यही सब है, जिसे मैं जानता हूं और यह भी कि ये उस सिटी में है, जहां मैंने अपने पेशेवर करियर का ज्यादातर समय बिताया है, कई दोस्त हैं मेरे, कई बड़े खिलाड़ियों के साथ खेलने का मौका मिला और अब यह मेरे और मेरे परिवार के लिए घर है। पीछे देखता हूं तो 2011 अद्भुत था, कितने अलग-अलग खिलाड़ी हमारे साथ थे। क्लब के इस इतिहास से जुड़कर मैं खुशी महसूस करता हूं। अभी कई और भी मुकाम आने हैं।

- **आपने पिछले साल एक नया अनुबंध किया है, क्या सोचते हैं कि आप कम से कम 2021 तक जुड़े रहेंगे और सिटी के साथ अपने 10 साल पूरे करेंगे?**

-हां। यह बहुत लंबे समय से मेरा लक्ष्य रहा है। क्लब ने हमेशा मेरे साथ अच्छा व्यवहार किया है और मैं 10 साल जुड़े रहना पसंद करूंगा। इसे संभव करने के लिए मुझे खुद को फिट रखना होगा और अच्छा खेलना होगा। बीते समय मुझे घुटने में दर्द हुआ था, पर मुझे लगता है कि मैं लंबे समय तक खेल सकूंगा। अब मुझे मेरे घुटने बिलकुल नए लगते हैं।

- **आप अर्जेंटीना की ओर से 100 के करीब मैच खेल चुके हैं। क्या आप सोचते है

50 लाख करोड़ का निवेश होगा रेलवे इंफ्रास्ट्रक्चर में अगले दस सालों में। रेल राज्य मंत्री अंगड़ी ने बताया कि देश में 13 लाख कर्मी रेलवे विभाग में काम कर रहे हैं और उनकी मेहनत के दम पर देश की रेलवे विश्व में नंबर एक पर होगी।

सावन के पहले सोमवार को देशभर में शिवालयों में श्रद्धा का सैलाब उमड़ा। उत्तर प्रदेश के वाराणसी स्थित काशी विश्वनाथ मंदिर में जलाभिषेक करने के लिए श्रद्धालुओं की लंबी कतारें नजर आईं। प्रेट्र

सावन के पहले सोमवार पर उमड़ पड़ा भोले के भक्तों का सैलाब

जेएनएन, नई दिल्ली

▸ देवघर, काशी और उज्जैन सहित गूंज उठे देशभर के शिवालय

सावन के पहले सोमवार पर भगवान भोलेनाथ का आशीर्वाद पाने के लिए शिवालयों में भक्तों का सैलाब उमड़ पड़ा। देवघर, वाराणसी, देहरादून और उज्जैन सहित देशभर के शिवालयों में सुबह से ही भोले भक्तों की कतारें देखने को मिलीं। देवघर के बाबा धाम में तो सुबह नौ बजे तक मंदिर से करीब 15 किलोमीटर दूर तक भक्तों की कतार बन गई। बाबा अमरनाथ की पवित्र गुफा में भी विशेष पूजा अर्चना की गई। उज्जैन में राजाधिराज भगवान महाकाल की श्रावण मास की पहली सवारी सोमवार को निकली। उत्तराखंड में रुद्रप्रयाग स्थित केदारनाथ धाम, उत्तरकाशी के काशी विश्वनाथ मंदिर, ऋषिकेश के नीलकंठ मंदिर समेत पंच केदार में भी बड़ी संख्या में श्रद्धालु पहुंचे। देवाधिदेव श्रीकाशी विश्वनाथ की नगरी में भी भक्तों के भाव से हरियाले सावन का रंग केसरिया नजर आया। बाबा के प्रिय मास के पहले सोमवार को ज्योतिर्लिंग आदि विश्वेश्वर के दर्शन-जलाभिषेक को कुछ इस तरह कांवरियों व श्रद्धालुओं का रेला उमड़ा कि श्रद्धा का समंदर लहराने का अहसास कराया।

देवघर में दो लाख ने किया जलार्पण : झारखंड के देवघर बाबा धाम में देश के कोने-कोने से आए तकरीबन दो लाख शिवभक्तों ने बाबा पर जलार्पण किया। जलार्पण करने की होड़ में रविवार की शाम से ही शिवभक्तों की लंबी कतार लगी थी, जो देर रात दो बजे तक लंबी होते होते कुमैठा स्टेडियम तक जाकर थमी। तकरीबन 15 किलोमीटर लंबी कतार को सहेजने और व्यवस्थित करने में प्रशासन को कड़ी मशक्कत करनी पड़ी। सतर्कता व पुलिस के धैर्य के कारण कोई विकट स्थिति उत्पन्न नहीं हुई।

श्री अमरनाथ की पवित्र गुफा : सावन के पहले सोमवार को बाबा अमरनाथ की पवित्र गुफा में विशेष पूजा अर्चना की गई। यात्रा मार्ग से लेकर पवित्र गुफा तक बम-बम भोले के जयघोष गूंजते रहे। पुजारियों ने शिवलिंग की आरती की और महामृत्युंजय का पाठ भी किया। इस दौरान भोले के भक्त भी शिव की भक्ति में लीन रहे।

श्रीनगर में शंकराचार्य मंदिर, जम्मू संभाग के चिनैनी में सुद्धमहादेव, रियासी में शिवखोड़ी और जम्मू के रणवीरेश्वर मंदिर व पीरखो सहित विभिन्न मंदिरों में तड़के ही श्रद्धालुओं का आना शुरू हो गया था। श्रावण मास में भगवान शिव के दर्शनों का विशेष महत्व है। यही वजह है कि अमरनाथ श्रद्धालुओं की संख्या में बढ़ोतरी हुई है।

चांदी की पालकी में भगवान महाकालेश्वर : मध्य प्रदेश के उज्जैन में राजाधिराज भगवान महाकाल की श्रावण मास की पहली सवारी सोमवार को निकली। करीब एक लाख भक्तों ने प्रजा का हाल जानने चांदी की पालकी में सवार होकर निकले राजा के दर्शन किए। भक्तों को मनमहेश रूप में महाकाल के दर्शन हुए। सवारी मंदिर में पूजन के बाद शाम करीब 4 बजे शुरू हुई। इसके बाद परंपरागत मार्गों से मोक्षदायिनी शिप्रा के तट रामघाट पहुंची। यहां शिप्रा जल से भगवान का अभिषेक किया गया। इसके बाद सवारी मंदिर लौट गई।

उत्तराखंड में गूंजे शिवालय : उत्तराखंड के शिवालयों में जलाभिषेक को शिवभक्तों का तांता लगा रहा। रुद्रप्रयाग स्थित केदारनाथ धाम, उत्तरकाशी के काशी विश्वनाथ मंदिर, ऋषिकेश के नीलकंठ मंदिर समेत पंच केदार में भी बड़ी संख्या में श्रद्धालु पहुंचे। कुमाऊं के जागेश्वर धाम, बागनाथ मंदिर व महादेव गुफा में भी श्रद्धालुओं का दिनभर तांता लगा रहा। विश्वनाथ मंदिर गुप्तकाशी, ओंकारेश्वर ऊखीमठ एवं तृतीय केदार तुंगनाथ में भक्तों ने भोले बाबा की पूजा-अर्चना कर जलाभिषेक किया।

भगवान महाकाल की पहली सवारी में आस्था का सैलाब : पवित्र श्रावण मास के पहले सोमवार को मध्य प्रदेश के उज्जैन में राजाधिराज भगवान महाकाल की सवारी निकली। श्रावण मास की इस पहली सवारी में ही शाही सवारी जैसा उल्लास नजर आया। नईदुनिया

शहीद का बेटा बना लेफ्टिनेंट तो गर्व से भर उठी मां

मुजफ्फरनगर में पासिंग आउट परेड के मौके पर लेफ्टिनेंट हितेश के साथ मां व जुड़वा भाई हेमंत (बाएं)। जागरण

कपिल कुमार, मुजफ्फरनगर

▸ कारगिल में शहीद हुए लांस नायक बचन सिंह का बड़ा बेटा बना सैन्य अफसर

▸ जुड़वां दूसरे बेटे को भी फौज की वर्दी का जुनून, कर रहा तैयारी

कारगिल युद्ध के दौरान छह वर्ष की उम्र में जुड़वां बेटों के सिर से पिता का साया उठ गया। इन मासूमों के लिए भला इससे दुखद घड़ी क्या होगी। शहादत पर सबको गर्व था, लेकिन वेदना विकट। विषम हालात के बावजूद मां ने धैर्य खोने के बजाय बेटों को भी वतन की हिफाजत में लगाने की ठान ली। मेहनत रंग लाई और ख्वाब आकार लेने लगा। एक बेटा सेना में लेफ्टिनेंट बना तो मानो मां का जीवन सफल हो गया। बेटा पिता की ही रेजीमेंट में देशसेवा में जुटा है तो दूसरा बेटा भी वर्दी पहनकर इस रवायत को आगे बढ़ाने की राह पर है।

शहीद लांस नायक बचन सिंह

ये जुड़वां बेटे हैं लांस नायक शहीद बचन सिंह के। मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश के गांव पचेंडा कलां निवासी बचन सिंह ऑपरेशन विजय के दौरान तोलोलिंग चोटी पर दुश्मन को खदेड़ते हुए शहीद हो गए थे। उनके जुड़वां बेटे हेमंत और हितेश की उम्र तब महज छह वर्ष थी। पत्नी कामेश बाला पर दुखों का पहाड़ टूटा, लेकिन उन्होंने धैर्य नहीं खोया। पति को खोने के जख्म ताजा थे, लेकिन इसके बावजूद बेटों को भी देशसेवा की खातिर फौज में भर्ती कराने का संकल्प ले लिया। कलेजे के टुकड़ों को खुद से दूर किया और हिमाचल प्रदेश के चहल सैन्य स्कूल में पढ़ाया।

श्रीराम कॉलेज, दिल्ली से स्नातक करने के बाद अक्टूबर 2016 में हितेश का चयन भारतीय सेना में लेफ्टिनेंट पद पर हो गया। देहरादून सैन्य अकादमी में ट्रेनिंग के बाद जून 2018 को पासिंग आउट परेड हुई। इन दिनों हितेश कुमार की तैनाती 2 राजपूताना रायफल्स बटालियन जयपुर (राजस्थान) में है। दूसरा बेटा हेमंत भी फौज में अफसर बनने की तैयारी कर रहा है। हितेश और हेमंत के मामा ऋषिपाल फौजी बताते हैं कि बहन कामेश के दिल में दुखों के अंबार है, लेकिन बेटे के सैन्य अफसर बनने से वह खुश भी हैं।

पूरा हुआ मां का ख्वाब : पति की शहादत के बाद छोटे बच्चों की परवरिश के साथ-साथ कामेश बाला के सामने कई अन्य चुनौतियां भी थीं। कामेश ने खुद को बिखरने से रोका और साहस बटोरकर बच्चों पर ध्यान केंद्रित किया। कामेश ने ठान लिया था कि दोनों बेटों को भी देशसेवा में अर्पित करेंगी। कामेश कहती हैं कि जिस दिन बेटे का सैन्य अफसर के रूप में चयन हुआ, वह पल उनकी जिंदगी के लिए बहुत खास था। ऐसा लगा मानो जीवन सफल हो गया। हितेश कहते हैं कि सैनिक बनकर उन्होंने पिता को श्रद्धांजलि अर्पित की है और पिता की तरह ही वे भी मातृभूमि के चरणों में सर्वस्व अर्पित करने में कभी पीछे नहीं हटेंगे।

वंदे भारत प्रोजेक्ट में बढ़ेगी विदेशी कंपनियों की भागीदारी!

जागरण एक्सक्लूसिव ▸ 40 नई ट्रेनों के निर्माण का टेंडर रद होने के बाद आयात को लेकर चर्चा तेज, दो हफ्ते में नया टेंडर

रेलवे बोर्ड के चेयरमैन बोले, टेंडर फिर से डाले जाएंगे

दीपक बहल, अंबाला

वंदे भारत एक्सप्रेस सीरीज की 40 नई ट्रेनों का टेंडर रद होने के बाद अब इन ट्रेनों को बनाने में विदेशी कंपनियों की भागीदारी बढ़ने की संभावना है। इसे लेकर चर्चा तेज हो गई है। नया टेंडर दो सप्ताह के अंदर जारी हो सकता है।

ट्रेन बाहर से बनवाई जाएगी या भारत में बनेगी, इसे लेकर स्थिति स्पष्ट नहीं है। हालांकि, सूत्रों का कहना है कि इसे मेक इन इंडिया प्रोजेक्ट से हटाया नहीं जाएगा बल्कि इन कंपनियों को हिंदुस्तान में ही निर्माण इकाई लगाने की सुविधा मिलेगी। जर्मनी, स्पेन, फ्रांस, जापान, चीन की विदेशी कंपनियां टेंडर में भाग ले सकती हैं। चीनी कंपनियों को तवज्जो दी जा सकती है। टेंडर के बाद जो कंपनियां शॉर्टलिस्ट की जाएंगी, उन्हें बड़े पैमाने पर काम दिए जाने पर विचार विमर्श चल रहा है। वंदे भारत एक्सप्रेस को लेकर ही 2 जुलाई को रेल मंत्री पीयूष गोयल और भारत और विदेशी 19 कंपनियों के बीच में बैठक हुई थी। हालांकि सवाल यह भी उठ रहा है कि भारतीय कंपनियों को इस प्रोजेक्ट से बाहर किस तरह किया जाएगा? नया टेंडर जारी होने पर सारी स्थितियां साफ होंगी।

वंदे भारत एक्सप्रेस फाइल

टेंडर रद करने के कारण स्पष्ट नहीं : रेल राज्य मंत्री : रेल राज्य मंत्री सुरेश सी अंगड़ी ने दैनिक जागरण से बातचीत में कहा कि वंदे भारत एक्सप्रेस के टेंडर रद करने के कारण स्पष्ट नहीं हैं। इस बारे में चेयरमैन से ही पूछकर बताया जा सकता है। वंदे भारत एक्सप्रेस को विदेश से आयात किए जाने की चर्चाएं हैं, इस सवाल पर रेल राज्य मंत्री ने कहा कि मेक इन इंडिया के तहत ही इसका निर्माण किया जाएगा। उधर, रेलवे बोर्ड के चेयरमैन वीके यादव ने कहा कि जल्द ही टेंडर डाल दिए जाएंगे। विदेश से आयात की जाएगी या भारत में बनेगी, इस पर उन्होंने स्थिति स्पष्ट नहीं की।

यह है मामला : वंदे भारत एक्सप्रेस के 40 नई ट्रेन बनाने के लिए 8 कंपनियों ने भागीदारी की थी, जिसमें से रेलवे ने मेधा सर्वो ड्राइव्स लिमिटेड को दो और स्पेन की एक कंपनी को एक रैक (ट्रेन) बनाने की हामी भरी थी। रेलवे के इस फैसले पर मेधा ने सवाल उठाते हुए वंदे भारत रैक के निर्माण से हाथ खींच लिए थे। दो रैक बनाने का आर्डर मिलने पर मेधा ने आपत्ति जताई और कहा कि रेट कम करने के बावजूद 80 फीसद की जगह महज उनको महज दो रैक ही बनाने की हरी झंडी दी गई। कंपनी ने कहा कि वे मात्र दो रैक के लिए कम की गई कीमत पर काम करने में सक्षम नहीं हैं। ऐसे में अर्नेस्ट मनी डिपाजिट (ईएमडी), जो 20 लाख रुपये है, उसे रिलीज किया जाए। यह रैक इंटीग्रल कोच फैक्ट्री चेन्नई में बनाए जाने थे। इसी बीच रेलवे ने वंदे भारत और रेलवे मेन लाइन इलेक्ट्रिक मल्टीपल यूनिट (मेमू), इलेक्ट्रिकल मल्टीपल यूनिट (ईएमयू) और एयर कंडीशंड ईएमयू के सभी टेंडर रद कर दिए। यह टेंडर करीब 3 हजार करोड़ रुपये के बताए जाते हैं।

नई दिल्ली से कटरा के बीच वंदे भारत का ट्रायल सफल

राज्य ब्यूरो, नई दिल्ली

नई दिल्ली से माता वैष्णो देवी कटरा के बीच वंदे भारत एक्सप्रेस का ट्रायल सफल रहा है। ट्रायल रन पर यह ट्रेन सोमवार सुबह 6 बजे नई दिल्ली स्टेशन से रवाना हुई और अंबाला स्टेशन पर पांच मिनट पहले पहुंची और चार मिनट की देरी से दोपहर 2.04 बजे कटरा पहुंची। वहीं, वापसी में अपराह्न तीन बजे कटरा से रवाना हुई। रात में यह ट्रेन लुधियाना रुकेगी और मंगलवार को सुबह 11 बजे चलकर दोपहर 2.26 बजे नई दिल्ली पहुंचेगी। अगले माह से इसके नियमित परिचालन शुरू होने की उम्मीद है।

130 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से चलने वाली इस ट्रेन से यात्री मात्र आठ घंटे में दिल्ली से कटरा पहुंच सकेंगे। देश में विकसित पहली टी-18 के नाम से मशहूर वंदे भारत एक्सप्रेस नई दिल्ली से वाराणसी के बीच चलती है। जल्द ही यह नई दिल्ली से कटरा के बीच चलने लगेगी। रास्ते में इसका तीन जगह ठहराव होगा। नई दिल्ली से चलने के बाद यह अंबाला, लुधियाना और जम्मू तवी में रुकेगी। अभी दिल्ली से कटरा के बीच का सफर लगभग 12 घंटे का है, लेकिन इस ट्रेन से यात्री महज आठ घंटे में पहुंच सकेंगे। अधिकारियों के अनुसार, रफ्तार की जांच होने के बाद अब कुछ तकनीकी ट्रायल किया जाएगा। उसके बाद इसके नियमित परिचालन को लेकर अंतिम फैसला होगा। उम्मीद है कि अगस्त में इसे चलाने की घोषणा कर दी जाए। इस ट्रेन से माता वैष्णो देवी के भक्तों के साथ ही जम्मू-कश्मीर जाने वालों को भी सुविधा होगी।

थाइलैंड की तरह ही पर्यटन में संभावनाएं तलाशेगा आइआइएम

पुलक त्रिपाठी, लखनऊ

विविधताओं से भरे भारत में ऐसा क्या नहीं है कि पर्यटन के क्षेत्र में थाइलैंड से भी पिछड़ते चला गया। यह पता लगाने के साथ ही भारतीय प्रबंधन संस्थान (आइआइएम) पर्यटन क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए नया कोर्स शुरू करेगा। इस मकसद के साथ ताकि थाइलैंड जैसे देशों की तरह भारत के पर्यटन को भी विश्वस्तरीय बनाया जा सके। कोर्स की शुरुआत हिमाचल प्रदेश के सिरमौर स्थित आइआइएम से होगी। उसके बाद लखनऊ को इस कड़ी से जोड़ा जाएगा।

पिछले दिनों केंद्र सरकार के जारी आंकड़ों ने भारत के पर्यटन क्षेत्र की बदहाल तस्वीर को दिखाया था। जून 2019 में करीब एक लाख 80 हजार भारतीय पर्यटकों ने थाइलैंड का रुख किया। यही नहीं, भारत से पहुंचे पर्यटकों ने विश्व के अन्य देशों से आने वालों की अपेक्षा औसतन 11 प्रतिशत अधिक खर्च भी किए। यही तमाम वजहें थीं, जिन्होंने आइआइएम का ध्यान खींचा है। यह पता लगाने की कोशिश की जा रही है कि आखिर थाइलैंड ने किस तरह का माहौल विकसित किया है, जिससे लोग वहां खिंचे जा रहे हैं। आइआइएम लखनऊ के प्रो. डीडी गुप्ता कहते हैं कि यह शोध का विषय है।

भारत से थाइलैंड जाने वाले

वर्ष	संख्या
2016	11.50 लाख
2017	14 लाख
2018	18 लाख
2019	जून माह में 1 लाख 80 हजार

महज एक माह में भारत से इतनी बड़ी संख्या में लोग थाइलैंड पहुंचे तो भौगोलिक दृष्टि से विश्व का आठवां सबसे बड़ा देश क्यों पिछड़ा है? वह भी तब, जब हमारे पास प्रकृति का बड़ा खजाना है। दर्शनीय स्थल हैं। हर तरह का मौसम है। बेहतर प्रबंधन और सुविधाएं विकसित कर हम अर्थव्यवस्था में पर्यटन की हिस्सेदारी बढ़ा सकते हैं।

पर्यटन में शुरू होगा एमबीए : प्रो. गुप्ता बताते हैं कि आइआइएम पर्यटन व्यवसाय में एमबीए कोर्स शुरू कर रहा है। इसके लिए तीन सदस्यीय पैनल बना है। इसमें एक सदस्य आस्ट्रेलिया, दूसरा इंग्लैंड और तीसरा मैं खुद हूं। पर्यटन व्यवसाय को हमारे शैक्षणिक संस्थानों ने गंभीरता से नहीं लिया।

1965 के युद्ध में सेना को रसद पहुंचाने में 17 रेलकर्मियों ने दी थी जान

कुलदीप चहल, अंबाला : भारत-पाक के बीच वर्ष 1965 में हुए युद्ध में जहां देश की रक्षा करते सैनिकों ने शहादत दी थी, वहीं रेलवे के कर्मचारी भी पीछे नहीं रहे। यह एक ऐसा मोड़ था, जब भारतीय जवानों के लिए सत्रह रेल कर्मियों ने अपनी जान की परवाह न करते हुए वह काम कर डाला, जो रेलवे के इतिहास में अमर है। यह रेलकर्मी शहादत तो पा गए, लेकिन रेलवो में यह आज भी जिंदा है।

नार्थ-वेस्ट रेलवे के तहत आने वाले यह कर्मचारी आज भी रेलवे के लिए गर्व से कम नहीं हैं। बात भारत पाकिस्तान के बीच 1965 में हुए भीषण युद्ध की है। भारतीय सेना तेजी से बढ़ रही थी कि इस दौरान सेना को रसद व गोला बारूद की कमी पड़ गई। हालात ऐसे थे कि रसद पहुंचाना मुश्किल था।

इस दौरान रेलवे के 17 कर्मचारियों ने सेना तक गोला बारूद और रसद पहुंचाने का जिम्मा उठाया। पाकिस्तान की सीमा से लगते गडरा स्टेशन के पास यह कर्मचारी गोला बारूद व रसद लेकर पहुंचे। इन में शहीद नंदराम, भंवरिया, माला, मघा, हुकमा, चिमा, देवी सिंह, चुन्नी लाल, मुलताराम, करना, हेमाराम, रावता, लाला, खीमराज, जेहा, चिमन सिंह, माधो सिंह शामिल हैं।

छात्रा गुनगुन की कहानी से उत्तराखंड में बंद होगी शराब!

राजीव खत्री, पौड़ी गढ़वाल

▸ शिक्षक ने लिखवाई थी पांचवीं कक्षा के छात्रों से कहानी, नौ-वर्षीय छात्रा ने लिख डाली आपबीती

▸ पिता की शराब की लत से परेशान छात्रा की कहानी पर भावुक शिक्षक

शिक्षक ने पांचवीं कक्षा के छात्र-छात्राओं को कहानी लिखने के लिए कहा तो एक छात्रा ने अपनी ही आपबीती लिख डाली। 'मेरे पिता' शीर्षक से लिखी छात्रा की यह आपबीती इतनी मार्मिक है कि इसे पढ़कर विद्यालय के शिक्षक भी भावुक हो गए। कहानी में छात्रा ने अपने पिता की शराब की लत से हुई परेशानियों और उनके शराब छोड़ने के बाद परिवार में लौटी खुशहाली का मार्मिक वर्णन किया है। छात्रा गुनगुन अब इस कहानी को प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री को भेजकर देश एवं प्रदेश में शराब पूरी तरह बंद करने आग्रह करने जा रही हैं।

मंडल मुख्यालय के पास स्थित च्वींचा गांव की गुनगुन वर्तमान में पौड़ी शहर के बीचोबीच स्थित राजकीय आदर्श प्राथमिक विद्यालय में पांचवीं कक्षा की छात्रा है। बीती 20 जुलाई को शिक्षक सरोज मैठाणी ने कक्षा में छात्र-छात्राओं को गृहकार्य के रूप में कहानी लिखकर लाने को कहा। अगले दिन सभी छात्र-छात्राएं कुछ न कुछ लिख कर लाए। लेकिन, जब शिक्षक ने गुनगुन की कहानी पढ़ी तो उनकी आंखों में आंसू आ गए। गुनगुन ने 'मेरे पिता' शीर्षक से कहानी लिखी थी, जो उसके परिवार की ही दास्तान है। शिक्षकों ने गुनगुन की कहानी पढ़ी तो वे भी भावुक हो गए। गुनगुन ने इस कहानी में अपने पिता की शराब की लत से परिवार की हुई परेशानियों को बयां किया है।

कैसे पड़ता है शराब का बाल मन पर प्रभाव : गुनगुन की कहानी से स्पष्ट होता है कि परिवार के किसी सदस्य की शराब की लत से बालमन पर क्या असर होता है। कहानी के अंत में गुनगुन लिखती है, 'शराब बेहद बुरी चीज है, इसलिए वह इसे बंद करने के लिए पीए और मुख्यमंत्री को अपनी कहानी भेजेगी।'

पौड़ी की छात्रा गुनगुन। जागरण

ये है कहानी का मजमून : काफी साल पुरानी बात है, एक गांव था च्वींचा। इस गांव में एक लड़की थी, जिसकी पांच बहनें थीं। उस लड़की का नाम था गुनगुन। उसके पापा बहुत शराब पीते थे। मां बेचारी घर-घर काम कर अपनी बेटियों का लालन-पालन करती थी। एक दिन उसकी मां को भोजन माता की नौकरी मिल गई। लेकिन, एक दिन गुनगुन के पापा ने इतनी शराब पी कि उनकी तबीयत बेहद बिगड़ गई। गुनगुन की मौसी ने गुनगुन की मां को फोन किया, लेकिन मां पिता को लेकर अस्पताल नहीं गई। तब गुनगुन की दादी और मौसी-मौसा पापा को लेकर अस्पताल पहुंचे। कुछ दिन बाद गुनगुन के पापा की तबीयत ठीक होने पर उन्हें अस्पताल से छुट्टी मिल गई। इसके बाद गुनगुन के पापा ने कभी शराब नहीं पी। अब सब खुशी-खुशी रहते हैं। हैप्पी फैमिली जैसे।

नायाब

जम्मू कश्मीर के पहाड़ी इलाकों में प्राकृतिक तौर पर उगने वाली सोलाई बूटी के सफेद फूलों से मिलता है यह शहद

अलग स्वाद और महक का नाम है सफेद शहद

गुलदेव राज, जम्मू

क्या आपने कभी सफेद शहद के बारे में सुना है। जी हां...सफेद शहद। वैसे तो आम शहद हम सभी ने खाया है, लेकिन सफेद शहद का स्वाद काफी कम लोगों ने चखा होगा। इसकी वजह यह है कि यह शहद खास किस्म की बूटी के फूलों से मिलता है, जो जम्मू कश्मीर के कुछ हिस्सों में ही उगती है। सफेद शहद जिसे सोलाई शहद (व्हाइट गोल्ड हनी) कहते हैं, महज सोलाई बूटियों के सफेद फूल से ही प्राप्त होता है। इसकी खासियत है कि इसमें अलग महक होती है और स्वाद भी आम शहद की तुलना में बेहतर होता है। यही कारण है कि देश में सोलाई शहद की काफी मांग है।

महज माह भर होता है फूलों का सीजन : सोलाई की झाड़ीनुमा बूटियां जम्मू कश्मीर के पहाड़ी क्षेत्रों में प्राकृतिक तौर पर उगती हैं। इनमें सितंबर में सफेद फूल आते हैं। इनके फूलों का सीजन महज माहभर का ही होता है। इसी समय दूरदराज के मधुमक्खी पालक जम्मू के पहाड़ी व कश्मीर के कुछ भागों में मधुमक्खी की कॉलोनियों को लेकर पहुंचते हैं। मधुमक्खियां सफेद फूल से रस निकाल कर सोलाई शहद बनाती हैं। मधुमक्खी पालक यह शहद सीधे व्यापारियों को बेचते हैं।

यहां पाई जाती हैं यह बूटी : जम्मू के किश्तवाड़, डोडा, गूल, रामबन, अरनास, संगलदान, बनिहाल के अलावा कश्मीर के बांडीपोरा, कुपवाड़ा व त्राल जैसे ठंडे क्षेत्रों में सोलाई की बूटियां मुख्य तौर पर पाई जाती हैं। जम्मू कश्मीर में करीब 650 हेक्टेयर में यह बूटियां पाई जाती हैं। हालांकि यह सोलाई बूटियां हिमाचल प्रदेश के चंबा व उत्तराखंड के कुछ हिस्से में भी होती हैं, मगर जम्मू कश्मीर में इसका क्षेत्रफल अधिक है। मधुमक्खी पालकों को यहां से अच्छा शहद प्राप्त करने की उम्मीद रहती है।

700 से 750 रुपये प्रति किलो बिकता है शहीद : सोलाई शहद की बाजार में बेहद मांग है। एक किलो शहद पाने के लिए आपको 700 से 750 रुपये खर्च करने पड़ेंगे जबकि मल्टी फ्लोरा या दूसरा शहद 350 से 400 रुपये तक मिल जाएगा। सोलाई शहद सफेद रंग के कारण अन्य शहद से अलग दिखता है। इसलिए इसकी हर ओर बहुत मांग है।

घटती बूटियों से बन रहा संकट : जंगल में उगने वाले सोलाई के पौधे सोलाई शहद के लिए अहम हैं। विभाग इन पौधों के संरक्षण को लेकर आने वाले समय में जागरूकता कार्यक्रम आरंभ करेगा। इसमें किसानों से आग्रह किया जाएगा कि इस बूटी को नुकसान न पहुंचाएं। इसके अलावा बूटी के संरक्षण को लेकर विभाग की ओर से भी हर संभव कदम उठाए जाएंगे।

– वीके शर्मा, सूचना अधिकारी, कृषि विभाग, जम्मू

अपने स्वाद व सफेद रंग के कारण देश में पहचान बनाने वाले सोलाई शहद पर साल दर साल संकट गहराता जा रहा है। इससे जम्मू कश्मीर के मधुमक्खी पालकों की भी चिंता बढ़ गई है। दरअसल जिन झाड़ीनुमा सोलाई की बूटियों के फूलों से यह शहद प्राप्त होता है, वह लगातार खत्म हो रही हैं। नई बूटियां लगाने के लिए राज्य प्रशासन की कोई योजना नहीं। ग्रामीण क्षेत्रों में धड़ल्ले से इसका उपयोग ईंधन के रूप में भी किया जा रहा है। बी-कीपर एसोसिएशन जम्मू के प्रधान डीपी खजूरिया ने कहा कि सोलाई की बूटियों को बचाना बेहद जरूरी है। वे सरकार के समक्ष मामले को उठाएंगे। शहद का कारोबार कर रहे इंदू भूषण का कहना है कि मौसम की मार भी पड़ रही है। बहरहाल सोलाई की बूटियों को बचाने की नीति भी बननी चाहिए।

सोलाई शहद। जागरण

मौसम विशेष

पंजाब, हरियाणा, दिल्ली तथा राजस्थान के अधिकांश भागों में हल्की वर्षा संभव है तथा तेज हवाओं के साथ एक-दो स्थानों पर भारी बौछारें भी हो सकती है। पश्चिमी राजस्थान में मुख्यतः मौसम शुष्क और गर्म बना रहेगा। इन राज्यों में दिन काफी गर्म और उमसभरा बना रहने की संभावना है।

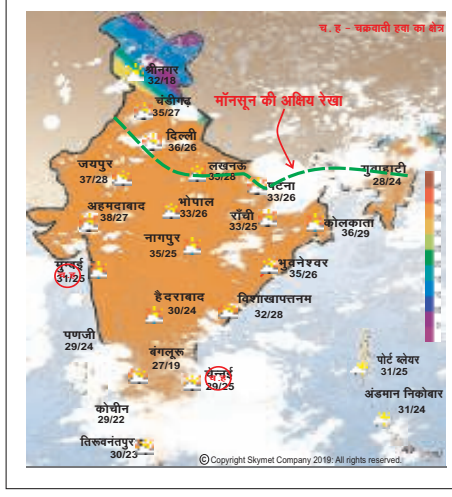

भारत के मुख्य शहरों का तापमान:

शहर		शहर	
मुम्बई	32/24/व	अहमदाबाद	31/26/व
कोलकाता	37/29/व	बड़ौदा	32/26/व
चेन्नई	34/26/व	नागपुर	35/26/व
हैदराबाद	31/24/व	इन्दौर	32/24/व
बंगलूरू	27/19/आंबा	रांची	30/25/व
त्रिवेन्द्रम	31/23/आंबा	पटना	33/25/व
गुवाहाटी	30/25/व	जमशेदपुर	30/25/आंबा
गंगटोक	17/09/व	पुणे	23/22/व

भारत में हुआ रेडियो का पहला प्रसारण

पहले आकाशवाणी, फिर विविध भारती और अब एफएम तक की यात्रा तय कर चुके रेडियो का भारत में पहला प्रसारण 1927 में आज ही मुंबई से हुआ था। पहले इसका नाम इंडियन ब्रॉडकास्टिंग कॉरपोरेशन था। आजादी के बाद इसका नाम ऑल इंडिया रेडियो या आकाशवाणी हो गया।

अमेरिका में कराया गया टाइपोग्राफ का पेटेंट

1829 में आज ही अमेरिकी आविष्कारक विलियम ऑस्टिन बर्ट ने टाइपोग्राफ का पेटेंट कराया था। बाद में टाइपोग्राफ ने टाइपराइटर की नीव रखी। विलियम बर्ट को फादर ऑफ टाइपराइटर भी कहा जाता है।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के सच्चे नायक थे चंद्रशेखर आजाद

स्वतंत्रता संग्राम की लड़ाई में अंग्रेजों के छक्के छुड़ाने वाले चंद्रशेखर आजाद का 1906 में आज ही मध्य प्रदेश के भाबरा गांव में जन्म हुआ था। लाला लाजपत राय की मौत का बदला लेने के लिए उन्होंने लाहौर में भगत सिंह और राजगुरु के साथ मिलकर अंग्रेज पुलिस अधिकारी की गोली मारकर हत्या कर दी थी। 1931 को जब वह अल्फ्रेड पार्क में रणनीति तय कर रहे थे, तभी पुलिस ने उन्हें घेर लिया। काफी देर तक उन्होंने संघर्ष किया, लेकिन खुद को अंग्रेजों के हाथ न आने देने के संकल्प के चलते खुद को गोली मारकर प्राणों की आहुति दे दी।

इधर-उधर की

ऑनलाइन बेची जा रहीं इंसानी खोपड़ी

लंदन, एजेंसी : ऑनलाइन कपड़े, जूते, सोना-चांदी और घरेलू सामान बेचे जाने की जानकारी तो हर किसी को है। लेकिन ब्रिटेन में जो चीज ऑनलाइन बेची जा रही है, उसके बारे में जानकर आप हैरान हो जाएंगे। दरअसल, ब्रिटेन में इंसान की खोपड़ी बेची जा रही है। ऑनलाइन बेची जा रहीं ज्यादातर खोपड़ियों की खरीदारी शोध और मेडिकल साइंस के लिए की जाती है। ब्रिटेन में इंसान की हड्डियों और खोपड़ियों को बेचने पर किसी तरह की रोक नहीं है। इसलिए यह आसानी से उपलब्ध हो जाती हैं। यहां इसका कारोबार 46 हजार पाउंड का है। जो काफी तेजी से बढ़ रहा है।

मांसाहार के नाम पर खा रहे एंटीबायोटिक

- पशुचारे व पोल्ट्री फीड में एंटीबायोटिक दवाओं से उत्पाद हो रहे घातक
- सालाना हजारों टन एंटीबायोटिक का इस्तेमाल कर रहे हैं पोल्ट्री फॉर्म
- पोल्ट्री व पशु उत्पादों के परीक्षण के लिए नहीं है उचित निगरानी प्रणाली

सुरेंद्र प्रसाद सिंह, नई दिल्ली

पोल्ट्री, मटन, अंडा और अन्य पशु उत्पादों में बढ़ती एंटीबायोटिक दवाओं की मात्रा खतरनाक स्तर पर पहुंच गई है, जो मानव स्वास्थ्य के लिए मुसीबत बन सकती है। पोल्ट्री फार्म और पशुओं के चारे में इन दवाओं के मिश्रण से उनके मांस समेत अन्य उत्पादों में एंटीबायोटिक दवाओं की मात्रा लगातार बढ़ रही है। वैज्ञानिकों को आशंका है कि इस तरह की गलत हरकतों पर समय रहते काबू नहीं पाया गया तो ऐसे प्रदूषित पशु उत्पादों का उपयोग करने वालों में छोटे मोटे रोग भी संक्रामक हो सकते हैं। कृषि से जुड़े इस तरह के उत्पादों की गुणवत्ता की निगरानी न होने से हालात और खराब हो सकते हैं।

विश्व के 10 प्रमुख ऐसे देशों में जहां के पशुपालन केंद्रों में सर्वाधिक एंटीबायोटिक उपयोग किया जाता है, भारत चौथे स्थान पर है। पशुओं और मुर्गियों को रोग से संरक्षित करने और उनकी उत्पादकता बढ़ाने के लिए उन्हें एहतियात के तौर पर चारे के साथ ही एंटीबायोटिक दवाएं दी जा रही हैं। 'साइंस' जर्नल की रिपोर्ट के मुताबिक भारत में 2013 में ढाई हजार टन से अधिक एंटीबायोटिक

पशुपालन केंद्रों में एंटीबायोटिक के उपयोग के मामले में भारत चौथे स्थान पर है। प्रतीकात्मक

दवाओं का उपयोग पशु चारा उत्पादन में हुआ था। रिपोर्ट के मुताबिक नियामक प्राधिकरण की निगरानी प्रणाली में सुधार नहीं हुआ तो वर्ष 2030 तक पशुचारे में इसका उपयोग 82 फीसद तक बढ़कर साढ़े चार हजार टन से अधिक पहुंच जाने का अनुमान है। उत्पादकता बढ़ाने और रोग से बचाने के चक्कर में पशुओं के चारे में एंटीबायोटिक दवाओं की खुराक मिला दी जाती है। पशुओं के पालन पोषण का तरीका मानव के स्वास्थ्य के लिए गंभीर खतरा बनने लगा है। मांसाहार के जरिए शरीर में इतनी एंटीबायोटिक जा रही है कि कई रोगों से लड़ने की प्रतिरोधक क्षमता कम हो गई है। यह ऐसे ही जारी रहा तो स्वास्थ्य पर दीर्घकालिक नतीजे होंगे।

एक आंकड़े के मुताबिक ग्रामीण भारत में चिकेन, मटन, बीफ और पोर्क की खपत वर्ष 2004 के मुकाबले वर्ष 2011 में दोगुनी हो गई। राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण के मुताबिक इसी अवधि में इन उत्पादों की प्रति माह प्रति व्यक्ति खपत 0.13 किलो से बढ़ कर 0.27 किलो पहुंच गई। जबकि शहरी क्षेत्रों में यह 0.22 किलो से बढ़कर 0.39 किलो हो गई। ध्यान रहे कि यह आंकड़ा पूरे देश की आबादी के अनुपात में है। जाहिर है कि मांसाहारियों के आधार पर आंकड़ा निकाला जाए तो यह कहीं अधिक होगा।

अंतरराष्ट्रीय लाइव स्टॉक रिसर्च इंस्टीट्यूट व इंडियन वेटनरी रिसर्च इंस्टीट्यूट में संयुक्त रूप से 'पशु उत्पादों में एंटी बायोटिक दवाओं के उपयोग और उनकी खत्म होती प्रतिरोधक क्षमता' पर राष्ट्रीय सर्वेक्षण किया जा रहा है। इसके नतीजों से कई चीजों का खुलासा हो सकता है। इंडियन वेटनरी रिसर्च इंस्टीट्यूट (आइवीआरआइ) के संयुक्त निदेशक डाक्टर त्रिवेणी दत्त ने बताया कि 'यह ऐसा क्षेत्र है, जहां लोगों की नजर ही नहीं है। इन मांसाहारी उत्पादों में बढ़ती एंटीबायोटिक दवाओं के प्रभाव से मानव स्वास्थ्य पर गंभीर असर पड़ सकता है। उन्होंने बताया कि पशु चारे में दवाओं के मिश्रण पर रोक है। समय-समय पर गाइड लाइन भी जारी की जाती है। लेकिन कमजोर निगरानी प्रणाली से इसका असर नहीं पड़ता है।'

पशुपालन व डेयरी मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी के मुताबिक देश में पोल्ट्री टेस्ट के लिए हैदराबाद में प्रयोगशाला तो है, लेकिन वहां केवल शोध के लिए परीक्षण किया जाता है। मथुरा स्थित बकरी अनुसंधान संस्थान में भी कुछ साल पहले मांस परीक्षण की प्रयोगशाला स्थापित की गई है। लेकिन देश में ऐसी गिनी चुनी प्रयोगशालाएं हैं। संस्थान के मीट वैज्ञानिक वी राजकुमार के मुताबिक 'देश में विशेषज्ञों की भारी कमी है। इन प्रयोगशालाओं में एडवांस टेक्नोलॉजी का अभाव है। ज्यादातर राज्यों में पोल्ट्री व अन्य पशु उत्पादों की जांच के लिए न तो उचित निगरानी प्रणाली है और न ही परीक्षण की सुविधा।'

मटन और पोल्ट्री का ज्यादातर कारोबार यहां असंगठित क्षेत्रों में है, जिसके नियमन पर कभी ध्यान नहीं दिया गया है। कहीं-कहीं स्थानीय स्तर पर निकायों की ओर से लाइसेंस फीस वसूलने भर का नियमन होता है। वर्ष 2011 में पहली बार मत्स्य और शहद के लिए एंटीबायोटिक की सीमा निर्धारित की गई थी।

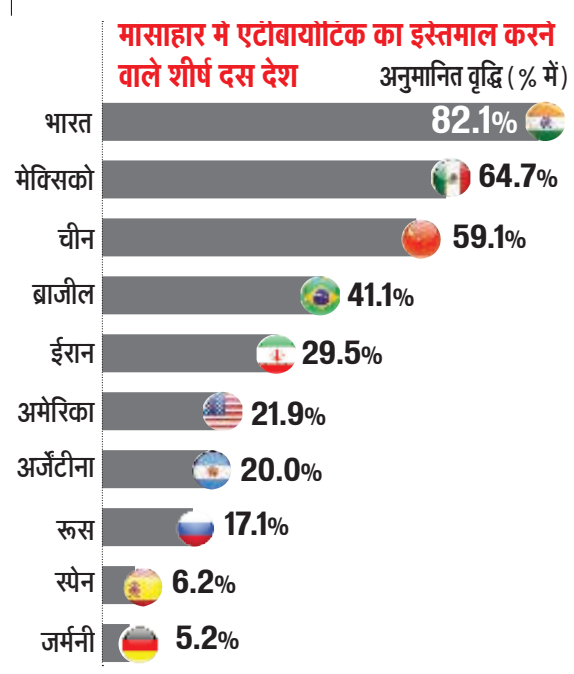

शोध अनुसंधान

सोने से 90 मिनट पहले नहाने से अच्छी आएगी नींद

वैज्ञानिकों ने रात में अच्छी नींद के लिए एक नया तरीका खोज निकाला है। उनका दावा है कि सोने से करीब 90 मिनट पहले गुनगुने पानी से नहाने से अच्छी नींद आ सकती है। यह निष्कर्ष पूर्व में किए गए 5,322 अध्ययनों के विश्लेषण के आधार पर निकाला गया है। अमेरिका की टेक्सास यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं ने अपने अध्ययन में पाया कि 40 से 43 डिग्री सेल्सियस जितने गरम पानी से नहाने से नींद की गुणवत्ता बेहतर हो सकती है। पानी से शरीर का तापमान बढ़ाने और अच्छी नींद के बीच संबंध का विज्ञान भी समर्थन करता है। गुनगुने पानी से नहाने से शरीर की तापमान नियंत्रित करने वाली प्रणाली प्रेरित होती है। इसके चलते शरीर में रक्त का संचार बढ़ जाता है। नतीजन शरीर का तापमान बढ़ जाता है। -प्रेट्र

स्कूल के लिए जल्दी तैयार नहीं होते मनोरोग पीड़ित बच्चे

शोधकर्ताओं का कहना है कि मनोरोग अटेंशन डेफिसिट हाइपरएक्टिविटी डिसआर्डर (एडीएचडी) से पीड़ित बच्चे स्कूल जाने के लिए जल्दी तैयार नहीं होते। वे अपने हमउम्र बच्चों की तुलना में ज्यादा समय लेते हैं। किसी काम में मन नहीं लगना और अति सक्रियता इस विकार के लक्षण हैं। इसके पीड़ितों को सीखने में भी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। शोधकर्ताओं के अनुसार, यह निष्कर्ष चार से पांच साल की उम्र के 93 बच्चों पर किए गए अध्ययन के आधार पर निकाला गया है। इन प्रतिभागियों में 45 एडीएचडी पीड़ित और बाकी सामान्य बच्चे थे। अध्ययन में एडीएचडी पीड़ित 79 फीसद बच्चों में स्कूल के लिए तैयार होने की इच्छा नहीं पाई गई। जबकि सामान्य बच्चों में यह प्रवृत्ति महज 13 फीसद दिखी। स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी की असिस्टेंट प्रोफेसर आइरीन लोई ने कहा, 'हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि एडीएचडी पीड़ित बच्चे स्कूल जाने के लिए तैयार नहीं होते।' -आइएएनएस

अंतरिक्ष में मिर्च उगाने की तैयारी में नासा

बड़ा कदम ▸ मंगल मिशन के दौरान खाद्य पदार्थों की कमी से निपटने के लिए किया जा रहा प्रयोग

न्यूयॉर्क टाइम्स से

पैकेट बंद आहार पर निर्भरता खत्म करने के लिए स्पेस में बनाएंगे बगीचा

वाशिंगटन : अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा साल 2030 तक लाल ग्रह मंगल पर मानव मिशन भेजने की तैयारी में है। मंगल पर जाने और वहां से वापस धरती पर आने की यह यात्रा तीन साल लंबी हो सकती है। इतने लंबे मिशन के लिए अंतरिक्ष यात्रियों को खाद्य पदार्थ उपलब्ध कराना बड़ी समस्या हो सकती है। अंतरराष्ट्रीय स्पेस स्टेशन (आइएसएस) में 340 दिन बिताने का रिकॉर्ड बना चुके अमेरिकी अंतरिक्ष यात्री स्कॉट केली ने कहा, 'मिशन के दौरान हर दूसरे या तीसरे माह मेरे पास ताजी सब्जियां और फल पहुंचाए जाते थे। लेकिन मंगल मिशन पर यह संभव नहीं होगा।'

इस समस्या को दूर करने के लिए वैज्ञानिक अंतरिक्ष में बगीचा बनाना चाहते हैं ताकि पैकेट

स्कॉट केली ने 340 दिन अंतरिक्ष में बिताने का रिकॉर्ड बनाया है। प्रतीकात्मक

बंद आहार पर अंतरिक्ष यात्रियों की निर्भरता खत्म हो। नासा पहले ही लेटस (सलाद के तौर पर इस्तेमाल में आने वाली पत्तियां) के साथ कुछ अन्य पत्तेदार सब्जियां अंतरिक्ष में उगाने में सफल हो चुकी है। अब वह पहली बार किसी फलदार पौधे को अंतरिक्ष में उगाना चाहती है। इसके लिए मिर्च के पौधे का चयन किया गया है। पृथ्वी पर अंतरिक्ष की तरह के वातावरण में इस पौधे को उगाने का परीक्षण जारी है। जल्द ही इसे अंतरिक्ष में भेजा जाएगा। वैज्ञानिकों का कहना है कि यदि यह प्रयोग सफल रहता है तो आगे चलकर अंतरिक्ष में टमाटर और आलू आदि उगाने के रास्ते भी खुल जाएंगे।

अंतरिक्ष में खेती क्यों जरूरी : अंतरिक्ष में अनाज उगाने के अभियान से जुड़े नासा के वैज्ञानिक जॉय डी मासा ने कहा, 'हमारे पास भले ही कितने भी विकल्प हों लेकिन सिर्फ पैकेट बंद आहार मंगल मिशन के लिए काफी नहीं होगा। अभी तक ऐसा कोई खाद्य पदार्थ उपलब्ध नहीं है जो इतने लंबे मिशन तक चले। ऐसे में अंतरिक्ष यात्री को खाने की कमी से जूझना पड़ सकता है। यह मिशन के लिए किसी भी लिहाज से सही नहीं होगा। इसीलिए अंतरिक्ष में भोजन उगाना जरूरी है।'

मिर्च को ही क्यों चुना : अंतरिक्ष में उगाए जाने वाले पहले फलदार पौधे के तौर पर मिर्च का चुना जाना अहम है। इनकी खेती पत्तेदार पौधे से काफी अलग तरीके से की जाती है। इसमें विटामिन सी की बहुतायत होती है। यह पोषक तत्व अंतरिक्ष यात्रियों के लिए बेहद जरूरी है। अंतरिक्ष में सूंघने और चखने की क्षमता घट जाती है। ऐसी स्थिति के लिए मिर्च सहायक हो सकती है। इस सदी के शुरुआती वर्षों में रूसी वैज्ञानिकों ने अंतरिक्ष में मटर उगाने में सफलता पाई थी। उसके बाद नासा पत्तागोभी और अन्य सब्जियां उगाने में सफल हुआ था।

2024 में चंद्रमा पर जाएंगी पहली महिला अंतरिक्ष यात्री

वाशिंगटन, प्रेट्र : चांद की सतह पर मनुष्य की ऐतिहासिक लैंडिंग की 50वीं वर्षगांठ मनाने के बाद अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा अपने महत्वाकांक्षी आर्टिमिस कार्यक्रम के साथ चांद पर एक और ऐतिहासिक कदम रखने की तैयारी कर रही है। नासा ने कहा अगले चंद्र मिशन के तहत चांद की सतह पर सबसे पहले कदम रखने वाली कोई महिला अंतरिक्ष यात्री होगी और उसके बाद कोई पुरुष चांद पर उतरेगा। आर्टिमिस का नाम अपोलो की जुड़वां बहन के नाम पर रखा गया है। ग्रीक पुराणों में उन्हें चंद्रमा की देवी माना गया है। नासा ने कहा कि इस मिशन की सफलता यह भी बताएगी कि हमारी मंगल पर जाने की तैयारियां कैसी चल रही हैं? अंतरिक्ष यात्रियों को चंद्रमा पर भेजने का कार्यक्रम वर्ष 2024 में लांच किया जाना है। नासा ने कहा कि आर्टिमिस कार्यक्रम के जरिये हम पहली बार किसी महिला को और उसके बाद किसी पुरुष को चंद्रमा की सतह पर चहलकदमी करते देखेंगे।

'अवेंजर्स : एंडगेम' ने कमाई में 'अवतार' को पछाड़ा

लॉस एंजिलिस, आइएएनएस : हॉलीवुड ब्लॉकबस्टर 'अवेंजर्स : एंडगेम' ने कमाई में 'अवतार' को पछाड़ दिया है। दुनियाभर में 2.79 अरब डॉलर (करीब 19 हजार 226 करोड़ रुपये) की कमाई करने के साथ ही एंडगेम ने सबसे ज्यादा कमाने वाली फिल्म का रिकॉर्ड अपने नाम कर लिया है। बीते दस साल से यह रिकॉर्ड जेम्स कैमरून की साइ-फाइ फिल्म 'अवतार' के नाम था। 18 दिसंबर 2009 को रिलीज हुई उस फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर 2.787 अरब डॉलर (19 हजार 204 करोड़ रुपये) की कमाई की थी।

अवेंजर्स: एंडगेम को गत 24 से 26 अप्रैल के बीच दुनियाभर में रिलीज किया गया था। मार्वल सिनेमैटिक यूनिवर्स की इस 22 वीं फिल्म ने पहले दिन सबसे ज्यादा कमाई करने का रिकॉर्ड भी बनाया था। फिल्म में मार्वल कॉमिक्स के सुपरहीरो आयरन मैन, थॉर, कैप्टन अमेरिका, हल्क, ब्लैक विडो आदि को साथ मिलकर विलेन थैनोस का मुकाबला करते हुए दिखाया गया है। जोए और एंथनी रूसो द्वारा निर्देशित फिल्म में रॉबर्ट डाउनी जूनियर, क्रिस इवांस, क्रिस हेम्सवर्थ, स्कार्लेट जॉनसन मुख्य

▸ दुनियाभर में सबसे ज्यादा कमाई करने का बनाया रिकॉर्ड

अवेंजर्स : एंडगेम को गत 24 से 26 अप्रैल के बीच दुनियाभर में रिलीज किया गया था। फाइल

भूमिका में हैं।

एंडगेम के सबसे ज्यादा कमाऊ फिल्म बनने पर हेम्सवर्थ ने पोस्ट किया, 'मैं दुनियाभर के सभी प्रशंसकों को धन्यवाद देता हूं जिन्होंने अवेंजर्स : एंडगेम को अब तक की सबसे ज्यादा कमाई करने वाली फिल्म बनाया।' मार्वल के प्रमुख केविन फीग ने भी इस उपलब्धि के दर्शकों का शुक्रिया अदा किया है।

अफ्रीकी संस्कृति का उत्सव

कनाडा के वैंकूवर में अफ्रीकन डीसेंट फेस्टिवल के मौके पर ड्रम बजाते लोग। दो दिवसीय इस महोत्सव का उद्देश्य अफ्रीकी लोगों की सांस्कृतिक विविधता का जश्न मनाना है। कनाडा में बड़ी संख्या में अफ्रीकी मूल के लोग रहते हैं। इस उत्सव में कनाडाई लोग भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते हैं। एजेंसी

गर्मी से अमेरिका में हाल-बेहाल

अमेरिकी के कई राज्यों में गर्मी का सितम थम नही रहा है। लगातार तापमान बढ़ने और गर्म हवाएं चलने से लोगों का हाल-बेहाल है। बचने के लिए तरह-तरह के उपाय किए जा रहे हैं। न्यूयॉर्क में 100 फॉरेनहाइट सेल्सियस (करीब 38 डिग्री सेल्सियस) रिकॉर्ड किया गया। गर्मी में लोगों ने न्यूयॉर्क सिटी के प्रमुख कोरोना पार्क में लगे फव्वारों का भरपूर आनंद लिया। एएफपी

स्क्रीन शॉट

राजकुमार हिरानी की फिल्म में दिखेंगे शाह रुख खान

फिल्म 'जीरो' की विफलता के बाद बॉलीवुड के किंग खान के हौसले पस्त हो गए थे और उन्होंने अपना ध्यान एक्टिंग से हटाकर, प्रोडक्शन की ओर कर दिया था। हिंदी फिल्म इंडस्ट्री में तो ऐसी खबरें भी आने लगी थीं कि शाह रुख अब एक्टिंग पर ध्यान ही नहीं देंगे। असल में उन्होंने 'सारे जहां से अच्छा' के अलावा एक-दो और फिल्में भी ठुकरा दी थीं। बहरहाल, इसके बाद हाल ही में रिलीज हुई वॉल्ट डिज्नी की फिल्म 'द लॉयन किंग' में बतौर वॉयसओवर आर्टिस्ट वह चर्चा में आए। अब खबर है कि वह निर्देशक राजकुमार हिरानी की अगली फिल्म में नजर आएंगे। कहा तो यह जा रहा है कि अगर सभी चीजें सही तरीके से हुईं तो शाह रुख हिरानी के अगले 'मुन्नाभाई' हो सकते हैं। वैसे सच यह भी है कि हिरानी की फिल्म में शाह रुख को ही पहले मुन्नाभाई का किरदार ऑफर किया गया था और विवेक ओबरॉय को सर्किट का, लेकिन शाह रुख ने तब यह किरदार करने से मना कर दिया था। लेकिन लगातार असफलता का सामना कर रहे शाह रुख अब हिरानी के साथ काम करने को तैयार हो गए हैं। हिरानी वही निर्देशक हैं, जिन्होंने आमिर खान के साथ दो फिल्में बनाईं और दोनों ब्लॉकबस्टर साबित हुईं।

'सत्ते पे सत्ता' में रितिक नहीं, होंगी कट्रीना

अभी कुछ दिन पहले ही यह जानकारी आई थी कि फराह खान के निर्देशन में बनने वाली फिल्म 'सत्ते पे सत्ता' में दीपिका पादुकोण मुख्य भूमिका निभाएंगी। कहा जा रहा था कि रितिक रोशन और दीपिका पादुकोण की जोड़ी इस फिल्म में पहली बार दिखाई देगी। अब एक तो खबर यह आई है कि रितिक रोशन इस फिल्म का हिस्सा फिलहाल नहीं हैं, दूसरी खबर यह है कि इस फिल्म में दीपिका के अलावा कट्रीना कैफ दूसरी अभिनेत्री के तौर पर होंगी। 'सत्ते पे सत्ता' में रितिक रोशन के होने की चर्चाओं पर खुद रितिक रोशन ने विराम लगा दिया है। उन्होंने कहा, 'मैं अमिताभ बच्चन का फैन हूं और उनकी किसी भी फिल्म के रीमेक का अवसर मिलेगा तो मैं जरूर करूंगा। लेकिन 'सत्ते पे सत्ता' अभी मैंने साइन नहीं की है। जब करूंगा, तो जरूर बताऊंगा।' हालांकि कट्रीना के फिल्म में शामिल होने की चर्चाएं हैं। कट्रीना फिलहाल रोहित शेट्टी की फिल्म 'सूर्यवंशी' में व्यस्त हैं और वह इससे पहले फराह खान की फिल्म 'तीस मार खां' में काम कर चुकी हैं। गौरतलब है कि 1982 की सुपरहिट फिल्म 'सत्ते पे सत्ता' में सात अभिनेत्रियां थीं, लिहाजा नई 'सत्ते पे सत्ता' में भी इतनी ही एक्ट्रेसेस होने का अनुमान लगाया जा रहा है।

परफेक्ट हॉलीडे!

शाह रुख खान अपने परिवार के साथ मालदीव में छुट्टियां मना रहे हैं। गौरी खान ने अपने तीनों बच्चों की एक तस्वीर साझा की है, जिसमें सुहाना, अबराम और आर्यन एक नाव में बैठे हैं। सुहाना और अबराम कैमरे में देखकर मुस्कुरा रहे हैं, तो वहीं आर्यन दूसरी ओर देख रहे हैं। गौरी ने इस तस्वीर को दिल की इमोजी के साथ पोस्ट करते हुए लिखा, 'मेरे तीन छोटे दिल'। हाल ही में आर्यन ने हॉलीवुड फिल्म 'द लॉयन किंग' के हिंदी वर्जन में सिंबा के लिए डबिंग की है।

'निकम्मा' बनकर खुलकर एक्शन करेंगे अभिमन्यु

भाग्यश्री के बेटे अभिमन्यु दासानी ने 'मर्द को दर्द नहीं होता' फिल्म से बॉलीवुड में कदम रखा था। यह फिल्म भले ही बॉक्स ऑफिस पर कमाल न दिखा पाई हो, लेकिन अनोखी कहानी और अभिमन्यु के एक्शन सीन्स ने तारीफें जरूर बटोरी थीं। अब अभिमन्यु 'निकम्मा' बनकर खुलकर एक्शन करने की तैयारी में हैं। दरअसल, यह उनकी आगामी फिल्म का नाम है, जो एक्शन एंटरटेनर होगी। इस खबर की पुष्टि खुद अभिमन्यु दासानी ने की है। उन्होंने सोशल मीडिया पर 'निकम्मा' की पहली झलक दिखाते हुए एक तस्वीर साझा की है। एक्शन एंटरटेनर जॉनर को लेकर अभिमन्यु का कहना है कि यह फिल्म चुनौतियों का पूरा सेट है, जिसे निभाना बेहद रोमांचक होगा। फिल्म का पहला शेड्यूल खत्म हो चुका है। एक गाने और फिल्म के कुछ दृश्यों की शूटिंग हो चुकी है। 'बागी' और 'हीरोपंती' जैसी फिल्मों का निर्देशन कर चुके निर्देशक शब्बीर खान 'निकम्मा' का निर्देशन करेंगे। शब्बीर जबर्दस्त एक्शन फिल्मों और नई प्रतिभाओं को मौका देने के लिए प्रसिद्ध हैं। इस फिल्म में अभिमन्यु के साथ गायिका और सोशल मीडिया सेंसेशन शर्ली सेतिया भी होंगी। शब्बीर का कहना है कि अभिमन्यु और शर्ली की जोड़ी उन्हें कहीं न कहीं टाइगर श्रॉफ और कृति सैनन की याद दिलाती है।

तलाशी राह

एसजीपीजीआइ में हार्ट अटैक के खतरे का पता लगाकर इलाज संभव, मरीज पर सफल प्रयोग, घबराहट की जांच कराने पर निकला दिल में ब्लॉकेज

दिल देगा दगा, यह पहले से चल जाएगा पता

कुमार संजय, लखनऊ

जिंदगी की भागमभाग और तनाव के बीच हमारे दिल पर जोर लगातार बढ़ रहा है। यही कारण है, इसके दगा देने के मामले भी बढ़ रहे हैं। हार्ट अटैक होने पर कुछ मामलों में जान बचाने तक का मौका नहीं मिलता। कुछ में जिंदगी बच भी जाती है, मगर दिल के दौरे की संभावना उम्रभर बनी रहती है। लखनऊ स्थिति संजय गांधी आयुर्विज्ञान संस्थान (एसजीपीजीआइ) में गंभीर होते इस मर्ज का रास्ता खोजा गया है। कुछ इस तरह ताकि दिल के दगा देने से पहले उसकी हरकत का पता चल जाए।

दरअसल, बस्ती निवासी 40 वर्षीय विपिन शुक्ला को लंबे समय से घबराहट की परेशानी थी, जबकि सात से आठ किमी चलने पर कोई दिक्कत नहीं होती थी। सीढ़ी भी चढ़ते थे। घबराहट की जांच के लिए वह पीजीआइ के हृदय रोग विशेषज्ञ प्रो. सुदीप के पास आए। ईसीजी सहित कुछ जांचें हुईं, वजह पता नहीं चली। इस पर प्रो. सुदीप ने मायोकार्डियल परफ्यूजन इमेजिंग (एमपीआइ) जांच कराई। उसमें दिल की परेशानी के कुछ संकेत मिले। एंजियोग्राफी की तो दिल की एक रक्त वाहिका में रुकावट मिली, जिसे स्टेंट लगाकर दूर कर दिया। अब उन्हें हार्टअटैक की संभावना खत्म हो गई है। प्रो. सुदीप की मानें तो हार्ट अटैक के बाद इलाज

शुरुआती स्टेज में ही खतरों को भाप कर हृदय रोगों का किया जा सकता है प्रभावी इलाज। प्रतीकात्मक

सामान्य प्रक्रिया है, मगर आशंका का पहले पता लगाकर दिल दुरुस्त करने से भविष्य की चिंता खत्म हो जाती है।

एमपीआइ और पेट स्कैन खोलता दिल के राज : न्यूक्लियर मेडिसिन विभाग के प्रमुख प्रो. एस. गंभीर के मुताबिक, मायोकार्डियल परफ्यूजन जांच में हम मीबी नाम की आइसोटोपिक दवा इंजेक्ट करते है। ऐसा करने के कुछ देर बाद गामा कैमरे में दिल की मांसपेशियों की हलचल देखते हैं। फिर मरीज का स्ट्रेस (दौड़ाकर) देखते हैं कि कहीं मेहनत के दौरान रक्त प्रवाह तो कम नहीं हो रहा। यदि रक्त प्रवाह कम है तो कहीं रुकावट है। इसके अलावा पेट (पॉजीट्रान इमेशन टोमोग्राफी) के जरिए भी पता लगाया जा सकता है कि दिल के किस हिस्से में कितना रक्त प्रवाह है। यह बेहद संवेदनशील जांच होती है।

योग करने से भी स्वस्थ रहता है हृदय

हृदय रोग से पीड़ित लोग बीमारी को ठीक करने के सभी प्रयास करने के बाद भी कई बार अपनी जिंदगी नहीं बचा पाते हैं। ऐसे में यदि हम अपनी दिनचर्या में योग को शामिल कर लें तो काफी हद तक हृदय संबंधी विकारों को ठीक किया जा सकता है और सबसे बड़ी बात इसके लिए हमें अतिरिक्त खर्च करने की भी जरूरत नहीं होती। योगाभ्यास से हृदय और फेफड़ों की मांसपेशियां स्वस्थ्य रहती हैं और इससे रक्त संचार भी सुचारु रूप से चलता रहता है। इसलिए लोगों को चाहिए कि अपनी दिनचर्या में अनुलोम-विलोम, भस्त्रिका प्राणायाम के साथ-साथ मर्जरासन, शशकासन, वक्रासन, धनुरासन, उत्तानपाद आसन शामिल करें। इससे हृदय संबंधी विकारों से बचा जा सकता है।